राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

वार्षिक रिपोर्ट

2013-14

डाक का पताः

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

नैम्स हाउस, अंसारी नगर,

महात्मा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110029

दूरभाषः

011-26588718, 26589326

अध्यक्षः 011-26588792

सचिवः 011-26589289

फैक्स नं.:

011-26588992

ई-मेलः nams_aca@yahoo.com

वेबसाइटः http://nams-india.in

विषय-सूची

		पृष्ठ सं.
	परिषद् - 2013-14	1
	अधिकारीगण एवं कार्यपालक कर्मचारी	2
	राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी के वर्ष वृत्तांत (एनल्स) का संपादकीय मंडल	3
क.	**संगठनात्मक गतिविधियाँ**	**4-77**
	वार्षिक बैठक	5
	वार्षिक बैठक में अध्येतावृत्ति और सदस्यता पुरस्कार	6-17
	जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार	17
	व्याख्यान और पुरस्कार	18-22
	आचार्य जे.एस. बजाज पुरस्कार	22
	परिषद् की बैठकें	23
	अध्येताओं का निर्वाचन- 2013	23-28
	सदस्यों का निर्वाचन- 2013	28-36
	डीएनबी परीक्षा उत्तीर्ण करने पर सदस्यता (एमएनएएमएस) के लिए प्रस्तावित उम्मीदवार	37-44
	अकादमी की सूची में अध्येता/सदस्य	45
	व्याख्यान व पुरस्कार-2013-14 के लिए चिकित्सा वैज्ञानिकों का नामांकन	46-51
	स्वर्ण जयंती स्मारक पुरस्कार व्याख्यान	52
	इमारत का रख-रखाव	53
	वर्ष वृत्तांत (एनल्स) का प्रकाशन	53
	मृत्युलेख	54
	26 अक्तूबर, 2013 को जोधपुर में वार्षिक दीक्षांत समारोह में अध्यक्ष डॉ. सी.एस. भास्करन द्वारा दिए गए अभिभाषण का पाठ (अनुबंध-I)	55-61
	26 अक्तूबर, 2013 को जोधपुर में वार्षिक दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. आर. चिदम्बरम, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार, द्वारा दिए गए अभिभाषण का पाठ (अनुबंध-II)	62-69
	26 अक्तूबर, 2013 को जोधपुर में वार्षिक दीक्षांत समारोह में विशिष्ट अतिथि आचार्य जे.एस. बजाज, प्रतिष्ठित अध्यक्ष द्वारा दिए गए अभिभाषण का पाठ (अनुबंध-III)	70-77

ख.	**शैक्षिक रिपोर्ट**	**78-185**
	सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम	80-103
	कार्यकलापों की रिपोर्ट 01 अप्रैल, 2013 - 31 मार्च, 2014	80-85
	बाह्यसंस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों का राज्यवार वितरण	86-87
	एनएएमएस अध्यायों के बाह्यसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रम	88-89
	बाह्यसंस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों पर रिपोर्ट (अनुबंध -IV)	90-109
	चिकित्सा वैज्ञानिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (स्वास्थ्य मानवशक्ति विकास)	110
	अंतःसंस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों पर रिपोर्ट (अनुबंध-V)	111-126
	एनएएमएस अध्याय (अनुबंध-VI)	127-130
	एनएएमएस के प्रतिष्ठित आचार्य	131-142
	शैक्षिक समिति	143-170
	नैम्स-एम्स के अधिशासी मंडल की शैक्षिक गतिविधियाँ	171
	शैक्षिक परिषद्	172-184
	एनएएमएस वेबसाइट	185
ग.	**वित्तीय रिपोर्ट**	**186-234**
	सरकारी अनुदान	187-188
	लेखा	189-234
घ.	**अप्रैल, 2014 से सितम्बर, 2014 तक की गतिविधियों की मुख्य विशेषताएं**	**235-260**
	परिषद् के नव-निर्वाचित सदस्य	235
	कोषाध्यक्ष का निर्वाचन	235
	उपाध्यक्ष का निर्वाचन	235
	वर्ष 2014 के लिए पुरस्कार	235-237
	स्वर्ण जयंती स्मारक पुरस्कार व्याख्यान	237
	वर्ष 2014 के लिए निर्वाचित अध्येता और सदस्य	237-242
	विनियमन V के अधीन भर्ती किए गए सदस्य	242-254
	संगोष्ठी/ कार्यशाला/ सीएमई कार्यक्रम	254-257
	एनएएमएस वैज्ञानिक संगोष्ठी	258

जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार 258
एनएएमएस की राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के साथ संयोजकता 258
एम्स, जोधपुर में चिकित्सा शिक्षा में नैम्स के अनुसंधान केंद्र की स्थापना 259
एनएएमएस के वर्ष वृत्तांत (एनल्स) के प्रकाशन का प्रबंध 259
एनएएमएस के वर्ष वृत्तांत (एनल्स) के नए संपादकीय मंडल का गठन 259-260

परिषद् 2013-14

डॉ. सी.एस. भास्करन, एफएएमएस, अध्यक्ष

डॉ. के.के. तलवार, एफएएमएस, तत्काल पूर्व अध्यक्ष

डॉ. मनोरमा बेरी, एफएएमएस, उपाध्यक्ष

डॉ. कुसुम वर्मा, एफएएमएस, कोषाध्यक्ष

डॉ. सरोज चूड़ामणि गोपाल, एफएएमएस

डॉ. के.के. शर्मा, एफएएमएस

डॉ. एस. कामेस्वरन, एफएएमएस

डॉ. एच.एस. संधू, एफएएमएस

डॉ. जे.एन. पांडे, एफएएमएस

डॉ. कमल बक्शी एफएएमएस

डॉ. एन.एन. सूद, एफएएमएस

डॉ. मुकुंद एस. जोशी, एफएएमएस

डॉ. हरिभाई एल. पटेल, एफएएमएस

डॉ. पी.के दवे, एफएएमएस

डॉ. योगेश चावला, एफएएमएस

डॉ. वी. मोहन कुमार, एफएएमएस

डॉ. मीरा रजानी, एफएएमएस

एयर मार्शल (सेवानिवृत्त) डॉ. एम.एस. बोपाराय, एफएएमएस

परिषद् के पदेन सदस्य

महानिदेशक, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद्

अध्यक्ष, राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड

अध्यक्ष, भारतीय चिकित्सा परिषद्

केंद्र सरकार के नामिती

स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक

अधिकारीगण 2013-14

अध्यक्ष	डॉ. सी.एस. भास्करन, एफएएमएस
उपाध्यक्ष	डॉ. मनोरमा बेरी, एफएएमएस
कोषाध्यक्ष	डॉ. कुसुम वर्मा, एफएएमएस

कार्यपालक कर्मचारी

मानद सचिव	डॉ. संजय वधवा, एफएएमएस
सतत चिकित्सा शिक्षा समन्वयक	डॉ. के.के. शर्मा, एफएएमएस

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) के वर्ष वृत्तांत का संपादकीय मंडल (31.12.2013 तक)

प्रतिष्ठित संपादक

प्रो. जे.एस. बजाज

संपादक

डॉ. संजय वधवा

सहयोगी संपादक

डॉ. के.के. शर्मा

सहायक संपादक

डॉ. ज्योति वधवा

संपादकीय मंडल

डॉ. स्नेहलता देशमुख
डॉ. मीरा रजानी
डॉ. जे.एन. पांडे
डॉ. प्रेमा रामाचंद्रन
डॉ. एच.एस. संधू
डॉ. ललिता एस. कोठारी

संपादकीय सहयोगी

डॉ. गौरदास चौधरी
डॉ. रानी कुमार
डॉ. विनोद पॉल
डॉ. अशोक कुमार शर्मा
डॉ. एम.वी पद्मा श्रीवास्तव
डॉ. दीप टक्कर

सलाहकार मंडल के सदस्य

डॉ. महताब एस. बामजी
डॉ. राज बवेजा
डॉ. एम. बेरी
डॉ. सी.एस. भास्करन
एयर मार्शल (सेवानिवृत्त) डॉ. एम.एस. बोपाराय
डॉ. संजीव मिश्रा
डॉ. वाई.के. चावला
डॉ. पी.के. दवे
डॉ. सरोज चूड़ामणि गोपाल
डॉ. आमोद गुप्ता
डॉ. डी.के. हाजरा
डॉ. एच.एस. जुनेजा
डॉ. बी.एन. कोले
डॉ. आनंद कुमार
डॉ. आर. मदान
डॉ. ललित नाथ
डॉ. हरिभाई एल. पटेल
डॉ. के.के. तलवार
डॉ. एस.पी. त्यागराजन

संगठनात्मक गतिविधियाँ

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

वार्षिक रिपोर्ट 2013-14

संगठानात्मक गतिविधियाँ

अकादमी के नियमानुसार अकादमी के सामान्य सरोकार, उसकी पिछले वर्ष की आय और व्यय तथा वर्ष के लिए अनुमान और अकादमी की समृद्धि या अन्यथा स्थिति पर एक रिपोर्ट, अकादमी की आम सभा के समक्ष उसकी वार्षिक बैठक में प्रस्तुत करनी होती है।

वार्षिक बैठक

53वीं वार्षिक बैठक 25, 26 और 27 अक्तूबर, 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में आयोजित की गई। अकादमी का दीक्षांत समारोह 26 अक्तूबर, 2013 को सायंकाल में आयोजित किया गया।

डॉ. आर. चिदम्बरम, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार, मुख्य अतिथि थे।

डॉ. सी.एस. भास्करन, अध्यक्ष, एनएएमएस ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विशिष्ट अतिथियों, अकादमी के अध्येताओं और सदस्यों का स्वागत किया। अध्यक्षीय भाषण का पूरा पाठ अनुबंध-। के रूप में दिया गया है।

डॉ. आर. चिदम्बरम, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार, ने दीक्षांत भाषण दिया। भाषण का पूरा पाठ अनुबंध-।। के रूप में दिया गया है।

विशिष्ट अतिथि आचार्य जे.एस. बजाज, प्रतिष्ठित अध्यक्ष, एनएएमएस ने भाषण दिया। भाषण का पूरा पाठ अनुबंध-।।। के रूप में दिया गया है।

अध्येतावृत्ति और सदस्यता पुरस्कार

अध्येता

जोधपुर में आयोजित दीक्षांत समारोह में पच्चीस अध्येताओं को, जिनमें वर्ष 2012 में निर्वाचित 2 और 2013 में निर्वाचित 23 अध्येता सम्मिलित थे, अध्येतावृत्ति प्रदान की गई तथा उन्होंने स्क्रोल प्राप्त किए। भर्ती किये गये अध्येताओं के नाम और संबंधन नीचे दिए गए हैं:

1. **डॉ. मामिदीपुदी श्रीनिवास विद्यासागर (2012)**

   आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, विकिरण चिकित्सा विभाग, फादर मुलर मेडिकल कॉलेज अस्पताल, मैंगलोर। उनकी विशेषज्ञता विकिरण चिकित्सा है।

2. **डॉ. गुरप्रीत सिंह वांडर (2012)**

   आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हृद्यरोग विज्ञान विभाग, हीरो डीएमसी हृदय संस्थान, दयानन्द मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, लुधियाना-141001। उनकी विशेषज्ञता हृद्यरोग विज्ञान है।

3. **डॉ. बलराम ऐरन (2013)**

   आचार्य और विभागाध्यक्ष, हृदय वक्ष संवहनी सर्जरी एवं प्रमुख, हृदय वक्ष विज्ञान केंद्र, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-10029। उनकी विशेषज्ञता हृदय वक्ष एवं संवहनी सर्जरी है।

4. **डॉ. पन्ना चौधरी (2013)**

   परामर्शदाता बाल चिकित्सक, सी 5/262, सैक्टर-31, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर- 201301। उनकी विशेषज्ञता बाल शल्यचिकित्सा है।

5. **डॉ. अजय नारायण गंगोपाध्याय (2013)**

   आचार्य और विभागाध्यक्ष, बाल शल्यचिकित्सा विभाग, आयुर्विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005। उनकी विशेषज्ञता बाल शल्यचिकित्सा है।

6. **डॉ. रविन्द्र गोस्वामी (2013)**

आचार्य, अंतःस्त्राविकी एवं चयापचय विभाग, जैव प्रौद्योगिकी खंड, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता मधुमेह एवं अंतःस्त्राविकी है।

7. **डॉ. अशोक कुमार गुप्ता (2013)**

परामर्शदाता प्लास्टिक सर्जन, सूइट नं.16, द्वितीय तल, लॉड मैंशन, चरनी रोड स्टेशन के सामने, 21 एम. करवे मार्ग, मुंबई-400004। उनकी विशेषज्ञता प्लास्टिक सर्जरी है।

8. **डॉ. संजीव कुमार गुप्ता (2013)**

आचार्य, सामान्य शल्यचिकित्सा विभाग, आयुर्विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005। उनकी विशेषज्ञता शल्यचिकित्सा है।

9. **डॉ. प्रमोद कुमार झुल्का (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, विकिरणचिकित्सा विभाग, डॉ. बी.आर.ए. संस्थान रोटरी कैंसर अस्पताल, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता विकिरणचिकित्सा है।

10. **डॉ. पटवर्धन भूषण केशव (2013)**

आचार्य एवं निदेशक, स्वास्थ्य विज्ञान का अंतःविषय विद्यालय, पुणे विश्वविद्यालय, गणेशखिंड, पुणे-411007। उनकी विशेषज्ञता जैवरसायन विज्ञान है।

11. **डॉ. निरंजन खंडेलवाल (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, विकिरण निदान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता विकिरण निदान है।

12. **डॉ. हरबीर सिंह कोहली (2013)**

आचार्य, वृक्क विज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता वृक्क विज्ञान है।

13. **डॉ. राज कुमार (2013)**

निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, पशुलोक, वीरभद्र मार्ग, ऋषिकेश-249201। उनकी विशेषज्ञता तंत्रिका शल्यचिकित्सा है।

14. **डॉ. विजय कुमार (2013)**

स्टाफ अनुसंधान वैज्ञानिक, विषाणु विज्ञान समूह, आनुवंशिकी इंजीनियरी तथा जैव-प्रौद्योगिकी अन्तरराष्ट्रीय केन्द्र, अरूणा आसफ अली मार्ग, नई दिल्ली-110067। उनकी विशेषज्ञता आणविक जैवविज्ञान है।

15. **डॉ. आर. रेणुका नायर (2013)**

वैज्ञानिक जी (वरिष्ठ श्रेणी), अध्यक्ष, कोशकीय एवं आणविक हृदरोग विज्ञान प्रभाग, श्री चित्रा तिरूमल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरूवनंतपुरम्, केरल-695011। उनकी विशेषज्ञता शरीर-क्रिया विज्ञान है।

16. **डॉ. चित्तरंजन नाराहारी पुरंडरे**

संकायाध्यक्ष, भारतीय प्रसूतिविज्ञान और स्त्रीरोगविज्ञान महाविद्यालय, मुम्बई, पूरणदेई अस्पताल, 31/सी, डॉ. एन.ए. पुरंदरे मार्ग, चौपाटी, मुम्बई-400007। उनकी विशेषज्ञता प्रसूतिविज्ञान और स्त्रीरोगविज्ञान है।

17. **डॉ. जसपाल सिंह संधु (2013)**

आचार्य एवं संकायाध्यक्ष, खेल चिकित्सा और भौतिक चिकित्सा संकाय, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर-143001। उनकी विशेषज्ञता खेल चिकित्सा है।

18. **डॉ. अशोक शाह (2013)**

आचार्य, श्वसन चिकित्सा विभाग, वल्लभभाई पटेल चेस्ट संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007। उनकी विशेषज्ञता श्वसन चिकित्सा है।

19. **डॉ. जय वीर सिंह (2013)**

निदेशक, उत्तर प्रदेश आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान ग्रामीण संस्थान, सैफई, इटावा-206130। उनकी विशेषज्ञता सामुदायिक चिकित्सा/ सामाजिक एवं निवारक चिकित्सा है।

20. **डॉ. अनिल सूरी (2013)**

स्टाफ वैज्ञानिक-VII, कैंसर सूक्ष्म सारणी, जीन एवं प्रोटीन प्रयोगशाला, राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान, अरूणा आसफ अली मार्ग, नई दिल्ली-110067। उनकी विशेषज्ञता कैंसर जैवविज्ञान है।

21. **डॉ. देविन्दर मोहन थापा (2013)**

आचार्य, त्वचारोग एवं रतिजरोगविज्ञान विभाग, जवाहरलाल स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, पुद्दुचेरी-605006। उनकी विशेषज्ञता त्वचारोग एवं रतिजरोगविज्ञान है।

22. **डॉ. मुकेश त्रिपाठी (2013)**

आचार्य, संवेदनाहरण विज्ञान विभाग, संजय गाँधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ-226014। उनकी विशेषज्ञता संवेदनाहरण विज्ञान है।

23. **डॉ. किम वैफी (2013)**

आचार्य, ऊतक रोगविज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता विकृति विज्ञान है।

24. **डॉ. नीना वलेचा (2013)**

निदेशक, राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान (आईसीएमआर), सैक्टर-8, द्वारका, नई दिल्ली-110077। उनकी विशेषज्ञता भेषजगुण विज्ञान है।

25. **डॉ. पलुरु विजयाचारी (2013)**

वैज्ञानिक जी एवं निदेशक, क्षेत्रीय चिकित्सा अनुसंधान केंद्र(आईसीएमआर), विश्व स्वास्थ्य संगठन संक्रामी कामला सहयोग केंद्र, डॉलीगंज, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह-744101। उनकी विशेषज्ञता सूक्ष्म जैवविज्ञान है।

सदस्य

वर्ष 2011 में निर्वाचित 5, वर्ष 2012 में निर्वाचित 10 और वर्ष 2013 में निर्वाचित 41 सदस्यों सहित छप्पन सदस्यों को जोधपुर में आयोजित दीक्षांत समारोह में सदस्य बनाया गया। भर्ती किए गए सदस्यों के नाम और उनके संबंधन नीचे दिए गए हैं:

1. **डॉ. भवनीत भारती (2011)**

   सह आचार्य, बालरोगविज्ञान विभाग, प्रोन्नत बालरोगविज्ञान केंद्र, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता बालरोग विज्ञान है।

2. **डॉ. डिंपल चोपड़ा (2011)**

   सहायक आचार्य, त्वचारोग विज्ञान विभाग, सरकारी मेडिकल कालेज, पटियाला-147001। उनकी विशेषज्ञता त्वचारोग एवं रतिजरोगविज्ञान है।

3. **डॉ. विशाल चोपड़ा (2011)**

   सह आचार्य, छाती एवं तपेदिक विभाग, सरकारी मेडिकल कालेज, पटियाला-147001। उनकी विशेषज्ञता श्वसन चिकित्सा है।

4. **डॉ. देवी दयाल (2011)**

   सह आचार्य, बालरोगविज्ञान विभाग, प्रोन्नत बालरोगविज्ञान केंद्र, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता बालरोग विज्ञान है।

5. **डॉ. बंशी साबू (2011)**

   मधुमेह विज्ञानी, डाया-केयर, 1 व 2, गाँधी पार्क, समीप नेहरू नगर सर्कल, अंबावाड़ी, अहमदाबाद-380015। उनकी विशेषज्ञता मधुमेह विज्ञान है।

6. **कर्नल (डॉ.) तथागत चटर्जी (2012)**

   आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, प्रतिरक्षा रुधिरविज्ञान और संचारण चिकित्सा विभाग, सशस्त्र सेना मेडिकल कॉलेज, पुणे-411040। उनकी विशेषज्ञता विकृतिविज्ञान है।

7. **डॉ. मृदुल चतुर्वेदी (2012)**

सह आचार्य, कायचिकित्सा स्नातकोत्तर विभाग, एस.एन. मेडिकल कॉलेज, आगरा-282002। उनकी विशेषज्ञता आंतरिक चिकित्सा है।

8. **डॉ. संदीप ग्रोवर (2012)**

सहायक आचार्य, मनोरोगविज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता मनोरोगविज्ञान विज्ञान है।

9. **कर्नल (डॉ.) अतुल कोतवाल (2012)**

निदेशक, चिकित्सा अनुसंधान, अधिकारी डी.जी.ए.एफ.एम.एस., एम ब्लॉक, रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली-110001। उनकी विशेषज्ञता सामुदायिक चिकित्सा/ सामाजिक व निवारक चिकित्सा है।

10. **कर्नल (डॉ.) ज्योति कोतवाल (2012)**

वरिष्ठ सलाहकार एवं आचार्य, विकृतिविज्ञान एवं रुधिरविज्ञान, सेना अस्पताल (अनुसंधान एवं परामर्श), धौला कुँआ, दिल्ली कैंट, नई दिल्ली-110010। उनकी विशेषज्ञता विकृतिविज्ञान है।

11. **डॉ. रीतुश्री कुकरेती (2012)**

वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर-आईजीआईबी, लैब 211, जीनोमिक एवं आणविक चिकित्सा, माल रोड, दिल्ली-110007। उनकी विशेषज्ञता आणविक जीवविज्ञान है।

12. **डॉ. संदीप आर. माथुर (2012)**

सह आचार्य, विकृति विज्ञान विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-10029। उनकी विशेषज्ञता विकृति विज्ञान है।

13. **डॉ. हरविंदर सिंह पाहवा (2012)**

सह आचार्य, परामर्शदाता मूत्ररोग एवं न्यूनतम अधिगम शल्यचिकित्सक, शल्यचिकित्सा विभाग, के.जी. मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ-226003। उनकी विशेषज्ञता मूत्ररोग विज्ञान है।

14. **डॉ. बिस्वबीना रे (2012)**

अपर आचार्य, शरीर-रचना विज्ञान विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भोपाल, साकेत नगर, भोपाल-462024। उनकी विशेषज्ञता शरीर-रचना विज्ञान है।

15. **डॉ. तूलिका सेठ (2012)**

सह आचार्य, रुधिरविज्ञान विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता रुधिरविज्ञान है।

16. **डॉ. श्रीनिवासन अनंत (2013)**

वरिष्ठ परामर्शदाता, आंतरिक चिकित्सा विभाग, अपोलो विशेषता अस्पताल, पद्म कॉम्प्लैक्स, 320 माउंट रोड, चेन्नई-600035। उनकी विशेषज्ञता आंतरिक चिकित्सा है।

17. **डॉ. सीमा भार्गव (2013)**

वरिष्ठ परामर्शदाता, जैवरसायन विज्ञान विभाग, सर गंगा राम अस्पताल, राजेंद्र नगर, नई दिल्ली-110060। उनकी विशेषज्ञता जैवरसायन विज्ञान है।

18. **डॉ. सौरीन भुनिया (2013)**

सहायक आचार्य, पुल्मोनरी चिकित्सा विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, सिजुआ, दमदमा, भुवनेश्वर-751019। उनकी विशेषज्ञता श्वसन चिकित्सा है।

19. **डॉ. मारिया मैथ्यू डिसूजा (2013)**

वैज्ञानिक-ई, नाभिकीय चिकित्सा एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान, ब्रिगेडियर एस.के. मजूमदार मार्ग, दिल्ली-110054। उनकी विशेषज्ञता विकिरणनिदान है।

20. **डॉ. संदीप डोगरा (2013)**

सहायक आचार्य, सूक्ष्म जैवविज्ञान विभाग, सरकारी मेडिकल कॉलेज, जम्मू-180001। उनकी विशेषज्ञता सूक्ष्म जैवविज्ञान है।

21. **डॉ. शांता दत्ता (2013)**

वैज्ञानिक-एफ, सूक्ष्म जैवविज्ञान विभाग, राष्ट्रीय हैजा एवं आंत्ररोग संस्थान, कोलकाता-700010। उनकी विशेषज्ञता सूक्ष्म जैवविज्ञान है।

22. **डॉ. गिरीश एम.पी. (2013)**

सह आचार्य, हृदयरोग विज्ञान विभाग, जी.बी. पंत अस्पताल, नई दिल्ली-110002। उनकी विशेषज्ञता हृदयरोग विज्ञान है।

23. **डॉ. सोनू गोयल (2013)**

सहायक आचार्य, सामुदायिक चिकित्सा विभाग, जन स्वास्थ्य स्कूल, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता सामुदायिक चिकित्सा है।

24. **डॉ. आशिमा गोयल (2013)**

आचार्य, शिशुदन्तचिकित्सा एवं निवारक दंतचिकित्सा विभाग, मुख स्वास्थ्य विज्ञान केंद्र, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता दंत शल्यचिकित्सा है।

25. **डॉ. मोहित दयाल गुप्ता (2013)**

सह आचार्य, हृदयरोग विज्ञान विभाग, जी.बी. पंत अस्पताल, नई दिल्ली-110002। उनकी विशेषज्ञता हृदयरोग विज्ञान है।

26. **डॉ. सुनीता गुप्ता (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, शरीर-रचना विज्ञान विभाग, एएमसी-एमईटी, चिकित्सा महाविद्यालय, अहमदाबाद-380015। उनकी विशेषज्ञता शरीर-रचना विज्ञान है।

27. **डॉ. अशोक कुमार जेना (2013)**

सहायक आचार्य, दंत शल्यचिकित्सा विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, सिजुआ, दमदमा, भुवनेश्वर-751019। उनकी विशेषज्ञता दंत शल्यचिकित्सा है।

28. **डॉ. नवीन कालरा (2013)**

अपर आचार्य, विकिरणनिदान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता विकिरणनिदान है।

29. **डॉ. राजेश कश्यप (2013)**

अपर आचार्य, रुधिरविज्ञान विभाग, संजय गाँधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ-226014। उनकी विशेषज्ञता रुधिरविज्ञान है।

30. **डॉ. हरशिंदर कौर (2013)**

उप चिकित्सा अधीक्षक, सरकारी मेडिकल कालेज एवं राजेंद्र अस्पताल, पटियाला-147001। उनकी विशेषज्ञता बालरोग विज्ञान है।

31. **डॉ. ज्योतदीप कौर (2013)**

अपर आचार्य, जैवरसायन विज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता जैवरसायन विज्ञान है।

32. **डॉ. विजय कुमार कुठाला (2013)**

जैवरसायन विज्ञान में सह आचार्य, चिकित्सा भेषजगुण विज्ञान एवं चिकित्सा शास्त्र विभाग, निजाम आयुर्विज्ञान संस्थान, पंजागुट्टा, हैदराबाद-500082। उनकी विशेषज्ञता जैवरसायन विज्ञान है।

33. **डॉ. बी.एस. नंद कुमार (2013)**

अध्यक्ष-अनुसंधान एवं आईपीआर, अनुसंधान एवं पेटेन्ट प्रभाग, एमएसआरएएलसी, प्रशासनिक खंड, द्वितीय तल, नई बीईएल मार्ग, बेंगलुरू-560054। उनकी विशेषज्ञता सामुदायिक चिकित्सा है।

34. **डॉ. नरेंद्र कुमार (2013)**

सहायक आचार्य, विकिरणचिकित्सा एवं अर्बुदविज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता विकिरणचिकित्सा है।

35. **डॉ. रीना रंजीत कुमार (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, विषमदंत विज्ञान विभाग, डी.जे. दंतविज्ञान एवं अनुसंधान महाविद्यालय, निवारी मार्ग, मोदीनगर-201204। उनकी विशेषज्ञता दंत शल्यचिकित्सा है।

36. **डॉ. निरूपम मदान (2012)**

सहायक आचार्य, अस्पताल प्रशासन विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता अस्पताल प्रशासन है।

37. **डॉ. एजाज अहमद मलिक (2013)**

आचार्य, सामान्य शल्यचिकित्सा विभाग, शेरे कश्मीर आयुर्विज्ञान संस्थान, सौरा, श्रीनगर-190011 । उनकी विशेषज्ञता शल्यचिकित्सा है।

38. **डॉ. प्रीती जे. मैथ्यू (2013)**

सह आचार्य, संवेदनाहरण एवं गहन देखभाल विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता संवेदनाहरण विज्ञान है।

39. **डॉ. रविमोहन एस. मावुदुरु (2013)**

सहायक आचार्य, मूत्ररोग विज्ञान विभाग, प्रोन्नत मूत्ररोग विज्ञान केंद्र, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता मूत्ररोग विज्ञान है।

40. **डॉ. सबीना नारंग (2013)**

सह आचार्य, नेत्ररोगविज्ञान विभाग, शासकीय मेडिकल कालेज और अस्पताल, चंडीगढ़-160030। उनकी विशेषज्ञता नेत्ररोगविज्ञान है।

41. **डॉ. पंकजा रवि राघव (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, सामुदायिक चिकित्सा एवं परिवार चिकित्सा विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर, राजस्थान-342005। उनकी विशेषज्ञता सामुदायिक चिकित्सा है।

42. **डॉ. मनीष राठी (2013)**

सहायक आचार्य, वृक्क विज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता वृक्क विज्ञान है।

43. **डॉ. हरमीत सिंह रेहान (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, भेषजगुण विज्ञान विभाग, लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज, नई दिल्ली-110001। उनकी विशेषज्ञता नैदानिक भेषजगुण विज्ञान है।

44. **डॉ. विमी रेवाड़ी (2012)**

आचार्य, संवेदनाहरण विज्ञान विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता संवेदनाहरण विज्ञान है।

45. **डॉ. संदेश कुमार शर्मा (2012)**

वरिष्ठ परामर्शदाता, जठरांत्र शल्यचिकित्सा, वैश्विक यकृत एवं जठरांत्र रोगविज्ञान केंद्र, ई-5/24, एरीरा कॉलोनी, भोपाल-462023। उनकी विशेषज्ञता जठरांत्र शल्यचिकित्सा है।

46. **डॉ. गगनदीप सिंह (2013)**

सहायक आचार्य, चिकित्सीय सूक्ष्मजैवविज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता सूक्ष्मजैवविज्ञान है।

47. **डॉ. रमाकांत सिंह (2013)**

वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, विष विज्ञान प्रभाग, केंद्रीय औषध अनुसंधान संस्थान, छत्तर मंजिल पैलेस, लखनऊ-226001। उनकी विशेषज्ञता भेषजगुण विज्ञान है।

48. **डॉ. विभा सिंह (2013)**

आचार्य, मुख एवं मैक्सिलोफेशियल विभाग, दंतविज्ञान संकाय, के.जी. आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय, लखनऊ-226003। उनकी विशेषज्ञता दंत शल्यचिकित्सा है।

49. **डॉ. सोमशेखर ए.आर. (2013)**

आचार्य, बालरोग विज्ञान विभाग, एम.एस. रमैया मेडिकल कॉलेज, एमएसआरआईटी पोस्ट, बेंगलुरू-560054। उनकी विशेषज्ञता बालरोग विज्ञान है।

50. **डॉ. संगीता तलवार (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, रूढ़िवादी दंत चिकित्सा एवं एंडोडॉन्टिक्स विभाग, मौलाना आज़ाद दंत विज्ञान संस्थान, एमएएमसी कॉम्पलैक्स, नई दिल्ली-110002। उनकी विशेषज्ञता दंत शल्यचिकित्सा है।

51. **डॉ. रंजना तिवारी (2013)**

आचार्य, सामुदायिक चिकित्सा/ सामाजिक व निवारक चिकित्सा विभाग, जी.आर. मेडिकल कालेज, ग्वालियर-474002। उनकी विशेषज्ञता सामुदायिक चिकित्सा/ सामाजिक व निवारक चिकित्सा है।

52. **डॉ. सुनीता तिवारी (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, शरीरक्रिया विज्ञान विभाग, किंग जार्ज आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय, लखनऊ-226003। उनकी विशेषज्ञता शरीरक्रिया विज्ञान है।

53. **डॉ. विवेक त्रिखा (2013)**

अपर आचार्य, अस्थिरोग विज्ञान विभाग, जय प्रकाश नारायण एपेक्स अभिघात केंद्र, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता अस्थिरोग विज्ञान है।

54. **डॉ. अमन बबनराव उपगानलावर (2013)**

सह आचार्य, भेषजगुण विज्ञान, एसएनजेबी का एसएसडीजे फार्मेसी कालेज, नेमीनगर, चंदवाड़-423101, जिला-नासिक (महाराष्ट्र)। उनकी विशेषज्ञता भेषजगुण विज्ञान है।

55. **डॉ. चंद्रशेखर डी. उपासनी (2013)**

आचार्य, भेषजगुण विज्ञान एवं प्रधानाचार्य, एसएनजेबी का एसएसडीजे फार्मेसी कालेज, नेमीनगर, चंदवाड़-423101, जिला-नासिक (महाराष्ट्र)। उनकी विशेषज्ञता भेषजगुण विज्ञान है।

56. **डॉ. नीलम वधवा (2013)**

सह आचार्य, विकृतिविज्ञान विभाग, विश्वविद्यालय आयुर्विज्ञान कॉलेज और जीटीबी अस्पताल, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095। उनकी विशेषज्ञता विकृतिविज्ञान है।

जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार

वर्ष 2011 के लिए चिकित्सा राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) का जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार पूर्व नैम्स अध्यक्ष और विख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. एस. पद्मावती, एफएएमएस, को मुख्य अतिथि डॉ. आर. चिदंबरम द्वारा 26 अक्टूबर, 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में आयोजित दीक्षांत समारोह में प्रदान किया गया।

व्याख्यान और पुरस्कार

डॉ. आर. चिदम्बरम, मुख्य अतिथि, ने जोधपुर में आयोजित दीक्षांत समारोह में वर्ष 2012-13 के लिए अकादमी के निम्नलिखित व्याख्यान/पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को पदक प्रदान किएः

व्याख्यान

अंचता लक्ष्मीपति व्याख्यान	डॉ. मोहन कामेस्वरन, एफएएमएस निदेशक, मद्रास ईएनटी अनुसंधान प्रतिष्ठान, नं.1, पहली क्रॉस स्ट्रीट, मेन रोड के पास, राजा अन्नामलाईपुरम, चेन्नई-600028 (तमिलनाडु)
व्याख्यान का शीर्षक	श्रवण तंत्रिका कृत्रिम अंगः भविष्य की एक झलक

डॉ. के.एल. विग व्याख्यान	डॉ. सुनीत सी. सिंघी, एफएएमएस आचार्य और विभागाध्यक्ष, बाल रोगविज्ञान विभाग, प्रोन्नत बालरोग विज्ञान केंद्र, स्नात्कोत्तर चिकित्सा विभाग और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012
व्याख्यान का शीर्षक	बाल अनुजीवन में सुधारः बालरोग विज्ञान गहन देखभाल प्रशिक्षण और शिक्षा ही कुंजी है

डॉ. आर.वी. राजम व्याख्यान	**डॉ. राजेंद्र प्रसाद त्रिपाठी, एफएएमएस** निदेशक, नाभिकीय चिकित्सा एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान, ब्रिगेडियर एस.के. मजूमदार मार्ग, तिमारपुर, दिल्ली-110054
व्याख्यान का शीर्षक	आणविक इमेजिंग में हाल के रूझान

डॉ. प्राण नाथ छुट्टानी व्याख्यान	डॉ. राजेश्वर दयाल, एफएएमएस आचार्य और विभागाध्यक्ष, बाल रोगविज्ञान विभाग, एस.एन. मेडिकल कॉलेज, आगरा-282002
व्याख्यान का शीर्षक	बाल्यकाल कुष्ठ रोग का निदानः बदलते रूझान

डॉ. बलदेव सिंह व्याख्यान	डॉ. के. राधाकृष्णन, एफएएमएस निदेशक, श्री चित्रा तिरूमल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरूवनंतपुरम्, केरल-695011
व्याख्यान का शीर्षक	मिरगी में औषध प्रतिरोध की आणविक आनुवंशिकी

जनरल अमीर चंद व्याख्यान	डॉ. श्रीधर द्विवेदी, एफएएमएस संकायाध्यक्ष/ प्राचार्य एवं आचार्य कायचिकित्सा, निवारक हृद्यरोग विज्ञान के आचार्य, हमदर्द आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान तथा संबद्ध एचएएच शताब्दी अस्पताल, जामिया हमदर्द (हमदर्द विश्वविद्यालय) नई दिल्ली-110062
व्याख्यान का शीर्षक	परिहृद धमनी रोगों में जीवनशैली अंतःक्षेपों का प्रभाव

डॉ. बी.के. आनंद व्याख्यान	डॉ. भोला नाथ धवन, एफएएमएस 3, रामा कृष्णा मार्ग, लखनऊ-226007
व्याख्यान का शीर्षक	*बकोपा मॉन्निएरा* में नूट्रॉपिक क्रियाकलाप का प्रयोगात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन

डॉ. एस. जानकी स्मारक व्याख्यान (वर्ष 2013)	डॉ. प्रतिभा सिंघी, एफएएमएस आचार्य, प्रमुख, बालरोग तंत्रिकाविज्ञान एवं तंत्रिका विकास, बालरोग विज्ञान विभाग, स्नात्कोत्तर चिकित्सा विभाग और अनुसंधान संस्थान, सेक्टर-12, चंडीगढ़-160012
व्याख्यान का शीर्षक	भारत में बच्चों में तंत्रिकाविज्ञान संबंधी विकारों के बोझ में कमी लाना - मिशन संभव

डॉ. वी.आर. खानोल्कर व्याख्यान	डॉ. कुसुम जोशी, एफएएमएस आचार्य और विभागाध्यक्ष, ऊतक रोगविज्ञान विभाग एवं उप-संकायाध्यक्ष, स्नात्कोत्तर चिकित्सा विभाग और अनुसंधान संस्थान, सेक्टर-12, चंडीगढ़-160012
व्याख्यान का शीर्षक	गुर्दा प्रत्यारोपण के विषाणुज शत्रु

पुरस्कार

डॉ. एस. एस. मिश्रा स्मारक पुरस्कार	डॉ. के.एन. चिदम्बर मूर्ति, अध्यक्ष अनुसंधान एवं सीएएम, अनुसंधान एवं पेटेन्ट प्रभाग एम.एस. रमैया स्वास्थ्य एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान अकादमी, एमएसआरएएलसी बिल्डिंग, एमएसआरआईटी पोस्ट बेंगलुरु-560054

डॉ. आर. एम. कासलीवाल पुरस्कार	डॉ. किम वैफी आचार्य, ऊतक विकृतिविज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012
डॉ. विमला विरमानी पुरस्कार	डॉ. पी.एस. जॉन निदेशक, फातिमा माता स्पाइनल कॉर्ड पुनर्योजी केंद्र, विभागाध्यक्ष पुनर्योजी चिकित्सा, सेंट थॉमस अस्पताल, चंगनाचैरी, केरल
श्याम लाल सक्सेना स्मारक पुरस्कार	डॉ. टी. सामराज, एफएएमएस, 24/ 12 सी, लक्ष्मीपुरम, गाँधी रोड, सलेम-636007
दांतव्य लोक स्वास्थ्य पुरस्कार	डॉ. महेश वर्मा, एफएएमएस निदेशक-प्रधानाचार्य मौलाना आज़ाद दंत विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली-110002
डॉ. एस.एस. सिद्धू पुरस्कार	डॉ. ओ.पी. खरबंदा, एफएएमएस आचार्य एवं अध्यक्ष ओर्थोडोंटिक्स एवं डेंटोफेशियल विरूपता प्रभाग, दंत शिक्षा एवं अनुसंधान केंद्र, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029

डॉ. विनोद कुमार भार्गव पुरस्कार	डॉ. बिकाश मेधी अपर आचार्य, भेषजगुण विज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012

आचार्य जे.एस. बजाज पुरस्कार

25 अक्टूबर, 2013 को "निद्रा चिकित्सा" पर आयोजित संगोष्ठी के लिए सर्वश्रेष्ठ छात्र प्रदर्शन का आचार्य जे.एस. बजाज पुरस्कार अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर के एमबीबीएस द्वितीय वर्ष के छात्र श्री अभिजीत सिंह बराथ को मुख्य अतिथि डॉ. आर. चिदंबरम द्वारा 26 अक्टूबर, 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में आयोजित दीक्षांत समारोह में प्रदान किया गया।

परिषद् की बैठकें

वर्ष 2013 के दौरान परिषद् की दो बैठकें आयोजित की गई थीं।

पहली बैठक 17 जुलाई, 2013 को और दूसरी बैठक 27 सितम्बर, 2013 को राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली में आयोजित की गई थीं।

सेवानिवृत्त होने वाले परिषद् के सदस्यों की रिक्तियां भरना-2013

निम्नलिखित उन सदस्यों की सूची है, जो वर्ष 2013 में अपना कार्यकाल पूरा होने पर सेवानिवृत्त हुए और जिन्हें परिषद के सदस्यों के रूप में निर्वाचित किया गया

सेवानिवृत्त	निर्वाचित
1. डॉ. पी.के दवे	1. एयर मार्शल (सेवानिवृत्त) डॉ. मंजीत सिंह बोपाराय
2. डॉ. कमला कृष्णस्वामी	2. डॉ. योगेश चावला
3. एयर मार्शल (सेवानिवृत्त) डॉ. मंजीत सिंह बोपाराय	3. डॉ. पी.के दवे
4. डॉ. योगेश चावला	4. डॉ. वी. मोहन कुमार
5. डॉ. मीरा रजानी	5. डॉ. मीरा रजानी

परिषद् ने सेवानिवृत्त हो रहे सदस्यों द्वारा प्रदान की गई सेवाओं की प्रशंसा करते हुए इसे अपने रिकार्ड पर रखा।

अध्येताओं का निर्वाचन-2013

साख समिति ने वर्ष 2013 की अध्येतावृत्ति के लिए निर्वाचन हेतु 144 जैवचिकित्सा वैज्ञानिकों पर विचार किया, इनमें से 69 नए नामांकन (43 प्रत्यक्ष और 26 प्रोन्नत) थे और 75 अग्रेनीत नामांकन (38 प्रत्यक्ष और 37 प्रोन्नत) थे। साख समिति ने अध्येतावृत्ति प्रदान करने के लिए 30 जैवचिकित्सा वैज्ञानिकों की सिफारिश की। अध्येतावृत्ति और सदस्यता के निर्वाचन के लिए अनुशंसित जैवचिकित्सा वैज्ञानिकों के जीवनवृत्त की फाइल की जांच करने के बाद साख समिति की सिफारिशों को परिषद् द्वारा अनुमोदित किया गया। उन्हें, नियमों में निर्धारित कार्यविधि के अनुसार, अध्येताओं के आम निकाय द्वारा मतदान करके अध्येताओं के रूप में निर्वाचित किया गया। निर्वाचित अध्येताओं के नाम नीचे दिए गए हैं:

1. **डॉ. राकेश अग्रवाल**

आचार्य, जठरांत्र विज्ञान विभाग, संजय गाँधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ-226014। उनकी विशेषज्ञता संवेदनाहरण विज्ञान है। उनकी विशेषज्ञता जठरांत्र विज्ञान है।

2. **डॉ. बलराम ऐरन**

आचार्य और विभागाध्यक्ष, हृदय वक्ष संवहनी सर्जरी एवं प्रमुख, हृदय वक्ष विज्ञान केंद्र, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-10029। उनकी विशेषज्ञता हृदय वक्ष एवं संवहनी सर्जरी है।

3. **डॉ. प्रभा एस. चंद्र**

आचार्य, मनोरोगविज्ञान विभाग, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिकाविज्ञान संस्थान, होसुर रोड, बेंगलुरू-560029। उनकी विशेषज्ञता मनोरोगविज्ञान विज्ञान है।

4. **डॉ. पन्ना चौधरी**

परामर्शदाता बाल चिकित्सक, सी 5/262, सैक्टर-31, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर- 201301। उनकी विशेषज्ञता बाल शल्यचिकित्सा है।

5. **डॉ. अर्जुन दास**

आचार्य और विभागाध्यक्ष, नाक, कान व गला रोग विभाग, शासकीय मेडिकल कालेज और अस्पताल, चंडीगढ़-160030। उनकी विशेषज्ञता नाक, कान व गला रोग है।

6. **डॉ. अजय नारायण गंगोपाध्याय**

आचार्य और विभागाध्यक्ष, बाल शल्यचिकित्सा विभाग, आयुर्विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005। उनकी विशेषज्ञता बाल शल्यचिकित्सा है।

7. **डॉ. रविन्द्र गोस्वामी**

आचार्य, अंतःस्त्राविकी एवं चयापचय विभाग, जैव प्रौद्योगिकी खंड, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता मधुमेह एवं अंतःस्त्राविकी है।

8. **डॉ. अशोक कुमार गुप्ता**

परामर्शदाता प्लास्टिक सर्जन, सूइट नं.16, द्वितीय तल, लॉड मैंशन, चरनी रोड स्टेशन के सामने, 21 एम. करवे मार्ग, मुंबई-400004। उनकी विशेषज्ञता प्लास्टिक सर्जरी है।

9. **डॉ. संजीव कुमार गुप्ता**

आचार्य, सामान्य शल्यचिकित्सा विभाग, आयुर्विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005। उनकी विशेषज्ञता शल्यचिकित्सा है।

10. **डॉ. प्रमोद कुमार झुल्का**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, विकिरणचिकित्सा विभाग, डॉ. बी.आर.ए. संस्थान रोटरी कैंसर अस्पताल, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता विकिरणचिकित्सा है।

11. **डॉ. पटवर्धन भूषण केशव**

आचार्य एवं निदेशक, स्वास्थ्य विज्ञान का अंतःविषय विद्यालय, पुणे विश्वविद्यालय, गणेशखिंड, पुणे-411007। उनकी विशेषज्ञता जैवरसायन विज्ञान है।

12. **डॉ. निरंजन खंडेलवाल**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, विकिरण निदान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता विकिरण निदान है।

13. **डॉ. हरबीर सिंह कोहली**

आचार्य, वृक्क विज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता वृक्क विज्ञान है।

14. **डॉ. राज कुमार**

निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, पशुलोक, वीरभद्र मार्ग, ऋषिकेश-249201। उनकी विशेषज्ञता तंत्रिका शल्यचिकित्सा है।

15. **डॉ. विजय कुमार**

स्टाफ अनुसंधान वैज्ञानिक, विषाणु विज्ञान समूह, आनुवंशिकी इंजीनियरी तथा जैव-प्रौद्योगिकी अन्तरराष्ट्रीय केन्द्र, अरूणा आसफ अली मार्ग, नई दिल्ली-110067। उनकी विशेषज्ञता आणविक जैवविज्ञान है।

16. **डॉ. चित्रा मंडल**

वैज्ञानिक-एच, जे.सी. बोस राष्ट्रीय अध्येता, अध्यक्ष, सीएसआईआर-इनोवेशन कॉम्पलैक्स, अध्यक्ष, अर्बुद जैवविज्ञान एवं सूजन विकार प्रभाग, सीएसआईआर-राष्ट्रीय रसायन जैवविज्ञान संस्थान, 4, राजा एस.सी. मलिक मार्ग, जाधवपुर, कोलकाता-700032। उनकी विशेषज्ञता आणविक जैवविज्ञान है।

17. **डॉ. मन मोहन मेंहदीरत्ता**

निदेशक, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, तंत्रिका विज्ञान विभाग, जनकपुरी अति विशिष्टता अस्पताल, सी-2/बी, जनकपुरी, नई दिल्ली-110002। उनकी विशेषज्ञता तंत्रिका विज्ञान है।

18. **डॉ. आर. रेणुका नायर**

वैज्ञानिक जी (वरिष्ठ श्रेणी), अध्यक्ष, कोशकीय एवं आणविक हृदरोग विज्ञान प्रभाग, श्री चित्रा तिरूमल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरूवनंतपुरम्, केरल-695011। उनकी विशेषज्ञता शरीर-क्रिया विज्ञान है।

19. **डॉ. चित्तरंजन नाराहारी पुरंदरे**

संकायाध्यक्ष, भारतीय प्रसूतिविज्ञान और स्त्रीरोगविज्ञान महाविद्यालय, मुम्बई, पूरणदेई अस्पताल, 31/सी, डॉ. एन.ए. पुरंदरे मार्ग, चौपाटी, मुम्बई-400007। उनकी विशेषज्ञता प्रसूतिविज्ञान और स्त्रीरोगविज्ञान है।

20. **डॉ. विनोद रैना**

पूर्व आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, चिकित्सा अर्बुदविज्ञान, डॉ. बी.आर.ए. संस्थान रोटरी कैंसर अस्पताल, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता चिकित्सा अर्बुदविज्ञान है।

21. **डॉ. जसपाल सिंह संधु**

आचार्य एवं संकायाध्यक्ष, खेल चिकित्सा और भौतिक चिकित्सा संकाय, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर-143001। उनकी विशेषज्ञता खेल चिकित्सा है।

22. **डॉ. अशोक शाह**

आचार्य, श्वसन चिकित्सा विभाग, वल्लभभाई पटेल चेस्ट संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007। उनकी विशेषज्ञता श्वसन चिकित्सा है।

23. **डॉ. जय वीर सिंह**

निदेशक, उत्तर प्रदेश आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान ग्रामीण संस्थान, सैफई, इटावा-206130। उनकी विशेषज्ञता सामुदायिक चिकित्सा/ सामाजिक एवं निवारक चिकित्सा है।

24. **डॉ. एम. श्रीनिवासन**

आचार्य, नेत्ररोग विज्ञान एवं निदेशक प्रतिष्ठित, अरविंद नेत्र अस्पताल एवं स्नातकोत्तर नेत्ररोग विज्ञान संस्थान, नं.1, अन्ना नगर, मदुरै-625020। उनकी विशेषज्ञता नेत्ररोग विज्ञान है।

25. **डॉ. अनिल सूरी**

स्टाफ वैज्ञानिक-VII, कैंसर सूक्ष्म सारणी, जीन एवं प्रोटीन प्रयोगशाला, राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान, अरूणा आसफ अली मार्ग, नई दिल्ली-110067। उनकी विशेषज्ञता कैंसर जैवविज्ञान है।

26. **डॉ. देविन्दर मोहन थापा**

आचार्य, त्वचारोग एवं रतिजरोगविज्ञान विभाग, जवाहरलाल स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, पुद्दुचेरी-605006। उनकी विशेषज्ञता त्वचारोग एवं रतिजरोगविज्ञान है।

27. **डॉ. मुकेश त्रिपाठी**

आचार्य, संवेदनाहरण विज्ञान विभाग, संजय गाँधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ-226014। उनकी विशेषज्ञता संवेदनाहरण विज्ञान है।

28. **डॉ. किम वैफी**

आचार्य, ऊतक रोगविज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता विकृति विज्ञान है।

29. **डॉ. नीना वलेचा**

निदेशक, राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान (आईसीएमआर), सैक्टर-8, द्वारका, नई दिल्ली-110077। उनकी विशेषज्ञता भेषजगुण विज्ञान है।

30. **डॉ. पलुरु विजयाचारी**

वैज्ञानिक जी एवं निदेशक, क्षेत्रीय चिकित्सा अनुसंधान केंद्र(आईसीएमआर), विश्व स्वास्थ्य संगठन संक्रामी कामला सहयोग केंद्र, डॉलीगंज, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह-744101। उनकी विशेषज्ञता सूक्ष्म जैवविज्ञान है।

सदस्यों का निर्वाचन-2013

सदस्यता के निर्वाचन के लिए कुल 69 उम्मीदवारों के नाम पर विचार किया गया (जिनमें 65 नए नामांकन और 04 अग्रेषित नामांकन थे)। साख समिति ने 58 उम्मीदवारों की सिफारिश की और वे परिषद् द्वारा अनुमोदित किए गए। इसके बाद उनको, अध्येताओं की सामान्य निकाय द्वारा नियमों में निर्धारित कार्यविधि के अनुसार, मतदान द्वारा सदस्य के रूप में निर्वाचित किया गया। निर्वाचित सदस्यों के नाम नीचे दिए गए हैं:

1. **डॉ. श्रीनिवासन अनंत (2013)**

वरिष्ठ परामर्शदाता, आंतरिक चिकित्सा विभाग, अपोलो विशेषता अस्पताल, पद्म कॉम्प्लैक्स, 320 माउंट रोड, चेन्नई-600035। उनकी विशेषज्ञता आंतरिक चिकित्सा है।

2. **डॉ. यतन पाल सिंह बलहारा**

सहायक आचार्य, मनोरोग विज्ञान विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता मनोरोग विज्ञान है।

3. **डॉ. माला भल्ला**

सह आचार्य, त्वचारोग एवं रतिजरोगविज्ञान विभाग, सरकारी मेडिकल कालेज एवं अस्पताल, चंडीगढ़-160030। उनकी विशेषज्ञता त्वचारोग एवं रतिजरोगविज्ञान है।

4. **डॉ. सीमा भार्गव (2013)**

वरिष्ठ परामर्शदाता, जैवरसायन विज्ञान विभाग, सर गंगा राम अस्पताल, राजेंद्र नगर, नई दिल्ली-110060। उनकी विशेषज्ञता जैवरसायन विज्ञान है।

5. **डॉ. अलका भाटिया**

सहायक आचार्य, आनुप्रयोगिक चिकित्सा एवं जैवप्रौद्योगिकी विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता विकृति विज्ञान है।

6. **डॉ. सौरीन भुनिया (2013)**

सहायक आचार्य, पुल्मोनरी चिकित्सा विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, सिजुआ, दमदमा, भुवनेश्वर-751019। उनकी विशेषज्ञता श्वसन चिकित्सा है।

7. **डॉ. मारिया मैथ्यू डिसूजा (2013)**

वैज्ञानिक-ई, नाभिकीय चिकित्सा एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान, ब्रिगेडियर एस.के. मजूमदार मार्ग, दिल्ली-110054। उनकी विशेषज्ञता विकिरणनिदान है।

8. **डॉ. संदीप डोगरा (2013)**

सहायक आचार्य, सूक्ष्म जैवविज्ञान विभाग, सरकारी मेडिकल कॉलेज, जम्मू-180001। उनकी विशेषज्ञता सूक्ष्म जैवविज्ञान है।

9. **डॉ. शांता दत्ता (2013)**

वैज्ञानिक-एफ, सूक्ष्म जैवविज्ञान विभाग, राष्ट्रीय हैजा एवं आंत्ररोग संस्थान, कोलकाता-700010। उनकी विशेषज्ञता सूक्ष्म जैवविज्ञान है।

10. **डॉ. भागीरथी द्विबेदी**

वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी (वैज्ञानिक-सी), क्षेत्रीय चिकित्सा अनुसंधान केंद्र(आईसीएमआर), चंद्रशेखरपुर, भुवनेश्वर-751023। उनकी विशेषज्ञता बालरोग विज्ञान है।

11. **डॉ. तदूरी गंगाधर**

अपर आचार्य, वृक्क विज्ञान विभाग, निजाम आयुर्विज्ञान संस्थान, पंजागुट्टा, हैदराबाद-500082। उनकी विशेषज्ञता वृक्क विज्ञान है।

12. **डॉ. गिरीश एम.पी. (2013)**

सह आचार्य, हृदयरोग विज्ञान विभाग, जी.बी. पंत अस्पताल, नई दिल्ली-110002। उनकी विशेषज्ञता हृदयरोग विज्ञान है।

13. **डॉ. प्रवीण कुमार गोयल (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हृदयरोग विज्ञान विभाग, संजय गाँधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ-226014। । उनकी विशेषज्ञता हृदयरोग विज्ञान है।

14. **डॉ. सोनू गोयल (2013)**

सहायक आचार्य, सामुदायिक चिकित्सा विभाग, जन स्वास्थ्य स्कूल, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता सामुदायिक चिकित्सा है।

15. **डॉ. आशिमा गोयल (2013)**

आचार्य, शिशुदन्तचिकित्सा एवं निवारक दंतचिकित्सा विभाग, मुख स्वास्थ्य विज्ञान केंद्र, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता दंत शल्यचिकित्सा है।

16. **डॉ. मोहित दयाल गुप्ता (2013)**

सह आचार्य, हृदयरोग विज्ञान विभाग, जी.बी. पंत अस्पताल, नई दिल्ली-110002। उनकी विशेषज्ञता हृदयरोग विज्ञान है।

17. **डॉ. सुनीता गुप्ता (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, शरीर-रचना विज्ञान विभाग, एएमसी-एमईटी, चिकित्सा महाविद्यालय, अहमदाबाद-380015। उनकी विशेषज्ञता शरीर-रचना विज्ञान है।

18. **डॉ. अशोक कुमार जेना (2013)**

सहायक आचार्य, दंत शल्यचिकित्सा विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, सिजुआ, दमदमा, भुवनेश्वर-751019। उनकी विशेषज्ञता दंत शल्यचिकित्सा है।

19. **डॉ. नवीन कालरा (2013)**

अपर आचार्य, विकिरणनिदान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता विकिरणनिदान है।

20. **डॉ. राजेश कश्यप (2013)**

अपर आचार्य, रुधिरविज्ञान विभाग, संजय गाँधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ-226014। उनकी विशेषज्ञता रुधिरविज्ञान है।

21. **डॉ. हरशिंदर कौर (2013)**

उप चिकित्सा अधीक्षक, सरकारी मेडिकल कालेज एवं राजेंद्र अस्पताल, पटियाला-147001। उनकी विशेषज्ञता बालरोग विज्ञान है।

22. **डॉ. ज्योतदीप कौर (2013)**

अपर आचार्य, जैवरसायन विज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता जैवरसायन विज्ञान है।

23. **डॉ. विजय कुमार कुठाला (2013)**

जैवरसायन विज्ञान में सह आचार्य, चिकित्सा भेषजगुण विज्ञान एवं चिकित्सा शास्त्र विभाग, निजाम आयुर्विज्ञान संस्थान, पंजागुट्टा, हैदराबाद-500082। उनकी विशेषज्ञता जैवरसायन विज्ञान है।

24. **डॉ. बी.एस. नंद कुमार (2013)**

अध्यक्ष-अनुसंधान एवं आईपीआर, अनुसंधान एवं पेटेन्ट प्रभाग, एमएसआरएएलसी, प्रशासनिक खंड, द्वितीय तल, नई बीईएल मार्ग, बेंगलुरू-560054। उनकी विशेषज्ञता सामुदायिक चिकित्सा है।

25. **डॉ. नरेंद्र कुमार (2013)**

सहायक आचार्य, विकिरणचिकित्सा एवं अर्बुदविज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता विकिरणचिकित्सा है।

26. **डॉ. रीना रंजीत कुमार (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, विषमदंत विज्ञान विभाग, डी.जे. दंतविज्ञान एवं अनुसंधान महाविद्यालय, निवारी मार्ग, मोदीनगर-201204। उनकी विशेषज्ञता दंत शल्यचिकित्सा है।

27. **डॉ. यशवंत कुमार (2013)**

सहायक आचार्य, प्रतिरक्षा विकृतिविज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता प्रतिरक्षा विकृतिविज्ञान है।

28. **डॉ. इंदु लता (2013)**

सहायक आचार्य, मातृ एवं प्रजनन स्वास्थ्य, संजय गाँधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, राय बरेली मार्ग, लखनऊ-226014। उनकी विशेषज्ञता प्रसूतिविज्ञान और स्त्रीरोगविज्ञान है।

29. **डॉ. निरूपम मदान (2012)**

सहायक आचार्य, अस्पताल प्रशासन विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता अस्पताल प्रशासन है।

30. **डॉ. पवन मल्होत्रा (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, भेषजगुण विज्ञान विभाग, आचार्य श्री चंदर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, जम्मू-180017। उनकी विशेषज्ञता भेषजगुण विज्ञान है।

31. **डॉ. एजाज अहमद मलिक (2013)**

आचार्य, सामान्य शल्यचिकित्सा विभाग, शेरे कश्मीर आयुर्विज्ञान संस्थान, सौरा, श्रीनगर-190011 । उनकी विशेषज्ञता शल्यचिकित्सा है।

32. **डॉ. प्रीती जे. मैथ्यू (2013)**

सह आचार्य, संवेदनाहरण एवं गहन देखभाल विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता संवेदनाहरण विज्ञान है।

33. **डॉ. रविमोहन एस. मावुदुरु (2013)**

सहायक आचार्य, मूत्ररोग विज्ञान विभाग, प्रोन्नत मूत्ररोग विज्ञान केंद्र, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता मूत्ररोग विज्ञान है।

34. **डॉ. सबीना नारंग (2013)**

सह आचार्य, नेत्ररोगविज्ञान विभाग, शासकीय मेडिकल कालेज और अस्पताल, चंडीगढ़-160030। उनकी विशेषज्ञता नेत्ररोगविज्ञान है।

35. **डॉ. दीपिका पांधी (2013)**

सह आचार्य, त्वचारोग एवं रतिजरोगविज्ञान विभाग, विश्वविद्यालय आयुर्विज्ञान कॉलेज और जीटीबी अस्पताल, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095। उनकी विशेषज्ञता त्वचारोग एवं रतिजरोगविज्ञान है।

36. **डॉ. पंकजा रवि राघव (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, सामुदायिक चिकित्सा एवं परिवार चिकित्सा विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर, राजस्थान-342005। उनकी विशेषज्ञता सामुदायिक चिकित्सा है।

37. **डॉ. मनीष राठी (2013)**

सहायक आचार्य, वृक्क विज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता वृक्क विज्ञान है।

38. **डॉ. हरमीत सिंह रेहान (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, भेषजगुण विज्ञान विभाग, लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज, नई दिल्ली-110001। उनकी विशेषज्ञता नैदानिक भेषजगुण विज्ञान है।

39. **डॉ. विमी रेवाड़ी (2012)**

आचार्य, संवेदनाहरण विज्ञान विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता संवेदनाहरण विज्ञान है।

40. **डॉ. रामाकृष्णन अयलूर शेषाद्री (2012)**

आचार्य, शल्यचिकित्सा अर्बुदविज्ञान, कैंसर संस्थान (डब्लयूआईए), डॉ. एस. के. कृष्णामूर्ति कैंपस, नं. 18, सरदार पटेल मार्ग, गिंडी, चेन्नई-600036। उनकी विशेषज्ञता शल्यचिकित्सा अर्बुदविज्ञान है।

41. **डॉ. अतुल शर्मा (2012)**

आचार्य, चिकित्सा अर्बुदविज्ञान, डॉ. बी.आर.ए. संस्थान रोटरी कैंसर अस्पताल, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता चिकित्सा अर्बुदविज्ञान है।

42. **डॉ. संदेश कुमार शर्मा (2012)**

वरिष्ठ परामर्शदाता, जठरांत्र शल्यचिकित्सा, वैश्विक यकृत एवं जठरांत्र रोगविज्ञान केंद्र, ई-5/24, एरीरा कॉलोनी, भोपाल-462023। उनकी विशेषज्ञता जठरांत्र शल्यचिकित्सा है।

43. **डॉ. शेफाली खन्ना शर्मा (2013)**

सहायक आचार्य, आंतरिक चिकित्सा विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता संधिवातरोग विज्ञान है।

44. **डॉ. दीप्ति शास्त्री (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, शरीर-रचना विज्ञान विभाग, विनायक मिशन का कृपानंदा वरियार मेडिकल कालेज, सलीम, तमिलनाडु-636308। उनकी विशेषज्ञता शरीर-रचना विज्ञान है।

45. **डॉ. गगनदीप सिंह (2013)**

सहायक आचार्य, चिकित्सीय सूक्ष्मजैवविज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012। उनकी विशेषज्ञता सूक्ष्मजैवविज्ञान है।

46. **डॉ. मनप्रीत सिंह (2013)**

सहायक आचार्य, संवेदनाहरण एवं गहन देखभाल विभाग, शासकीय मेडिकल कालेज और अस्पताल, चंडीगढ़-160030। उनकी विशेषज्ञता संवेदनाहरण विज्ञान है।

47. **डॉ. रमाकांत सिंह (2013)**

वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, विष विज्ञान प्रभाग, केंद्रीय औषध अनुसंधान संस्थान, छत्तर मंजिल पैलेस, लखनऊ-226001। उनकी विशेषज्ञता भैषजगुण विज्ञान है।

48. **डॉ. विभा सिंह (2013)**

आचार्य, मुख एवं मैक्सिलोफेशियल विभाग, दंतविज्ञान संकाय, के.जी. आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय, लखनऊ-226003। उनकी विशेषज्ञता दंत शल्यचिकित्सा है।

49. **डॉ. सोमशेखर ए.आर. (2013)**

आचार्य, बालरोग विज्ञान विभाग, एम.एस. रमैया मेडिकल कॉलेज, एमएसआरआईटी पोस्ट, बेंगलुरू-560054। उनकी विशेषज्ञता बालरोग विज्ञान है।

50. **डॉ. शशि श्रीवास्तव (2013)**

आचार्य, संवेदनाहरण विज्ञान विभाग, संजय गाँधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ-226014। उनकी विशेषज्ञता संवेदनाहरण विज्ञान है।

51. **डॉ. गौतम दीपक तलावाडेकर (2013)**

वरिष्ठ कुल-सचिव, कंधा एवं कोहनी, क्यूईक्यूएम अस्पताल, मार्गेट, ब्रिटेन। उनकी विशेषज्ञता अस्थिरोग शल्यचिकित्सा है।

52. **डॉ. संगीता तलवार (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, रुढ़िवादी दंत चिकित्सा एवं एंडोडॉन्टिक्स विभाग, मौलाना आज़ाद दंत विज्ञान संस्थान, एमएएमसी कॉम्पलैक्स, नई दिल्ली-110002। उनकी विशेषज्ञता दंत शल्यचिकित्सा है।

53. **डॉ. रंजना तिवारी (2013)**

आचार्य, सामुदायिक चिकित्सा/ सामाजिक व निवारक चिकित्सा विभाग, जी.आर. मेडिकल कालेज, ग्वालियर-474002। उनकी विशेषज्ञता सामुदायिक चिकित्सा/ सामाजिक व निवारक चिकित्सा है।

54. **डॉ. सुनीता तिवारी (2013)**

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, शरीरक्रिया विज्ञान विभाग, किंग जार्ज आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय, लखनऊ-226003। उनकी विशेषज्ञता शरीरक्रिया विज्ञान है।

55. **डॉ. विवेक त्रिखा (2013)**

अपर आचार्य, अस्थिरोग विज्ञान विभाग, जय प्रकाश नारायण एपेक्स अभिघात केंद्र, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029। उनकी विशेषज्ञता अस्थिरोग विज्ञान है।

56. **डॉ. अमन बबनराव उपगानलावर (2013)**

सह आचार्य, भेषजगुण विज्ञान, एसएनजेबी का एसएसडीजे फार्मेसी कालेज, नेमीनगर, चंदवाड़-423101, जिला-नासिक (महाराष्ट्र)। उनकी विशेषज्ञता भेषजगुण विज्ञान है।

57. **डॉ. चंद्रशेखर डी. उपासनी (2013)**

आचार्य, भेषजगुण विज्ञान एवं प्रधानाचार्य, एसएनजेबी का एसएसडीजे फार्मेसी कालेज, नेमीनगर, चंदवाड़-423101, जिला-नासिक (महाराष्ट्र)। उनकी विशेषज्ञता भेषजगुण विज्ञान है।

58. **डॉ. नीलम वधवा (2013)**

सह आचार्य, विकृतिविज्ञान विभाग, विश्वविद्यालय आयुर्विज्ञान कॉलेज और जीटीबी अस्पताल, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095। उनकी विशेषज्ञता विकृतिविज्ञान है।

एमएनएएमएस

विनियमन-V के अंतर्गत अकादमी की सदस्यता-जिन उम्मीदवारों ने राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड द्वारा संचालित परीक्षा उत्तीर्ण की है और जिनका नाम सदस्यता (एनएनएएमएस) के लिए विधिवत प्रस्तावित किया गया है।

विनियमन- **V** निम्नानुसार प्रदान करता हैः

> **'वे उम्मीदवार, जो राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड द्वारा संचालित परीक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं, वे राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी के सदस्य के रूप में प्रवेश के लिए व्यक्तिगत रूप से आवेदन प्रस्तुत करेंगे। उनका नाम अकादमी के कम से कम एक अध्येता द्वारा विधिवत प्रस्तावित किया गया हो तथा उम्मीदवार के चरित्र एवं आचरण को सत्यापित किया गया हो। राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी की परिषद् के अनुमोदन के आधार पर उम्मीदवार को एककालिक 7000/- रुपये के आजीवन सदस्यता शुल्क (1000/- रुपये के प्रवेश शुल्क सहित) अथवा समय-समय पर यथा-प्रभारित शुल्क तथा दायित्व बंधयपत्र के निष्पादन के बाद अकादमी के सदस्य के रुप में भर्ती किया जाएगा।'**

तदनुसार, उम्मीदवारों के अनुरोध पर अकादमी द्वारा आवेदन प्रपत्रों को जारी किया गया।

निम्नलिखित उम्मीदवार, जिन्होंने उपर्युक्त श्रेणी के अधीन अकादमी की सदस्यता (एमएनएएमएस) के लिए आवेदन किया था और जिन्हें विनियमन-**V** के अधीन यथानिर्दिष्ट कम से कम एक अध्येता (फेलो) द्वारा विधिवत प्रस्तावित किया गया था, के नामों को परिषद् के समक्ष विचारार्थ दिनांक 17 जुलाई, 2013 को और 27 सितम्बर, 2013 को आयोजित बैठक में रखा गया। परिषद ने उसे अनुमोदित किया।

दिनांक 17 जुलाई, 2013 को आयोजित परिषद की बैठक में अनुमोदित नाम

1	डॉ. लक्ष्मी राजमोहन
2	डॉ. मोहम्मद सलीम नाईक
3	डॉ. अरोड़ा सौरभ सुरेंद्र नाथ
4	डॉ. अग्रवाल शिल्पा डौडयाल
5	डॉ. निकहते शरद शामराव

6	डॉ. अभिजीत मंडल
7	डॉ. रोहित सिंगला
8	डॉ. गौरव शेखर शर्मा
9	डॉ. पाटिल राहुल कृष्णराव
10	डॉ. साकेत आर्या

11	डॉ. नाजिया ए. पी.
12	डॉ. शिवा दीप एस.
13	डॉ. नेरकर किरण त्राम्बक
14	डॉ. जय कुमार राय
15	डॉ. दास सुमिता शिशिरकुमार
16	डॉ. अमित कुमार
17	डॉ. प्रकाश दवे
18	डॉ. अमीरा डी. चिमुलकर
19	डॉ. गुरिंदर बीर सिंह कोहली
20	डॉ. मजूमदार विशाखा अतुल
21	डॉ. प्रीतम चटर्जी
22	डॉ. जगजीत कुमार पांडेय
23	डॉ. विल्मा डेलफाइन सिल्विया सी आर.
24	डॉ. पोतदार प्रबोधन प्रवीण
25	डॉ. मनीष साहनी
26	डॉ. एस. कल्याणी
27	डॉ. काले सुभाष मनोहर
28	डॉ. अयारेकर मिनौती वसंतराव
29	डॉ. शिबी जॉन
30	डॉ. राणे गंगाराम तातेभाउ
31	डॉ. निरंजन टी.जे.
32	डॉ. देविंदर सिंह
33	डॉ. सूर्यप्रकाश धनेरिया
34	डॉ. जसबीर कौर
35	डॉ. अरुण कुमार के.
36	डॉ. अभिमान सिंह
37	डॉ. किशन राव के.

38	डॉ. पिंकी
39	डॉ. दिव्या रत्न धवन
40	डॉ. विनंत भार्गव
41	डॉ. सुजीथ जनार्दन
42	डॉ. कृष्णप्रसाद एम.
43	डॉ. वंदना रामकृष्ण नाईक
44	डॉ. सुरजीत सेठ
45	डॉ. विकास खेतान
46	डॉ. अभिनव कुमार
47	डॉ. नारखेड़े नीलेश शंकर
48	डॉ. निरंजन रेड्डी जी.
49	डॉ. संजय कुमार पांडेय
50	डॉ. निधि गोयल
51	डॉ. सरिता सचदेवा
52	डॉ. मधु के. जी.
53	डॉ. हरीश टी.
54	डॉ. रुगमिनी बी. वी.
55	डॉ. बृजराय वी.
56	डॉ. मोहम्मद तुफैल शेख
57	डॉ. एम. दीपा
58	डॉ. शाह कार्तिक जितेशचंद्र
59	डॉ. जैन ज्योतिबाला कनकमल
60	डॉ. प्रभात कुमार चंद
61	डॉ. नवीन अग्रवाल
62	डॉ. मोनिका गुप्ता
63	डॉ. थॉमस जॉर्ज
64	डॉ. अभिषेक राजेंद्र कुमार पांडे
65	डॉ. देवाशीष धर

66	डॉ. अमित शंकर
67	डॉ. भिडे रोहित प्रकाश
68	डॉ. वरुण यादव
69	डॉ. राधिका के. पी.
70	डॉ. नेमाड़े प्रदीप शरद
71	डॉ. नरेन्द्र चंद्रभानजी ताजने
72	डॉ. अनंत खुराना
73	डॉ. रजत जैन
74	डॉ. बागुल अभय शिवराम
75	डॉ. कठवाड़िया कृणाल मोहनसिंह
76	डॉ. बीजू पी. पी.
77	डॉ. सौरभ वत्स
78	डॉ. राज कुमार हर्षवाल
79	डॉ. राणावरे अभिजीत सूर्यकांत
80	डॉ. मालविका गुप्ता
81	डॉ. धालीवाल कुंवर विक्रम रंजीत सिंह
82	डॉ. सुकांता सेन
83	डॉ. अनूप कुमार
84	डॉ. नाईगाँवकर ऋषिकेश अरूणराव
85	डॉ. जसविंदर सिंह
86	डॉ. प्रणव कुमार
87	डॉ. मुरकुटे अमोल शिवाजी
88	डॉ. दिवेश जालान
89	डॉ. जगत लाल जी
90	डॉ. बिपल्ब बंद्योपाध्याय
91	डॉ. पूजा रूंगटा
92	डॉ. अरघोड़े स्वरूप रमेश
93	डॉ. टोके नीलेश नामदेव
94	डॉ. डिल्ना एल.
95	डॉ. शेल्के रूपाली प्रताप
96	डॉ. जोशी गणेश आनंद
97	डॉ. शाह वलीलुल्हा
98	डॉ. प्रसन्ना आर.
99	डॉ. राम प्रकाश लोहिया
100	डॉ. एंजा खादर
101	डॉ. मोहम्मद शान
102	डॉ. प्रवीण बी. के.
103	डॉ. अपूर्बा शंकर शास्त्री
104	डॉ. संध्या भट के.
105	डॉ. जी. पार्वती
106	डॉ. विवेक कृष्णन
107	डॉ. बेट्सी अम्बूकेन
108	डॉ. किरणापुरे विकिल रमेश
109	डॉ. संतोष कुमार स्वेन
110	डॉ. सुनीता वी. सी.
111	डॉ. निपुण बजाज
112	डॉ. नागवेनकर स्वप्निल श्रीपाद
113	डॉ. निपुण जिंदल
114	डॉ. बलिगा सत्येन्द्र सुरेंद्र
115	डॉ. महाजन राहुल यादव
116	डॉ. रोली श्रीवास्तव
117	डॉ. एम. पी. प्रेमनिवास
118	डॉ. वसीम युसुफ कवूस
119	डॉ. अवनीश कुमार सिंह
120	डॉक्टर प्रेम हरिदास मेनन

121	डॉ. गोपालकृष्णाकुरूप राजेश
122	डॉ. गौरव सैनी
123	डॉ. वेंकटेशन एस.
124	डॉ. सुरेश एस.
125	डॉ. काशिफ ए. डब्ल्यू. एस. जे. अनवर
126	डॉ. प्रियदर्शी अमित
127	डॉ. हितेश डावर
128	डॉ. विपुल गर्ग
129	डॉ. ज्योति
130	डॉ. वैशाली जैन
131	डॉ. प्रणव गुप्ता
132	डॉ. दलजीत सिंह
133	डॉ. वल्लुवन आर.
134	डॉ. चिद्रवार राघवेंद्र शशिकांत
135	डॉ. प्रभा कुमारी
136	डॉ. बसवराज कानाजी
137	डॉ. परवीन मल्होत्रा
138	डॉ. बालाजी एम. डी.
139	डॉ. जैन अमित कुमार पवन कुमार
140	डॉ. दिव्या अवस्थी
141	डॉ. गुणजोतिकर शांतनु अनिल
142	डॉ. समरजित सिंह बंसल
143	डॉ. निवेदिता सिंह
144	डॉ. बाबर अश्विन दीपक
145	डॉ. पटेल हेमंतकुमार भीखूभाई
146	डॉ. कपूर सौरभ प्रेमनाथ
147	डॉ. विपन गुप्ता

148	डॉ. मनोज गुप्ता
149	डॉ. खान अशरफ इदरिस
150	डॉ. बिनीता गोस्वामी
151	डॉ. शेख अल्तमश मोहम्मद यूसुफ
152	डॉ. आम्रपाली जयाचंद्रा
153	डॉ. अविशेक दास
154	डॉ. सुधीर कुमार
155	डॉ. मौमिता नाहा
156	डॉ. मीरा लक्ष्मी जे.
157	डॉ. अंकुर गोयल
158	डॉ. तूतनके निर्मला माधव
159	डॉ. सुरभि
160	डॉ. हेमंत सलूजा
161	डॉ. सब्यसाची बर्धन
162	डॉ. अरुण भीकाजी चिंचोले
163	डॉ. अखिलेश राठी
164	डॉ. मीर फैसल मजीद
165	डॉ. दीपू के.
166	डॉ. प्रभु वी.
167	डॉ. हरप्रीत कौर इशर
168	डॉ. शेख फहद मकबूल
169	डॉ. प्रबुद्ध ज्योति दास
170	डॉ. अविका कनथिया
171	डॉ. एलिजाबेथ पृथी वर्गीज
172	डॉ. बिपल्ब मुखोपाध्याय
173	डॉ. बिनीत सिंह
174	डॉ. सुहानी

175	डॉ. मनीषा जना
176	डॉ. ऋषम सिंगला
177	डॉ. गगन कंसल
178	डॉ. संगीता शर्मा
179	डॉ. संचित चौधरी
180	डॉ. आराधना
181	डॉ. रुद्र नारायण पांडे
182	डॉ. नवरत्न रानी गोयल
183	डॉ. प्रशांत लावनिया
184	डॉ. प्रेम सागर
185	डॉ. सारंग शेटे
186	डॉ. अदनान जहूर
187	डॉ. शाफिया अशरफ
188	डॉ. बिनीत सुरेका
189	डॉ. नेहा सूद
190	डॉ. विनीत त्यागी
191	डॉ. निशिकांत कुमार
192	डॉ. सुजीत नारायण
193	डॉ. अनिल सक्सेना
194	डॉ. अपु सतीश
195	डॉ. नेत्रावली हितेश प्रकाश
196	डॉ. मोनिका पुरी
197	डॉ. सुंदरावधनन शशिवधनन
198	डॉ. कपिल गोयल
199	डॉ. ज्योत्सना रानी
200	डॉ. अनुश्री एस.
201	डॉ. एम अजित
202	डॉ. राजेश कुमार लोगिथासन

203	डॉ. राहुल राल्फ सिमा
204	डॉ. ससीनदर एस.
205	डॉ. अभिषेक उपाध्याय
206	डॉ. राणादिवे दत्ताप्रसाद शिवाजी
207	डॉ. इमरान नजीर सालरू
208	डॉ. गोपालकृष्णन आर.
209	डॉ. नीरज गुप्ता
210	डॉ. पुष्पेंद्र नारायण सिंह
211	डॉ. पवन कुमार के. एम.
212	डॉ. निमाड़े अमित सहदेव
213	डॉ. जैन भरत रतनलाल
214	डॉ. पिंटु कुमार सिंह
215	डॉ. विवेक कुमार छिम्पा
216	डॉ. मोहित कुमार
217	डॉ. विधुश्री एस. नायर
218	डॉ. विवेक पाठक
219	डॉ. अनुराग नरूला
220	डॉ. मुशाहिद अली
221	डॉ. शिवांजलि कुमार
222	डॉ. पवन ओझा
223	डॉ. भटनागर नवनीत चंद्रमोहन
224	डॉ. घटावत गौरव भंवरलाल
225	डॉ. विशाल कुमार
226	डॉ. सोमा मुखर्जी
227	डॉ. शैलेंद्र लालवानी
228	डॉ. अभिनव गुलियानी
229	डॉ. रेणु गुप्ता
230	डॉ. पी.आर. प्रमीदा के. प्रभाकरण

231	डॉ. फरहान रसूल
232	डॉ. अनूप मित्तल
233	डॉ. कमल किशोर करनानी
234	डॉ. संजय सिंह
235	डॉ. रचिता शाह
236	डॉ. परीन लालवानी
237	डॉ. गांधी सौरीन प्रदीप
238	डॉ. आशीष रुस्तगी
239	डॉ. सबा अहद
240	डॉ. लक्ष्मी विजय
241	डॉ. अमित दुआ
242	डॉ. कनिका चंद्रा

243	डॉ. सौंकुसरे शिप्रा सुदाम
244	डॉ. हल्के संदीप मेघनाद
245	डाक्टर आनंद हलयाल
246	डॉ. सिंघल अनुज
247	डॉ. अमृता पौलोसे
248	डॉ. पीयूष कुमार सिंह
249	डॉ. नम्रता सेठ
250	डॉ. रितु चौहान
251	डॉ. एस. कल्याणी
252	डॉ. ई. वेंकटचलपति
253	डॉ. महालक्ष्मी बालासुब्रामण्यम
254	डॉ. ईश्वर राजा टी.

दिनांक 27 सितंबर, 2013 को आयोजित परिषद की बैठक में अनुमोदित नाम

1	डॉ. परितोष गोगना
2	डॉ. अंकिता प्रसाद
3	डॉ. अक्षय कुमार सक्सेना
4	डॉ. विवेक बिंदल
5	डॉ. अनुज जैन
6	डॉ. एलिजा मित्तल
7	डॉ. कार्तिकेयन के.
8	डॉ. अभिषेक घाटगे
9	डॉ. मालपे अमित सुरेश
10	डॉ. सुरभि व्यास
11	डॉ. जिशा नाहर मुस्तफा
12	डॉ. गायत्री विजयन बी.

13	डॉ. स्मिता नवानी
14	डॉ. बलराम रविशंकर
15	डॉ. रविशेखर एन. हिरेमठ
16	डॉ. बिजयराज राजनबाबू
17	डॉ. नायर दिव्या मोहनचंद्रन
18	डॉ. दिव्या वी.
19	डॉ. चंद्रमोहन आर.
20	डॉ. रूद्रजीत कांजीलाल
21	डॉ. तन्मय दत्ता
22	डॉ. रीतेंद्र नाथ तालपत्रा
23	डॉ. टुटेजा सनेश विजय
24	डॉ. जयदीप मुखर्जी

25	डॉ. शिवरामन जी.
26	डॉ. बनुश्री सी. एस.
27	डॉ. सायन पॉल
28	डॉ. अवधेश ओली
29	डॉ. नितेश गहलोत
30	डॉ. बिनीथा दास सी. ए.
31	डॉ. विवेक शर्मा
32	डॉ. श्रीराम प्रसाद ए. वी.
33	डॉ. विकास सिंघल
34	डॉ. शर्मिष्ठा गुप्ता
35	डॉ. पल्लवी गुप्ता
36	डॉ. काकोली भट्टाचार्य
37	डॉ. हरवानी योगेश पुरुषोत्तम
38	डॉ. अर्पित गोयल
39	डॉ. श्रेयस लक्ष्मण पलव
40	डॉ. मोरे अंजली अनंत
41	डॉ. पाठक अभिषेक डी. के.पाठक
42	डॉ. लाईफ्रकपम रणजीत सिंह
43	डॉ. राजीव वशिष्ठ
44	डॉ. तरुण भटनागर
45	डॉ. मनीष सिंह
46	डॉ. देवांग एंग्मो
47	डॉ. हरि प्रसाद सीनप्पा
48	डॉ. गौथम सी.
49	डॉ. संजय शर्मा
50	डॉ. त्रेहन विक्रम

51	डॉ. द्रोणाचार्य राउत
52	डॉ. सतविंदर सिंह बख्शी
53	डॉ. मोहम्मद उस्मान खान
54	डॉ. दीपक मिश्रा
55	डॉ. गिनोया श्वेता रमणीकभाई
56	डॉ. गेडिया हेतल कमलेशकुमार
57	डॉ. कबीर ए.
58	डॉ. दास आशीषकुमार प्रमोदभाई
59	डॉ. अनवर सालेह के. के.
60	डॉ. रमेश कुमार आर.
61	डॉ. राजेश रेड्डी सन्नारेड्डी
62	डॉ. रवि वी.
63	डॉ. नितिन पुरी
64	डॉ. संध्या ए. के.
65	डॉ. सत्यम
66	डॉ. प्रीत मोहिंदर सिंह
67	डॉ. बोरले अनुराधा पुरुषोत्तम
68	डॉ. प्रमोद रंजन रॉय
69	डॉ. सीना के.
70	डॉ. हरिकृष्णा डी.
71	डॉ. तनवीर हुसैन
72	डॉ. असलम अजीज रिजवी
73	डॉ. अपूर्व ग्रोवर
74	डॉ. अनुजा जयंत जोशी
75	डॉ. बी. रॉय विल्सन आर्मस्ट्रांग
76	लेफ्टिनेंट कर्नल (डॉ.) विशाल विष्णु तिवारी

77	डॉ. डिंपल अजमेरा
78	डॉ. सुबोध बंसल
79	डॉ. सौरभ जैन

अकादमी की सूची में अध्येता/सदस्य

	मानद अध्येता	अध्येता एफएएमएस	सदस्य एमएएमएस	सदस्य एमएनएएमएस
दिनांक 31.03.2013 की यथास्थिति	3	822	1685	3707
दिवंगत (2013-2014 की अवधि के दौरान)	-	(-) 8	(-) 4	-
वर्ष 2013 में निर्वाचित	-	(+) 30*	(+) 58	-
वर्ष 2013 में सदस्यगण जिन्होंने अध्येतावृत्ति प्राप्त की	-	-	(-) 12	-
वर्ष 2013 में डीएनबी परीक्षा में अर्हता प्राप्त करने के बाद विनियमन-V द्वारा प्रवेश दिए गए सदस्य	-	-	-	333
दिनांक 31.03.2013 की यथास्थिति रोल पर	**3**	**844**	**1727**	**4040**

* इसमें अध्येतावृत्ति को प्रोन्नत 12 सदस्य सम्मिलित हैं।

चिकित्सा वैज्ञानिकों का व्याख्यान तथा पुरस्कार के लिए नामांकन-2013-14

व्याख्यान तथा पुरस्कार समिति की सिफारिशों के आधार पर परिषद् ने वर्ष 2013-14 के लिए निम्नलिखित वैज्ञानिकों को व्याख्यान तथा पुरस्कार प्रदान करना अनुमोदित कियाः

व्याख्यान	
डॉ. बलदेव सिंह व्याख्यान	डॉ. अजीत कुमार बनर्जी अवकाशप्राप्त आचार्य, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, तंत्रिकाशल्य विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली निवास: ए -3, सेक्टर 26 नोएडा - 201301 (उत्तर प्रदेश)।
व्याख्यान का शीर्षक	तंत्रिकाशल्यक प्रशिक्षण और मूल्यांकन: एक बदलाव की आवश्यकता
डॉ. बी.के. आनंद व्याख्यान	डॉ. राकेश कुमार श्रीवास्तव वरिष्ठ नीति विश्लेषक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, भारत सरकार, मुनीरका, नई दिल्ली।
व्याख्यान का शीर्षक	मान्य अधिगम संसाधन सामग्री के माध्यम से शिक्षा और प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाने के द्वारा चिकित्सा पुनर्वास में जनशक्ति विकास

डॉ. वी.आर. खानोल्कर व्याख्यान	डॉ. सुब्रत सिन्हा, एफएएमएस निदेशक, राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र, नैनवाल मोड़, मानेसर-122050।
व्याख्यान का शीर्षक	ट्यूमर के आणविक पुनः वर्गीकरण के संदर्भ में तंत्रिकाबंधार्बुद में जीन की खोज

कर्नल संघम लाल स्मारक व्याख्यान	डॉ. संजीव मिश्रा, एफएएमएस निदेशक और सीईओ, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, समीप काज़री फाटक, जोधपुर - 342005, राजस्थान।
व्याख्यान का शीर्षक	पित्ताशय के कार्सिनोमा के प्रबंधन में वर्तमान दृष्टिकोणः भारतीय अनुभव

जनरल अमीर चंद व्याख्यान	डॉ. गायत्री रथ, एफएएमएस निदेशक आचार्य, शरीर रचना विभाग, वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज एवं सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली-110029।
व्याख्यान का शीर्षक	स्तन कैंसर में डब्लयूएनटी / β-केटेनिन संकेतकों पर करक्यूमिन का प्रवलीकरण

डॉ. प्राण नाथ छुट्टानी व्याख्यान	डॉ. डी. नागेश्वर राव आचार्य, जैवरसायन विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029
व्याख्यान का शीर्षक	चिकनगुनिया और डेंगू के निदान के लिए आंतरिक अभिकर्मकों का विकास

डॉ. आर.वी. राजम व्याख्यान	डॉ. अमरिन्दर जीत कंवर, एफएएमएस आचार्य और विभागाध्यक्ष, त्वचारोग, रतिजरोग एवं कुष्ठ रोग विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012
व्याख्यान का शीर्षक	विटिलिगो - एक भारतीय परिप्रेक्ष्य

डॉ. के.एल. विग व्याख्यान	डॉ. पीयूष गुप्ता, एफएएमएस आचार्य, बालरोग विभाग विश्वविद्यालय आयुर्विज्ञान कॉलेज दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095
व्याख्यान का शीर्षक	चिकित्सा शिक्षा में आकलन: आगे बढ़ने का समय

अचंता लक्ष्मीपति व्याख्यान	डॉ. एन. श्रीनिवास मूर्ति, एफएएमएस आचार्य एवं निदेशक, अनुसंधान एवं पेटेन्ट प्रभाग गोकुल शिक्षा प्रतिष्ठान (चिकित्सा) एम.एस. रमैया स्वास्थ्य एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान अकादमी, गेट नं. 04, प्रोन्नत अधिगम केंद्र द्वितीय तल, बेंगलुरु-560054
व्याख्यान का शीर्षक	कैंसर महामारी विज्ञान और आहार और पोषण पर बल देते हुए कैंसर के खतरे को कम करने के लिए जीवन शैली संशोधन

अकादमी व्याख्यान	डॉ. भानु एस. वर्मा, एफएएमएस प्रतिष्ठित आचार्य, त्वचारोग, रतिजरोग एवं कुष्ठ रोग बड़ौदा मेडिकल कॉलेज, निर्वाण, एस.आर.पी. मैदान के सामने, मकरपुरा मार्ग, बड़ौदा-390009
व्याख्यान का शीर्षक	त्वचीय अभिव्यक्तियों के संदर्भ में एचआईवी / एड्स

डॉ. एस. जानकी स्मारक व्याख्यान (2013 के लिए)	डॉ. प्रतिभा सिंघी, एफएएमएस आचार्य, प्रधान, बाल तंत्रिका एवं तंत्रिका विकास, बालरोग विज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012

व्याख्यान का शीर्षक	भारत में बच्चों में मस्तिष्क संबंधी बीमारियों के बोझ को कम करना - मिशन संभव

डॉ. एस. जानकी स्मारक व्याख्यान (2014 के लिए)	डॉ. प्रमोद कुमार पाल तंत्रिकाविज्ञान आचार्य, क्रिया विकार विशेषज्ञ राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिकाविज्ञान संस्थान (निम्हान्स), बेंगलूरू-560029
व्याख्यान का शीर्षक	आनुवंशिकी, तंत्रिकाशरीरक्रियाविज्ञान, संरचनात्मक और कार्यात्मक न्यूरोइमेजिंग के माध्यम से घूमने-अनुमस्तिष्कीय गतिविभ्रमों की विकारी-शरीरक्रिया को समझना

पुरस्कार

डॉ. एस. एस. मिश्रा स्मारक पुरस्कार	डॉ. के.एन. चिदम्बर मूर्ति, अध्यक्ष अनुसंधान एवं सीएएम, अनुसंधान एवं पेटेन्ट प्रभाग एम.एस. रमैया स्वास्थ्य एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान अकादमी, एमएसआरएएलसी बिल्डिंग, एमएसआरआईटी पोस्ट बेंगलुरु-560054
डॉ. आर. एम. कासलीवाल पुरस्कार	डॉ. किम वैफी आचार्य, ऊतक विकृतिविज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012

डॉ. विमला विरमानी पुरस्कार	डॉ. पी.एस. जॉन निदेशक, फातिमा माता स्पाइनल कॉर्ड पुनर्योजी केंद्र, विभागाध्यक्ष पुनर्योजी चिकित्सा, सेंट थॉमस अस्पताल, चंगनाचैरी, केरल
श्याम लाल सक्सेना स्मारक पुरस्कार	डॉ. टी. सामराज, एफएएमएस, 24/ 12 सी, लक्ष्मीपुरम, गाँधी रोड, सलेम-636007
दांतव्य लोक स्वास्थ्य पुरस्कार	डॉ. महेश वर्मा, एफएएमएस निदेशक-प्रधानाचार्य मौलाना आज़ाद दंत विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली-110002
डॉ. एस.एस. सिद्धू पुरस्कार	डॉ. ओ.पी. खरबंदा, एफएएमएस आचार्य एवं अध्यक्ष ओर्थोडोंटिक्स एवं डेंटोफेशियल विरूपता प्रभाग, दंत शिक्षा एवं अनुसंधान केंद्र, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029
डॉ. विनोद कुमार भार्गव पुरस्कार	डॉ. बिकाश मेधी अपर आचार्य, भेषजगुण विज्ञान विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012

जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार

परिषद् ने 17 जुलाई, 2013 को आयोजित अपनी बैठक में नियम 35 (डी) के तहत वर्ष 2012 के लिए विशिष्ट तंत्रिकाविज्ञानी डॉ. एडी फिरोज़ भरुचा, एफएएमएस को उनके पिछले छह से अधिक दशकों की उत्कृष्ट शैक्षणिक और वैज्ञानिक उपलब्धि को ध्यान में रखते हुए, राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) के लिए उनकी समर्पित सेवाओं के लिए, और उनके सतत व्यावसायिक, शैक्षिक और सामाजिक योगदान को मान्यता देते हुए, जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार प्रदान करने हेतु अनुमोदित किया है।

वर्ष 2012 के लिए डॉ. एडी फिरोज़ भरुचा, एफएएमएस को उनके 97 वें जन्मदिन पर उनके आवास पर 28 दिसंबर 2013 को जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. (श्रीमति) एस. एस. देशमुख, एफएएमएस एवं पूर्व नैम्स अध्यक्ष ने यह पुरस्कार नैम्स की ओर से प्रदान किया।

स्वर्ण जयंती स्मारक पुरस्कार व्याख्यान

साख समिति की अनुशंसा के आधार पर और परिषद् की सहमति से, वर्ष के दौरान अध्येता चुने गए सबसे युवा जैवचिकित्सा वैज्ञानिक को अकादमी की वार्षिक सभा में स्वर्ण जयंती स्मारक पुरस्कार व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

डॉ. अशोक कुमार, आचार्य, प्रसूतिविज्ञान और स्त्रीरोगविज्ञान विभाग, मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज एवं संबद्ध लोकनायक जय प्रकाश नारायण अस्पताल, नई दिल्ली, वर्ष 2012 के दौरान अध्येता चुने गए सबसे युवा जैवचिकित्सा वैज्ञानिक थे। उन्होंने 26 अक्तूबर 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में स्वर्ण जयंती स्मारक पुरस्कार व्याख्यान दिया। उनके व्याख्यान का विषय था “पोषक तत्वः जिसकी महिलाओं को सर्वाधिक आवश्यकता है” ।

इमारत का रख-रखाव

इमारत के रख-रखाव पर होने वाले व्यय की भागीदारी 50:50 आधार पर एनएएमएस और एनबीई द्वारा की जाती है। गृह-सज्जा और सुरक्षा के कार्य संविदा आधार पर सौंपे गए हैं।

(सभागार इमारत के चित्र के लिए कृपया वार्षिक रिपोर्ट के पृष्ठभाग को देखिए)

वर्ष वृत्तांत (एनल्स) का प्रकाशन

1. खंड 46 संख्या 4 (अक्टूबर - दिसंबर) 2010 अंक मुद्रित और वितरित किया गया था।
2. 2011 और 2012 का कोई अंक अभी तक प्रकाशित नहीं किया गया।
3. खंड 49 संख्या 3 व 4 (जुलाई - दिसंबर, 2013) निद्रा चिकित्सा के लिए समर्पित था मुद्रित और और नैम्स के सभी अध्येताओं / सदस्यों को वितरित किया गया।

   खंड 49 संख्या 3 व 4 (निद्रा चिकित्सा) अंक के अतिथि संपादक आचार्य जे. एस. बजाज और डॉ. वी मोहन कुमार हैं।

मृत्युलेख

अकादमी के निम्नलिखित प्रतिष्ठित अध्येताओं/ सदस्यों की मृत्यु पर गहरा दुख व्यक्त किया गया हैः

अध्येताः

1. डॉ. विद्या एन. आचार्या
2. डॉ. श्याम स्वरूप अग्रवाल
3. डॉ. सनत नटवरलाल भगवती
4. डॉ. उमा गोयल
5. डॉ. जे. जी. जॉली
6. डॉ. देवकी नंदन
7. डॉ. परनतपा सेन
8. डॉ. जितेंद्र कुमार त्रिवेदी

सदस्यः

1. डॉ. एच. आर. लूथरा
2. डॉ. आर. एन. मिश्रा
3. डॉ. राम गोपाल शर्मा
4. डॉ. धरनी श्रीनिवास

अनुबंध- I

जोधपुर में दिनांक 26 अक्तूबर, 2013 को आयोजित वार्षिक दीक्षांत समारोह में डॉ. सी. एस. भास्करन, अध्यक्ष, एनएएमएस द्वारा दिए गए अभिभाषण का पाठ

हमारे आज के समारोह में आदरणीय मुख्य अतिथि प्रो. आर. चिदंबरम, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार और पूर्व अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग, हमारे सम्मानित अतिथि प्रो. जे. एस. बजाज, प्रतिष्ठित अध्यक्ष और सभापति, शैक्षणिक परिषद, राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत), प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ और पूर्व अध्यक्ष डॉ. एस. पद्मावती, नैम्स आजीवन उपलब्धि पुरस्कार प्राप्तकर्ता, परिषद के गणमान्य सदस्य, डॉ. संजीव मिश्रा, निदेशक, एम्स - जोधपुर एवं अध्यक्ष आयोजन समिति, डॉ. संजय वधवा, मानद सचिव, नैम्स और डॉ. कुलदीप सिंह, सचिव, आयोजन समिति, गणमान्य अध्येता और सदस्य, नव निर्वाचित अध्येता और सदस्यों, साथियों, प्रतिनिधियों, अतिथियों, देवियों और सज्जनों, मैं नैम्स के 23 वें राष्ट्रपति के रूप में आपको हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और आप सभी का अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में आयोजित राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) के 53 वें वार्षिक सम्मेलन में स्वागत करता हूँ। महोदय, हम वास्तव में आप के आभारी हैं कि आपने अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद आज के समारोह में मुख्य अतिथि बनने के हमारे निमंत्रण को स्वीकार किया और समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए समय निकाला है। हम आपके समर्थन और सद्भावना के लिए धन्यवाद करते हैं।

हमें प्रसन्नता है कि यह सम्मेलन जोधपुर, के इस ऐतिहासिक शहर में आयोजित किया जा रहा है जो कि मारवाड़ राज्य की पूर्व राजधानी और राजस्थान राज्य का वर्तमान में दूसरा सबसे बड़ा शहर है। यह भारत में उच्च शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में प्रमुख शैक्षिक केंद्रों में से एक बन गया है। हमारे सम्मेलन का आयोजन स्थल, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान - जोधपुर, नवारंभ छह अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानों में से एक है। प्रो. संजीव मिश्रा के निदेशन के तहत इस परिसर ने इस वार्षिक सम्मेलन के लिए हमें एक उत्कृष्ट वातावरण और सुविधाएँ प्रदान की हैं। सम्मेलन के वैज्ञानिक कार्यक्रम में दो संगोष्ठियाँ, व्याख्यान श्रृंखला, स्वतंत्र और पुरस्कृत लेख प्रस्तुतियाँ और पोस्टर प्रस्तुतियाँ सम्मिलित हैं।

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) को चिकित्सा के क्षेत्र में ज्ञान और संबद्ध विषयों को बढ़ावा देने, व्यावसायिक शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने, अनुसंधान क्षमता की पहचान करने, पेशेवर और नैतिक आचरण के उच्च मानकों को बनाए रखने, हमारे देश में चिकित्सा और जैव चिकित्सा वैज्ञानिकों को उनके काम को पहचानने और प्रोत्साहित करने और सर्वोच्च क्रम के अनुसंधान को आगे बढ़ा कर राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राथमिकताओं के लिए इसके अनुप्रयोग का विस्तार करने और सक्रिय रूप से राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों की योजना और निर्माण में भाग लेने के लिए स्थापित किया गया है । हमारी अकादमी देश में चिकित्सीय और पराचिकित्सीय पेशेवरों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के लिए सतत चिकित्सा शिक्षा के लिए नोडल एजेंसी के रूप में भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है।

वर्ष 1959 में आंध्र प्रदेश सरकार ने आयुर्विज्ञान अकादमी की स्थापना के लिए प्रस्ताव की पहल की थी। भारत सरकार ने आवश्यकता को पहचानते हुए भारत के अन्य राष्ट्रीय संस्थानों के साथ बराबरी पर राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी की स्थापना की थी। इसे 1961 में भारतीय विज्ञान अकादमी के रूप में पंजीकृत किया गया था जिसे बाद में "राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)" में परिवर्तित किया गया और तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के द्वारा इसका उद्घाटन किया गया। प्रथम दीक्षांत समारोह 8 दिसंबर 1963 को आयोजित किया गया था जिसे भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन ने संबोधित किया था। अपने दीक्षांत भाषण में उन्होंने कहा, "मुझे आशा है कि यह आयुर्विज्ञान अकादमी जो अपने संबंधित क्षेत्रों में उपलब्धि-प्राप्त विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो प्रतिभासंपन्न व्यक्तियों को अपने लक्ष्यों को पाने का प्रोत्साहन प्रदान करती है, इसकी ओर हमारे सभी युवा आशा की दृष्टि से देखेंगे"। उन्होंने आगे कहा, "अकादमी की अध्येतावृत्ति सम्मान की बात होनी चाहिए न कि चालों या साज़िश की बात और यह पूरी तरह कार्य की बात है जिसे प्रकृति में प्रथम श्रेणी के रूप में स्वीकार किया गया है। हमें केवल इसी गुणवत्ता को प्रोत्साहित करना चाहिए"। यही अकादमी का आज तक निर्देशक सिद्धांत है और आशा है कि आगे भी रहेगा।

अकादमी ईमानदारी से हमारे प्रख्यात पूर्ववर्तियों द्वारा निर्धारित परंपराओं का पालन करते हुए पिछले पांच दशकों से अपने उद्देश्यों को पूरा कर रही है। अनुसरण में, हर साल हम चिकित्सा में विभिन्न विषयों और संबद्ध विज्ञान से संबंधित हमारी जैव चिकित्सा वैज्ञानिकों द्वारा उत्कृष्ट

योगदान के लिए मान्यता और प्रतिभा को पोषित एवं प्रोत्साहित करने के लिए अध्येतावृत्ति और सदस्यता प्रदान करना, चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और स्वास्थ्य सेवाओं और संबंधित विज्ञानों में उत्कृष्ट योगदान के लिए अकादमी व्याख्यान प्रदान करना और जैव चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में वैज्ञानिक उन्नति को बढ़ावा देने के लिए अकादमी पुरस्कार और अन्य प्रशस्तियां प्रदान करते हैं। अकादमी की ये प्रशस्तियाँ और पुरस्कार एक कठोर समकक्ष समीक्षा प्रक्रिया के बाद प्रदत्त एक उच्च पोषित गौरव के लिए एक ब्रांड नाम बन गया है और यह हमारा प्रयास रहा है कि हम उत्कृष्टता को अपने प्राथमिक लक्ष्य के रूप में बनाए रखें। वर्तमान में हमारे पास 3 मानद अध्येता, 822 अध्येता, 1685 निर्वाचित सदस्य (एमएएमएस) और अकादमी के जीवित रजिस्टर पर 3707 पंजीकृत सदस्य (एमएनएएमएस) हैं। इस वर्ष 30 अध्येता और 58 सदस्य चुने गए थे।

अकादमी ने पिछले कई दशकों से जैव चिकित्सा विज्ञान के वृद्धि और विकास के लिए उत्कृष्ट योगदान देने वाले अध्येताओं को सम्मानित करने के लिए एक आजीवन उपलब्धि पुरस्कार की स्थापना की है और हम वास्तव में बहुत प्रसन्न हैं कि प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ, एक बहुत ही वरिष्ठ साथी और अकादमी की पूर्व अध्यक्ष डॉ. सिवारामाकृष्ण पद्मावती को इस दीक्षांत समारोह में वर्ष 2011 के लिए इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है और अकादमी को यह पुरस्कार स्वीकार करके उन्होंने बहुत सम्मानित किया है और हम इस के लिए उनके आभारी हैं।

इस वार्षिक सम्मेलन के दौरान हम प्रख्यात व्यक्तियों द्वारा 10 व्याख्यान और नैम्स पुरस्कृत 7 लेख प्रस्तुतियाँ और वर्ष के सबसे कम आयु के अध्येता द्वारा स्वर्ण जयंती स्मरणोत्सव पुरस्कार व्याख्यान सुनने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे। इनमें से डॉ. जानकी स्मारक व्याख्यान और डॉ. एस. एस. सिंधु पुरस्कार और डॉ. विनोद कुमार भार्गव पुरस्कार इस साल से आरंभ किए गए हैं। इसके अलावा विशेषज्ञता के तेजी से विकसित होते क्षेत्रों में दो अन्य महत्वपूर्ण अच्छी तरह से संरचित कार्यक्रम एक "निद्रा चिकित्सा" पर सीएमई - क्षेत्रीय संगोष्ठी के रूप में और दूसरा "पुनर्योजी चिकित्सा" पर नैम्स वैज्ञानिक संगोष्ठी के रूप में क्रमश: कल और आज सुबह आयोजित किए गए।

मुझे आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि राष्ट्रीय विकास परिषद (एनडीसी) ने नैम्स की 12 वीं पंचवर्षीय योजना के प्रस्ताव को मंजूरी देते हुए उल्लेख किया है कि नैम्स जैसे

अभिकरण देश में सतत चिकित्सा शिक्षा के लिए कार्यक्रमों को विकसित करने में उपयोगी भूमिका निभा सकते हैं। हम, यह सुनिश्चित करने में कि एनडीसी द्वारा नैम्स की भूमिका को मान्यता प्रदान की जाए, प्रोफेसर बजाज के प्रयासों की सराहना करते हैं। 12 वीं योजना दस्तावेज में आरोपित प्रस्तावों को लागू करने के लिए आगे कदम उठाए जा रहे हैं।

सीएमई कार्यक्रम:

जनादेश को पूरा करने के लिए, अकादमी सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है और अलग-अलग विषयों में देश के विभिन्न हिस्सों में सम्मेलन, संगोष्ठियों और कार्यशालाओं के रूप में उन का आयोजन और कार्यक्रमों पर नज़र रखती है। सभी सीएमई विषयों को राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए चुना जाता है। हमारे दो प्रकार के सीएमई कार्यक्रमों हैं - पहला राष्ट्रीय / क्षेत्रीय / अंतःस्थानिक कार्यक्रम जिनकी नैम्स शैक्षणिक समिति द्वारा योजना बनाई जाती है और निगरानी की जाती है और दूसरा संस्थाओं / मेडिकल कॉलेजों द्वारा आयोजित बाह्यस्थानिक कार्यक्रम जिनकी नैम्स सीएमई कार्यक्रम समिति द्वारा जांच और समीक्षा की जाती है।

2012 -13 वर्ष के दौरान, दो अंतःस्थानिक सीएमई कार्यक्रम, "बच्चों और किशोरों में गैर अल्कोहल फैटी लीवर रोग" विषय पर नैम्स-पीजीआई राष्ट्रीय संगोष्ठी और "सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी" पर नैम्स-एनएफआई राष्ट्रीय संगोष्ठी क्रमश: पीजीआई, चंडीगढ़ और भारतीय पोषण फाउंडेशन, नई दिल्ली में आयोजित किए गए और 18 बाह्यस्थानिक सीएमई कार्यक्रम देश में विभिन्न चिकित्सा संस्थाओं द्वारा आयोजित किए गए।

इस वर्ष 2013-14 से हर साल, स्वास्थ्य में प्राथमिकता वाले चिन्हित क्षेत्रों में कम से कम 5 राष्ट्रीय / क्षेत्रीय संगोष्ठियाँ/ अंतःस्थानिक सीएमई कार्यक्रम और 20 बाह्यस्थानिक सीएमई कार्यक्रम आयोजित करवाने का प्रस्ताव है। अब तक तीन अंतःस्थानिक कार्यक्रम, "स्पाइना बिफिडिया", "नैदानिक अनुसंधान के क्षेत्र में आचार" पर सीएमई कार्यक्रम और "निद्रा चिकित्सा" पर एक संगोष्ठी क्रमशः अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश, भुवनेश्वर और जोधपुर में आयोजित किए गए और 5 प्रस्ताव विचाराधीन हैं। इसी प्रकार 5 बाह्यस्थानिक सीएमई कार्यक्रम इस साल अब तक आयोजित किए गए और 3 पर प्रक्रिया जारी है। नैम्स सीएमई कार्यक्रमों को राज्य चिकित्सा परिषदों और एमसीआई द्वारा मान्यता दिलवाने और नैम्स

सीएमई कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों को उनसे समर्थन दिलवाने के प्रयास किए जा रहे हैं ।

हमारे द्वारा नैम्स वेब साइट / मोनोग्राफ आदि के माध्यम से अधिगम संसाधन सामग्री की उपलब्धता बढ़ाने, एक अधिगम संसाधन सामग्री पुस्तकालय स्थापित करने और अकादमी के वर्ष वृत्तांतों के प्रकाशन को कारगर बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं।

टेली संयोजकता:

नैम्स ने टेली-सम्पर्कों की स्थापना के माध्यम से सीएमई कार्यक्रमों की पहुँच में सुधार करने के लिए एक प्रमुख प्रयास किया है। स्वास्थ्य विज्ञान में टेली-शिक्षा के लिए नैम्स-पीजीआई केंद्र पंजाब, हरियाणा के मेडिकल कॉलेज और पंजाब और हिमाचल प्रदेश में कुछ जिला अस्पतालों से जुड़ने वाला पहला केंद्र है। इस सफल परिणाम से उत्साहित हो इस साल नैम्स-पीजीआई संगोष्ठी को शिमला और टांडा के साथ सफलतापूर्वक दूरसंपर्क से जोड़ा गया था। हम आईटी समर्थित सेवाओं का बेहतर उपयोग कर राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के माध्यम से सीएमई कार्यक्रमों को अधिक से अधिक मेडिकल कॉलेजों तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं।

नैम्स - एम्स अधिशासी मंडल

जोधपुर, भोपाल, रायपुर, पटना, भुवनेश्वर और ऋषिकेश में नव स्थापित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानों के सहयोग से अकादमी ने नैम्स और एम्स के बीच शैक्षिक सहयोग बढ़ाने के लिए और शैक्षिक गतिविधियों को मजबूत करने के लिए एक नैम्स - एम्स अधिशासी मंडल का गठन किया है। फिलहाल, 12 वीं पंचवर्षीय योजना में चिह्नित प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के आधार पर चयनित विषयों पर वर्ष के दौरान प्रत्येक एम्स द्वारा एक संगोष्ठी / सीएमई का आयोजन किए जाने का प्रस्ताव है।

विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग:

वर्ष 2007 में नैम्स ने गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इसी तर्ज पर, एक समझौता ज्ञापन पर इस साल केंद्रीय विश्वविद्यालय भटिंडा, पंजाब के साथ अकादमी द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे। विभिन्न उन्नत तकनीकों में मध्यम स्तर के वैज्ञानिकों के प्रशिक्षण के लिए अन्य विश्वविद्यालयों के साथ एक समझौता करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। देश में चिकित्सा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के

लिए समग्र और व्यापक रणनीति विकसित करने के क्रम में भारत में स्वास्थ्य विज्ञान के विश्वविद्यालयों के साथ शैक्षिक सहयोग के विकास की संभावना का पता लगाने के लिए भी प्रयास किया जा रहा है।

इस वर्ष के दौरान प्रो. बजाज, अध्यक्ष, नैम्स शैक्षणिक परिषद के अथक प्रयासों के कारण ही महत्वपूर्ण विकासात्मक गतिविधियाँ और उपलब्धियाँ विशेषकर निम्न संभव हो पाई हैं - क) इस सम्मेलन में आयोजित दोनों संगोष्ठियों की अवधारणा, ख) नैम्स 12 वीं योजना दस्तावेज़ का अनुमोदन, ग) नैम्स-एम्स अधिशासी मंडल का गठन और घ) केंद्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा, पंजाब के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर। हम उनके बहुत आभारी हैं और अब तक की उनको अकादमी को दी गई सेवाओं को मान्यता देते हूए तथा अकादमी को मजबूत करने के लिए उनके निरंतर प्रयासों की प्रशंसा करते हूए आचार्य जे. एस. बजाज को "संरक्षक" के पद पर नियुक्ति प्रदान करने का संकल्प नैम्स परिषद ने अपनी पिछली बैठक में किया है।

अकादमी ने प्रतिष्ठित आचार्य और अकादमी के वरिष्ठ अध्येताओं की विशेषज्ञता का उपयोग करके विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में विभिन्न विषयों में संकाय के स्नातकोत्तर और युवा सदस्यों, कनिष्ठ और मध्य स्तर के विशेषज्ञों के मार्गदर्शन करना, उभरती प्रौद्योगिकियों में कौशल उन्नयन को बढ़ावा देने के लिए और चुने हुए उत्कृष्ट केन्द्रों पर नए कौशल प्राप्त करने के लिए यात्रा अध्येतावृत्ति प्रदान करना, वैज्ञानिक और शोध पत्र पेश करने के लिए युवा पेशेवरों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए नैम्स पुरस्कार विजेताओं को यात्रा के लिए वित्तीय अनुदान देने की योजनाएं तैयार की हैं। कई पेशेवरों को पहले ही इन कार्यक्रमों से लाभान्वित किया गया है। अकादमी भारत सरकार की विशेषज्ञ समूह की बैठकों और परामर्शदात्री विचार-विमर्श में भाग लेने के द्वारा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण के तहत नीति रणनीतियों के निर्माण और कार्यक्रमों के विकास में सक्रिय भूमिका निभाती है।

वर्तमान में, कुछ अपवादों के साथ हमारे देश में मेडिकल कॉलेजों को सबसे बड़ी कठिनाई सही गुणवत्ता और मात्रा की चिकित्सा शिक्षा प्रदान करने में हो रही है, इसके बहुत से और विविध कारण हैं जिनमें हमें इस मोड़ पर जाने की जरूरत नहीं है। हालांकि समय की मांग है कि हम अपने आप को नवीनतम रुझानों के साथ अद्यतन करें और आधुनिक नवीन तकनीकी प्रथाओं और निदान विधियों के साथ अग्रसर रहें। हालांकि हमारी अकादमी 50 साल से अधिक पुरानी है, परंतु यह फिर भी बड़े पैमाने पर जनता की और विशेष रूप में चिकित्सा पेशे की मांग और

आकांक्षा को पूरा करने के लिए इन चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार आदर्श संगठन है।

हम ने अभी नव निर्वाचित अध्येताओं और सदस्यों को स्क्रॉल प्रदान किए हैं और जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार सहित व्याख्याताओं और विजेताओं को सम्मानित किया है। इस यादगार अवसर पर अकादमी द्वारा उनको प्रदत्त उपाधियों के लिए मैं अकादमी और अपनी ओर से उन्हें हार्दिक बधाई देता हूं।

हम बहुत आभारी हैं कि डॉ संजीव मिश्रा, संस्थान के निदेशक और डॉ कुलदीप सिंह, अपर आचार्य एवं अध्यक्ष बाल रोग विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर और उनकी टीम ने अपने अथक प्रयासों से इस सम्मेलन को वास्तव में यादगार बनाया।

समापन से पहले, मैं अपने पिछले अध्यक्षों प्रो. जे. एस. बजाज, डॉ स्नेहलता देशमुख, डॉ पी. के. दवे, डॉ प्रेमा रामचंद्रन, उपाध्यक्ष डॉ मनोरमा बेरी, कोषाध्यक्ष डा कुसुम वर्मा और परिषद के अन्य सदस्यों, नैम्स के मानद सचिव डा संजय वधवा और अकादमी के सभी कर्मचारियों को उनके मार्गदर्शन, सहायता और सहयोग के लिए आभार प्रकट करता हूँ।

मैं प्रो. जे. एस. बजाज को विशेष धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने एक दोस्त, दार्शनिक और मार्गदर्शक के रूप में मुझे प्रेरणा और दिशा दी है जिसके कारण मैं इस वर्ष के दौरान अपने कृत्यों का निर्वहन करने में सक्षम हो सका। अंत में मैं अकादमी की ओर से और अपनी ओर से हमारे सम्मानित मुख्य अतिथि प्रो. आर. चिदंबरम को साभार धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने आज हमारे साथ अपने ज्ञान और विचार साझा करने के लिए अपना अमूल्य समय दिया जिससे हमारी अकादमी को मजबूत बनाने में बहुत सहायता मिलेगी।

धन्यवाद।

अनुबंध- //

जोधपुर में दिनांक 26 अक्तूबर, 2013 को आयोजित वार्षिक दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. आर. चिदम्बरम, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार, द्वारा दिए गए अभिभाषण का पाठ

"स्वास्थ्य देखभाल और चिकित्सा अनुसंधान"

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (नैम्स) के अध्येताओं और सदस्यों तथा इतने सारे प्रतिष्ठित डॉक्टरों और जैव चिकित्सा वैज्ञानिकों के साथ होना बहुत गर्व की बात है। मैं आपकी शैक्षिक परिषद के अध्यक्ष प्रो. जे. एस. बजाज का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने मुझे राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी के वार्षिक सम्मेलन के भाग इस दीक्षांत समारोह में मुझे आमंत्रित किया। मैं पुरस्कार विजेताओं और नव निर्वाचित अध्येता और सदस्यों को बधाई देता हूँ। चिकित्सा के विभिन्न क्षेत्रों में उनकी शोध उपलब्धियों के बारे में सुनना बहुत सुखद था।

2. जोधपुर का अब भारत की चिकित्सा परिदृश्य में एक विशेष स्थान है क्योंकि अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा स्थापित छह नए एम्स में से एक है। 1974 और 1998 में परमाणु परीक्षण की तैयारियों के दौरान, हम हमेशा जोधपुर के रास्ते से पोखरन गए इसलिए निजी तौर पर भी इसकी मेरे दिल में एक खास जगह है।

3. एक अस्पताल में स्वास्थ्य देखभाल की गुणवत्ता डॉक्टरों और अन्य कर्मचारियों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। एक तरफ, एक अच्छे अस्पताल को मरीजों को उत्कृष्ट और सस्ती स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करनी चाहिए। अग्रणी न्यूरोसर्जन स्वर्गीय डॉ बी. रामामूर्ति ने कुछ दशक पहले मुझे बताया था कि जब उन्होंने मद्रास मेडिकल कॉलेज का नेतृत्व किया था तब उन्होंने वहाँ के डॉक्टरों से कहा था कि जब वे विकृति विज्ञान जांच का आदेश देते हैं तब दस में से नौ जांचों को असामान्यता दिखानी चाहिए। यह हमारे सीमित विकृति संसाधनों के

उपयोग का सबसे अच्छा तरीका होगा। अब की तुलना में जबकि वे अधिक है थे। इसी प्रकार एक अग्रणी अस्पताल को नवीनतम तकनीकों को अपनाने के लिए शीघ्रता करनी चाहिए।

4. हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हम उच्च श्रेणी के निदान और उपचार के अधिकांश चिकित्सा उपकरणों को अब आयात कर रहे हैं। हालांकि भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र द्वारा विकसित सह-60 विकिरण चिकित्सा इकाई भाभाट्रान जैसे कई शानदार अपवाद भी हैं। देश में डॉक्टरों और इंजीनियरों को एक साथ मिल कर अधिक से अधिक इस तरह के उन्नत उपकरणों का स्वदेशीकरण करना चाहिए। डॉक्टरों को अकेले ब्रांडिंग पर नहीं जाना चाहिए।

5. यदि हम एक ज्ञान अर्थव्यवस्था बनना चाहते हैं तो भारत में बुनियादी अनुसंधान, अनुप्रयुक्त अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास, नवाचार और निर्माण कौशल का एक विवेकपूर्ण मिश्रण होना चाहिए। उच्च प्रौद्योगिकी हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर उत्पादों का स्वदेशीकरण आवश्यक है। यह इलेक्ट्रॉनिक्स हार्डवेयर के बारे में विशेष रूप से सच है जहाँ हम, मिशन उन्मुख अभिकरणों को छोड़कर, पीछे हैं। जैसा कि मैंने उन्नत रक्षा उपकरणों के अलग संदर्भ में कहा कि आप अगर आने वाले समय में एक वैश्विक नेता बनना चाहते हैं, तो आपको अक्सर अल्पावधि तक कम विशिष्टताओं के उपकरणों के साथ रहने के लिए तत्पर होना चाहिए जब तक कि वे आपकी महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को संतुष्ट करते हैं । यह बात 'चिकित्सा उपकरणों' के क्षेत्र मे भी लागू होती है।

6. मैं समझता हूँ कि विश्व स्तर पर उपलब्ध लगभग 3200 प्रकार के चिकित्सा उपकरणों में से भारत में केवल 100 के आसपास बनाते हैं। यहाँ फिर हमने कुछ उत्कृष्ट पहल है। श्री चित्रा तिरूनल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान में बनाये गये डॉ एम. एस. वालियाथन के यांत्रिक हृदय वाल्व के साथ आरंभ हो कर कई अन्य उपकरणों और जैव उत्पादों का उनके जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी विंग में निर्माण किया गया है। संस्थान ने उद्योगों के साथ अपनी भागीदारी को मजबूत करना जारी रखा है। आईआईटी मद्रास और कुछ अन्य संस्थानों में चिकित्सा उपकरणों के क्षेत्र में उद्योगों के साथ संपर्क वाले कुछ अच्छे समूह आ रहे हैं। संयोग

से मैं शासी निकाय और संस्थान निकाय के अध्यक्ष के रूप में श्री चित्रा तिरूनल संस्थान के साथ संबद्ध हूँ।

7. एक अस्पताल को एक अनुसंधान केंद्र भी होना चाहिए। नैदानिक और बुनियादी अनुसंधान दोनों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। भारत में उच्च रोगी भार के कारण यहाँ उच्च गुणवत्ता वाला चिकित्सा अनुसंधान सीमित है। इसे बढ़ाने में नैम्स को काफी हद तक अहम भूमिका निभानी चाहिए। भारत में वैज्ञानिक संस्थानों के बीच सहयोग के साथ विज्ञान का अंतर्राष्ट्रीयकरण भी बढ़ रहा है। विद्युतीय संयोजकता भी इस सहयोग का एक महत्वपूर्ण कारण है।

8. राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क बहु -10 गीगाबिट्स प्रति सेकंड ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क वाली राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र द्वारा कार्यान्वित की जा रही एक परियोजना है जो अंततः भारत में 1500 ज्ञान संस्थानों को आपसे में जोड़ेगी जिनमें से 1100 पहले से ही जुड़े हुए हैं।

9. राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क की उच्च बैंडविड्थ और कम विलंबता की क्षमताओं का प्रदर्शन करने के क्रम में राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क ने अपनी क्षमता का प्रदर्शन करने के लिए विभिन्न अनुप्रयोगों की मॉडल परियोजनाओं की एक श्रृंखला शुरू की है उनमें से कई चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल पर केंद्रित हैं। प्रत्येक परियोजना सावधानीपूर्वक एक विशिष्ट चुनौती से निपटने के लिए बनायी गई है। चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में, राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क ने प्रधान अन्वेषक के रूप में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के साथ एक मॉडल परियोजना का शुभारंभ किया है। आठ संस्थान इस प्रयोग में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के साथ शामिल हो गए और आपसी विमर्श और वास्तविक क्षेत्र परीक्षण के बाद समाधान लेकर आए हैं। यह दिलचस्प है कि वे "नियमित" कौशल 'हस्तांतरण के लिए एनीमेशन के साथ युग्मित उच्च श्रेणी ग्राफिक्स का उपयोग कर (रक्त और मूत्र का नमूना, रक्तचाप की निगरानी, आदि) और प्रत्यक्ष वीडियो कक्षा में विचार विमर्श के लिए भेज रहे हैं और हृदय उन्मुख शल्य चिकित्सा कौशल के बारे में ज्ञान साझा करने के लिए एक संयोजन हैं।

10. एक और मॉडल परियोजना में मूल विचार चिकित्सा जरूरतों को हल करने के लिए इंजीनियरिंग डिजाइन समाधान का उपयोग करना है। कोलैबकैड मंच जो कि मूल रूप से सभी इंजीनियरिंग बारीकियों के साथ तीन आयामी संरचनात्मक अनुकरण करने में सक्षम सॉफ्टवेयर के रूप में डिजाइन किया गया था उसे त्रिआयाम में व्यक्तिगत दंत इमेजिंग समस्या को हल करने के लिए पुनर्लक्ष्यित किया गया था। तीन प्रमुख संगठनों - एनआईसी, सीएसआईओ और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान दिल्ली को इकट्ठा किया गया। एनआईसी ने आईसीटी भाग का ध्यान रखा वहीं सीएसआईओ ने इमेजिंग भाग पर ध्यान केंद्रित किया, और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ने अंत उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं को व्यक्त किया जिससे कि कई 2 आयामी छवियों का प्रयोग कर एक 3 आयामी आभासी वास्तविकता बनाई जा सके।

11. मेरा कार्यालय 'सिनर्जी प्रोजेक्ट्स' के लिए वित्त पोषित है जो अलग-अलग संस्थानों में से विभिन्न दक्षताओं वाले वैज्ञानिकों को एक परियोजना पर तालमेल में काम करने के लिए एक साथ लाने की कोशिश करता है। इस प्रकार से आर्थोपेडिक ऑन्कोलॉजी में इस्तेमाल के लिए एक पूर्णतया कृत्रिम घुटने का विकास किया गया। इसमें शामिल संस्थानों में आईआईटी बॉम्बे, एनएफटीडीसी, हैदराबाद और टीएमएच, मुंबई थे। पूर्णतया कृत्रिम घुटना अब क्लिनिकल परीक्षण के लिए तैयार है। टाइटेनियम मिश्र से अनिवार्य रूप से बनाया गया यह मेगा कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण वर्तमान 'तीसरी औद्योगिक क्रांति' का एक महत्वपूर्ण घटक कहे जाने वाले 'योगात्मक विनिर्माण' के माध्यम से अनुकूलित किया जाना चाहिए जो इंटरनेट के द्वारा संचालित है।

12. तीन साल पहले जब मैं मैकगिल विश्वविद्यालय में था तो मुझे दी गई परियोजनाओं में से एक सी-मस्तिष्क या कनाडा ब्रेन थी जिसमें उनके केनारी नेटवर्क के माध्यम से अल्जाइमर में काम कर रहे सभी वैज्ञानिकों को एमआरआई छवियों को साझा करने के लिए कहा जाता था। हम उनके सहयोग से आई-मस्तिष्क या भारत-मस्तिष्क का विकास कर रहे हैं जिसमें एमआरआई छवियों की तरह सभी चिकित्सीय डाटा साझा करने के लिए एक साथ अल्जाइमर

या पागलपन या शायद स्ट्रोक में काम कर रहे सभी वैज्ञानिकों को एक साथ लाया जाएगा। के ऊपर अनुसंधान के बुनियादी ढांचे की परत के रूप में स्थापित इस मॉडल परियोजना का नेतृत्व दिल्ली के समीप मानेसर में राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र कर रहा है। आईसीएमआर इसे कई मस्तिष्क से संबंधित बहु संस्थागत अनुसंधान परियोजनाओं के लिए एक सामान्य प्रयोजन के बुनियादी ढांचे के रूप में उपयोग करने के लिए योजना बना रहा है।

13. इन मॉडल परियोजनाओं में से हर एक का एक विषय और उद्देश्य है। लेकिन ये केवल प्रदर्शन के लिए हैं और मुझे यकीन है कि राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के माध्यम से चिकित्सा समुदाय सहित वैज्ञानिक समुदाय द्वारा कई और अधिक परियोजनाओं की अवधारणा और उन्हें साकार किया जाएगा।

14. रोगियों के लिए एक शुद्ध और मिलावटरहित रूप में दवाओं की उपलब्धता अभी भी एक मुद्दा बनी हुई है। यह न केवल भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में अपितु पश्चिमी दुनिया में विकसित अर्थव्यवस्थाओं में भी एक वास्तविकता है। चिंता का एक प्रमुख कारण बन गया अन्य मुद्दा पर्याप्त नियंत्रण और संतुलन के बिना पूरे भारत में तथाकथित नैदानिक केन्द्रों की बाढ़ है। समस्या के महत्व और सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र में इसके प्रभाव को देखते हुए मेरे कार्यालय ने नवंबर, 2008 में मुख्य रूप में भारतीय संदर्भ में नकली और घटिया दवाओं और नैदानिक केन्द्रों का मुकाबला करने के लिए संभव वैज्ञानिक और तकनीकी उपायों पर एक कार्य समूह का गठन करने का निर्णय किया। प्रसिद्ध तंत्रिका शल्य चिकित्सक डॉ पी.एन. टंडन ने बहुत कृपापूर्वक उस समूह का अध्यक्ष बनने का मेरा निमंत्रण स्वीकार कर लिया। सचिवालय मेरा कार्यालय बना रहा, वहीं डॉ टंडन के साथ परामर्श कर चिकित्सा वैज्ञानिकों और उच्च स्तर के पेशेवरों, साथ ही स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के मंत्रालय के वरिष्ठ प्रतिनिधियों सहित सदस्यों को ध्यान से चुना गया है। इस समूह ने एक उत्कृष्ट रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसमें पहले से ही उपलब्ध विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी उपायों या जो पाइप लाइन में थे उनका परितुलन किया गया है। उनके लाभ और हानि का मूल्यांकन करने के लिए

एक प्रयास किया गया है। यहाँ यह बताना उचित होगा कि दुनिया में कहीं भी अभी तक इस उद्देश्य के लिए किसी भी एक तकनीक को अचूक उपाय के रूप में मान्यता नहीं दी गई है। इसी तरह कार्य समूह की इस रिपोर्ट में शामिल किसी विशेष तकनीक की कोई व्यक्तिगत पसंद नहीं थी। इसने केवल स्वयं की आवश्यकताओं के अनुसार दवा उद्योग के चुनने के लिए विविध स्रोतों से इकट्ठा कर विभिन्न विकल्पों की एक व्यापक सूची प्रदान की है।

15. 2004 के आरंभ में, कुछ चिकित्सा पेशेवरों द्वारा मेरे कार्यालय का ध्यान उन चिकित्सा उपभोग्य सामग्रियों और उपकरणों के प्रति आकर्षित किया गया जिन पर रोगाणुरहित रूप में नहीं होने के बावजूद रोगाणुरहित की मुहर लगाई गई थी। यह कम या अधिक दुनिया में सभी देशों के लिए लागू होता है। परिणामस्वरूप अक्तूबर 2004 में मेरे कार्यालय ने चिकित्सा पेशेवरों, एक विकिरण विशेषज्ञ और एक सूक्ष्म जैव विज्ञानी के एक कार्यकारी समूह के माध्यम से "भारत में विसंक्रमण आचरण का वैज्ञानिक मूल्यांकन" पर एक रिपोर्ट तैयार की। इस रिपोर्ट का देश में चिकित्सा बिरादरी द्वारा स्वागत किया गया है। बाद में हमें चिकित्सा विसंक्रमण के सभी तीन रूपों - वाष्पदावी, ईथीलीन ऑक्साइड गैस और गामा विकिरण के उपयोग की जिन्हें अब हम वैज्ञानिक संचालन प्रक्रिया कहते हैं, की आवश्यकता अनुभव हुई। अक्टूबर 2008 में मेरे कार्यालय ने उस कार्य के लिए काफी हद तक पहले जैसे संरचना के साथ एक और कार्य समूह का गठन किया लेकिन इसमें स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय से एक प्रतिनिधि भी शामिल था। चार वर्षों के भारी भरकम काम के बाद, दूसरे कार्य समूह ने वैज्ञानिक संचालन प्रक्रिया को एक रिपोर्ट के रूप में संकलित किया जो कि मेरा मानना है कि चिकित्सा पेशेवरों, नर्सिंग स्टाफ और अस्पताल प्रशासकों के प्रयोग के लिए बहुत लाभकारी होगा। इस विषय पर मेरे कार्यालय को नैम्स के साथ राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के माध्यम से एक वेब-कास्ट कार्यशाला चलाने में प्रसन्नता होगी जिसे संग्रहीत और अनुरोध पर उपलब्ध कराया जा सकता है।

16. मानव सहित सभी जीवों को इतने अद्भुत रूप में एक साथ रखा गया है कि औषधि के अतिरिक्त अनुसंधान का एक बड़ा भाग उनकी संरचनाओं और कार्यों की नकल तैयार करने के

लिए चला जाता है। हड्डियों असाधारण रूप से मिश्रित हैं। रोबोट वैज्ञानिकों अब 'सॉफ्ट रोबोटिक्स' नामक क्षेत्र में एक ऐसे रोबोट का निर्माण करने की कोशिश कर रहे हैं जो कि खरगोश की तरह कूद या साँप की तरह लुढ़क सकते हैं! शारीरिक समस्याओं के समाधान में अनुकूलन तकनीकों में से एक को "तंत्रिका नेटवर्क" कहा जाता है जो कुछ हद तक एक प्राथमिक तरीके से मस्तिष्क की नकल करने का प्रयास करता है। दूसरी ओर, मस्तिष्क में न्यूरॉन्स के साथ बने सर्किट के नेटवर्क में प्रत्येक सर्किट एक निर्धारित कार्य करता है परंतु जिस प्रकार यह एक बिंदु तक विनाश के बावजूद कार्य करने में सक्षम है और इस तंत्रिका सर्किट के आपस में परिवर्तित कार्य कंप्यूटर डिजाइनर की ईर्ष्या का विषय हैं जो कि केवल एक सीमा तक ही अतिरेक और दोष सहिष्णुता वाले कंप्यूटर का निर्माण करने में सक्षम हैं।

17. इसके विपरीत, तंत्रिका विज्ञान की कई प्रमुख शाखाओं में से एक कम्प्यूटेशनल न्यूरोसाइंस भी है जो कंप्यूटर विज्ञान की अवधारणाओं के आधार पर इन सर्किट के सूचना प्रोसेसिंग गुणों का अध्ययन करता है और अब इलेक्ट्रॉनिक चिप्स का प्रयोग कर इस तरह के कार्यात्मक तंत्रिका सर्किट का निर्माण करने के लिए कुछ आरंभिक प्रयास कर रही है। हमारे कार्यालय का एक 'प्रतिभाशाली बच्चे' कार्यक्रम भी है जिसमें विज्ञान और गणित के क्षेत्र में प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान और संवर्धन किया जाता है। इसमें शामिल समूहों में एक अनुप्रयुक्त मनोवैज्ञानिक और संज्ञानात्मक विज्ञान के विशेषज्ञ हैं। सवाल यह है कि क्या प्रतिभाशाली बच्चों के दिमाग अभिज्ञेयता से अलग हैं? यदि हां, तो किस प्रकार से?

18. भविष्य में संभव है कि एक व्यक्ति की जीनोटाइपिंग पूरी तरह से व्यक्तिगत उपचार की ओर ले जाए। दिलचस्प बात यह है कि आयुर्वेद, दूसरी ओर, समग्र उपचार पर बल देता है - एक व्यक्ति की जीनोटाइपिंग की जगह उसकी फीनाटाइपिंग करना। हमारे कार्यालय ने डॉ वालियाथन के नेतृत्व में "आयुर्वेद में एक वैज्ञानिक पहल" विषय पर एक बहुत ही सफल परियोजना को समर्थन दिया है। वे इस क्षेत्र को 'आयुर्वेदिक जैवविज्ञान' कहते हैं।

19. मैं इस अद्भुत अवसर पर आप के साथ होने के लिए एक बार फिर से आप सब और विशेष रूप से प्रो. जे. एस. बजाज का धन्यवाद करता हूँ। मैं समस्त चिकित्सा बिरादरी को शुभकामनाएँ देता हूँ क्योंकि जो चिकित्सकों के लिए अच्छा है वह हम सब के लिए भी अच्छा है!

धन्यवाद।

अनुबंध-III

जोधपुर में दिनांक 26 अक्तूबर, 2013 को आयोजित वार्षिक दीक्षांत समारोह में प्रतिष्ठित अध्यक्ष एवं विशिष्ट अतिथि आचार्य जे.एस. बजाज, द्वारा दिए गए अभिभाषण का पाठ

माननीय मुख्य अतिथि डॉ आर चिदंबरम; अध्यक्ष डॉ सी. एस. भास्करन; गणमान्य अतिथि, डॉ एस. पद्मावती; अकादमी के अधिकारी; निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर और आयोजन समिति के सदस्य; आदरणीय अध्येता, प्रतिनिधि और सम्मानित अतिथिगण,

मैं बहुत प्रसन्नता और गर्व के साथ इस संध्या के मुख्य अतिथि डॉ आर. चिदंबरम का स्वागत करता हूँ। डॉ चिदंबरम का परमाणु वैज्ञानिक के रूप में एक प्रतिष्ठित कैरियर रहा है। उनके कैरियर का मार्ग काफी सीमा तक जैव चिकित्सा विज्ञान के साथ गुंथा हुआ है। उन्होंने 1962 में परमाणु चुंबकीय अनुनाद (एनएमआर) में अपनी पीएचडी प्राप्त की है और उन्हें सबसे अच्छी डॉक्टरेट थीसिस के लिए मार्टिन फोर्स्टर पदक से सम्मानित किया गया था। 'चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग के विषय में उनकी खोजों के लिए', पॉल सी. लॉटरबर और सर पीटर मैन्सफील्ड को वर्ष 2003 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इसका उपयोग अब हर मेडिकल छात्र भली भांति जानता है ।

विज्ञान में दर्शनशास्त्र की उपाधि के लिए उन्होंने पदार्थ विज्ञान में पढ़ाई की और विटामिन, दवाओं, प्रोटीन और डीएनए के रूप में न्यूक्लिक एसिड सहित कई जैविक अणुओं की संरचना और कार्यों को चिह्नित करने की विधि एक्स-रे क्रिस्टलोग्राफी के साथ काम किया। एक्स-रे क्रिस्टलोग्राफी अभी भी नये पदार्थों की परमाणु संरचना के निरूपण के लिए मुख्य विधि है। आपको याद होगा कि प्रोफेसर डोरोथी हॉजकिन को, एक्स-रे क्रिस्टलोग्राफी का उपयोग कर पेनिसिलिन और विटामिन बी 12 की संरचना समझाने के अपने काम के लिए, 1964 में रसायन विज्ञान में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्होंने अपने द्वारा सुलझाए गए हर प्रमुख अणु के साथ क्रिस्टलोग्राफी को फिर से खोजा। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने जैविक कार्य समझाने के लिए आणविक संरचना का उपयोग कर आधुनिक विज्ञान के विशिष्ट भेदों में से एक की स्थापना करने में मदद की।

मैं दर्शकों को याद दिलाना चाहता हूँ कि डॉ चिदंबरम और में एक अनूठी समानता हैः दोनों को अमेरिका प्रवेश वीजा देने से इनकार कर दिया गया था। डॉ डोरोथी हॉजकिन के साथ यह 1953 में तब घटित हुआ जब उन्हें एक सम्मेलन में प्रोटीन अमीनो एसिड के कुंडलित संरचना की चर्चा के लिए नोबेल पुरस्कार विजेता लीनुस पॉलिंग द्वारा आमंत्रित किया गया था। इसी तरह जब डॉ चिदंबरम ने जब क्रिस्टलोग्रॉफर के अंतर्राष्ट्रीय संघ के 1998 वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने के लिए वीजा के लिए अमेरिका से संपर्क किया तो उन्हें सकारात्मक उत्तर नहीं मिला हालाँकि वे उस के सदस्य थे। परिणामस्वरूप उन्होंने अपना वीजा आवेदन वापस ले लिया। प्रो डोरोथी हॉजकिन को वीजा के इनकार के 11 वर्ष बाद नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था; हमें आशा है और प्रार्थना करते हैं कि डॉ चिदंबरम के साथ भी ऐसा ही हो।

भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के निदेशक, और बाद में अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग के रूप में डॉ चिदंबरम ने अनुसंधान और नैदानिक और चिकित्सीय उद्देश्यों, दोनों के लिए भली प्रकार से उच्च गुणवत्ता वाले रेडियो आइसोटोप की एक सतत और निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित की। पिछले कई वर्षों से वे तीव्र गति वाला साइबरवे प्रदान करने वाले राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क का नेतृत्व कर रहे हैं जो प्रधानमंत्री की वर्तमान दशक को 'नवीनता के दशक' और वर्ष 2012-13 को 'विज्ञान वर्ष' के रूप में सोच की सफलता के लिए एक महत्वपूर्ण निर्धारक बन गया है। राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क स्वास्थ्य, शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान और कृषि सहित प्रमुख ज्ञान बांटने के क्षेत्रों में प्रमुख प्रस्तावों को बढ़ावा दे रहा है।

योजना आयोग द्वारा गठित तृतीयक स्वास्थ्य देखभाल संस्थानों पर समिति के अध्यक्ष के रूप में, हम चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए और दूरदराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य देखभाल के वितरण के लिए राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क को एक प्रमुख विधा के रूप में मानते हैं। मुझे दृढ़ विश्वास है कि उनके प्रेरणादायक अभिभाषण को सुनने के बाद आप भी मेरी इस बात से सहमत होंगे कि डॉ चिदंबरम न केवल एक परमाणु वैज्ञानिक हैं अपितु जैव चिकित्सा अनुसंधान की दिशा में प्रमुख योगदान के साथ और दूर-चिकित्सा व दूर-शिक्षा के माध्यम से चिकित्सा ज्ञान और स्वास्थ्य देखभाल का प्रचार-प्रसार सुनिश्चित करने के लिए एक अग्रणी दूरदर्शी भी हैं।

डॉ एस. राधाकृष्णन द्वारा प्रथम दीक्षांत समारोह अभिभाषण:

50 वर्ष पूर्व 8 दिसंबर, 1963 को राष्ट्रपति डॉ एस. राधाकृष्णन ने अकादमी, जिसे तब भारतीय आयुर्विज्ञान अकादमी के रूप में जाना जाता था, के पहले दीक्षांत समारोह पर भाषण दिया। प्रथम दीक्षांत समारोह की स्वर्ण जयंती पर हम डॉ एस. राधाकृष्णन को सम्मानपूर्वक श्रद्धांजलि देते हैं और उस अवसर पर उनके ज्ञानमय शब्दों की महानता दर्शाते हैं। मैं विज्ञान भवन में मौजूद था और उनके प्रबोधन से बहुत प्रेरित था:

"हमारे लड़के और लड़कियाँ, हमारे पुरुष और महिलाएँ, आसूचना या जन्मजात क्षमता में हीन नहीं हैं। उन्होंने कहा कि ये वे लोग हैं जिन्हें चिकित्सा विज्ञान में प्रथम श्रेणी के शोधकर्ताओं के स्तर तक उठाया जा सकता जैसा कि उन्हें इस देश में अन्य विज्ञानों में उठाया गया है। आपको भी वातावरण, शोध का माहौल, ज्ञान की सीमाओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रेम मिलेगा। यह बात हर युवा मन में डाली जानी चाहिए। आपको उन्हें वे महत्वपूर्ण और रचनात्मक शक्तियों देने के लिए कोशिश करनी चाहिए जिनकी उनमें पूरी क्षमता है और अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण अवसर देना चाहिए। मैं समझता हूँ कि यदि हमारे शिक्षक केवल ज्ञान संचारण न कर अनुसंधान के प्रति प्रेम की भावना संचारण करेंगे तो हमारे लड़के और लड़कियों की उनकी इस अपील के लिए पर्याप्त रूप से प्रतिक्रिया होगी।

स्वर्ण जयंती वर्ष में हमारी अकादमी संतुष्ट है कि युवा वैज्ञानिक हमारे वरिष्ठ साथियों के साथ काम करते हुए प्रथम श्रेणी की शोध कर रहे हैं जिसका साक्ष्य कल एक विशेष सत्र में होने वाली नैम्स विजेताओं की वैज्ञानिक प्रस्तुतियाँ हैं। हालांकि, यह प्रयास शायद मामूली है और इसके विस्तार की आवश्यकता है।

यह अक्सर कहा जाता है कि हमारे चिकित्सा संस्थानों में जैव चिकित्सा अनुसंधान, अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के उपकरणों की कमी के कारण पंगु है। मेरे विचार से, यह शायद आंशिक रूप से ही सही है। एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो हम लेकिन वॉरेन वीवर द्वारा कहे सत्य के साथ सहमत होंगे। 'विज्ञान तकनीक नहीं है, यह उपकरणों का नहीं है, यह कुछ रहस्यमय पंथ नहीं है, यह एक विशाल मैकेनिकल राक्षस नहीं है। विज्ञान मनुष्य की आत्मा का एक साहस है। यह अनिवार्य रूप से एक कलात्मक उद्यम है, काफी हद तक जिज्ञासा से प्रेरित, काफी हद तक अनुशासित कल्पना द्वारा की गई सेवा है, और काफी हद ब्रह्मांड, जिसका मनुष्य एक भाग है, की तर्कसंगतता में आस्था, क्रम और सौंदर्य पर आधारित है। '

पिछले छह दशकों के दौरान मैं चिकित्सा का एक छात्र रहा हूँ , जैव चिकित्सा विज्ञान के हमारे ज्ञान में एक लंबी छलांग हुई है। वास्तव में यह कहना उचित होगा कि पिछले छह दशकों में वैज्ञानिक ज्ञान के क्षेत्र में जो समेकित प्रगति हुई है वह पिछली छह शताब्दियों के दौरान चिकित्सा विज्ञान की प्रगति के कारण ही इतनी अधिक हुई है। वे पुरुष और महिलाएँ कौन थे जिनके कारण यह संभव हुआ है? चिकित्सा के इतिहास के एक गहरे आत्मनिरीक्षण पर, मेरा विश्वास दृढ़ हुआ है कि सबसे प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों की विशेषता जो पवित्र त्रिमूर्ति है उसमें सम्मिलित हैं:

(क) बौद्धिक ईमानदारी; (ख) ज्ञानविषयक अंतर्ज्ञान; और (iii) दृढ़ विश्वास का साहस।

बौद्धिक ईमानदारी:

मैं बौद्धिक ईमानदारी का वर्णन करने के लिए दो उदाहरण देना चाहूँगा। फ्रेडरिक ग्रांट बैंटिंग और जॉन जेम्स रिचर्ड मेक्लेओड को 'इंसुलिन की खोज' के लिए 1923 में संयुक्त रूप में नोबेल पुरस्कार मिला था। हालांकि, वास्तविकता यह है कि इंसुलिन की खोज की ओर ले जाने वाले प्रयोगात्मक कार्य की अवधारणा, डिजाइन और कार्यान्वयन फ्रेडरिक बैंटिंग और चार्ल्स बेस्ट द्वारा 1921 की गर्मियों के दौरान तब किया गया था जब शरीरक्रिया विज्ञान के प्रोफेसर मेक्लेओड स्कॉटलैंड में मछली पकड़ रहे थे और गर्मी की छुट्टी का आनंद ले रहा थे। टोरंटो में वापसी पर जब उन्होंने वह परिणाम देखा तो उन्हें महान खोज होने का अनुभव हुआ। पहली बार "अग्न्याशय का आंतरिक स्राव" नामक लेख में बैंटिंग और बेस्ट द्वारा डेटा प्रकाशित किया गया। हालांकि, बाद में एक लेख में मेक्लेओड अपना नाम शामिल करवाने में सफल रहे और इस तरह नोबेल पुरस्कार के दावेदार बन गए। यह पता चलने पर कि नोबेल पुरस्कार से उन्हें और मेक्लेओड को सम्मानित किया गया है, बैंटिंग ने एक तार भेजा: 'किसी भी बैठक या रात के खाने में कृपया निम्नलिखित पढ़ें। मैं खोज में बेस्ट का बराबर का हिस्सा मानता हूँ। मुझे कष्ट हुआ है कि यह नोबेल न्यास द्वारा स्वीकार नहीं किया गया। हम यह पुरस्कार उसके साथ साझा करेंगे।' आज वैज्ञानिकों की पीढ़ियाँ और मधुमेह के लाखों रोगी बैंटिंग और बेस्ट द्वारा की गई इंसुलिन की खोज को साभार याद करते हैं जबकि मेक्लेओड का नाम इतिहास के कूड़ेदान तक ही सीमित रहता है।

इसके विपरीत एक्स-रे क्रिस्टलोग्राफी का उपयोग कर पेनिसिलिन और विटामिन बी 12 की संरचना समझाने के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित होने के बाद डोरोथी हॉजकिन ने अपने सहयोगियों के साथ इसी तरह की तकनीक का उपयोग करते हुए इंसुलिन की संरचना के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित किया। सबसे प्रेरणादायक वह था जो बाद में घटित हुआः 1969 में इंसुलिन की संरचना का वर्णन करने वाले नेचर लेख में हॉजकिन की टीम के सदस्यों के नाम वर्णानुक्रम में थे जिनमें उनका नाम पीछे से तीसरे नंबर पर था। युवा अन्वेषकों को मान्यता और निरंतर समर्थन देना विज्ञान की प्रगति के लिए आवश्यक है।

ज्ञानविषयक अंतर्ज्ञान:

अनुसंधान के लिए गहन जुनून अंतःप्रज्ञ बोध की ओर ले जाता है। 'तंत्रिका आवेगों की रासायनिक संचरण से संबंधित उनकी खोजों के लिए' 1936 में सर हेनरी डेल के साथ संयुक्त रूप से नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले ओटो लॉएवी की जीवनी से बेहतर इसे कोई नहीं समझा सकता। मैं ओटो लॉएवी के शब्दों में ही इसका वर्णन करता हूँ:

"ईस्टर रविवार (1921) से पिछली रात मैंने उठ कर रोशनी की और पतले कागज की एक छोटी सी पर्ची पर कुछ नोट लिखे। मैं फिर से सो गया। सुबह छह बजे मुझे लगा कि रात के दौरान मैंने कुछ सबसे महत्वपूर्ण लिखा था लेकिन मैं वह लिखा हुआ समझने में असमर्थ था। अगली रात, एक सपने के दौरान तीन बजे, वही विचार फिर आया। मेरे द्वारा सत्रह वर्ष पूर्व कही गई रासायनिक संचरण की परिकल्पना सही थी या नहीं, यह निर्धारित करने के लिए एक प्रयोग का डिजाइन था। मैं तुरंत उठकर प्रयोगशाला गया और रात के डिजाइन के अनुसार एक मेंढक के हृदय पर एक सरल प्रयोग किया। इसका परिणाम बाद में तंत्रिका आवेग के रासायनिक संचरण के सिद्धांत की नींव बना इसलिए मैं संक्षेप में इस प्रयोग का वर्णन करूँगा। दो मेंढ़कों के हृदयों को अलग किया गया एक की तंत्रिकाओं को नहीं छेड़ा गया और दूसरा बिना तंत्रिकाओं के था। दोनों हृदय थोड़े से रिंगर घोल से भरे स्ट्रॉब कैनुला से जुड़े थे। वेगस तंत्रिका की उत्तेजना के दौरान पहले हृदय से रिंगर घोल दूसरे हृदय की ओर गया था। जैसे ही इसकी वेगस को उत्तेजित किया गया यह धीमा हो गया और इसकी धड़कन कम हो गई। इसी प्रकार जब त्वरक तंत्रिका को उत्तेजित किया गया और इस से रिंगर घोल दूसरे में गया तब दूसरा हृदय तेज हो गया और इसकी धड़कन में वृद्धि हो गई। इन परिणामों से स्पष्ट हो गया कि तंत्रिकाएँ हृदय को

प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित नहीं करती है लेकिन अपने टर्मिनलों से विशिष्ट रासायनिक पदार्थ छोड़ती हैं जो फिर हृदय के कार्य में भली प्रकार से ज्ञात संशोधन करते हैं जो कि इसकी तंत्रिकाओं के उत्तेजित होने की विशिष्टता है।"

ओटो लॉएवी की कहानी की भी समकालीन प्रतिध्वनि है। तीन हफ्ते पहले, 7 अक्टूबर 2013 को शरीरक्रिया विज्ञान या चिकित्सा में नोबेल पुरस्कार संयुक्त रूप से जेम्स ई रोथमैन, रैंडी डब्ल्यू स्कैकमैन और थॉमस सी. सुडॉफ को 'हमारी कोशिकाओं में एक प्रमुख परिवहन प्रणाली पुटिका यातायात को विनियमित करने वाली मशीनरी की अपनी खोजों के लिए' दिया गया था। थॉमस सुडॉफ की दिलचस्पी इसमें थी कि तंत्रिका कोशिकाओं का मस्तिष्क में एक दूसरे के साथ संवाद कैसे होता है। उन्होंने संकेतन आण्विक न्यूरोट्रांसमीटर की खोज की जो पुटिकाओं द्वारा छोड़े जाते हैं तथा रोथमैन और स्कैकमैन द्वारा खोजी गई मशीनरी का उपयोग कर तंत्रिका कोशिकाओं की बाहरी झिल्ली के साथ जुड़ जाते हैं। इस प्रकार हेनरी डेल और ओटो लॉएवी के साथ आरंभ हुई न्यूरोट्रांसमीटर की कहानी, थॉमस सुडॉफ के कार्य द्वारा अपनी तार्किक परिणति तक पहुँच गयी।

दृढ़ विश्वास का साहस:

एक गुरु युवा प्रशिक्षु को अपनी प्रेरणा और आकांक्षा संचारित कर सकता है और न केवल एक स्थायी विश्वास अपितु दृढ़ विश्वास का साहस भी जगा सकता है। हाल ही के एक उदाहरण से मैं यह स्पष्ट करता हूँ। पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में एक राज्य स्तरीय मेडिकल स्कूल में एक चिकित्सा के छात्र और प्रशिक्षु के रूप में तेईस वर्षीय बैरी मार्शल ने सोचा था कि चिकित्सा अनुसंधान लाभशून्य होगा: "जब मैं मेडिकल स्कूल में था तब मुझे लगता है कि चिकित्सा के क्षेत्र में सब कुछ पहले से ही खोजा जा चुका है और मैंने कभी नहीं सोचा कि चिकित्सा अनुसंधान दिलचस्प हो सकता है।" जब वह अपनी रेज़िडेन्सी कर रहा था तब उसके उच्च अधिकारी ने उसे अस्पताल में विकृति विज्ञान के प्रमुख डॉ वॉरेन के साथ मिलने का सुझाव दिया।

इन वर्षों में, आंत्रशोथ और पेट के अल्सर के रोगियों की आमाशय झिल्ली का बायोप्सी नमूना देखते हुए वॉरेन ने एक उल्लेखनीय संगत खोज की: सूजन के लक्षण हमेशा उसी जगह के समीप थे जहाँ सर्पिल आकार के जीवाणुओं को बड़ी संख्या में देखा गया था। जीवाणुओं को

संवर्धित करने के उनके बार-बार के प्रयास असफल रहे थे। उनके सहयोगियों ने इसे एक सनकी विचार मानाः जीवाणु पेट के अम्लीय वातावरण में कैसे जीवित रह सकता है।

आंत्रशोथ और पेप्टिक अल्सर के सभी मामलों में इन जीवाणुओं का निरीक्षण करने के लिए वॉरेन ने मार्शल को प्रेरित किया। मार्शल ने ऐसे रोगियों का व्यवस्थित अध्ययन शुरू कर दिया और पेट के रेस्पायरेट्रस का संवर्धन करने लगा। सभी प्रयास निरर्थक थे लेकिन वॉरेन हमेशा मार्शल की प्रेरणा को प्रबलित करते रहे।

1982 में ईस्टर की छुट्टी के दौरान, अगर प्लेट गलती से इनक्यूबेटर में रह गई और छुट्टी के बाद उनके निरीक्षण में पाया गया कि उनमें उन्हीं जीवाणुओं की कई कालोनियां निहित थीं जिन्हें वॉरेन ने सूक्ष्मदर्शी से देखा था । जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि एक पूर्णतया नई जीवाणु की नस्ल पृथक कर दी गई है। इसे अंततः हेलिकोबेक्टर पायलॉरी का नाम दिया गया।

मार्शल और वॉरेन ने एक बड़ा नैदानिक अध्ययन किया जिसने दिखाया कि हेलिकोबेक्टर पायलॉरी अल्सर के अधिकांश रोगियों के पेट में या तो ग्रहणी या पेट में पाया जाता है और जीवाणु हमेशा श्लेष्मा झिल्ली की सूजन के साथ जुड़े होते हैं। पृथक किए गए जीवाणु एक बीमारी का कारण बनते हैं यह सिद्ध करने के लिए मार्शल ने कोच की चौथी अभिधारणा को पूरा करने की कोशिश की। इसका तात्पर्य है कि पृथक किए गए संक्रामक एजेंट से प्रयोगात्मक पशु में वही रोग होना चाहिए जो मनुष्य में होता है।

जब कई पशु मॉडल एक निश्चित उत्तर देने में असफल रहे तो मार्शल ने वॉरेन की प्रेरणा और अपने विश्वास के साहस के साथ एक साहसी प्रयोग किया। उसने एंडोस्कोपी और गैस्ट्रिक बायोप्सी करवाई जिसमें कोई सूजन और जीवाणु नहीं दिखाई दिया। इसके बाद जुलाई 1984 में उन्होंने हेलिकोबेक्टर से युक्त एक जीवाणु संवर्ध पी लिया। परिणामस्वरूप वे दो सप्ताह तक लिए गंभीर पेट की सूजन से पीड़ित रहे। उन्हें पूरा भोजन खाने के बाद भी भूख महसूस होती थी। उनको कुछ समय तक मितली और वमन आया। पुनः एंडोस्कोपी और बायोप्सी की गई जिसने आमाशय की श्लेष्मा झिल्ली में गंभीर सूजन और उसके आसपास के क्षेत्र में जीवाणु की बड़ी संख्या दिखाई। एंटीबायोटिक दवाओं के एक संक्षिप्त कोर्स से वे पूरी तरह से हो गए। अब यह स्थापित हो गया कि हेलिकोबेक्टर पायलॉरी 90% से अधिक ग्रहणी अल्सर और 80% गैस्ट्रिक अल्सर का कारण है। पेट के कैंसर का खतरा भी बढ़ जाता है। बेरी जे. मार्शल और

जे. रॉबिन वारेन को 'हेलिकोबेक्टर जीवाणु और आंत्रशोथ और पेप्टिक अल्सर की बीमारी में इसकी भूमिका की उनकी खोज के लिए' 2005 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यदि एक 23 वर्षीय युवा प्रशिक्षु बेरी मार्शल में अपने गुरु रॉबिन वॉरेन द्वारा अनुसंधान के प्रति प्रेम प्रेषित किया जा सकता है (डॉ एस. राधाकृष्ण के शब्दों में), क्यों हमारे साथियों, हमारे संकायों, हमारे शिक्षकों, में इस प्रेरक बल का अभाव है? जब हम न्यूरोट्रांसमीटर, इंसुलिन, या पेप्टिक अल्सर के बारे में सिखाते हैं तो हम में से कितने अपने व्याख्यान से पूर्व कुछ मिनट यह और चिकित्सा के इतिहास में इसी तरह के प्रेरक मील के पत्थरों के बारे में बताने में व्यय करते हैं। यह गहरी चिंता का विषय है जिसमें हम सभी को आत्मनिरीक्षण की आवश्यकता है।

"प्रिय ब्रूटस, दोष हमारे सितारों में नहीं है

लेकिन हम में है"

जूलियस सीजर में शेक्सपियर

डॉ एस. राधाकृष्णन के दीक्षांत अभिभाषण की स्वर्ण जयंती पर हम स्वंय को उनके प्रबोधन के लिए पुनः समर्पित करें और युवा मन को अनुसंधान के लिए प्रेरित करने वाले गुरू बनें।

आज के पदक, पुरस्कार, अध्येतावृत्ति और सदस्यता प्राप्तकर्ताओं को मेरी हार्दिक बधाई। वे हमारी अकादमी की गौरवशाली परंपराओं को समृद्ध करते रहें! जैसा कि महान तमिल तिरुवल्लुवर ने 2000 से भी अधिक वर्ष पूर्व कुरल में बल देते हुए कहा:

जो लोग सही तर्ज पर और प्रतिबद्धता में किसी भी गिरावट के बिना

कड़ी मेहनत करना जारी रखते हैं

वे यहाँ तक कि भाग्य को भी जीत लेते हैं

यह ज्ञान हमारे भावी प्रयासों में हम सभी का मार्गदर्शन और प्रेरित करता रहेगा।

मैं पुनः मुख्य अतिथि डॉ आर. चिदंबरम को मेरा निमंत्रण स्वीकार करने के लिए और आयोजकों डॉ संजीव मिश्रा और डॉ कुलदीप सिंह को दीक्षांत समारोह को संबोधित करने के अवसर के लिए धन्यवाद देता हूँ।

धैर्यपूर्वक सुनने के लिए आप सभी को धन्यवाद।

शैक्षिक रिपोर्ट

NATIONAL ACADEMY OF MEDICAL SCIENCES (INDIA)

सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम

01 अप्रैल, 2013 से 31 मार्च, 2014 के दौरान सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यकलापों की रिपोर्ट

सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम समिति के निम्नलिखित सदस्य हैं:

1.	डॉ. प्रेमा रामाचंद्रन, एफएएमएस	-	अध्यक्ष
2.	प्रो. जे.एस. बजाज, एफएएमएस	-	अध्यक्ष, शैक्षिक समिति
3.	डॉ. कमल बक्शी, एफएएमएस	-	सदस्य
4.	डॉ. महताब एस. बामजी, एफएएमएस	-	सदस्य
5.	डॉ. मोहन कामेश्वरन, एफएएमएस	-	सदस्य
6.	डॉ. सरोज चूड़ामणि गोपाल, एफएएमएस	-	सदस्य
7.	डॉ. राजू सिंह चीना, एफएएमएस	-	सदस्य
8.	डॉ. एम. वी. पदमा श्रीवास्तव, एफएएमएस	-	सदस्य
9.	डॉ. के.के. शर्मा, एफएएमएस	-	सदस्य
10.	डॉ. सी.एस. भास्करन, एफएएमएस	-	अध्यक्ष, नैम्स (पदेन)
11.	डॉ. संजय वधवा, एफएएमएस	-	सचिव, नैम्स

वर्ष 2013-2014 के दौरान, सीएमई कार्यक्रम समिति की चार बैठकें आयोजित की गई थीं। पहली बैठक दिनांक 26 अप्रैल, 2013 को और बाकी बैठकें 19 अगस्त, 2013, 30 दिसंबर, 2013, व 28 मार्च, 2014 को आयोजित की गई थीं।

समिति समय-समय पर, चर्चा के विषय के अनुसार विशेषज्ञ सलाह की आवश्यकता के आधार पर बैठक में भाग लेने के लिए अध्येताओं को सहयोजित करती है।

बाह्यसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रमः ये सीएमई कार्यक्रम अकादमी की सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम समिति के तत्वाधान में चलाए जा रहे हैं। एनएएमएस द्वारा निधिपोषित बाह्यसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों की गुणवत्ता और विषय-वस्तु में सुधार करने के लिए निधिपोषण हेतु प्राप्त प्रस्तावों की सबसे पहले एक विषय विशेषज्ञ, जो एनएएमएस के अध्येता भी हैं, द्वारा तकनीकी रूप से समीक्षा की जाती है। इस पद्धति का जुलाई, 2004 से ही अनुपालन किया जा

रहा है और इस प्रकार नामोदिष्ट समीक्षकों ने प्रस्तावों का मूल्यांकन किया है और कार्यक्रम की विषय-वस्तु में अगर कोई खामियाँ हैं तो उनकी पहचान की है। समीक्षकों ने कार्यक्रम में समामेलित किए जाने वाले संशोधनों/आशोधनों का भी सुझाव दिया है। ये सुझाव सूचित किए जाते हैं और ऐसे लगभग सभी सुझाव आयोजकों द्वारा स्वीकार किए गए हैं और उसके बाद ही सीएमई प्रस्तावों को निधिपोषित किया जाता है। अकादमी के अध्येताओं को बाह्यसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों में भाग लेने और उनका मूल्यांकन करने के लिए पर्यवेक्षकों के रूप में नामोदिष्ट किया जाता है। अकादमी सीएमई कार्यक्रमों की समीक्षा करने के लिए पर्यवेक्षकों के रूप में नामित अध्येताओं को यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता और मानदेय प्रदान कर रही है।

देश में विभिन्न चिकित्सा संस्थानों/व्यावसायिक निकायों से प्राप्त सीएमई प्रस्तावों में से अकादमी ने वित्तीय वर्ष 01 अप्रैल, 2013 से 31 मार्च, 2014 के दौरान 9 बाह्यसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों के आयोजन के लिए वित्तीय सहायता स्वीकृत की है।

01 अप्रैल, 2013 से 31 मार्च, 2014 के दौरान निधिपोषित बाह्यसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों का ब्यौरा अनुबंध-IV के रूप में प्रस्तुत है।

01 अप्रैल, 2013 से 31 मार्च, 2014 के दौरान बाह्यसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों पर स्वीकृत कुल व्यय 5,61,461 लाख रुपए (केवल पाँच लाख इकसठ हजार चार सौ इकसठ रुपए) है।

अंतःसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रमः ये सीएमई कार्यक्रम अकादमी की सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम समिति के तत्वाधान में चलाए जा रहे हैं। सीएमई कार्यक्रम समिति समय-समय पर अंतःसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रम के रूप में निधिपोषण के लिए राष्ट्रीय और शैक्षणिक संगतता के विषयों की पहचान करती है। अकादमी उन अध्येताओं को, जो पर्यवेक्षकों के रूप में सीएमई कार्यक्रमों में भाग लेते हैं और रिपोर्ट दाखिल करते हैं, यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता और मानदेय प्रदान करती है।

अकादमी ने वर्ष 2013-2014 के दौरान 10 अंतःसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रम/ संगोष्ठी का निधिपोषण किया हैः-

1. 27 अप्रैल, 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में आयोजित "द्विमेरुता के लिए एक बहु-अनुशासनिक दृष्टिकोण" पर सीएमई कार्यक्रम
2. 20 जुलाई, 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर में आयोजित "नैदानिक अनुसंधान में आचारसंहिता" पर सीएमई कार्यक्रम
3. 25 अक्टूबर, 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में आयोजित "निद्रा चिकित्सा" पर नैम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी

4. 24 नवम्बर, 2013 को सरकारी मेडिकल कॉलेज, चंडीगढ़ में आयोजित "गर्भावस्था में यकृत रोग" पर क्षेत्रीय संगोष्ठी

5. 28 नवम्बर, 2013 को एस. एन. मेडिकल कॉलेज, आगरा में आयोजित "क्षय रोग: नए नैदानिक उपकरण और उपचार अद्यतन" पर सीएमई कार्यक्रम

6. 16 नवम्बर, 2013 को बाबा फरीद स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, फरीदकोट में आयोजित "मादक द्रव्यों का सेवन: महामारी विज्ञान, समाजशास्त्र, स्वास्थ्य पर प्रभाव और पंजाब राज्य के विशेष संदर्भ में रोकथाम, नियंत्रण और प्रबंधन के लिए हस्तक्षेप रणनीतियाँ" पर सीएमई कार्यक्रम

7. 5 दिसंबर, 2013 को चेंगलपट्टू मेडिकल कॉलेज, चेंगलपट्टू में आयोजित "बच्चों में बधिरता पर क्षेत्रीय अद्यतन" पर सीएमई कार्यक्रम

8. 6 दिसंबर, 2013 को डॉ एस. एन. मेडिकल कॉलेज, जोधपुर में आयोजित "चिकित्सा शिक्षा के लिए मान्य गैर प्रिंट माध्यम का उपयोग कर एक मॉडल सीएमई कार्यक्रम के तुलनात्मक प्रभाव का आकलन करना" पर सीएमई संगोष्ठी

9. 10 जनवरी, 2014 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में आयोजित "एक्यूट इस्केमिक स्ट्रोक: उन्नतिकरण की मूल बातें" पर नैम्स-एम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी

10. 30 मार्च 2014 को स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़ में आयोजित "बच्चों में दौरे और मिरगी: ज्ञान से व्यावहारिक देखभाल तक" पर नैम्स-पीजीआई अंतःसांस्थानिक संगोष्ठी

अंत-सांस्थानिक सीएमई कार्यक्रम आयोजित करने में कुल व्यय 7,45,250 लाख रुपए (केवल सात लाख पैंतालीस हजार दो सौ पचास रुपए) था। ब्यौरे अनुबंध-V में दिए गए हैं।

चित्र 1 वर्ष 2012-13 और 2013-14 के दौरान बाह्यसांस्थानिक और अंतःसांस्थानिक कार्यक्रमों पर किए गए व्यय का चित्रांकन करता है।

वर्ष 2012-13 और 2013-14 में सीएमई कार्यक्रमों पर कुल व्यय

हजार रूपयों में

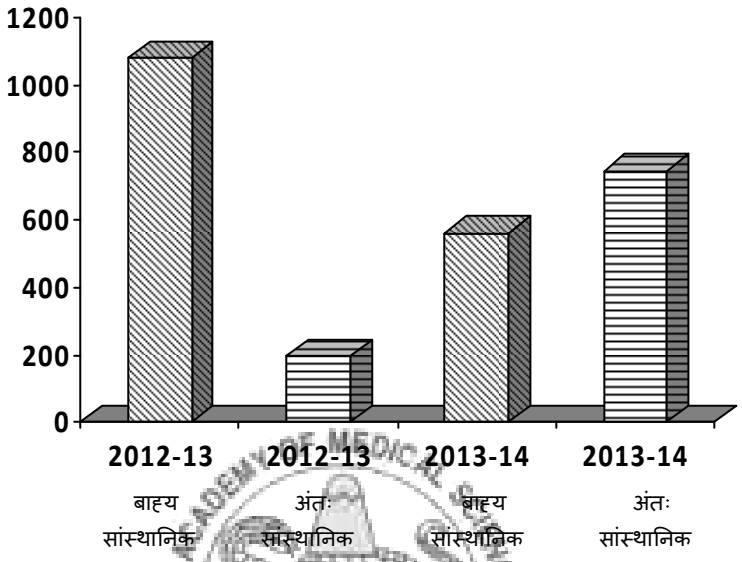

चित्र 1. वर्ष 2012-13 और 2013-14 में बाह्यसांस्थानिक और अंतःसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों में किए गए व्यय का तुलनात्मक प्रदर्शन।

राज्य-चैप्टर-वार बाह्यसांस्थानिक और अंतःसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों का विवरण चित्र 2 में दिया गया है।

चित्र 2. राज्य चैप्टर-वार वर्ष 2013-14 में बाह्यसांस्थानिक और अंतःसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों का प्रदर्शन

वर्ष 2013-14 के लिए बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों का विशेषज्ञता-वार विवरण चित्र 3 में दर्शाया गया है।

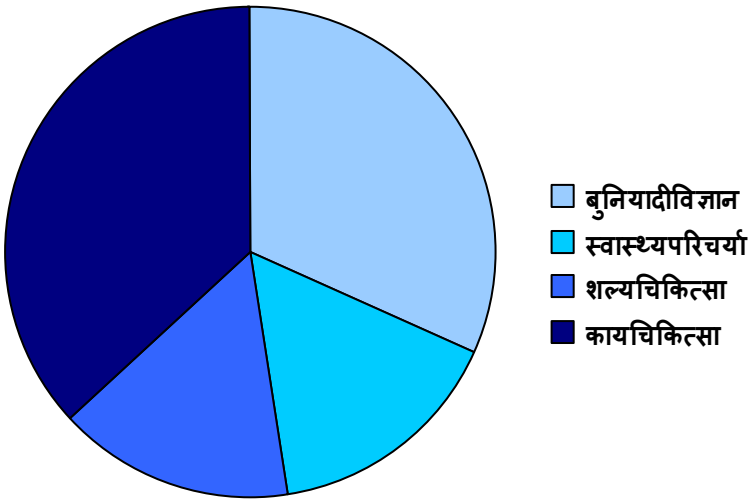

चित्र-3. 01 अप्रैल, 2013 से 31 मार्च, 2014 तक आयोजित बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों का विशेषज्ञता-वार वितरण।

NATIONAL ACADEMY OF MEDICAL SCIENCES (INDIA)

पिछले 3 वर्षों, अर्थात् 2011-12 से 2013-14 में स्वीकृत बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों का राज्य-वार वितरण

बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों का वर्ष 2011-14 से प्रति वर्ष राज्य-वार वितरण नीचे सारणी में दिया गया है

राज्य	2011-12	2012-13	2013-14	वर्ष 2013-14 के दौरान किया गया व्यय (रुपए)
आंध्र प्रदेश	-	2	1	52,500
असम	-	1	-	-
बिहार	-	-	-	-
चंडीगढ़	1	2	-	-
दिल्ली	-	3	2	1,28,432
गोवा	-	-	-	-
गुजरात	-	-	1	72,000
हरियाणा	-	-	-	-
हिमाचल प्रदेश	1	-	-	-
जम्मू और कश्मीर	1	1	1	49,300
कर्नाटक	2	1	1	52,229
केरल	-	-	-	-
मध्य प्रदेश	-	-	-	-
महाराष्ट्र	1	1	1	75,000
मणिपुर	-	-	-	-
ओडिशा	-	-	-	-
पुडुचेरी	1	1	1	57,000
पंजाब	1	2	-	-
राजस्थान	1	-	-	-

राज्य	2011-12	2012-13	2013-14	वर्ष 2013-14 के दौरान किया गया व्यय (रुपए)
तमिलनाडु	-	1	-	-
उत्तर प्रदेश	1	-	-	-
उत्तराखंड	-	-	1	75,000
पश्चिम बंगाल	1	3	-	-
जोड़	**11**	**18**	**9**	**5,61,461**

राज्य चैप्टर के अधीन सीएमई कार्यक्रमों के अंतर्गत समर्थित गोष्ठियों, संगोष्ठियों, अल्पकालिक पाठ्यक्रमों, और कार्यशालाओं का विवरण नीचे दिया गया है।

एनएएमएस अध्यायों के बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम

अकादमी की वैज्ञानिक गतिविधियों में उसके राज्य चैप्टरों की शैक्षणिक गतिविधियां शामिल होती हैं। वित्तीय वर्ष 2013-14 के लिए सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों के अधीन उनकी गतिविधियों की रिपोर्ट नीचे दी गई हैः

आंध्रप्रदेश

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान आंध्रप्रदेश चैप्टर ने एनएएमएस की वित्तीय सहायता से एक बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

दिल्ली

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान दिल्ली चैप्टर ने एनएएमएस की वित्तीय सहायता से दो बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

जम्मू और कश्मीर

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान हिमाचल प्रदेश चैप्टर ने एनएएमएस की वित्तीय सहायता से एक बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम (जम्मू में) आयोजित किया है।

कर्नाटक

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान कर्नाटक चैप्टर ने एनएएमएस की वित्तीय सहायता से एक बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम (बेंगलुरु में) आयोजित किया है।

महाराष्ट्र

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान महाराष्ट्र चैप्टर ने एनएएमएस की वित्तीय सहायता से एक (पुणे में) बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किया है।

पुडुचेरी

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान पुडुचेरी चैप्टर ने एनएएमएस की वित्तीय सहायता से एक बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किया है।

गुजरात

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान गुजरात चैप्टर ने एनएएमएस की वित्तीय सहायता से एक बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किया है।

उत्तराखंड

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान उत्तराखंड चैप्टर ने एनएएमएस की वित्तीय सहायता से एक बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

अनुबंध – IV

दिनांक 01.04.2013 से 31.03.2014 तक बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों पर रिपोर्ट

1. **20 जुलाई 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित "प्रजनन स्वास्थ्य पर अंतःस्रावी बाधक का प्रभाव" पर सीएमई कार्यक्रम।**

आयोजन सचिव: डॉ आशुतोष हलदर, आचार्य, प्रजनन जीवविज्ञान विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली।

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

सीएमई कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों में प्रजनन स्वास्थ्य पर अंत: स्रावी बाधक के प्रभाव को समझाने के साथ उन्हें पहचानने में कौशल के विकास/ अधिग्रहण के लिए किया गया था। इससे प्रतिभागियों को प्रजनन स्वास्थ्य के बेहतर प्रबंधन में मदद मिलेगी और प्रजनन स्वास्थ्य पर अंत: स्रावी बाधक के प्रभाव से भारत में प्रजनन स्वास्थ्य और पोषण पर हमारी समझ का विस्तार होगा।

संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य युवाओं और वैज्ञानिकों और शिक्षण संकायों को प्रजनन स्वास्थ्य पर अंत: स्रावी बाधक के प्रभाव की अवधारणा से उन्हें अवगत कराने के लिए किया गया था। यह आशा की गई थी कि प्रस्तावित संगोष्ठी प्रजनन स्वास्थ्य पर अंत: स्रावी बाधक के बारे में जागरूकता पैदा करेगी। व्याख्यान और प्रदर्शन उन विशेषज्ञों के समूह के द्वारा दिए गए जो नियमित रूप से इस क्षेत्र में कई वर्षों से अनुसंधान कर रहे हैं और अपने विभिन्न शोधों के साथ उन्हें परिचित कराने के लिए स्वास्थ्य पेशेवरों के शिक्षण और प्रशिक्षण में शामिल रहे हैं।

पर्यवेक्षक (डॉ. राधे श्याम शर्मा, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

हालांकि अंत: स्रावी बाधक पशु प्रयोगों में प्रजनन पर विस्तृत भूमिका निभाते हैं फिर भी मानव रोगों के साथ इनके संबंधों को दिखाना कठिन है। अंत: स्रावी बाधक मानव रोगों

का कारण है यह दिखाना कठिन है - संगोष्ठी के विशेषज्ञ समूह के इस दृष्टिकोण को हाल ही में एक वैज्ञानिक वक्तव्य में (अमेरिका) के अंतःस्रावी सोसायटी द्वारा समर्थित किया गया था; हालांकि, यह सिफारिश की है कि एहतियाती सिद्धांत का पालन किया जाना चाहिए। अब तक मानव अध्ययन के साथ समस्या है कि ये प्रकृति में मुख्य रूप से महामारी विज्ञान के होते हैं और कई पर्यावरण के खतरों के संपर्क में आए मनुष्यों पर आयोजित किए जाते हैं। इसलिए प्रजनन रोगों के करणीय में संपर्कों के मिश्रण के यौगिक प्रभाव को निभाने वाले किसी भी, बल्कि निश्चित कारण को निर्धारित करना कठिन है। मानव अंत: स्रावी और संबंधित रोगों के साथ सीधा कारण और प्रभाव के संबंध स्थापित करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण का उपयोग कर अनुसंधान के नए तरीकों को विकसित करने की तत्काल आवश्यकता है। यह संगोष्ठी निम्नलिखित शीर्षों के साथ इस विषय को संबोधित करने के लिए पहला कदम था:

क) प्रजनन कैंसर पर अंतःस्रावी बाधकों का प्रभाव
(स्तन, प्रोस्टेट, अंडाशय, वृषण, जननांग क्षेत्र आदि)

ख) विकास के विकारों पर अंतःस्रावी बाधकों का प्रभाव
(ट्रांस-पीढ़ीगत, लिंग अनुपात, मोटापा, सेक्स विकास के विकार, वृषण अपजनन सिंड्रोम, गुप्तवृषणता, अधोमूत्रमार्ग विकार आदि)

ग) पुरुष प्रजनन पर अंतःस्रावी बाधकों का प्रभाव
(वृषण कार्य, स्तंभन दोष, यौन व्यवहार, बांझपन, यौवन आदि)

घ) महिला प्रजनन पर अंतःस्रावी बाधकों का प्रभाव
(डिम्बग्रंथि कार्य, यौवन, समय से पहले डिम्बग्रंथि विफलता / रजोनिवृत्ति, अंर्तगर्भाशय रोग, गर्भावस्था की हानि, पॉलीसिस्टिक डिम्बग्रंथि सिंड्रोम आदि)

इस संगोष्ठी में आमंत्रित वक्ताओं ने निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान दिया:

- क्रोमियम, एक आवश्यक ट्रेस तत्व पर्यावरण अंत: स्रावी बाधक हो जाता है जब यह शारीरिक स्तर को पार कर लेता है: पुरुष प्रजनन विषाक्तता।
- अंतःस्रावी बाधक रसायन: पशुओं के प्रजनन प्रणाली पर उनके संभावित प्रभाव
- वयस्क वृषण पर एस्ट्रोजनकरण के प्रतिकूल प्रभाव और उपचारात्मक उपाय
- बाइस्फिनॉल ए के पश्चजनन सम्बन्धी प्रभाव

- अंत: स्रावी बाधक के लिए एक संभावित लक्ष्य के रूप में परऑक्सीसोम प्रफलक सक्रिय रिसेप्टर्स-गामा (पीपीएआर-गामा): एस्ट्रोजन जैवसंश्लेषण में महत्वपूर्ण जीन की आनुवंशिक और पश्चजनन सम्बन्धी नियमन से इसका संबंध
- वंशानुक्रम और सक्रिय प्रतिलेखन स्मृति को कोशिकाओं द्वारा मिटाना: लिगेंड संग्राहक प्रतिलेखन कारक से साक्ष्य
- पुरुष बांझपन में ऑक्सीडेटिव तनाव की भूमिका और आनुवांशिक कारक
- बाइस्फिनॉल ए के शुक्राणुओं की संख्या और शुक्राणु संरचना पर अंतर्जीवी प्रभाव
- पर्यावरणीय प्रभाव और पीसीओएस रोगजनन
- बाइस्फिनॉल ए के संपर्क में आने से नाइट्रिक ऑक्साइड प्रवर्तक संश्लेषण की अभिव्यक्ति में वृद्धि: नर चूहों में स्टेरॉयड उत्पत्ति में गिरावट के लिए एक संभावित कारण।

व्याख्यान उन विशेषज्ञों के समूह के द्वारा दिए गए जो नियमित रूप से इस क्षेत्र में कई वर्षों से कार्य कर रहे हैं।

सभी प्रतिभागियों ने वक्ताओं द्वारा दिए गए पूरे विषयों पर चर्चा की। प्रत्येक भाषण के बाद प्रश्नोत्तर सत्र था जिसका पूरी तरह से सदुपयोग किया गया और यहाँ तक कि निर्धारित समय से पीछे हो जाने के कारण कभी कभी बातचीत को रोकना भी पड़ा।

2. 20 सितम्बर 2013 को गांधी मेडिकल कॉलेज, सिकंदराबाद में आयोजित "यकृत विकृति विज्ञान पर अद्यतन" पर सीएमई कार्यक्रम।

आयोजन सचिव: डॉ. ओ. श्रवण कुमार, आचार्य, विकृति विज्ञान विभाग, गांधी मेडिकल कॉलेज, सिकंदराबाद।

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

सीएमई सत्र का प्रत्याशित परिणाम दैनिक व्यवहार में सामने आने वाले विभिन्न यकृत विकारों के बारे में प्रतिभागियों का ज्ञान प्राप्त करना है:

1. नैश, एनसीपीएफ और दीर्घकालिक यकृत शोथ, आदि के विकृति शरीरक्रिया विज्ञान को समझना।

2. दीर्घकालिक यकृत शोथ के विभिन्न प्रकार पता लगाने के लिए विभिन्न नैदानिक जांचों का आदेश देना।

3. यकृत शोथ की विभिन्न श्रेणी प्रणालियों के बारे में पता करना।

4. बाल आयु समूहों में यकृत बायोप्सी की व्याख्या करना।

5. यकृत प्रत्यारोपण विकृति विज्ञान के विभिन्न पहलुओं को समझना।

6. प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी के साथ एक यकृत विकृति विज्ञान स्लाइड संगोष्ठी का आयोजन करने के बाद विशेषज्ञों द्वारा प्रासंगिक चर्चा। यह मामला-दर-मामला आधार पर समस्या को सुलझाने का कौशल विकसित करना था।

प्रतिभागियों को यकृत विकृति विज्ञान में उपरोक्त क्षेत्रों में कौशल प्राप्त होगा। सीएमई विचार-विमर्श के हैंडआउट्स / सॉफ्ट प्रति सतत दीर्घकालिक शिक्षा के लिए प्रदान किए जाएगें।

पर्यवेक्षक (डॉ. बी. सेसिकिरन, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

प्राथमिक उद्देश्य प्रतिभागियों को शिक्षित करना और नैश, एनसीपीएफ और दीर्घकालिक यकृत शोथ, आदि के विकृति शरीरक्रिया विज्ञान के क्षेत्र में चिकित्सा अधिकारियों, मेडिकल कालेजों में विकृति विज्ञान रेजिडेंट और अभ्यासरत विकृति वैज्ञानिकों को ज्ञान और कौशल प्रदान करना, विभिन्न यकृत स्वास्थ्य के मुद्दों और फिर सामाजिक दृष्टिकोण पर उन्हें समृद्ध और सशक्त बनाने के लिए विभिन्न यकृत विकारों के खोजी और प्रबंधन मानदंड में नवीनतम प्रोटोकॉल का प्रसार करने था। सीएमई कार्यक्रम संयोजक द्वारा उल्लिखित मुख्य उद्देश्यों को पूरा किया गया। आयोजकों ने एक अच्छी तरह से प्रलेखित अधिगम संसाधन सामग्री, स्मृतिचिह्न के रूप में व्याख्यानों के सार, और इसके अतिरिक्त एक सीडी सभी प्रतिभागियों को प्रदान की। कुल 350 प्रतिभागी पंजीकृत थे जिनमें से 200 प्रतिभागी कार्यक्रम के दौरान सामान्यता उपस्थित थे। कार्यक्रम में न केवल शिक्षाप्रद व्याख्यान शामिल थे अपितु इंटरैक्टिव सत्र/ लघु समूह सीखने की गतिविधियाँ भी थीं। प्रतिभागियों को कुछ सत्रों में व्यावहारिक प्रदर्शन / प्रशिक्षण प्रदान किया गया। अधिकांश व्याख्यान उत्कृष्ट गुणवत्ता के थे। सीएमई

कार्यक्रम के दौरान प्रयुक्त दृश्यश्रव्य व्यवस्था उत्कृष्ट थी। शैक्षणिक सामग्री अच्छी गुणवत्ता की थी और उच्च स्तरीय जानकारी प्रदान की गई।

3. 24-25 अगस्त, 2013 को 92 बेस अस्पताल, 56 एपीओ, श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) में आयोजित "आतंकवाद विरोधी/ आतंकवाद विरोधी पर्यावरण में आपात स्थिति और क्रिटिकल केयर" पर सीएमई कार्यक्रम।

आयोजन सचिवः कर्नल सुब्रतो सेन, वरिष्ठ सलाहकार और क्रिटिकल केयर, 92 बेस अस्पताल, द्वारा 56 एपीओ, श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर)।

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य थे-

1. आपात स्थिति और क्रिटिकल केयर में नई रणनीतियों और प्रवृत्तियों और अपने दैनंदिन अभ्यास में उनके अनुप्रयोग की वर्तमान स्थिति के बारे में चिकित्सा अधिकारियों और सशस्त्र बलों के विशेषज्ञों के ज्ञान और कौशल को अद्यतन करना;
2. सशस्त्र बलों और सिविल डॉक्टरों द्वारा सेवित आतंकवाद ग्रस्त और दूरदराज के क्षेत्रों में मरीजों की क्रिटिकल केयर प्रबंधन में ज्ञान और विशेषज्ञता में सुधार करना।
3. परिधि में काम कर रहे चिकित्सा अधिकारियों के साथ ही विशेषज्ञों के मामलों में समय बीतने के साथ अपरिहार्य हो गई खाई को पाटना।

पर्यवेक्षक (डॉ. मोहम्मद इस्माइल कादरी, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

सीएमई चिकित्सा अधिकारियों के लिए एक व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला के साथ शुरू हुआ जिसमें आधारभूत जीवन सहायता और हृत्फुफ्फुसीय पुनर्जीवन, घाव प्रबंधन और रक्तस्त्राव नियंत्रण, अस्थिभंग और रीढ़ की हड्डी के स्थिरीकरण, अभिघात में पेट केंद्रित सोनोलॉजी (फास्ट) और श्वासनली प्रबंधन पर स्टेशन शामिल थे। प्रशिक्षण कार्यशाला में

वरिष्ठ संकाय के साथ चिकित्सा अधिकारियों ने भी उत्साह से भाग लिया। स्टेशन ईसीजी व्याख्या पर एक अतिरिक्त स्टेशन के साथ अगले दिन फिर दोहराये गए। सीएमई शांति, सद्भाव और राष्ट्रीय एकता के लिए शहीद बहादुर सैनिकों और नागरिकों को समर्पित की गयी। वैज्ञानिक प्रदर्शनी में क्षेत्र चिकित्सा उपकरणों और कई प्रशिक्षण सहायकों को प्रदर्शित करने के साथ 15 कोर की चिकित्सा स्थापना की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया। व्याख्यान के प्रारंभिक सत्र आघात देखभाल के प्रशिक्षण, प्रशासन और रसद पर केंद्रित थे और बाद में डॉ. सतीश धरप, शल्य चिकित्सा के आचार्य, एलटीएमएमसी, सायन, मुंबई द्वारा "अभिघात परिणाम में सुधार" विषय पर मुख्य भाषण दिया गया। बाद के सत्र सीआई / सीटी वातावरण में क्षति नियंत्रण पुनर्जीवन और शल्य चिकित्सा, रक्ताधान, उच्च ऊंचाई चिकित्सा, स्ट्रोक और अचानक हृदय मृत्यु, मैक्सिलोफैशियल की उप-विशेषता प्रबंधन, श्रोणि, यकृत-बाइलरी और हृदयाघात और मनोरोग चुनौतियों के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित थे। वैज्ञानिक प्रदर्शनी अतिथियों के साथ ही प्रतिनिधियों और संकाय के लिए एक प्रमुख आकर्षण थी क्योंकि इसमें 15 वीं कोर में प्रबंधित दिलचस्प मामलों के साथ ही कई क्षेत्र चिकित्सा उपकरणों को प्रदर्शित किया गया था। चिकित्सा अधिकारियों के लिए एक पूर्व कार्यशाला परीक्षण आयोजित किया गया था सीएमई से पहले और बाद दोनों में संकाय और प्रतिनिधियों से प्रतिपुष्टि ली गई थी। इन प्रतिपुष्टि का सार निम्नानुसार है:

(क) आयोजकों ने युवा चिकित्सा अधिकारियों की नियमित आधार पर इस तरह के प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लेने के लिए आवश्यकता अनुभव की। हालांकि, सेवा स्थितियों की बाध्यताओं के कारण उपस्थिति सीमित रही।

(ख) अधिकांश प्रतिभागियों के पूर्व कार्यशाला परीक्षा में औसतन 50% अंक आए।

(ग) व्यावहारिक प्रशिक्षण के विभिन्न स्टेशनों की अत्यधिक सराहना की गई और बहुत शिक्षाप्रद पाए गए।

(घ) व्यावहारिक प्रशिक्षण में सक्रिय रूप से भाग लेने से प्रतिभागी और वरिष्ठ संकाय उत्साहित था।

(ड़) कार्यशाला के दौरान आयोजन समिति द्वारा संकलित प्रशिक्षण वीडियो प्रदर्शनों ने प्रशासनिक नियुक्तियों वाले वरिष्ठ चिकित्सा के लिए नए परिप्रेक्ष्य दिए हैं।

4. 27-28 दिसम्बर, 2013 को मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर में आयोजित भारत में "नए जन स्वास्थ्य मुद्दे" पर सीएमई कार्यक्रम

आयोजन सचिव: डॉ ननजुंडा डी. सी., निदेशक, सामाजिक बहिष्कार और समावेशी नीति अध्ययन केंद्र, मानविकी ब्लॉक, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर, कर्नाटक।

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

(क) भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य में उभरती समस्याओं के बारे में चिकित्सा और गैर चिकित्सा अनुसंधान पेशेवरों को संवेदनशील बनाना।

(ख) भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य समुदाय के भीतर महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य की चुनौतियों का समाधान और समझदारी विकसित करना।

(ग) देश में समावेशी सामुदायिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य और सार्वजनिक स्वास्थ्य के नए दृष्टिकोण के उपयोग के महत्व पर प्रकाश डालना।

(घ) सार्वजनिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों से निपटने के लिए और आम जनता के स्वास्थ्य के रोगों का इलाज करने के लिए उपलब्ध हालिया ज्ञान और तकनीकों के साथ प्रतिभागियों को प्रशिक्षित, शिक्षित, विकसित और नवीनीकृत करना।

(ङ) बदलते सार्वजनिक स्वास्थ्य परिदृश्य के संबंध में ज्ञान और व्यवहार के बीच के अंतर की पहचान करना।

सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवर शैक्षिक कार्यक्रमों को लागू करने, नीतियों को विकसित करने, सेवाओं के प्रशासन, स्वास्थ्य प्रणालियों और कुछ स्वास्थ्य व्यवसायों को विनियमित करने, और अनुसंधान के संचालन के माध्यम से समस्याओं को होने या फिर से होने से रोकने के लिए प्रयास करते हैं जबकि इसके विपरीत हो डॉक्टरों और नर्सों के रूप में नैदानिक पेशेवर बीमार या घायल होने के बाद व्यक्तियों के इलाज ध्यान केंद्रित करते हैं। भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य देखभाल साम्य, समानता और अभिगम्यता के लिए लड़ाई सहित स्वास्थ्य असमानताओं और सार्वजनिक स्वास्थ्य के एक बड़े हिस्से के मुद्दों के बारे में इस कार्यशाला के माध्यम से प्रतिभागियों द्वारा जाना और समझा जाएगा।

पर्यवेक्षक (डॉ. एन. श्रीनिवास मूर्ति, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

सीएमई प्रख्यात वक्ताओं ने व्याख्यान के साथ शुरू हुआ जिसमें देश में वर्तमान स्वास्थ्य प्रणाली की ताकत, कमजोरी, अवसरों पर प्रकाश डाला गया। वक्ताओं द्वारा इस तथ्य पर बल दिया गया कि देश संचारी और गैर संचारी रोगों, कई संक्रामक रोगों के पुनरुत्थान के दोहरे बोझ से जूझ रहा है। ये सभी मुद्दे देश में "नए जन स्वास्थ्य के मुद्दों" के रूप में उभरे हैं और पहले से ही तनावपूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं के लिए एक दुर्जेय चुनौती पेश की है। वक्ताओं ने इन चुनौतियों का सामना करने के लिए उपयुक्त साधनों के चिंतन की आवश्यकता पर बल दिया। इन मुद्दों पर प्रकाश डालने वाले कार्यक्रम को मीडिया द्वारा कवर किया गया।

अनुवर्ती वक्ता बी एल डी इ चिकित्सा विश्वविद्यालय, बीजापुर से डॉ. वीना एस. अलगूर थीं जिन्होंने सार्वजनिक स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों के महत्व पर बात की थी। उन्होंने स्वास्थ्य देखभाल के वितरण में स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों के महत्व के बारे में अपने अनुभवों का हवाला दिया। सत्र के बाद एक चर्चा की गई थी। अगली वक्ता श्रीमती वसंथी रीना विलियम्स थीं। उन्होंने "जागरूकता और अभ्यास: दवाओं पर्चे के उपयोग और दुरुपयोग पर फोकस" पर बात की थी। वक्ता ने अपनी प्रस्तुति और मामले के अध्ययन के माध्यम से दवाओं के उचित पर्चे के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रस्तुति का उद्देश्य जागरूकता और व्यवहार के बीच अंतर पर प्रकाश डालना था; दवाएं और डॉक्टर के दवाओं पर्चे के उपयोग और दुरुपयोग पर केंद्रित थी। उन्होंने भारत में स्वास्थ्य क्षेत्र के विकास के लिए समर्थक महत्वपूर्ण कारकों पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आम आदमी स्वास्थ्य सेवाओं की उच्च लागत द्वारा मारा जा रहा है और स्वयं या मित्रों/ सहयोगियों की विशेषज्ञ सलाह मान कर इलाज या समाप्ति की तारीख के बाद दवाओं का सेवन कर रहा है। उन्होंने मानव शरीर पर तिथि समाप्त हो गई दवाओं के दुष्प्रभावों के बारे में भी बताया। अंत में, तिथि समाप्त हो गई दवाओं के सुरक्षित निपटान के लिए सुझाव और सिफारिशें प्रदान की गईं। सत्र उच्च इंटरैक्टिव था।

निमहांस से डॉ. विवेक गुप्ता ने "भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य: पीछे देखकर आगे बढ़ना" के लिए मुख्यता बात की। पूरे इतिहास पर नज़र डालकर विभिन्न सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिनियमों पर प्रकाश डाला गया जिन्होंने समेकित रूप में स्वस्थ वातावरण, शरीर और मन की भूमिका पर बल दिया। उन्होंने भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य की कुछ सफलताओं और कई असफलताओं के बारे में उल्लेख किया है। भारत जैसे घनी आबादी वाले देश में एक प्रभावी सार्वजनिक स्वास्थ्य नेटवर्क के अभाव सहित विफलता के लिए कई कारकों पर उनके द्वारा प्रकाश डाला गया। उन्होंने एक और सभी के लिए उत्तम स्वास्थ्य के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कुछ समाधान प्रदान किए। व्याख्यान की अत्यधिक सराहना की गई क्योंकि इसने भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य और आबादी की स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार के लिए प्रख्यापित कानूनों को समझने में सभी प्रतिभागियों के लिए एक अच्छा परिप्रेक्ष्य प्रदान किया गया है। उन्होंने आगे बढ़ने के लिए ताकत, कमजोरी, अवसर और समाधान पर प्रकाश डाला। यह उच्च इंटरैक्टिव सत्रों में से एक था।

भोजन के बाद का सत्र मैसूर विश्वविद्यालय से डॉ. श्रीवत्स के साथ शुरू हुआ जिसमें उन्होंने "तेजी से बढ़ते जन स्वास्थ्य मुद्दे के रूप में चिरकालिक गुर्दा रोग (सीकेडी)" के बारे में बात की थी। उन्होंने अपने अध्ययन से अद्यतन जानकारी और प्रासंगिक ध्वनि साक्ष्यों पर प्रकाश डाला और इस रोग ने भारत में महामारी का रूप ग्रहण कर लिया है इसका उल्लेख किया। उनके द्वारा विभिन्न मामलों के अध्ययन पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने कहा कि अंतिम चरण वृक्क रोग की मानव और आर्थिक लागत को कम करने के लिए सबसे अच्छी उम्मीद इसकी रोकथाम और सार्वजनिक शिक्षा गतिविधियों में निहित है। स्वास्थ्य संवर्धन ट्रस्ट द्वारा वैश्विक स्वास्थ्य और एक्शन एड की गतिविधियों पर एक वृत्तचित्र दिखाया गया था। अगले वक्ता डॉ शेखर नाईक ने "भारतीय जनसंख्या में पोषण और स्वास्थ्य के मुद्दे: समस्या और हस्तक्षेपी प्रयास" के बारे में अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने देश में पोषण और स्वास्थ्य समस्याओं पर प्रकाश डाला। विभिन्न जारी प्रत्यक्ष पोषण हस्तक्षेप कार्यक्रम और अंतराल पर विस्तार से

चर्चा की गई। प्रतिभागियों के लिए एक अच्छा इंटरैक्टिव सत्र था। प्रश्न और उत्तर सत्र बहुत जानकारीपूर्ण और दिलचस्प था। डॉ. लैंसी डिसूज़ा ने "सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य" विषय पर अपनी बात प्रस्तुत की। वक्ता ने विभिन्न सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य की जानकारी प्रदान की। देश में अपनाए गए कार्यक्रम और उनकी सीमाएँ। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि प्रभावी सेवाओं की एक पूरी सरणी शायद ही कभी अपनायी गयी है और पूरे परिवार के बजाय अक्सर एक सूक्ष्म स्तर को लक्ष्य बनाया गया है।

दूसरे दिन सुबह का सत्र डॉ. सुनीता की "चिकित्सकीय सार्वजनिक स्वास्थ्य में मुख स्वास्थ्य समस्याओं और हाल के अग्रिमों" पर व्याख्या के साथ शुरू हुआ। उन्होंने कहा कि मुख रोग देश में एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य बोझ हैं। तम्बाकू के उपयोग से स्वास्थ्य के खतरों और देश में मुख कैंसर की उच्च व्याप्ति पर प्रकाश डाला गया था। वक्ता द्वारा कि भारत में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल का एक भाग दंत चिकित्सा देखभाल होने के बावजूद देश के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में एक दंत चिकित्सक की स्थिति के अभाव पर चिंता व्यक्त की गई थी। मुख रोगों की वैज्ञानिक समझ और दंत चिकित्सा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हाल के अग्रिमों पर चर्चा की गई। यह मुख स्वास्थ्य समस्याओं के नियंत्रण के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य दंत चिकित्सक की भूमिका का संकेत देने वाला एक उच्च इंटरैक्टिव सत्र था। वक्ता ने अद्यतन जानकारी पर प्रकाश डाला। एम. ए. आयुर्विज्ञान और अनुसंधान संस्थान, कांची, तमिलनाडु से प्रो. के. देवी, ने "प्रजनन और बाल स्वास्थ्य" से संबंधित कई मुद्दों पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। प्रजनन, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों के महत्व पर एनएफएचएस-III के निष्कर्षों का हवाला देते हुए विचार-विमर्श किया गया था। विभिन्न सरकारी नीतियों / कार्यक्रमों के साथ इस समस्या से संबंधित मुद्दों में सुधार करने के लिए तरीकों पर एक इंटरैक्टिव कार्यक्रम के रूप में विस्तार से चर्चा की गई। जे. एस. एस. मेडिकल कॉलेज, मैसूर से डॉ. सुनील कुमार ने "भारत का राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम: मुद्दे और संभावनाएँ" से संबंधित विस्तृत जानकारी प्रदान की। व्याख्यान की बहुत सराहना की गई और

प्रतिभागियों के साथ अच्छी बातचीत की गई थी। वक्ता द्वारा अत्यधिक साक्ष्य आधारित जानकारी प्रदान की गई थी।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने "स्वास्थ्य संवर्धन में नए दृष्टिकोण" विषय पर बात की थी। वक्ता ने "स्वास्थ्य संवर्धन के साक्ष्य आधारित कार्यों" स्वास्थ्य शिक्षा और स्वास्थ्य संवर्धन के बीच अंतर, परिवर्तनीय जोखिम कारकों से निपटने कि स्वास्थ्य हस्तक्षेप के बारे में विस्तार से बताया और भारत सरकार द्वारा हाल ही में प्रारंभ किए गए प्रमुख स्वास्थ्य संवर्धनो के बारे में बताने के बाद सत्र संपन्न हुआ। सभी बिंदुओं एक अत्यधिक निदर्शी रूप में चर्चा की गई। उपयुक्त लाभ नहीं मिलने के कारणों के बारे में एक अच्छी बातचीत की गई। प्रो. जी. वेंकटेश कुमार ने सबसे महत्वपूर्ण स्वास्थ्य समस्या पर व्याख्या की अर्थात "मोटापा, ड्रग्स और एसटीडी समस्याएं"। प्रस्तुतियों व मामलों के अध्ययनों ने उभरते सार्वजनिक स्वास्थ्य और बड़ी चुनौती के रूप में इन मुद्दों की गंभीरता और समस्या के बारे में प्रतिभागियों को अत्यधिक जागरूक किया। व्याख्यान की अत्यधिक सराहना की गई और यह बहुत इंटरैक्टिव था। प्रो. रमेश ने सार्वजनिक स्वास्थ्य कानून और सार्वजनिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के साथ इसके संबंधों के महत्व पर बात की थी। उन्होंने इस संबंध में कई मामलों के अध्ययन का भी आह्वान किया। व्याख्यान अत्यधिक निदर्शी और प्रतिभागियों के साथ इंटरैक्टिव था।

5. 27-28 सितम्बर, 2013 को सरकारी मेडिकल कालेज, हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखंड) में आयोजित "न्यायालयीय क्षेत्र में हाल में उन्नति के साथ महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराध" पर सीएमई कार्यक्रम।

आयोजन सचिव: डॉ. चंद्र प्रकाश, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, न्यायालयीय चिकित्सा विभाग, सरकारी मेडिकल कालेज, हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखंड)।

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

सीएमई कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को निम्न के बारे में समझ प्रदान करना था:

(क) भारत में महिला के खिलाफ अपराध की प्रकृति और सीमा

(ख) आम तौर पर अपराध और हिंसा का शिकार होना वाली महिलाओं की पहचान करना

(ग) अपराध और हिंसा के अपराधी रहे लोग

(घ) अपराध करने अपराधियों या हिंसा का उपयोग करने के लिए उत्पीड़कों को क्या प्रेरित करता है

(ङ) पीड़ितों के वैयक्तिकरण आघात को नियंत्रित करने वाले उपाय

(च) तथ्य यह है कि अपर्याप्त बलात्कार कानून और संकीर्ण परिभाषाओं ने अभियोजन को कठिन बना दिया है।

पर्यवेक्षक (डॉ. संजय चतुर्वेदी, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

वैज्ञानिक कार्यक्रम स्नातकोत्तर छात्रों, फोरेंसिक विज्ञान, न्यायपालिका, प्रांतीय चिकित्सा सेवा के डॉक्टरों, सरकारी मेडिकल कॉलेज के संकाय सदस्यों, हल्द्वानी के निजी परामर्शदाता, पुलिस, विभिन्न क्षेत्रों के अधिकारी और मीडिया सहित न्यायालयीय चिकित्सा के विशेषज्ञों की भागीदारी का प्रतिनिधित्व करने वाले कुल 201 प्रतिनिधियों की रिपोर्टिंग के साथ शुरू हुआ। प्रारंभ में, प्रतिनिधियों ने पूर्वसीएमई मूल्यांकन प्रश्नावली को पूरा किया। आचार उत्पत्ति पर डॉ. टी. डी. डोगरा के व्याख्यान के साथ वैज्ञानिक सत्र आरंभ हुआ। इसके बाद निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रख्यात वक्ताओं द्वारा विभिन्न विषयों पर आमंत्रित व्याख्यान के रूप में अपने विचार डाले गए। डॉ. मुकेश यादव ने "कानूनी मुद्दों और भारत में यौन अपराध में हाल ही में संशोधन" के बारे में बात की थी। डॉ. वी. बी. शाही ने "महिलाओं के खिलाफ यौन अपराध के कानूनी विचार का विश्लेषण" पर चर्चा की। अगले सत्र में श्री जी. के. शर्मा ने महिलाओं के खिलाफ अपराध को सुलझाने में फोरेंसिक विज्ञान की भूमिका का पता लगाया। डॉ. एस. के. वर्मा ने "यौन उत्पीड़न कानून में परिवर्तन और डॉक्टरों की भूमिका" पर विचार-विमर्श किया। डॉ. अशोक कुमार चन्ना ने "विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में, आज के अपराध परिदृश्य में मीडिया की भूमिका" पर और श्री सुनील शाह ने "यौन अपराध जांच" पर बात की थी। दोपहर के भोजन के सत्र के बाद श्री एम.सी. जोशी ने "सफेदपोश अपराध में उभरते रुझान" पर चर्चा की, डॉ आर. के. गोरिया ने "बाल दुर्व्यवहार" पर चर्चा की, डॉ.

अमनदीप कौर ने "यौन उत्पीड़न मामलों के सामाजिक और निवारक पहलू" पर चर्चा की। वैज्ञानिक सत्र समापन में डॉ. अनुपमा रैना ने "न्यायालयीय अपराध जांच", श्री दयाल शर्मा ने "अपराध जांच में फोरेंसिक विशेषज्ञ की भूमिका" पर विस्तारपूर्वक चर्चा की, डॉ. मृण्मय दास ने "यौन उत्पीड़न के शिकार में मनोवैज्ञानिक-व्यवहार के परिणामों" विषय पर सविस्तार चर्चा की। दूसरे दिन वैज्ञानिक सत्र डॉ ए. एस. थिंड के "न्यायालयीय मेडिसिन और विष विज्ञान के संबंध में नैनो प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग" पर व्याख्यान के साथ शुरू हुआ। अगले व्याख्यान में डॉ. ए. के. श्रीवास्तव ने "पूर्व स्नातक चिकित्सा शिक्षा में न्यायालयीय चिकित्सा के मूल्यांकन" पर चर्चा की। डॉ. चंद्र प्रकाश ने "रेव पार्टियों के दौरान युवाओं में अपराध के नए पहलुओं" पर चर्चा की। डॉ. दलबीर सिंह ने "मृतविषयक विज्ञान में हाल के रुझान" पर चर्चा की। डॉ. पवन कुमार ने "बलात्कार मामलों की सुनवाई में दो उंगली परीक्षण के महत्व" पर चर्चा की। वैज्ञानिक सत्र के समापन पर सभी प्रतिनिधियों को पश्च-सीएमई मूल्यांकन प्रश्नावली सौंप दी गयी और विधिवत भरे प्रपत्र प्रतिनिधियों से एकित्रत किए गए।

6. 1-2 अक्तूबर, 2013 को सशस्त्र बल चिकित्सा महाविद्यालय, पुणे में आयोजित "गायनीकॉन 2013: देखभाल के मानकों की स्थापना" पर सीएमई कार्यक्रम

आयोजन सचिव: ब्रिगेडियर डॉ आरडी वाधवा वीएसएम, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, प्रसूतिरोग एवं स्त्रीरोग विभाग, सशस्त्र बल चिकित्सा कॉलेज, शोलापुर रोड, पुणे।

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

सीएमई कार्यक्रम और कार्यशाला के मुख्य उद्देश्य थेः

(क) सशस्त्र बलों के स्त्री रोग चिकित्सक के साथ-साथ नागरिक प्रतिनिधियों को शिक्षित और अभ्यासरत डॉक्टरों, प्रसूति एवं स्त्री रोग में रेज़िडेंट, कनिष्ठ स्त्रीरोग विशेषज्ञ के साथ-साथ वरिष्ठ स्त्रीरोग विशेषज्ञों को ज्ञान और कौशल प्रदान करना;

(ख) श्रोणि और उदरावरण की रचना से फिर से पहचान, जिससे शल्य चिकित्सा के दौरान स्त्रीरोग विशेषज्ञों को ग्रे क्षेत्रों के साथ परिचित करवाया जा सके और उन्हें जान बचाने के लिए सक्षम आंतरिक लाइएक धमनी बंधाव जैसी आपातकालीन सर्जरी का संचालन करने के ज्ञान से लैस करना। इस विशिष्ट उद्देश्य पर शव श्रोणि विच्छेदन कार्यशाला द्वारा पहुंचा जाएगा।

(ग) सीएमई कार्यक्रम जटिल स्थितियों में पालन किये जा सकने वाले प्रोटोकॉल की स्थापना पर ध्यान केंद्रित करेगा। यह अभ्यासरत स्त्रीरोग विशेषज्ञ के ज्ञान को अद्यतन करने और उनकी रोजमर्रा की समस्याओं के मानक प्रबंधन पर उन्हें सूचित करने की कोशिश भी करेगा।

पर्यवेक्षक (डॉ. वंदना वाल्वेकर, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

सीएमई कार्यशाला का आयोजन अच्छा था। समय आवंटन भली प्रकार से किया गया था। प्रस्तुति अच्छी तरह से विषय वार समन्वित थी और वक्ता अपने चुने हुए क्षेत्र में अच्छे थे। दर्शकों की भागीदारी पर्याप्त थी। सीएमई जानकारीपूर्ण और अच्छी तरह से समन्वित था। विषयों में नई तकनीकों के एक विस्तृत दायरे को सम्मिलित किया गया था। मानक देखभाल के सिद्धांतों।

मुख्य टिप्पणियाँ: 1) हाल के अग्रिमों और प्रचलित मानदंडों के साथ विभिन्न तरीकों में अंतर्दृष्टि जानकारीपूर्ण थी; 2) इसने जानकारी देने के उद्देश्यों को पूरा किया था। हालाँकि, प्रतिनिधियों के साथ और अधिक बातचीत की सलाह दी जाती है क्योंकि नए तौर तरीकों में स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है; 3) सुझाव: उन्हें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए पीजी रेजिडेंट व कनिष्ठ सलाहकारों को शामिल करके गौलमेज विचार-विमर्श आयोजित किया जाना चाहिए; 4) शव कार्यशाला एक शानदार नई मिसाल कायम करने के लिए एक विशेष उल्लेख की हकदार है। सीएमई में थे 1) विशेषज्ञ टेलीविजन प्रदर्शन; 2) प्रतिनिधियों के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण; 3) मंच से विशेषज्ञों द्वारामार्गदर्शन एवं टिप्पणी 4) मौखिक चित्रण और शल्य प्रदर्शन द्वारा इंटरैक्टिव सत्र ।

सुझाव: मैं समझती हूँ कि उद्दीपन मॉडल सुविधा एएफएमसी में उपलब्ध है। पीजी को सिद्धांत की समझ और शल्य चिकित्सा कौशल में सुधार करने के लिए यह प्रथा बनानी चाहिए।

7. 6-9 नवम्बर, 2013 को जेआईपीएमईआर, पुडुचेरी में आयोजित "नैदानिक सूक्ष्म जीव विज्ञान में निदान विधियाँ" पर सीएमई कार्यशाला

आयोजन सचिव: डॉ. बी. एन. हरीश, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग, जेआईपीएमईआर, पुडुचेरी।

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

मुख्य उद्देश्य थे कि कार्यशाला के अंत में प्रतिभागी निम्न कार्य करने में सक्षम हो जाएँ:

(क) नियमित गतिविधियों में नैदानिक सूक्ष्म जीव विज्ञान अर्थ कौशल का प्रयोग करें,

(ख) सूक्ष्मजीवों की पहचान करने के लिए सरल नैदानिक परीक्षण करना और एमबीएल और एएमपी सी उत्पादन जैसे रोगाणुरोधी प्रतिरोध का लक्षणप्ररूपी पता लगाना और

(ग) संक्रामक रोगों के लिए आणविक एस्से का प्रारुपण, प्रदर्शन और व्याख्या।

पर्यवेक्षक (डॉ. मैरी वी. जेसुडासन, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

देश भर से 25 प्रतिभागी थे। कार्यशाला की योजना स्पष्ट रूप से बहुत सोचविचार कर बनाई गयी थी; व्यावहारिक सत्र से पहले और उसके दौरान बाद कर्मचारियों और शिक्षकों/ संसाधन व्यक्तियों के साथ चर्चा व लघु समूह शिक्षण गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय दिया गया था। विषयों की एक विस्तृत सीमा को शामिल किया गया - धब्बा रिपोर्टिंग से विशेष धुंधला प्रक्रिया से पीसीआर कदम वार अवलोकन और प्रदर्शन। वर्तमान में प्रासंगिक विषयों पर कुछ शिक्षात्मक व्याख्यान शामिल थे। शैक्षणिक सामग्री अच्छी और अद्यतन थी। समूहों में काम कर प्रतिभागी प्रक्रियाओं के चरणों के पूरा करने में सक्षम थे। रोगाणुरोधी संवेदनशीलता परीक्षण, व्याख्या और रिपोर्टिंग पर सत्र जानकारीपूर्ण और सुनियोजित था।

8. 17 जनवरी 2014 को पीडीयू मेडिकल कॉलेज, राजकोट में आयोजित "मेडिकल कॉलेज में अनुसंधान के अवसर और एक शोधकर्ता के रूप में चिकित्सा संकायों की भूमिका" पर सीएमई कार्यक्रम।

आयोजन सचिव: डॉ. ए. एम. कादरी, आचार्य और विभागाध्यक्ष, सामुदायिक चिकित्सा विभाग, पीडीयू मेडिकल कॉलेज, राजकोट (गुजरात)।

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

प्रत्याशित परिणाम संकायों को कॉलेज में अनुसंधान गतिविधियों के लिए संवेदनशील होना होगा। संकायाध्यक्ष या वरिष्ठ आचार्य को अपने मेडिकल कॉलेजों में अनुसंधान इकाइयों/ नैदानिक महामारी विज्ञान प्रकोष्ठ की स्थापना और सशक्तीकरण के लिए प्रेरित किया जाएगा। सीएमई के विशिष्ट उद्देश्य निम्न थे।

क) एक शोधकर्ता के रूप में चिकित्सा संकायों की भूमिका को समझना।

ख) मेडिकल कालेजों में और आसपास अनुसंधान के अवसरों के बारे में पता करना।

ग) नैदानिक महामारी विज्ञान और जनसंख्या आधारित अनुसंधान क्या है इस बारे में जानकारी प्राप्त करना।

घ) एक शोध प्रस्ताव तैयार करने और निष्पादित करने के तरीके के बारे में कौशल विकसित करना।

ङ) विभिन्न वित्तपोषण अभिकरणों और उनसे संबद्ध होने के बारे में जानना।

पर्यवेक्षक (डॉ. हरिभाई एल. पटेल, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

सीएमई कार्यक्रम ने प्रतिभागियों के रूप में अपने निर्धारित उद्देश्यों को पूरा किया:

(i) शोधकर्ताओं के रूप में चिकित्सा संकायों की भूमिका को समझ सकेंगे। (ii) मेडिकल कालेजों में और आसपास अनुसंधान के अवसरों के बारे में पता होगा (iii) नैदानिक महामारी विज्ञान और जनसंख्या आधारित अनुसंधान क्या है इस बारे में जानकारी मिली (iv) शोध प्रस्ताव तैयार करने और निष्पादित करने के तरीके के बारे में कौशल विकसित हुआ (v) विभिन्न वित्तपोषण अभिकरणों और उनसे संबद्ध होने के बारे में पता है।

कुल 189 प्रतिभागियों को पंजीकृत किया गया था जिनमें से 160 किसी भी समय आम तौर पर उपस्थित थे। सभी चिकित्सा विषयों का प्रतिनिधित्व था। हालांकि 66 प्रतिभागियों के साथ सामुदायिक चिकित्सा का बोलबाला था। भेषजगुण विज्ञान (26), विकृति विज्ञान (14) और जीवाणु विज्ञान (14) का अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व था। केवल चिकित्सा ऐसा नैदानिक विषय था जिसने 12 प्रतिभागियों को आकर्षित किया। अन्य विषयों का कम प्रतिनिधित्व आत्मनिरीक्षण की ओर इंगित करता है।

9. 17-18 **जनवरी**, 2014 **को यूसीएमसी और जीटीबी अस्पताल**, **दिल्ली में आयोजित "मातृ स्वास्थ्य पहल एवं नागरिक सहित शासन की भागीदारी - नीति से कार्रवाई की ओर" पर सीएमई कार्यक्रम**

आयोजन सचिव: डॉ अनीता गुप्ता, सीएमओ (एनएफएसजी), सामुदायिक चिकित्सा विभाग, यूसीएमसी और जीटीबी अस्पताल, दिल्ली।

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

प्रस्तावित गतिविधि के विशेष शिक्षण उद्देश्य थे: कार्यक्रम क्षेत्र(ओं) को इन उद्देश्यों की प्रासंगिकता दिखाना और अपेक्षित परिणाम / प्रभाव की पहचान करना; स्वास्थ्य संकेतकों और सामाजिक निर्धारकों के उपयोग के प्रभाव को समझना; मातृ स्वास्थ्य में करणीय के वेब को समझना; मातृ स्वास्थ्य में सुधार लाने में नागरिक भागीदारी को शामिल करने के लिए नीतियां एवं उपाय सुझाने के लिए क्षमता प्राप्त करना; और मातृ स्वास्थ्य में सुधार लाना और मातृ मृत्यु से बचने के लिए एक संकल्प के साथ समूह में काम उपलब्ध कराना।

पर्यवेक्षक (**डॉ. कृष्णामूर्ति कलेवानी, एफएएमएस**) **की रिपोर्ट की विशिष्टताएं**:

लगभग 200 प्रतिभागियों ने पहले सत्र में भाग लिया; हालांकि, दोपहर बाद के सत्र में लगभग 150 व्यक्ति उपस्थित थे। अगले दिन लगभग 100 व्यक्तियों ने सत्र में भाग लिया। लगभग सभी पंजीकृत प्रतिभागी दोनों दिन सत्र के शुरू से अंत तक उपस्थित थे। कार्यक्रम में शिक्षाप्रद व्याख्यान और पैनल चर्चा शामिल थी। इंटरैक्टिव सत्र / लघु समूह शिक्षण गतिविधियाँ थीं। पैनल चर्चा बहुत इंटरैक्टिव थी। संकाय द्वारा प्रस्तुति बहुत ही अच्छी था; दृश्यश्रव्य उपकरण उच्च गुणवत्ता के थे वक्ताओं के लिए माइक, एलसीडी प्रोजेक्टर, सवाल पूछने के लिए दर्शकों के लिए माइक आसानी से उपलब्ध थे और प्रयोग किए गए। सभी वक्ताओं ने अच्छी शैक्षिक सामग्री और हाल ही के अनुसंधान और / या कार्यक्रम के दिशा निर्देशों के आधार पर प्रासंगिक अद्यतन जानकारी के साथ प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की सबसे रोचक बात यह थी कि प्रतिभागी प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक देखभाल संस्थानों, मेडिकल कॉलेजों और दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के परिवार कल्याण निदेशालय सबका प्रतिनिधित्व कर रहे थे। सामग्री में सुधार लाने में

प्रत्येक स्तर पर पेश आ रही समस्याओं पर, और हर स्तर पर देखभाल की गुणवत्ता और रेफरल सेवाओं में सुधार लाने स्वतंत्र और विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श था। प्राथमिक और माध्यमिक देखभाल सेवाओं में सुधार करने के तरीकों पर चर्चा में निदेशालय और मेडिकल कॉलेजों से कार्यक्रम अधिकारियों की सक्रिय भागीदारी बहुत उपयोगी थी। यह आशा व्यक्त की जाती है कि कार्यशाला के दौरान निर्मित नेटवर्क समुदाय में सेवा वितरण में सुधार लाने के मामले में बहुत लाभदायक होगा।

दिनांक **01.04.2013** से **31.03.2014** तक बाह्यसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों के तहत अनुदान दर्शाती विवरणी

क्र.सं.	*विषय*	*स्वीकृत राशि (रुपए)*
1.	**"प्रजनन स्वास्थ्य पर अंतःस्रावी का प्रभाव"** पर सीएमई कार्यक्रम। नई दिल्लीः 20 जुलाई 2013	75,000/-
2.	**"यकृत विकृति विज्ञान पर अद्यतन"** पर सीएमई कार्यक्रम सिकंदराबाद; 20 सितंबर 2013	52,500/-
3.	**"आतंकवाद विरोधी / आतंकवाद पर्यावरण में आपात स्थिति और क्रिटिकल केयर"** पर सीएमई कार्यक्रम श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर); 24-25 अगस्त, 2013	49,300/-
4.	**"नए जन स्वास्थ्य मुद्दे"** पर सीएमई कार्यक्रम मैसूर: 27-28 दिसंबर 2013	52,229/-
5.	**"न्यायालयीय क्षेत्र में हाल ही में उन्नति के साथ महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराध"** पर सीएमई कार्यक्रम हलद्वानी / नैनीताल (उत्तराखंड); 27-28 सितम्बर, 2013	75,000/-
6.	**"गायनीकॉन 2013: देखभाल के मानकों की स्थापना"** पर सीएमई कार्यक्रम पुणे; 01-02 अक्टूबर, 2013	75,000/-

क्र.सं.	*विषय*	*स्वीकृत राशि (रुपए)*
7.	**"नैदानिक सूक्ष्म जीव विज्ञान में निदान विधियाँ"** पर सीएमई कार्यक्रम पुडुचेरी; 6-9 नवम्बर, 2013	57,000/-
8.	**"मेडिकल कॉलेज में अनुसंधान के अवसर और एक शोधकर्ता के रूप में चिकित्सा संकायों की भूमिका"** पर सीएमई कार्यक्रम राजकोट; 17 जनवरी 2014	72,000/-
9.	**"मातृ स्वास्थ्य पहल एवं नागरिक सहित शासन की भागीदारी - नीति से कार्रवाई की ओर"** पर सीएमई कार्यक्रम दिल्ली; 17-18 जनवरी, 2014	53,442/-

चिकित्सा वैज्ञानिकों का आदान-प्रदान कार्यक्रम (स्वास्थ्य मानवशक्ति विकास)

सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम के अधीन स्वास्थ्य मानवशक्ति विकास के क्षेत्र में अकादमी द्वारा संवर्धित कार्यकलापों में से एक है-कनिष्ठ स्तरों और मध्यम स्तरों पर "चिकित्सा वैज्ञानिकों का आदान-प्रदान"।

अकादमी कनिष्ठ और मध्यम स्तर के विशेषज्ञों/वैज्ञानिकों को सुस्थापित उत्कृष्टता केंद्र पर जाने के लिए और नए कौशल प्राप्त करने के लिए निधि उपलब्ध कराता है। इस योजना के अंतर्गत चयनित नामिती यात्रा व्यय की प्रतिपूर्ति (वास्तविक द्वितीय श्रेणी एसी टू-टियर रेल किराया तक सीमित) और 5000/- रुपए की अधिकतम सीमा के अधीन प्रशिक्षण अवधि के दौरान 300/- रुपए प्रतिदिन की दर पर दैनिक भत्ता के पात्र हैं। वर्तमान वर्ष 2013-14 में अब तक 14 चिकित्सा वैज्ञानिकों/ शिक्षकों ने सुविधाओं का लाभ उठाया है जिन्होंने नैम्स से अनुदान सहायता प्राप्त कर अपना प्रस्तावित प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा किया है।

01.04.2013 से 31.03.2014 तक अंतःसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों पर रिपोर्ट

1. 27 अप्रैल 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में आयोजित "द्विमेरुता के लिए एक बहु-अनुशासनिक दृष्टिकोण" पर नैम्स-एम्स सीएमई कार्यक्रम।

   संचालन अधिकारी: डॉ. राज कुमार, निदेशक, एम्स, ऋषिकेश

   सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

   संगोष्ठी का उद्देश्य था कि सीएमई के अंत में, प्रतिभागियों को निम्नलिखित विशिष्ट क्षेत्रों में ज्ञान हासिल होगा: 1) के महामारी विज्ञान और प्रोविडेंस प्रवृत्तियों की व्यापक समझ का प्रदर्शन; 2) न्यूरल ट्यूब के भ्रूणीय विकास और भ्रूण उत्पत्ति के दौरान परिवर्तन के परिणामस्वरूप द्विमेरुता के विकास पर चर्चा; 3) रीढ़ की सरंचना की व्यापक समझ के आधार पर द्विमेरुता के वर्गीकरण का वर्णन; 4) आरंभिक गर्भावस्था के दौरान द्विमेरुता के निदान के लिए प्रयोगशाला जांच और इमेजिंग तकनीक का वर्णन जिससे यह प्रसव पूर्व निदान का आधार प्रदान कर सकता है; 5) न्यूरल ट्यूब दोष के निवारण के लिए गर्भाधान से पूर्व आरंभिक और उच्च जोखिम गर्भावस्था में फोलिक प्रशासन की भूमिका का वर्णन; 6) द्विमेरुता और संबद्ध जन्मजात विसंगतियों के निदान में नैदानिक कौशल का प्रदर्शन, 7) नवजात की अवधि में और प्रारंभिक अवस्था के दौरान द्विमेरुता के निदान के लिए कॉम्पैक्शन, संवेदनशीलता और उपलब्ध तकनीकों की विशेष भूमिका का वर्णन; 8) द्विमेरुता के रोगी के प्रबंधन और पुनर्वास के क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का व्यापक समझ का प्रदर्शन; 9) सुझाए गए प्रबंधन के संभावित परिणाम के बारे में परिवार के साथ संवाद और व्यापक प्रबंधन के लिए बहु अनुशासनिक टीम की भूमिका।

पर्यवेक्षक (डॉ. राजेश्वर दयाल, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

सीएमई कार्यक्रम के उद्देश्यों को पूरा किया और सीएमई कार्यक्रम के संचालन में कोई कमी नहीं थी। आयोजकों द्वारा अच्छी तरह प्रलेखित अधिगम संसाधन सामग्री प्रदान की गई। कुल 150 से अधिक लोगों की सभा थी जिसमें अतिथि वक्ता, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश के संकाय, एचआईएचयूटी विश्वविद्यालय, गुरूराम राय मेडिकल कॉलेज, पोस्ट ग्रेजुएट छात्र सम्मिलित थे। पंजीकृत प्रतिभागी 109 थे और कार्यक्रम के दौरान उपस्थित थे। प्रश्नों को हल करने के लिए और प्रतिभागियों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए इंटरैक्टिव सत्र थे। इंटरैक्टिव सत्र और लघु समूह शिक्षण गतिविधियाँ थीं। प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रदर्शन / प्रशिक्षण प्रदान नहीं किया गया। पाठ्यक्रम संकाय द्वारा प्रस्तुति के संदर्भ में व्याख्यान / प्रदर्शनों की गुणवत्ता उत्कृष्ट थी। सीएमई कार्यक्रम के दौरान प्रयुक्त श्रव्यदृश्य व्यवस्था उत्कृष्ट थी। उपलब्ध कराई गई जानकारी साक्ष्य आधारित थी।

2. 20 जुलाई 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर में आयोजित **"नैदानिक अनुसंधान में आचारसंहिता"** पर नैम्स-एम्स सीएमई कार्यक्रम।

संचालन अधिकारीः डॉ. ए.के. महापात्रा, निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

संगोष्ठी का उद्देश्य था कि सीएमई के अंत में, प्रतिभागियों को निम्नलिखित विशिष्ट क्षेत्रों में ज्ञान हासिल होगा: 1) प्रयोगात्मक की तुलना में मानव आधारित नैदानिक अनुसंधान अधिक उपयुक्त है: हालांकि शोधकर्ताओं द्वारा दिशा निर्देशों का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। 2) अनुसंधान के क्षेत्र में अभ्यास के नैतिक मानकों के रखरखाव पर ज्ञान प्रदान करना; 3) अनुसंधान प्रतिभागियों और जांचकर्ताओं की

नुकसान या शोषण से रक्षा करना और निहित मानवीय गरिमा पर बल देना; 4) समाज के अधिकार पर अनुसंधान भागीदार के अधिकारों को वरीयता देना; 5) समाज के लिए आश्वासन प्रदान करना कि यह किया जा रहा है।

पर्यवेक्षक (**डॉ. सुरेश्वर मोहंती**, **एफएएमएस**) **की रिपोर्ट की विशिष्टताएं**:

सीएमई के उद्देश्यों को पूरी तरह से पूरा किया गया। पर्यवेक्षक ने सुझाव दिया कि भविष्य में वैज्ञानिकों के साथ सहयोगात्मक अध्ययन पर बल दिया जाना चाहिए। वर्तमान सीएमई में भेषजगुण विज्ञान पर बल दिया गया था। पूर्वपरीक्षा और बाद की परीक्षा ने प्रदर्शन में सुधार दिखाया। पंजीकृत प्रतिभागी 60 थे जो कार्यक्रम के दौरान उपस्थित थे। कार्यक्रम में केवल शिक्षाप्रद व्याख्यान थे। पाठ्यक्रम संकाय द्वारा दी गई प्रस्तुतियाँ उत्कृष्ट थीं। श्रव्यदृश्य व्यवस्था भी अच्छी थी। कुल मिलाकर सीएमई कार्यक्रम उत्कृष्ट था।

3. 25 अक्टूबर 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में आयोजित **"निद्रा चिकित्सा"** पर नैम्स-एम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी।

संचालन अधिकारीः डॉ. संजीव मिश्रा, निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

संगोष्ठी का उद्देश्य था कि सीएमई के अंत में, प्रतिभागियों को निम्नलिखित विशिष्ट क्षेत्रों में ज्ञान हासिल होगा: 1) भारतीय परिदृश्य में नींद की समस्याओं की भयावहता के बारे में जागरूकता का प्रदर्शन, और वयस्कों और बच्चों में मोटापे की बढ़ती व्यापकता के साथ संबंध; 2) युवाओं और वृद्धों दोनों में विविध चिकित्सा विकारों के लिए अग्रणी सामान्य नींद शरीर विज्ञान में परिवर्तन के महत्व को समझना; 3) नींद से जुड़ी समस्याओं के साथ जुड़ी विशेष रोग स्थितियों को पूरी तरह से समझना; 4) नींद में अव्यवस्थित सांस लेने के परिणामों और कारणों की व्याख्या के लिए बहु विशेषता जैव चिकित्सा वैज्ञानिकों के साथ बातचीत; 5) नींद से जुड़ी समस्याओं के निदान और

संबंधित नैदानिक स्थितियों के लिए स्क्रीनिंग दृष्टिकोण और परीक्षण प्रक्रियाओं का वर्णन; 6) ओएसए के प्रबंधन को युक्तिसंगत और योजना बनाना; 7) भारत में निद्रा प्रयोगशालाओं और व्यापक निद्रा केन्द्रों की आवश्यकता और उभरती भूमिका का वर्णन।

पर्यवेक्षक (**डॉ. हरिभाई एल. पटेल**, **एफएएमएस**) **की रिपोर्ट की विशिष्टताएं**:

संगोष्ठी का उद्देश्य पूरा किया गया था। अच्छी तरह प्रलेखित अधिगम संसाधन सामग्री प्रदान की गई। पंजीकृत प्रतिभागी 203 थे और आम तौर पर 120 प्रतिभागी कार्यक्रम के दौरान उपस्थित थे। इंटरैक्टिव सत्र और और प्रतिभागियों द्वारा अच्छी और सक्रिय भागीदारी के साथ लघु समूह शिक्षण गतिविधियाँ थीं। पाठ्यक्रम संकाय द्वारा दी गईं प्रस्तुतियाँ उत्कृष्ट थीं। सीएमई कार्यक्रम के दौरान प्रयुक्त श्रव्यदृश्य व्यवस्था उत्कृष्ट थी। उपलब्ध कराई गई जानकारी साक्ष्य आधारित थी।

नैम्स पर्यवेक्षक ने टिप्पणी की थी "यह उत्कृष्ट था"। यह महत्वपूर्ण है कि नैम्स की प्रमुख गतिविधियों में से एक की गुणवत्ता में सुधार आ रहा है। अधिगम संसाधन सामग्री का सार पहले ही उपलब्ध कराया गया था। दर्शकों की भागीदारी बहुत प्रभावशाली थी और उन्होंने जीवंत चर्चा में भाग लिया। प्रतिभागियों के ज्ञान पर संगोष्ठी के तत्काल प्रभाव के मूल्यांकन का एक बहुत ही उपयोगी तरीका अपनाया गया और परिणाम सकारात्मक था। कुल 103 प्रतिभागियों को संगोष्ठी विषयों पर आधारित 30 प्रश्नों (कुल 30 क्रेडिट स्कोर की) की पूर्व संरचित प्रश्नावली दी गई। केवल 92 प्रतिभागियों ने प्रश्नावली वापस की। कुल मिलाकर सीएमई असाधारण गुणवत्ता की थी। इसे शिक्षा की गुणवत्ता के उद्देश्य को अधिकाधिक पूरा करने के लिए उपयोग किया जाना चाहिए।

4. 24 नवंबर, 2013 को सरकारी मेडिकल कॉलेज, चंडीगढ़ में आयोजित **"गर्भावस्था में यकृत रोग"** पर क्षेत्रीय संगोष्ठी।

संचालन अधिकारी: डॉ. अतुल सचदेव, निदेशक-प्राचार्य, सरकारी मेडिकल कॉलेज, चंडीगढ़

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

संगोष्ठी के अंत में प्रतिभागी निम्नलिखित में सक्षम होंगे: क) गर्भावस्था से संबंधित यकृत रोग के महामारी विज्ञान का वर्णन ख) गर्भावस्था में विशिष्ट और आकस्मिक दोनों यकृत रोग के विकृति शरीर क्रिया विज्ञान पर चर्चा ग) सामान्य गर्भावस्था यकृत के कार्यों में होने वाले परिवर्तन को समझना और गर्भावस्था में विशिष्ट यकृत रोग से इन को अलग करके देखना घ) यकृत विफलता की विशेषताओं की चिकित्सकीय पहचान, प्रयोगशाला और अन्य जांच के साथ आगे बढ़ना और इससे प्राप्त डेटा की व्याख्या, और तत्काल प्रबंधन करना ड़) गर्भावस्था से संबंधित यकृत रोगों के लिए साक्ष्य आधारित चिकित्सा अभ्यास को प्रतिबिंबित करने वाले प्रबंधन प्रोटोकॉल का विकास और अभ्यास करना च) एक विशेषज्ञ तृतीयक देखभाल की सुविधा के लिए सिफ़ारिश करने वाले नैदानिक और प्रयोगशाला डेटा की पहचान करना छ) गर्भावस्था में यकृत रोग के रोकथाम, निदान और प्रबंधन के लिए समन्वित दृष्टिकोण सुनिश्चित करने के लिए प्रसूतिरोग, आंतरिक चिकित्सा, बाल रोग / नवजात विज्ञान, अल्ट्रासोनोग्राफी, प्रयोगशाला चिकित्सा, और जन स्वास्थ्य विशेषज्ञों से मिलकर जिला अस्पताल में एक बहु अनुशासनिक टीम दृष्टिकोण का विकास ज) सुरक्षित पानी की आपूर्ति, रक्त संग्रह और/ या औषधि प्रशासन के लिए डिस्पोजेबल सीरिंज और सुई के उपयोग और सार्वजनिक शिक्षा के माध्यम से समुदाय में एचबीवी टीकाकरण की सुविधा सुनिश्चित करने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों का सहयोग प्राप्त करना ।

पर्यवेक्षक (**डॉ. योगेश चावला**, **एफएएमएस**) **की रिपोर्ट की विशिष्टताएं**:

संगोष्ठी के मुख्य उद्देश्यों में गर्भावस्था में यकृत रोग के बारे में चिकित्सकों, यकृत रोग विज्ञाना और स्त्री रोग विशेषज्ञों को जागरूक बनाना था। सीएमई कार्यक्रम संयोजक द्वारा उल्लिखित उद्देश्यों को संगोष्ठी ने पूरा किया। सभी प्रमुख वक्ता के शोध पत्र युक्त इस विषय से संबंधित अधिगम संसाधन सामग्री सभी प्रतिभागियों को प्रदान की गयी। पंजीकृत प्रतिभागियों की कुल संख्या 88 थी और कार्यक्रम के दौरान उपस्थित थे। कार्यक्रम में केवल शिक्षाप्रद व्याख्यान थे। प्रत्येक सत्र के बाद इंटरैक्टिव चर्चा हुई।

प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रदर्शन / प्रशिक्षण प्रदान नहीं किया गया। पाठ्यक्रम संकाय द्वारा प्रस्तुति अद्यतन थी। जानकारी साक्ष्य आधारित थी। प्रसूति एवं स्त्री रोग सहित अन्य विशेषज्ञों की अधिक भागीदारी से सीएमई की गुणवत्ता में वृद्धि हो सकती थी।

5. 28 नवम्बर 2013 को एस.एन. मेडिकल कॉलेज, आगरा में आयोजित **"बच्चों में क्षय रोग: नए नैदानिक उपकरण और उपचार अद्यतन"** पर सीएमई कार्यक्रम।

संचालन अधिकारी: डॉ राजेश्वर दयाल, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, बाल रोग विभाग, एस.एन. मेडिकल कॉलेज, आगरा।

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यः

सीएमई कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागी निम्नलिखित में सक्षम होंगे क) बच्चों में तपेदिक के महामारी विज्ञान की व्यापक समझ का प्रदर्शन; 2) बच्चों में फेफड़े और इतर फेफड़े के तपेदिक के नैदानिक स्पेक्ट्रम का वर्णन और यह कैसे वयस्कों से अलग है; 3) (प्रयोगशाला जांच सहित प्रत्येक नैदानिक प्रक्रिया की विशिष्टता और संवेदनशीलता की समझ के साथ) तपेदिक के निदान के तरीकों की समीक्षा; 4) तपेदिक के निदान के लिए इमेजिंग रूपरेखा की भूमिका को समझना; 5) तपेदिक के निदान के नए तरीकों पर चर्चा; 6) तपेदिक में दवा प्रतिरोध की घटनाओं और व्यापकता का वर्णन और क्षय रोग में ऐसी दवा प्रतिरोध के तंत्र को समझना; 7) बच्चों में फेफड़े और इतर फेफड़े के तपेदिक के लिए प्रबंधन प्रोटोकॉल को समझना और वर्णन करना; 8) घटनाओं और क्षय रोग के साथ के प्रकार को समझना; 9) व्यक्ति और समुदाय दोनों के स्तर पर तपेदिक की रोकथाम में सार्वजनिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप की भूमिका और महत्व पर चर्चा; 10) तपेदिक के निदान और प्रबंधन में वर्तमान शोध के प्रभाव का वर्णन करना।

पर्यवेक्षक (**डॉ. पी. के. मिश्रा**, **एफएएमएस**) **की रिपोर्ट की विशिष्टताएं**:

सीएमई संचालक द्वारा सीएमई कार्यक्रम के उद्देश्य पूरा किया गया था। आयोजकों द्वारा अच्छी तरह प्रलेखित अधिगम संसाधन सामग्री प्रदान की गई। पंजीकृत प्रतिभागी 162 थे और आम तौर पर 152 प्रतिभागी कार्यक्रम के दौरान उपस्थित थे। कार्यक्रम में

शिक्षाप्रद व्याख्यान नहीं थे लेकिन प्रत्येक व्याख्यान के अंत में प्रश्नों के अतिरिक्त पैनल चर्चा, इंटरैक्टिव सत्र, जीवंत नैदानिक-विकृति विज्ञान सम्मेलन और जीवंत समस्या को सुलझाने के सत्र थे। नैदानिक-विकृति विज्ञान मामले चर्चा सत्र में प्रतिभागियों को एक मामले में पुराने फोड़े / बढ़े ट्यूबरकुलर लिम्फ नोड्स दिखा कर और एक अन्य मामले में 6 और 7 कपाल तंत्रिका भागीदारी में नैदानिक मामलों का व्यावहारिक प्रदर्शन प्रदान किया गया। पाठ्यक्रम संकाय की प्रस्तुति बहुत ही अच्छी थी। सीएमई कार्यक्रम के दौरान प्रयुक्त श्रव्यदृश्य व्यवस्था उत्कृष्ट थी। शैक्षणिक सामग्री यानी प्रदान की गई अद्यतन जानकारी उत्कृष्ट थी। जानकारी साक्ष्य आधारित थी और नवीनतम संदर्भों का हवाला दिया गया था। जानकारी के अतिरिक्त सुझाव दिया गया था कि अभ्यासरत वैयक्तिक बाल रोग विशेषज्ञों की अधिकाधिक भागीदारी वांछनीय है।

6. 16 नवम्बर, 2013 को बाबा फरीद स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, फरीदकोट में आयोजित **"मादक द्रव्यों का सेवन: महामारी विज्ञान, समाजशास्त्र, स्वास्थ्य पर प्रभाव और पंजाब राज्य के विशेष संदर्भ में रोकथाम, नियंत्रण और प्रबंधन के लिए हस्तक्षेप रणनीतियाँ"** पर सीएमई कार्यक्रम।

संचालन अधिकारी: डॉ. एस. एस. गिल

संयोजक: डॉ. संजय गुप्ता

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य:

सीएमई कार्यक्रम के उद्देश्य थे 1) मादक द्रव्यों के सेवन और दुरुपयोग / निर्भरता के चिन्ह व लक्षण के ज्ञान में वृद्धि; 2) विभिन्न प्रकारों के मादक द्रव्यों के सेवन और क्यों यह एक महामारी बन गया है के बारे में जागरूकता बढ़ाना; 3) आज के युवाओं पर मादक द्रव्यों के सेवन से संबंधित विभिन्न सामाजिक प्रभावों की अंतर्दृष्टि और कैसे हम वापस लड़ सकते हैं; 4) मादक द्रव्यों के सेवन / निर्भरता के साथ ही सह होने वाली बीमारियों से पीड़ित लोगों के लिए उपलब्ध उपचार के विकल्प के ज्ञान में वृद्धि; 5)

पंजाब राज्य के विशेष संदर्भ के साथ ग्राहकों की सेवाओं के उपयोग को कम करने के तरीकों पर संबंध और सुझावों की जानकारी।

पर्यवेक्षक (डॉ राकेश कुमार चड्ढा, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

सीएमई कार्यक्रम के उद्देश्य, विशेष रूप से पंजाब राज्य में प्रचलित मादक द्रव्यों के सेवन के प्रकार पर प्रतिभागियों को अद्यतन करना, प्रसार, लक्षण और निर्भरता के लक्षण, जल्दी पहचान, मादक द्रव्यों के सेवन के हेतुविज्ञान, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक जटिलताओं, मादक द्रव्यों के सेवन के साथ जुड़े सामाजिक कारकों और मादक द्रव्यों के सेवन की समस्या से निपटने के लिए विभिन्न एजेंसियों के बीच संबंध के विकास के लिए एक विशेष ध्यान देने के साथ प्रबंधन रणनीति, पूर्ण किए गए थे। आयोजकों द्वारा प्रतिभागियों को अच्छी तरह प्रलेखित अधिगम संसाधन सामग्री प्रदान की गई। पंजीकृत प्रतिभागी 111 थे और 70-80 अतिथि थे। आम तौर पर 100-110 प्रतिभागी कार्यक्रम के दौरान उपस्थित थे। कार्यक्रम में शिक्षाप्रद व्याख्यान और पैनल चर्चा थे। वहाँ दर्शकों की भागीदारी थी, लेकिन कोई लघु समूह शिक्षण गतिविधि नहीं थी। प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रदर्शन / प्रशिक्षण प्रदान नहीं किया गया। पाठ्यक्रम संकाय की प्रस्तुति अच्छी थी। सीएमई कार्यक्रम के दौरान प्रयुक्त श्रव्यदृश्य व्यवस्था संतोषजनक थी और प्रदान की गई जानकारी साक्ष्य आधारित थी।

7. 5 दिसंबर 2013 को चेंगलपट्टू मेडिकल कॉलेज, तमिलनाडु में आयोजित **"बच्चों में बधिरता"** पर क्षेत्रीय अद्यतन।

संचालन अधिकारी: डॉ. ए. करूणागरम, आचार्य, चेंगलपट्टू मेडिकल कॉलेज, चेंगलपट्टू (तमिलनाडु)

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य:

सीएमई कार्यक्रम का उद्देश्य था कि शैक्षिक कार्यक्रम के पूरा होने पर प्रतिभागी इनमें सक्षम होंगे 1) भारतीय जनसंख्या में बाल बधिरता की घटनाओं और व्यापकता का वर्णन करना; 2) बच्चों में सीखने के परिणामों और शैक्षिक उपलब्धियों पर श्रवण

विकलांगता के प्रभाव और उनका सामाजिक-आर्थिक परिणामों पर चर्चा; 3) बाल बधिरता के हेतुविज्ञान, आनुवंशिक आधार, सहलाक्षणिक संघों का वर्णन; 4) बच्चों में श्रवण विकलांगता की स्क्रीनिंग के लिए उपलब्ध नवीनतम नैदानिक प्रोटोकॉल की विशिष्टता, संवेदनशीलता, और लागत प्रभावशीलता को समझना; 5) बाल बधिरता के लिए हाल ही में उपचार रूपरेखा के संकेतों और सीमाओं का वर्णन: डिजिटल श्रवण एड्स, बाहा, मध्य कान समाविष्ट, कर्णावत प्रत्यारोपण, एबीआई; 6) श्रवण हास की बहाली के लिए निदान और पुनर्वास के तरीकों में अपेक्षित कौशल का प्रदर्शन; 7) बधिर बच्चों का इष्टतम पुनर्वास सुनिश्चित करने में श्रव्यविज्ञानियों, श्रवण और भाषा रोगविज्ञानियों, स्कूल के शिक्षकों, अभिभावकों, और सामाजिक कार्यकर्ताओं की एक बहु अनुशासनिक टीम की भूमिका का वर्णन।

पर्यवेक्षक (डॉ. एस. कामेस्वरन, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

मुख्य उद्देश्य - बाल बधिरता के हाल के अग्रिमों और निदान और प्रबंधन की वर्तमान स्थिति के बारे में चिकित्सा बिरादरी के बीच जागरूकता लाना को पूरा किया गया। सभी प्रतिभागियों को अधिगम संसाधन सामग्री प्रदान की गयी। पंजीकृत प्रतिभागियों की कुल संख्या 120 थी और कार्यक्रम के दौरान आमतौर पर 100 उपस्थित थे। कार्यक्रम में शिक्षाप्रद व्याख्यान थे और दोपहर बाद निदान ऑडियोलॉजी में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया था। । इंटरैक्टिव सत्र / लघु समूह शिक्षण गतिविधियाँ थीं। प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रदर्शन / प्रशिक्षण प्रदान किया गया। पाठ्यक्रम संकाय द्वारा प्रस्तुति उत्कृष्ट थी। कार्यक्रम के दौरान श्रव्यदृश्य व्यवस्था प्रयुक्त की गई। उपलब्ध कराई गई जानकारी साक्ष्य आधारित थी। यह भी सुझाव दिया गया था कि अधिक से अधिक कार्यक्रमों और सतत जागरूकता की आवश्यकता है।

8. 6 दिसंबर, 2013 को डॉ एस. एन. मेडिकल कॉलेज, जोधपुर में आयोजित **"चिकित्सा शिक्षा के लिए मान्य गैर प्रिंट माध्यम का उपयोग कर एक मॉडल सीएमई कार्यक्रम के तुलनात्मक प्रभाव का आकलन करना"** पर सीएमई कार्यक्रम।
संचालन अधिकारी: डॉ. संजीव मिश्रा, निदेशक, एम्स, जोधपुर

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य:

संगोष्ठी का उद्देश्य था कि सीएमई के अंत में, प्रतिभागियों को निम्नलिखित विशिष्ट क्षेत्रों में ज्ञान हासिल होगा: 1) भारतीय परिदृश्य में नींद की समस्याओं की भयावहता के बारे में जागरूकता का प्रदर्शन, और वयस्कों और बच्चों में मोटापे की बढ़ती व्यापकता के साथ संबंध; 2) युवाओं और वृद्धों दोनों में विविध चिकित्सा विकारों के लिए अग्रणी सामान्य नींद शरीर विज्ञान में परिवर्तन के महत्व को समझना; 3) नींद से जुड़ी समस्याओं के साथ जुड़ी विशेष रोग स्थितियों को पूरी तरह से समझना; 4) नींद में अव्यवस्थित सांस लेने के परिणामों और कारणों की व्याख्या के लिए बहु विशेषता जैव चिकित्सा वैज्ञानिकों के साथ बातचीत; 5) नींद से जुड़ी समस्याओं के निदान और संबंधित नैदानिक स्थितियों के लिए स्क्रीनिंग दृष्टिकोण और परीक्षण प्रक्रियाओं का वर्णन; 6) ओएसए के प्रबंधन को युक्तिसंगत और योजना बनाना; 7) भारत में निद्रा प्रयोगशालाओं और व्यापक निद्रा केन्द्रों की आवश्यकता और उभरती भूमिका का वर्णन।

पर्यवेक्षक (डॉ. संजीव मिश्रा, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

सीएमई कार्यक्रम के व्यापक लक्ष्य को प्रतिभागियों के ज्ञान और निदान और प्रबंधन कौशल में सुधार का आकलन करना और चिकित्सा शिक्षा के लिए मान्य गैर प्रिंट माध्यम का उपयोग कर एक मॉडल सीएमई कार्यक्रम के तुलनात्मक प्रभाव का आकलन करना था। सीएमई कार्यक्रम का उद्देश्य पूरा किया गया था। प्रतिभागियों को पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण के साथ समन्वित श्रव्यदृश्य के माध्यम से दिखायी गयी सभी वक्ताओं की प्रस्तुतियों की पूरी लिपि समाहित अधिगम संसाधन सामग्री की एक पुस्तिका प्रदान की गई। पंजीकृत प्रतिभागी 108 थे। आम तौर पर 96 प्रतिभागी कार्यक्रम के दौरान उपस्थित थे। यह एक शिक्षाप्रद व्याख्यान नहीं था - यह एक नवीन दृष्टिकोण था

जिसमें 12 प्रस्तुतियों और दो इंटरैक्टिव सत्र सहित मान्य पहले रिकार्ड की गई डीवीडी प्रतिभागियों को प्रस्तुत की गई। प्रत्येक प्रस्तुति के बाद प्रो. वी. के. विजयन, संसाधन संकाय द्वारा स्पष्टीकरण दिए गए थे। प्रतिभागियों को टिप्पणियां और सवाल उठाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इंटरैक्टिव सत्र के दौरान, समस्याएँ उठाई गई थीं और प्रतिभागियों को टिप्पणी के लिए आमंत्रित किया गया। हाँ, वहाँ इंटरैक्टिव सत्र / लघु समूह शिक्षण गतिविधियाँ थीं और अध्यक्षों, डॉ कुलदीप सिंह और डॉ सुमन भंसाली और संसाधन व्यक्तियों द्वारा प्रोत्साहित किया गया था। इंटरैक्टिव सत्र में बाधित निद्रा विकारों के साथ जुड़े कुछ असामान्य लेकिन ज्ञात स्थिति - उभरती नेत्र सह-रुग्णता (फ्लॉपी पलक सिंड्रोम, ग्लूकोमा, गैर-धमनीय पूर्वकाल इस्केमिक ऑप्टिक न्यूरोपैथी और रेटिना नस आड़) और निद्रा संबंधी यौन विकारों, गतियों और हृदय स्थितियों के बारे में चर्चा की गई। हाँ, प्रस्तुतियों में रोगी के वीडियो के साथ परिदृश्य और प्रस्तोता द्वारा बताए बिंदु को समझाने के लिए चार्ट, ग्राफ, सारणी और आंकड़े भी शामिल थे। प्रतिभागियों द्वारा उठाये गए प्रश्नों को संसाधन संकाय प्रो. विजयन ने काफी हद तक संतुष्ट किया। प्रस्तुतियों 25 अक्टूबर 2013 पर आधारित थीं और नैम्स के 53 वें वार्षिक सम्मेलन के भाग के रूप में थीं। प्रस्तुतियों के लिए काम करने की विधि निम्न थी: निद्रा चिकित्सा संगोष्ठी के उद्देश्यों का अच्छी तरह से निर्माण महीनों पहले किए गए; चुने गए वक्ताओं को उनकी विशेषज्ञता के लिए एक सारांश तैयार करने को कहा गया था जो अधिगम संसाधन सामग्री के रूप में शामिल किया गया है; सामग्री वितरण अतिरेक और दोहराव से बचने के लिए विशेष ध्यान के साथ संशोधित किया गया है। यथासंभव संरचित दृष्टिकोण का सुझाव दिया गया था। सभी प्रस्तुतियाँ को वीडियो मिक्सिंग के साथ दोहरी एचडी वीडियो द्वारा दर्ज किया गया। बारह प्रस्तुतियाँ वक्ताओं की सहमति के साथ रिकार्ड की गई थीं। तैयार डीवीडी का डॉ वी. मोहन कुमार, डॉ वी. के. विजयन और प्रो. जे.एस. बजाज द्वारा समीक्षा की गई। इसलिए, वक्ताओं द्वारा प्रस्तुतियाँ उच्च गुणवत्ता की थीं। यह जोधपुर में और भारत में पहली बार है कि सीएमई सत्र इस तरह अभिनव की पद्धति से यहाँ आयोजित किया गया। विशेषज्ञों को उच्च गुणवत्ता, एक तुल्यकालन विधि में पावर प्वाइंट स्लाइड के साथ स्पष्ट रूप से

सुनाई देती प्रस्तुतियों द्वारा बदल दिया गया था। जहाँ ऑडियो तेज या स्पष्ट नहीं था, उन स्थानों पर इसे उपयुक्त करने के लिए इसे कई बार सुन कर छात्रों और रेजिडेंट द्वारा तैयार अधिगम संसाधन हैंडबुक से पूरित किया गया था। सामग्री उच्च गुणवत्ता की संक्षिप्त और समय की बर्बादी के बिना सारगर्भित थी। प्रस्तुतियाँ विशेषज्ञों द्वारा अपने स्वयं के क्षेत्र में दी गईं, प्रस्तुत आंकड़े पत्रिकाओं पर आधारित थे और साक्ष्य आधारित थे।

9. 10 जनवरी, 2014 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में आयोजित **"एक्यूट इस्केमिक स्ट्रोक: उन्नतिकरण की मूल बातें"** पर नैम्स-एम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी

संचालन अधिकारी: डॉ राज कुमार, निदेशक, एम्स, ऋषिकेश

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य:

संगोष्ठी का उद्देश्य था कि संगोष्ठी के अंत में प्रतिभागियों को निम्नलिखित विशिष्ट क्षेत्रों में ज्ञान प्राप्त होगा: 1) तीव्र इस्केमिक स्ट्रोक की नैदानिक प्रस्तुति का वर्णन और स्ट्रोक सिंड्रोम के उप-प्रकार और वर्गीकरण में सक्षम होना; 2) तीव्र इस्केमिक स्ट्रोक के विकृति शरीर क्रिया विज्ञान की समीक्षा करना; 3) स्ट्रोक का कारण निर्धारित करने के महत्व का वर्णन; 4) तीव्र इस्केमिक स्ट्रोक के रोगी के मूल्यांकन के लिए नैदानिक दृष्टिकोण बनाना और एक उचित उपचार योजना के डिजाइन में उन्नत इमेजिंग की भूमिका पर चर्चा; 5) इस्केमिक स्ट्रोक के लिए नसों में टीपीए के उपयोग के उपलब्ध आंकड़ों को समझना और नैदानिक प्रस्तुति और लक्षणों की शुरुआत के आधार पर उचित समावेश और बहिष्करण के मापदंड के लिए रोगियों का गंभीर रूप से मूल्यांकन; 6) स्ट्रोक के प्राथमिक और माध्यमिक रोकथाम के लिए हस्तक्षेप रणनीतियों पर चर्चा; 7) इष्टतम स्ट्रोक देखभाल करने के लिए प्रणाली आधारित बाधाओं की पहचानन और आपातकालीन विभाग में आने वाले इस्केमिक स्ट्रोक रोगियों की समय पर और उचित देखभाल में तेजी लाने के लिए सुधार रणनीतियों की पहचान; 8) तीव्र देखभाल के क्षेत्र

में शल्य पहलुओं और आवश्यकताओं पर चर्चा; 9) क्षणिक इस्केमिक दौरे, स्ट्रोक की पहचान और शीघ्र प्रबंधन और नैदानिक अभ्यास में स्ट्रोक स्थितियों को हल करने के महत्व पर चर्चा; 10) स्ट्रोक रोगियों के सामाजिक, शारीरिक, और संज्ञानात्मक पुनर्वास की रणनीति पर चर्चा करना।

पर्यवेक्षक (डॉ. एम. वी. पद्मा श्रीवास्तव, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

कार्यक्रम के लिए निर्धारित उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयास किया गया। नैदानिक व्यवहार में स्ट्रोक की मुख्य बिंदुओं के लिए नामित संकाय प्रबोधक व्याख्यान के माध्यम से और साथ ही दर्शकों के साथ प्रश्न काल में बातचीत के माध्यम से संदेश पहुंचा सकता था। पंजीकृत प्रतिभागियों की संख्या 90 थी जो कार्यक्रम के दौरान आम तौर पर उपस्थित थे। कार्यक्रम में केवल प्रश्नकाल के दौरान दर्शकों के साथ बातचीत को छोड़कर प्रबोधक व्याख्यान ही थे। बातचीत सत्र दर्शकों के साथ प्रश्न काल के दौरान और संकाय के साथ विशिष्ट नैदानिक परिदृश्यों पर चर्चा के दौरान किया गया था। उपलब्ध कराई गई जानकारी साक्ष्य आधारित थी।

10. 30 मार्च 2014 को स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़ में आयोजित **"बच्चों में दौरे"** पर नैम्स-पीजीआई अंतःसांस्थानिक सीएमई।

संचालन अधिकारी: डॉ योगेश चावला, अध्यक्ष, पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़

संयोजक: डॉ प्रतिभा सिंधी, FAMS

सीएमई कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य:

संगोष्ठी का उद्देश्य था कि संगोष्ठी के अंत में प्रतिभागियों को निम्नलिखित विशिष्ट क्षेत्रों में ज्ञान प्राप्त होगा: 1) बचपन, बाल्यावस्था और किशोरावस्था में सामान्य मिर्गी के लक्षणों की पहचान करना 2) गैर मिरगी घटनाओं और दौरे में अंतर करना 3) दौरे से ग्रस्त बच्चे में जांच युक्तिसंगत बनाना 4) अपस्माररोधी दवाओं के विवेकपूर्ण उपयोग करने के लिए सक्षम होना। संगोष्ठी का उद्देश्य बाल्यावस्था मिर्गी के क्षेत्र में प्रतिभागियों के कार्यसाधक ज्ञान में सुधार, और इस ज्ञान को व्यवहार में लाना था।

पर्यवेक्षक (डॉ. ओ. एन. भाकू, एफएएमएस) की रिपोर्ट की विशिष्टताएं:

नैम्स पर्यवेक्षक ने टिप्पणी की है कि संगोष्ठी का समग्र वातावरण बहुत अच्छा था। टेली-कनेक्टिविटी उपयुक्त थी पर कुछ घंटों के लिए कट गई। पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ में संगोष्ठी अधिकांश सत्र में बहुत उत्साही और इंटरैक्टिव थी, और लंबी अवधि के लिए जारी रह सकती थी। शिमला मेडिकल कॉलेज में, संगोष्ठी काफी उत्साही और इंटरैक्टिव थी और टांडा मेडिकल कॉलेज और पटियाला मेडिकल कॉलेज में यह काफी इंटरैक्टिव थी। प्रस्तुतियाँ और चर्चा उच्च गुणवत्ता की थी। पूछे जाने वाले प्रश्न दैनंदिन उपयोग के और व्यावहारिक थे। माहौल सौहार्दपूर्ण और सीखने के लिए प्रवाहकीय था। संगोष्ठी का उद्देश्य काफी हद तक पूरा किया गया था। "यह एक अच्छे सीएमई के लिए एक आदर्श के रूप में लिया जा सकता है" नैम्स पर्यवेक्षक ने टिप्पणी की थी। प्रस्तुति के दौरान प्रयुक्त सभी स्लाइड की प्रतियां प्रतिभागियों को दिए गए दस्तावेज में शामिल थीं। पंजीकृत प्रतिभागियों की संख्या 150 थी। संगोष्ठी के दौरान 120 से 150 प्रतिभागी उपस्थित थे। व्याख्यान में वीडियो प्रस्तुतियाँ शामिल थीं। सभी सत्रों में इंटरैक्टिव चर्चा थी। ब्रेक के दौरान व्यक्तिगत स्तर को छोड़कर कोई औपचारिक लघु समूह गतिविधियाँ नहीं थीं। पाठ्यक्रम संकाय द्वारा प्रस्तुति उत्कृष्ट थी। कार्यक्रम के दौरान अच्छी श्रव्यदृश्य व्यवस्था प्रयुक्त की गई। जानकारी साक्ष्य आधारित थी।

01.04.2013 से 31.03.2014 तक अंतःसांस्थानिक सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों के अधीन अनुदान दर्शाती विवरणी

क्र.सं.	विषय	स्वीकृत राशि (रुपए)
1.	**"द्विमेरुता के लिए एक बहु-अनुशासनिक दृष्टिकोण"** पर सीएमई कार्यक्रम एम्स, ऋषिकेशः 27 अप्रैल, 2013	68,377
2.	**"नैदानिक अनुसंधान में आचारसंहिता"** पर सीएमई कार्यक्रम एम्स, भुवनेश्वरः 20 जुलाई, 2013	59,407
3.	**"निद्रा चिकित्सा"** पर नैम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी एम्स, जोधपुरः 25 अक्टूबर, 2013	1,26,446
4.	**"गर्भावस्था में यकृत रोग"** पर क्षेत्रीय संगोष्ठी सरकारी मेडिकल कॉलेज, चंडीगढ़: 24 नवम्बर, 2013	75,000
5.	**"बच्चों में क्षय रोग: नए नैदानिक उपकरण और उपचार अद्यतन"** पर सीएमई कार्यक्रम एस. एन. मेडिकल कॉलेज, आगराः 28 नवम्बर, 2013	75,000
6.	**"मादक द्रव्यों का सेवन: महामारी विज्ञान, समाजशास्त्र, स्वास्थ्य पर प्रभाव और पंजाब राज्य के विशेष संदर्भ में रोकथाम, नियंत्रण और प्रबंधन के लिए हस्तक्षेप रणनीतियाँ"** पर सीएमई कार्यक्रम बाबा फरीद स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, फरीदकोटः 16 नवम्बर, 2013	52,500
7.	**"बच्चों में बधिरता पर क्षेत्रीय अद्यतन"** पर सीएमई कार्यक्रम चेंगलपट्टू मेडिकल कॉलेज, चेंगलपट्टूः 5 दिसंबर, 2013	72,005

8.	**"चिकित्सा शिक्षा के लिए मान्य गैर प्रिंट माध्यम का उपयोग कर एक मॉडल सीएमई कार्यक्रम के तुलनात्मक प्रभाव का आकलन करना"** पर सीएमई संगोष्ठी डॉ एस. एन. मेडिकल कॉलेज, जोधपुरः 6 दिसंबर, 2013	94,015
9.	**"एक्यूट इस्केमिक स्ट्रोक: उन्नतिकरण की मूल बातें"** पर नैम्स-एम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी एम्स, ऋषिकेशः 10 जनवरी, 2014	70,000
10.	**"बच्चों में दौरे और मिरगी: ज्ञान से व्यावहारिक देखभाल तक"** पर नैम्स-पीजीआई अंतःसांस्थानिक संगोष्ठी स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़ः 30 मार्च 2014	

एनएएमएस अध्याय

उत्तरी क्षेत्र

जम्मू और कश्मीर	डॉ. आर. मदान पूर्व सदस्य, लोक सेवा आयोग जम्मू एवं कश्मीर सरकार	निदेशक, मदान अस्पताल और अनुसंधान केंद्र, 37 ए/सी, गांधी नगर, जम्मू-180004
चंडीगढ़ हिमाचल प्रदेश	डॉ. योगेश चावला निदेशक, पीजीआईएमईआर, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हेप्टोलोजी विभाग, पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़-160012	निदेशक, पीजीआईएमईआर आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हेप्टोलोजी विभाग, स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़-160012
दिल्ली	डॉ. जे.एन. पांडे पूर्व आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, काय चिकित्सा विभाग, अ.भा.आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली-110029	वरिष्ठ परामर्शदाता (कायचिकित्सा), सीताराम भारतीया विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, बी-16, महरौली संस्थागत क्षेत्र, नई दिल्ली-110016
हरियाणा	एयर मार्शल डॉ. एम.एस. बोपाराय पूर्व निदेशक, एएफएमसी, पुणे, और पूर्व महानिदेशक, सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा, नई दिल्ली	915, डिफेंस कालोनी, सेक्टर-17बी, गुड़गांव- 122001

पंजाब	डॉ. एच.एस. संधू पूर्व प्रधानाचार्य, मेडिकल कालेज, अमृतसर	मकान सं. 883, सर्कुलर रोड, नर्स होस्टल के सामने अमृतसर- 143001
उत्तर प्रदेश	डा (श्रीमती) पी.के. मिश्रा, पूर्व प्रधानाचार्या एवं संकायाध्यक्ष, काय चिकित्सा संकाय, 122, फैजाबाद रोड, इंदिरा पुल के पास, लखनऊ-226007	122, फैजाबाद रोड, इंदिरा पुल के पास, लखनऊ-226007

मध्य क्षेत्र

राजस्थान	डॉ. संजीव मिश्रा निदेशक, एम्स, जोधपुर	निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जोधपुर
मध्य प्रदेश	डॉ. बी.सी. बापना	28, अनूप नगर, इंदौर- 452008

पश्चिम क्षेत्र

महाराष्ट्र	डॉ. एस.एस. देशमुख पूर्व कुलपति, बंबई विश्वविद्यालय, मुम्बई	समर्थ कृपा, राम मंदिर मार्ग, विले-पार्ले (ईस्ट), मुम्बई-400057
गुजरात	डॉ. हरिभाई एल. पटेल	50/322, सरस्वती नगर, वस्त्रपुर, अहमदाबाद-380015

दक्षिण क्षेत्र

तमिलनाडु	डॉ. मोहन कामेस्वरन निदेशक,	मद्रास ईएनटी अनुसंधान प्रतिष्ठान, 1 क्रॉस स्ट्रीट,

	मद्रास ईएनटी अनुसंधान प्रतिष्ठान, चेन्नई	ऑफ मुख्य मार्ग, राजा अन्नामलाईपुरम चेन्नई-600028
केरल	डॉ. वी. मोहन कुमार	8-ए, हीरा गेट अपार्टमेंट डीपीआई जंक्शन, जगथी तिरुवनंतपुरम-695014
आंध्र प्रदेश	डॉ. सी.एम. भास्करन पूर्व निदेशक, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा व पूर्व कुलपति, एनटीआर स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, आंध्र प्रदेश	17, राधिका कालोनी, वेस्ट मारेदपल्ली, सिकंदराबाद-500026
कर्नाटक	डॉ. अनुरा विश्वनाथ कुरपद संकायाध्यक्ष, सेंट जॉन अनुसंधान संस्थान सेंट जॉन राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान अकादमी, बंगलौर	सेंट जॉन अनुसंधान संस्थान सेंट जॉन राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान अकादमी, बीडीए कॉम्पलैक्स कोरामंगला, बंगलौर-560034
पूर्व क्षेत्र		
पश्चिम बंगाल	डॉ. डी. बक्सी पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, अस्थिरोगविज्ञान विभाग, मेडिकल कालेज एवं अस्पताल, कोलकाता	डीए-3, सेक्टर-1, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता-700064
उड़ीसा	डॉ. सुरेश्वर मोहंती तंत्रिकाशल्यचिकित्सा आचार्य एवं प्रधानाचार्य, आयुर्विज्ञान संस्थान,	206 डुप्लेक्स, मनोरमा एस्टेट, रसूलगढ़, भुवनेश्वर-751010

	सेक्टर-8 कलिंग नगर, भुवनेश्वर	
बिहार	डॉ. एस.पी. श्रीवास्तव पूर्व आचार्य एवं प्रमुख, बालचिकित्सा विभाग, पटना मेडिकल कालेज एवं अस्पताल, पटना	एस-104, उदयगिरी भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800001
झारखंड	डॉ. सुरेश्वर पांडे	आरजेएसआईओआर, रामेश्वरम, बरियातु रोड, रांची-834009
असम	डॉ. देबी चरण चौधरी	बेजबरुआ रोड, सिलपुखेरी, गुवाहाटी-781003

एनएएमएस के प्रतिष्ठित आचार्य

वर्ष 2013-14 में नैम्स के प्रतिष्ठित आचार्यों द्वारा दिए गए व्याख्यान/ सारांश की रिपोर्ट

1. **9-10 मई, 2013 को जयपुर में "उष्णकटिबंधीय ज्वर महामारी विज्ञान, करणीय अभिकरण, निदान और प्रबंधन" विषय पर डॉ. टी. डी. चुग, प्रतिष्ठित आचार्य, नैम्स द्वारा दिया व्याख्यानों का सारांश।**

   उच्च रुग्णता और उल्लेखनीय मृत्यु दर के साथ मौसमी ज्वर उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में मानसून के बाद होते हैं। अनेक लोगों को गहन देखभाल, यांत्रिक वेंटीलेशन, रक्त घटक चिकित्सा और यहां तक कि गुर्दे प्रत्यारोपण की आवश्यकता होती है। भारतीय क्रिटिकल केयर चिकित्सा समिति ने उनके निदान और प्रबंधन के लिए आम सहमति दिशानिर्देश तैयार करने के लिए डॉ. एन. रूंगटा की अध्यक्षता में महामारी वैज्ञानिक, बाल रोग विशेषज्ञ, संक्रामक रोग विशेषज्ञ, फेंफड़ों के विशेषज्ञ, चिकित्सक और एक सूक्ष्म जैव विज्ञानी (टी.डी. चुग) की एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया है। हमने दो बैठकें कीं: जयपुर में सबसे पहले एक दो दिवसीय बैठक और उसके बाद अहमदाबाद में। निम्नलिखित विचार विमर्श के साथ प्रत्येक ने 30 मिनट की प्रस्तुति बनायी है:

   मैंने निम्न प्रस्तुति उष्णकटिबंधीय ज्वरों के हेतुविकृति रोगजनन में और दूसरी प्रस्तुति अहमदाबाद में उनके प्रयोगशाला निदान पर दी। दोनों बैठकों की कार्यवाही इंड. जे. क्रिट. केयर मेड फ़रवरी, 2014 में प्रकाशित की गयी है।

   इस बैठक में प्रस्तुति निम्न के रूप में एक सहलाक्षणिक दृष्टिकोण थी:

   1. अविभेदित ज्वर: मलेरिया, लेप्टोस्पायरोसिस, स्क्रब सन्निपात और डेंगू।
   2. धब्बों/ थ्रोम्बोसाइटोपेनिया के साथ ज्वर, डेंगू, मेनिंगोकोक्सल संक्रमण, रिकेटस्सियल संक्रमण, लेप्टोस्पायरोसिस, मलेरिया, खसरा और रूबेला ।

3. ज्वर के साथ एआरडीएस: स्क्रब सन्निपात, फाल्सीपेरम मलेरिया, लेप्टोस्पायरोसिस, हैंटाविषाणु, लीजोनेला, मज्जा रोग।

4. बहुअंग विफलता के साथ ज्वरः पूति, मलेरिया, लेप्टोस्पायरोसिस, स्क्रब सन्निपात और एकाएक बढ़ानेवाला हैपेटाइटिस, बृहतभक्षककोशिका सक्रियण सिंड्रोम और हैंटाविषाणु संक्रमण।

क) **15 सितंबर, 2013 पर क्रिटिकल केयर मेडिसिन, अहमदाबाद इंडियन सोसायटी द्वारा आयोजित उष्णकटिबंधीय बुखार में प्रयोगशाला जांच**

कई मोटे और पतले परिधीय रक्त स्मीयर और/ या मलेरिया, सीबीसी, लीवर एंजाइम, मूत्र विश्लेषण और रक्त, मूत्र और मल कल्चर के लिए तीव्र निदान डिपस्टिक में उष्णकटिबंधीय बुखार के एक मामले का प्रारंभिक मूल्यांकन। लेप्टोस्पायरोसिस, तीव्र एचआईवी संक्रमण (आरएनए वायरल लोड) के लिए विशिष्ट नैदानिक परीक्षण पर विचार करें। पूति बायोमार्कर - ईएसआर, सीआरपी, पीसीटी, आईएल4, 10 और टीएनएफ अल्फा महत्वपूर्ण उपकरण हैं। क्लैमाइडिया, माइकोप्लाज्मा, लीजोनेला, न्युमोसिस्टिस, बोर्रेलिया, लिस्टेरिया और रिकेटसिआः कम रिपोर्ट किए जाने वाले, उभरते और उपेक्षित रोगों पर विचार करें।

असामान्य विषाणु: चिकनगुनिया, निपा, केएफडी, लासा, हेंटा, जेई और ईबोला के कारण तीव्र मस्तिष्कशोथ सिंड्रोम। इनकी संवेदनशीलता और विशिष्टता को जानने के लिए विशिष्ट द्रवीय परीक्षण किए जाने चाहिए।

ख) **13 दिसंबर 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में एक नव स्थापित अस्पताल में संक्रमण नियंत्रण का अवलोकन**

मैंने इतिहास, विकसित और विकासशील देशों में बोझ और भविष्य के मार्ग पर चर्चा की। जीएआरपी और सीडीडीईपी ने सितंबर 2011 में नई दिल्ली में हुई अपनी बैठक में कहा है कि भारत में एचएआई का बोझ संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में 3-5 गुना अधिक है और एमडीआर रोगजनकों की उच्च व्याप्ति है (एसीनिटोबेक्टर, स्यूडोमोनास,

मरसा 87% और वीआई 5 गुना अधिक)। प्रति वर्ष 1.9 मिलियन नवजात शिशुओं की मृत्यु होती है और इसमे से एक तिहाई का कारण पूति है। स्वच्छता की अपर्याप्त सुविधाओं, गंदे हाथ, एंटीबायोटिक दवाओं की अति और अपर्याप्त कीटाणुशोधन और अजीवाणु प्रथाएँ सामान्य कारण हैं। वहाँ अपर्याप्त जन जागरूकता, अपर्याप्त नियामक एजेंसियों और राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी प्रमुख बाधाएं हैं। एच सी डब्ल्यू में तपेदिक की वार्षिक जोखिम कम से कम समुदाय की तुलना में तीन गुना अधिक है और इसलिए भी रक्त जनित जीवाणुओं (हेपेटाइटिस बी, सी और एचआईवी) का खतरा है। अपर्याप्त हाथ स्वच्छता, दीर्घकालिक और अनावश्यक अंतर्संवहनी लाइनों और एंटीबायोटिक चिकित्सा भारत में बड़े पैमाने पर है।

हमें आवश्यकता है:

1. अस्पताल की जवाबदेही।
2. हमारे उपभोक्ताओं में अपने अधिकारों के लिए जागरूकता।
3. चिकित्सीय देखभाल की संस्कृति में बदलाव।
4. चिकित्सा पेशेवरों के अपमानजनक दृष्टिकोण में परिवर्तन।
5. संक्रमण नियंत्रण समितियों और अर्द्ध स्वायत्त का सशक्तीकरण।

ग) **फरवरी 2014 में एपीकॉन 2014, लुधियाना में प्रो. जे. एस. बजाज, प्रतिष्ठित आचार्य, नैम्स द्वारा 'पुनर्योजी चिकित्साः एक विचार जिसका समय आ गया है' पर दिए गए व्याख्यान का कार्यकारी सारांश।**

पुनर्योजी चिकित्सा एक तेजी से विकसित होता अनुसंधान क्षेत्र है जिसका लक्ष्य स्टेम सेल से ली गई कोशिकाओं से विनष्ट या घायल ऊतक को बदलने के अलावा, रोगों के लिए नए उपचारों को प्रदान करना है। परिभाषा के अनुसार 'पुनर्योजी चिकित्सा सामान्य क्रिया स्थापित या पुनर्स्थापित करने के लिए मानव कोशिकाओं, ऊतकों या अंगों को बदल देता है या पुन: बनाता है'।

विकासशील देशों में प्रमुख जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के कारण कुल जनसंख्या में वृद्धि के साथ बूढ़े लोगों की संख्या में भी वृद्धि हुई है जो आयु संबंधित अपक्षयी रोगों से ग्रस्त हैं। इसलिए, जनसांख्यिकीय और महामारी विज्ञान के संक्रमण की इस दोहरी चुनौती के लिए उचित प्रतिक्रिया करने के लिए पुनर्योजी चिकित्सा से बड़ी उम्मीदें और आशाएँ हैं। कोशकीय और आणविक जीव विज्ञान, कोशिका और ऊतक इंजीनियरिंग, जैव सामग्री, और विशिष्ट इमेजिंग तौर तरीकों में प्रगति के कारण पुनर्योजी चिकित्सा के क्षेत्र और सीमा में एक लंबी छलांग हुई है। एक ओर स्टेम सेल संबंधित ट्रांसलेशनल चिकित्सा में एक नई क्रांति आ रही है, जबकि स्कॉफोल्ड-आधारित या कोशिका शीट-आधारित ऊतक इंजीनियरिंग कोशिका आधारित पुनर्योजी चिकित्सा के नए रूप को उपलब्ध करा रही है।

बहुमुखी त्रिआयामी मध्यहृदत्स्तरीय ऊतकों का निर्माण अब संभव है। जिलेटिन जाल में चूहे के भ्रूण के हृदपेशी कोशिकाओं से इन विट्रो अनायास धड़कने वाले त्रिआयामी मध्यहृदत्स्तरीय ऊतकों का निर्माण करके ऊतक इंजीनियरिंग ने शानदार प्रदर्शन किया। लेपित डिश, सूक्ष्म रेशेदार पॉलिकैप्रोलैक्टोन जालों, या मैग्नेटाइट नैनोकणों का उपयोग करके कोशिका चादर की तरह की संरचनाओं को निर्मित किया गया है। वास्तव में नैनो पुनर्योजी चिकित्सा पहले से ही मानव में स्टेम सेल और ऊतक इंजीनियरिंग के नैदानिक परिणामों पर एक प्रत्यक्ष प्रभाव बना रही है।

स्टेम सेल अनुसंधान ने उभरते नैदानिक चुनौतियों का सामना करना अभी शुरू ही किया है। हृदय क्षेत्र के समान जिसमें मध्यहृदत्स्तर के पुनर्योजन में प्रथम मानव परीक्षणों से निश्चित प्रोटोकॉल तक आने में एक दशक लगा था, सुरक्षा, स्टेम सेल खरीद, आयु, रोग, वर्तमान देखभाल, प्रशासन का तरीका, खुराक और समय के अनुकूलन के लिए अन्य नैदानिक अनुप्रयोगों से पहले भी पूर्व नैदानिक और फिर नैदानिक परीक्षणों की आवश्यकता है।

नॉटिंघम विश्वविद्यालय में औषध वितरण और ऊतक इंजीनियरिंग के आचार्य, केविन शेकशैफ्फ, का विश्वास है कि बुनियादी विज्ञान और ट्रांसलेशन के लिए निरंतर दृष्टिकोण बनाए रखने से मानव शरीर के हर ऊतक को चोट या बीमारी के बाद अभिनव उपचारों

के माध्यम से पुनर्जीवित किया जा सकता है। हालांकि, उन्होंने सतर्क किया है कि पुनर्योजी उपचार जटिल होंगे और नैदानिक सफलता के लिए कोई छोटा रास्ता नहीं है। "हमें ध्यान से प्रगति करने की जरूरत है, परंतु ब्रिटेन का पुनर्योजी चिकित्सा संबंधित नैतिक और विनियामक मुद्दों से निपटने में एक अच्छा ट्रैक रिकॉर्ड है और रणनीति एक बहु एजेंसी दृष्टिकोण पर बनाई जाती है।" यह भारत के लिए भी उतना ही सच होना चाहिए।

विक्टर ह्यूगो ने एक बार कहा था, "पृथ्वी पर कोई शक्ति नहीं ऐसे विचार को नहीं रोक सकती है जिसका समय आ गया है"। पुनर्योजी चिकित्सा के संबंध में यह निश्चित रूप से सत्य है।

घ) **15 फ़रवरी 2014 पर अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर में दिया "उभरते हुए और पुनः उभरते हुए जीवाणु संक्रमण"**

स्वच्छता क्रांति, टीके और सूक्ष्मजीवीरोधी के आगमन के बावजूद दुनिया में वार्षिक 15 लाख विकलांगता समायोजित जीवन वर्ष में से 30% संक्रामक रोग के कारण खो रहे हैं। जोशुआ लेडरबर्ग ने आनुवंशिक पुनर्संयोजन का वर्णन किया और रोगाणुओं में अनुकूली भिन्नता, अंतर-प्रजाति गमन और किंगडम कूद का निर्देशन किया जिसके कारण अभिनव रोगज़नक़ों का उद्भव होता है। मनुष्यों में पाए जाने वाले 1400 सूक्ष्मजैविक रोगज़नक़ों में से 87 को 1980 के बाद से वर्णित किया गया है जिनमें से, दो तिहाई जूनोटिक मूल के हैं। महत्वपूर्ण अभिनव रोगजनकों में से कुछ लीजोनेला, कैम्पिलोबैक्टर, बोरेलिया, इकोलियो157, हेलिकोबैक्टर, वी हैजा 0139 हैं। कुछ अन्य रोगज़नक़ (एमटीबी, एस एमटीबी, एस ऑरियस, बहुऔषध प्रतिरोधी जीएनबी) अच्छे नियंत्रण में थे लेकिन पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तन, एंटीबायोटिक प्रतिरोध और पर्याप्त सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों का अभाव या अपर्याप्त धन के कारण फिर से उभरे हैं।

पहले रिकेटसिएल रोग एक खतरा थे अब सैन्य चिकित्सा एक अंतरराष्ट्रीय समस्या है। ब्रूसीलोसिस, प्लेग, मेलियोडॉसिस, लेप्टोस्पायरोसिस, क्लोस्ट्रीडियम डिफिकल का उद्भव

भारत में गंभीर खतरे हैं। विभिन्न बैक्टीरियल रोगज़नक़ों के कारण उष्णकटिबंधीय ज्वर भारत के हर हिस्से में उभरा है।

कैंसर के कारक या के साथ जुड़े बैक्टीरिया यानी एच. पाइलोरी, एस. टाइफी, सी. निमोनिया, स्ट्रेप बोविस, जीवन शैली की बीमारियाँ) ने एक नया आयाम जोड़ दिया है। आंत सूक्ष्म बायोम और जीवन शैली की बीमारियाँ (मोटापा, मधुमेह, अथ्रोसिकलरोसिस, कोरोनरी धमनी रोग और आंत्र सूजन रोग) एक वास्तविकता है।

<u>प्रकाशन</u>

1. उष्णकटिबंधीय बुखार: प्रबंधन के दिशा निर्देश इंड जे क्रिट केयर मेड 2014; 18: 62-69।

2. एक टीबी स्थानिक देश में गैर-एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों के बीच गैर-यक्ष्मा माइक्रोबैक्टीरियल रोग की उच्च व्याप्ति: उत्तर भारत में एक तृतीयक केंद्र से अनुभव। रोगज़नक़ों और विश्व स्वास्थ्य 2014;108: 118-212।

3. नोकार्डिया प्रजातियों के तेजी से अलगाव के लिए सिस्टीन लैक्टोज इलेक्ट्रोलाइट अगर की कमी की उपयोगिता। इंड जे पैथॉल माइक्रोबियल 2013; 56: 485-486।

4. नई दिल्ली में सैल्मोनेला एन्ट्रिका की रक्त कल्चर आइसोलेट्स के बीच सूक्ष्मजीवीरोधी प्रतिरोध । जे इंफेक्ट डेव सीट्रिस 2013; 7 (द्वितीय): 788-795।

5. भारत से स्ताफ्य्लोकोच्चुस ऑरियस और एंटरोकोक्की के नैदानिक आइसोलेट्स के विरुद्ध इन विट्रो वेनामाइसिन और डेप्टोमाइसिन की क्रिया इंट जे रोगाणुरोधी एजेंट 2013; 42: 94-98।

6. दो पुस्तक अध्याय: फाल्सीपेरम मलेरिया पर हैंडबुक, प्रकाशक जेपी ब्रदर्स मुख्य संपादक अनुपम सचदेवा।

क) फाल्सीपेरम मलेरिया का प्रयोगशाला निदान।

ख) फाल्सीपेरम मलेरिया का सीरम विज्ञानी निदान।

7. नोकॉड्रियॉल संक्रमण: प्रतिरक्षासमझौते वाले होस्ट की एक कम निदान मेलेडी। जे इम्यूनॉल टेक इंफेक्ट डिस 2013, 2: 1-5।

2. **सितंबर 2013 में भारतीय विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़ में डॉ. श्रीधर शर्मा, प्रतिष्ठित आचार्य, नैम्स द्वारा दिए गए व्याख्यान "कैसे मानव दिमाग काम करता है" का सारांश।**

मानव मन हमारे शरीर के सबसे जटिल अंगों में से एक है और हर दिन जीवन में हमारी सभी गतिविधियों को प्रभावित करता है। एक मनोचिकित्सक होने के कारण स्वाभाविक रूप से, इस विषय का मेरा परिप्रेक्ष्य क्षेत्र में नवीनतम ज्ञान और अनुसंधान रुझान को ध्यान में रखते हुए, एक दार्शनिक दृष्टिकोण और जैविक दोनों रूप में होगा। प्राथमिक उद्देश्य: मन की अवधारणा को स्पष्ट करना और मन और मस्तिष्क के बीच के संबंध को समझने के लिए एक ढांचा प्रस्तुत करना है। माध्यमिक उद्देश्य इस संरचना का उपयोग करके 'मन, मस्तिष्क और पर्यावरण के बीच संबंध बनाना' के बारे में एक परिकल्पना के लिए सुझाव देना है। मैंने तीन व्यापक क्षेत्रों में अपने व्याख्यान को बांट दिया है। प्रथम, महान विचारक के रूप में मन के तंत्र की जांच करने का प्रयास करने वाल पिछले दो से तीन सहस्राब्दी के महान दार्शनिकों के विशेष संदर्भ में, ऐतिहासिक है। मन उनके लिए कोई सामग्री नहीं था अपितु शायद मृत्यु के बाद अस्तित्व के लिए आध्यात्मिक और उत्तरदायी था। प्लेटो (428 ईसा पूर्व), सुकरात (423 ईसा पूर्व) और हिप्पोक्रेट्स (460 ईसा पूर्व) के समय में नए तत्व अवधारणा और मन के विचार के लिए जोड़े गए थे। दूसरा एक प्रयास मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य से मन और मस्तिष्क के बीच संबंधों को समझने के लिए किया गया है। हालांकि यह एक रहस्य है कि यह संबंध कैसे होता है, और कौन सी तंत्रिका घटनाएँ आत्म चेतन मन के साथ संपर्क में हैं, जो न केवल स्कैन करती हैं अपितु व्यक्तिगत न्यूरोनल प्रदर्शन के गतिशील पैटर्न को भी प्रभावित करती है। इनमें से कुछ कार्य आश्चर्यजनक हैं। तंत्रिका शरीर विज्ञान और तंत्रिका-रसायन के क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने मस्तिष्क के तंत्र को समझाने के

लिए कुछ अज्ञात क्षेत्रों का पता लगाया है। तो, निष्कर्ष में इस पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा कि मन को समझने के लिए तंत्रिका विज्ञान से क्या लाभ उठाया जा सकता है?

29 नवंबर से 1 दिसंबर 2013 को मैसूर में सार्क सम्मेलन में "मतभेद प्रबंधन और मतभेद को सुलझाना"

मतभेद द्विक, परिवार, समुदाय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जीवन का एक हिस्सा है। इसके कई निर्धारकों में आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और धार्मिक कारक सम्मिलित हैं। मतभेद आम, गंभीर और वैश्विक है। जब भी दो या दो से अधिक दल एक ही समय में संबंधित लक्ष्यों को पूरा नहीं कर सकते हैं वहाँ मतभेद होता है और जब कोई बड़ा परिवर्तन होता है, तब भी मतभेद विकसित होने की संभावना है। मतभेद एक करण और कारण है भले ही वे सार्वभौमिक रूप से समझे और संगत नहीं हों। हालांकि, प्रत्येक मतभेद स्थिति में कुछ सामान्य विशेषताएं हैं। लेख के उद्देश्य हैं:

(क) अवधारणा स्पष्ट करना,

(ख) मतभेद की गतिशीलता की व्याख्या करना

(ग) मतभेद सुलझाने के एक मॉडल का सुझाव करना

सुझाया गया मॉडल किसी दिए गए मतभेद की स्थिति को हल करने के लिए कुछ बुनियादी सिद्धांतों और कुछ चरणों की रूपरेखा बनाता है । मतभेद को सुलझाने में सहायता करने वाले बुनियादी सिद्धांतों में शामिल हैः

(1) परस्पर विरोधी दलों के बीच संवाद में वृद्धि मनोवैज्ञानिक 'प्राथमिक चिकित्सा' के रूप में कार्य करती है

(2) पारस्परिक मतभेद को हल करने के लिए "विश्वास" को विकसित करने में मदद करना

(3) मतभेद सुलझाने में तीसरा घटक 'हठ' और आशा है।

महानतम जीत तब होती है जब किसी की पराजय नहीं होती और सभी सफलता में भागीदार बन सकते हैं। यह दुनिया के मनोचिकित्सकों और नागरिक के रूप में हम में से प्रत्येक के लिए एक अवसर और एक चुनौती दोनों है। व्यक्तिगत और समूह के मतभेदों को सुलझाने के लिए मनोसामाजिक ज्ञान के कुशल अनुप्रयोग की आवश्यकता है।

कुंजी शब्द: मतभेद प्रबंधन, मतभेद समाधान, समूह की गतिशीलता, विश्वास, मनोवैज्ञानिक सामाजिक, बुद्धि।

3. **सितंबर 2013 में भारतीय विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़ में डॉ. कमल बक्शी, प्रतिष्ठित आचार्य, नैम्स द्वारा दिए गए व्याख्यान "प्रसूति एंटीफॉस्फोलिपिड सिंड्रोम (एपीएस) के नए अंतर्दृष्टि और मौजूदा प्रबंधन" का सारांश।**

एंटीफॉस्फोलिपिड सिंड्रोम (एपीएस) एक स्वतः प्रतिरक्षा थ्रोम्बोफिलिक बहु अंग विकार है जिसमें कोशिका झिल्ली फॉस्फोलिपिड के विरुद्ध स्वतः प्रतिरक्षी का पता लगाया जाता है। इसकी चिकित्सकीय विशेषता मुख्य रूप से थ्रोम्बोसाइटोपेनिया, घनास्त्रता, तंत्रिका संबंधी और त्वचारोग संबंधी अभिव्यक्ति और आवर्तक भ्रूण नुकसान है। हाल ही में पता चला है कि ये प्रतिरक्षी β2 ग्लाइकोप्रोटीन के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। प्रसूति जटिलताएँ इस स्थिति की पहचान हैं।

एंटीफॉस्फोलिपिड - प्रोटीन नैदानिक महत्व के स्व-प्रतिरक्षी में शामिल हैं:

1. विरोधी कार्डिलिपिन प्रतिरक्षी (एसीएल),

2. थक्कारोधी चर्मयक्ष्मा (ला) और

3. विरोधी β 2 ग्लाइकोप्रोटीन एक प्रतिरक्षी।

चर्मयक्ष्मा प्रतिरक्षी घनास्त्रता और आवर्ती गर्भपात के सबसे शक्तिशाली कारक है। अलगाव में विरोधी B2-ग्लाइकोप्रोटीन-1 प्रतिरक्षी आवर्तक गर्भपात के साथ संबद्ध नहीं हैं। हालांकि, थक्कारोधी चर्मयक्ष्मा (ला) और एसीएल के सकारात्मक परिणामों के संयोजन में, प्रसूति जटिलताओं के लिए एक उच्च जोखिम है।

इस प्रकार की महिलाओं में सकारात्मक एंटीफॉस्फोलिपिड प्रतिरक्षी की व्यापकता है:

- स्वस्थ: 1-5%
- पहली तिमाही आवर्तक गर्भावस्था के नुकसान के साथ: 15%
- स्ट्रोक पीड़ित: 20%
- चर्मयक्ष्मा के साथ: 40%

एपीएस के साथ महिलाओं का उपचार:

भ्रूण / नवजात परिणाम में सुधार करने के लिए विभिन्न प्रकार कि औषधीय उपचार प्रयुक्त किए गए हैं (एस्पिरिन, स्टेरॉयड, हेपरिन, इम्युनोग्लोबुलिन) या तो एकल रूप में या संयोजन में। इन महिलाओं की मानक देखभाल के लिए एस्पिरिन (75-100 मिग्रा) के संयोजन गर्भधारण के नियोजन के एक या दो महीने पहले से शुरू करके और उसके बाद गर्भावस्था और पहले 4 प्रसवोत्तर सप्ताह में दिए जा रहे हैं। गर्भावस्था की व्यवहार्यता की पुष्टि अल्ट्रासाउंड द्वारा होने के बाद कम आणविक भार हेपरिन शीघ्र ही शुरू किया जाना चाहिए। स्टेरॉयड और इम्युनोग्लोबुलिन उनके दुष्प्रभावों के कारण नियमित रूप से प्रयोग नहीं किए जाते हैं। खुराक और चिकित्सा की अवधि गर्भावस्था और प्रतिरक्षात्मक स्थिति के इतिहास पर निर्भर करता है।

निष्कर्ष:

इन वर्षों में एपीएस के बारे में हमारी सोच में गहरा बदलाव आया है। एपीएस के साथ सभी महिलाओं को उच्च जोखिम माना जाना चाहिए और उनकी नैदानिक और प्रतिरक्षात्मक स्थिति के आधार पर व्यक्तिगत देखभाल दी जानी चाहिए। सही प्रबंधन के साथ 75-80% में अच्छा जन्म - पूर्व परिणाम होगा। यह एक आम स्व प्रतिरक्षा रोग है पर यह कभी कभी विनाशकारी हो सकता है।

क्षितिज में: भविष्य बेहतर निदान विधियों, नए के विकास, सुरक्षित, लागत प्रभावी, मौखिक थक्का-रोधी दवाओं और स्व प्रतिरक्षी के लिए लक्षित चिकित्सा पर निर्भर करता है।

ख) 1-5 फ़रवरी, 2014 को बिहार में प्रसूति विज्ञान एवं स्त्रीरोग विज्ञान की 57 वीं अखिल भारतीय कांग्रेस "असामान्य प्रसूति चुनौतियां का रास्ता: वर्तमान रणनीतियां और नई अंतर्दृष्टि"

प्रतिष्ठित आचार्य, नैम्स, वरिष्ठ परामर्शदाता प्रसूति एवं स्त्री रोग, अपोलो अस्पताल और फोर्टिस ला फेम

शल्यक्रिया की बढ़ती दर ने सीजेरियन निशान, गर्भाशय ग्रीवा, शृंगी गर्भधारण और असामान्य गर्भनाल यानी जीवन के लिए खतरा अस्थानिक गर्भधारण के दुर्लभ रूप को जन्म दिया है।

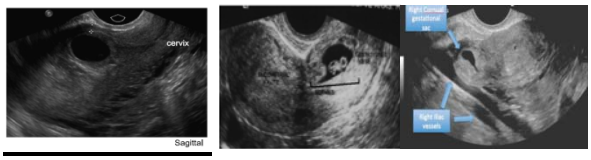

यह महत्वपूर्ण है कि प्रसव पूर्व देखभाल प्रदाता इन स्थितियों के बारे में जागरूक हों। हेतुरोगजनन, नैदानिक प्रस्तुति, अल्ट्रासोनिक नैदानिक मानदंडों और ज्ञात रणनीतियों पर प्रकाश डाला जाएगा।

<u>इलाज के तरीके इन पर निर्भर करते हैं:</u> हीमोडाइनेमिक स्थिरता, गर्भावधि आयु, व्यवहार्यता, एचसीजी स्तर, भविष्य की गर्भधारण योजना, इंडोस्कोपिक विशेषज्ञता, फॉलो अप की श्रृंखला और इमेजिंग व्यवहार्यता।

सीजेरियन निशान गर्भावस्था (सीएसपी): सीएसपी रोगियों में एक तिहाई भारी रक्तस्राव की जटिलताओं से पीड़ित हैं। कुछ मामलों में गर्भाशय टूट सकता है जिसके परिणामस्वरूप गर्भाशय नहीं होने से बाद में गर्भधारण की संभावना नहीं रहती । सीजेरियन सेक्शन प्रसव युवा महिलाओं के लिए सबसे बड़े स्वास्थ्य जोखिम में से एक बन गया है।

<u>फॉलो अप:></u> 12-24 माह तक गर्भधारण से बचें - सीएसपी/ सीएस । गैर गर्भवती स्थिति में पिछले सिजेरियन निशान स्थल पर तरल पदार्थ भरने के दोष/ आला की उपस्थिति का पता लगाने के लिए टीवीएस/ सेलाइन सोनोग्राफी द्वारा गर्भाशय की दीवार की अखंडता का आकलन करें। पुनरावृत्ति को रोकने के लिए दोषों को सुधारें। गर्भावस्था के दौरान हमल थैली के स्थान की पुष्टि करने के लिए जल्दी टीवीएस करें।

सरवाइकल अस्थानिक गर्भावस्था: यह गंभीर रक्तस्राव के साथ जुड़ी जीवन के लिए खतरा स्थिति का एक और दुर्लभ रूप है विशेषकर जब निदान नहीं किया गया हो और यहां तक कि 50% मामलों में गर्भाशय को निकालना या मृत्यु भी हो सकती है। पिछले सीजेरियन सेक्शन के एक मामले की सफलता की कहानी जिसकी अल्ट्रा साउंड में गर्भपात के रूप में पहचान की गई थी और उसका पता ओटी में चला था जब फैलाव और करेट्टेज का प्रयास किया गया था और रोगी को गंभीर रक्तस्राव शुरू हो गया था।

शृंगी गर्भावस्था: यह भी निदान नहीं होने पर भयावह होता है। एक द्विशृंगी गर्भाशय में व्यवहार्य शृंगी गर्भावस्था के एक मामले पर प्रकाश डाला जाएगा जिसका सफलतापूर्वक मेथोट्रेक्सेट के साथ इलाज किया गया था।

प्रोटीन 'एस' की कमी और एमटीएचएफआर जीन उत्परिवर्तन के साथ रोगियों के प्रबंधन में चुनौतियां, वर्तमान ज्ञान और भविष्य दिशाओं को भी प्रस्तुत किया जाएगा और चर्चा की जाएगी।

शैक्षिक समिति

शैक्षिक समिति (अकादमिक चिकित्सा पर समिति) के गठन और उद्देश्यों को दिनांक 30 अप्रैल, 2005 को आयोजित अपनी बैठक में परिषद् और आम सभा द्वारा अनुमोदित किया गया है।

शैक्षिक समिति के निम्नलिखित सदस्य थे:

1.	प्रो. जे.एस. बजाज, एफएएमएस	अध्यक्ष
2.	डॉ. प्रेमा रामाचंद्रन, एफएएमएस	सदस्य
3.	डॉ. एस.एस. देशमुख, एफएएमएस	सदस्य
4.	डॉ. सी.एस. भास्करन, एफएएमएस	सदस्य
5.	डॉ. मनोरमा बेरी, एफएएमएस	सदस्य
6.	डॉ. एन.एन. सूद, एफएएमएस	सदस्य
7.	डॉ. ललिता एस. कोठारी, एफएएमएस	सदस्य
8.	डॉ. जयरूप सिंह, एफएएमएस	सदस्य
9.	डॉ. एच.एस. संधू, एफएएमएस	सदस्य
10.	डॉ. आर. मदान, एफएएमएस	सहयोजित सदस्य
11.	डॉ. संजय वधवा, एफएएमएस	सचिव

एनएएमएस के सीमाक्षेत्र में आने वाले सभी मामलों को शैक्षिक समिति और शैक्षिक परिषद् के समक्ष विचार करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। शैक्षिक समिति और शैक्षिक परिषद् की रिपोर्टें एनएएमएस परिषद् की बैठक में प्रस्तुत की जाती हैं और तदनुसार निर्णयों को कार्यान्वित किया जाता है। इस सामान्य रूपरेखा के होते हुए भी, शैक्षणिक समिति के विशिष्ट कार्यों में शामिल हैं:

दिनांक 26 अप्रैल, 2013 को आयोजित शैक्षिक समिति की बैठक की विशिष्टताएं

अध्यक्ष छह एम्स के निदेशकों के साथ बैठकें कीं और सभी निदेशकों की शैक्षिक सहयोग को मजबूत बनाने के लिए NAMS-अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान कालेजियम में शामिल होने के लिए सहमत हुए थे। प्रत्येक एम्स वर्ष के दौरान एक NAMS संगोष्ठी / सीएमई कार्यक्रम

का आयोजन किया जाएगा। इनमें से पहला 2013/04/24 पर "Spina Bifida करने के लिए एक बहु अनुशासनिक दृष्टिकोण 'विषय पर ऋषिकेश में आयोजित किया गया था। अन्य पांच संस्थानों अस्थायी सीएमई विषयों पर सहमत हो गए हैं। अध्यक्ष आगे चयनित विषयों में 12 वीं पंचवर्षीय योजना में पहचान के रूप में प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के आधार पर कर रहे हैं कि सूचित किया।

समिति के अध्यक्ष द्वारा की गई पहल की सराहना की और अध्यक्ष द्वारा की गई सिफारिशों का समर्थन किया: -

अध्यक्ष ने छह एम्स के निदेशकों के साथ बैठकें कीं और सभी निदेशक शैक्षिक सहयोग को मजबूत बनाने के लिए नैम्स-एम्स अधिशासी मंडल में शामिल होने के लिए सहमत हुए थे। प्रत्येक वर्ष के दौरान एक नैम्स-एम्स संगोष्ठी / सीएमई कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इनमें से पहला 24.04.2013 को "द्विमेरुता के लिए एक बहु अनुशासनिक दृष्टिकोण" विषय पर ऋषिकेश में आयोजित किया गया था। अन्य पांच संस्थान अस्थायी सीएमई विषयों पर सहमत हो गए हैं। अध्यक्ष ने आगे सूचित किया कि चयनित विषय 12 वीं पंचवर्षीय योजना में पहचाने गए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के आधार पर हैं ।

समिति ने अध्यक्ष द्वारा की गई पहल की सराहना की और अध्यक्ष द्वारा की गई सिफारिशों का समर्थन किया: -

- राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों के रूप में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नैम्स के साथ एक अधिशासी मंडल का गठन होगा
- इन संस्थानों और राष्ट्रीय महत्व के अन्य संस्थानों में संगोष्ठियों /सीएमई को राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी की अंतःसांस्थानिक शैक्षणिक गतिविधियों के रूप में माना जाएगा
- इन अंतःसांस्थानिक कार्यक्रमों के लिए प्रस्ताव राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी के लिए सीधे भेजे जाएँगे
- इन प्रस्तावों पर नैम्स के कार्यालय द्वारा प्राप्त करते ही अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति द्वारा विचार किया जाएगा

- अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति इन प्रस्तावों का अध्ययन, अगर किसी भी संशोधन के लिए आवश्यक हैं तो निदेशकों के साथ बातचीत और एक विषय विशेषज्ञ द्वारा तकनीकी समीक्षा निर्देशित करेंगे
- अनुमोदित प्रस्तावों को रुपये 75,000/- / 1 लाख, जैसा भी उपयुक्त होगा, वित्तीय अनुदान प्राप्त होगा।

अध्यक्ष ने समिति को सूचित किया कि भी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नैम्स के प्रतिष्ठित आचार्य को आमंत्रित करेगा जो इन संस्थानों में व्याख्यान देंगे, 2-3 दिनों की अवधि के लिए प्रयोगशाला प्रशिक्षण / नैदानिक प्रशिक्षण का संचालन करेंगे। यात्रा लागत नैम्स द्वारा प्रदान की जाएगी और स्थानीय आतिथ्य संस्था द्वारा वहन किया जाएगा। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान और नैम्स के संकाय के बीच एक करीबी सहयोग की सुविधा के लिए ये संस्थान नैम्स वार्षिक सम्मेलनों के स्थान भी हो सकते हैं। इस उद्देश्य के लिए निमंत्रण अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के निदेशकों की ओर से और राष्ट्रीय महत्व के अन्य संस्थानों की ओर से किया जाएँगे और राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी को सीधे भेजे जाएँगे। स्वीकार किए जाने पर राज्य संयोजक को तदनुसार सूचित किया जाएगा।

डॉ हरदास सिंह संधू ने इस प्रकार देश में भविष्य शैक्षिक घटनाक्रम के नाभिक की स्थापना के लिए नैम्स-एम्स अधिशासी मंडल गठित करने के लिए प्रो. बजाज, अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति को बधाई दी। अध्यक्ष द्वारा समिति के सदस्यों को सूचित किया गया कि नियोजित पहल 12वीं पंचवर्षीय योजना के लिए प्रस्तुत नैम्स प्रस्तावों के अनुसार ही हैं । समिति ने इन कार्यों का समर्थन किया। अध्यक्ष ने समिति को सूचित किया कि इन सभी गतिविधियों की रिपोर्ट की नैम्स परिषद के पास विचार और बेचान के लिए जमा करने से पहले नैम्स-एम्स अधिशासी मंडल / शैक्षणिक समिति / शैक्षणिक परिषद द्वारा समीक्षा की जाएगी ।

अध्यक्ष ने संगोष्ठियों / सीएमई के विशिष्ट शिक्षण उद्देश्यों के बारे में शैक्षणिक समिति के सदस्यों को याद दिलाया और इनका सीएमई की दिशा-निर्देश पुस्तक के अनुसार भविष्य में सीएमई कार्यक्रम में कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए सभी सदस्यों से अनुरोध किया। अध्यक्ष ने सीएमई / संगोष्ठियों पूर्व और पश्च मूल्यांकन की आवश्यकता पर बल दिया।

अध्यक्ष ने युवा वैज्ञानिकों के प्रशिक्षण के लिए नैम्स और पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा के बीच भविष्य के सहयोग के लिए उसके द्वारा मसौदा समझौता ज्ञापन प्रस्ताव के लिए डॉ. जयरूप सिंह, कुलपति, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा को धन्यवाद दिया। उन्होंने प्रशिक्षुओं को सीएसआईआर या आईसीएमआर के तहत जेआरएफ / एसआरएफ के समान उनकी योग्यता के लिए उपयुक्त एक वृत्ति का भुगतान किए जाने का प्रस्ताव किया। वित्तीय प्रावधानों के साथ इस प्रस्ताव के मसौदे को वित्त समिति के समक्ष प्रस्तुत करना होगा। पंजाब से अध्येताओं के लिए धन के स्रोतों में से एक पंजाब के मुख्यमंत्री द्वारा दिए गए अनुदान से स्थापित कोष हो सकता है। श्री सप्रू पंजाब के मुख्यमंत्री द्वारा अनुदान के बारे में निधि की स्थिति पर एक नोट तैयार करेंगे और इसे वित्त समिति के समक्ष रखा जाएगा। वित्त समिति के अनुमोदन के बाद, एमओयू अपनी अगली बैठक में नैम्स परिषद के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा और परिषद के अनुमोदन के बाद हस्ताक्षर किए जाएँगे।

5 वर्ष से अधिक तक नियमित रूप से की गयी एक गतिविधि नैम्स-पीजीआई संगोष्ठी को पिछले दो वर्ष से आयोजित नहीं किया जा सका। अकादमी की इस प्रमुख गतिविधि के महत्व को समझते हूए, अध्यक्ष ने निदेशक, पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ से संपर्क किया और पारस्परिक रूप से आवश्यकता और अगली संगोष्ठी के विषय पर सहमत हुए थे। तदनुसार, "बच्चों और किशोरों में गैर मदीय वसीय यकृत रोगों" विषय पर नैम्स-पीजीआई संगोष्ठी 10 मार्च, 2013 को आयोजित की गयी थी। संगोष्ठी में पीजीआई में अच्छी उपस्थिति थी और प्रसारण के माध्यम से इंदिरा गाँधी मेडिकल कॉलेज, शिमला और डॉ राजेंद्र प्रसाद सरकारी मेडिकल कॉलेज, कांगड़ा के एजुसैट केंद्र में भी प्रतिभागी थे। अधिगम संसाधन सामग्री और हैंडआउट्स अच्छी शैक्षिक सामग्री के थे। आयोजकों ने उपस्थिति पत्रक, पूर्व और बाद के आकलन प्रारूपों और मूल्यांकन प्रारूपों को नैम्स के लिए भेज दिया है। इनकी समीक्षा की जाएगी और आयोजकों से सांख्यिकीय विश्लेषण के परिणामों को भेजने के लिए अनुरोध किया जा सकता है। उनसे तीनों अधिगम स्थानों के आकलन पूर्व और बाद का डेटा का अलग से विश्लेषण करने और क्या तीनों अधिगम स्थानों के बीच किसी अंतर की रिपोर्ट के लिए अनुरोध किया जा सकता है।

डॉ. प्रेमा रामचंद्रन ने संक्षेप में सूक्ष्म पोषक तत्व की कमी पर संगोष्ठी की रिपोर्ट पेश की। मुख्य भाषण प्रो. बजाज द्वारा दिया गया था। संगोष्ठी में आखिरी सत्र के छोड़कर सभी सत्रों में

लगभग 100 प्रतिभागियों की उपस्थिति रही। मूल्यांकन में प्रतिभागियों ने प्रस्तुतियों और एलआरएम की सराहना की। प्रतिभागियों ने उपयोगी सुझाव दिए हैं जिन पर विचार दिया जाएगा। यह सुझाव दिया गया था कि भविष्य में प्रस्तुतियों का सार एक शोधपुस्तिका के रूप में उपलब्ध कराया जाना चाहिए और संगोष्ठी पूर्व और बाद के आकलन आयोजित किया जाना चाहिए। उन्होंने नैम्स एनएफआई संगोष्ठी को नियमित रूप से वार्षिक किए जाने की सिफारिश की। स्थान की कमी दूर करने के लिए अगली नैम्स एनएफआई संगोष्ठी नैम्स सभागार में आयोजित की जा सकती है ।

दिनांक 19 अगस्त, 2013 को आयोजित शैक्षिक समिति की बैठक की विशिष्टताएं

अध्यक्ष ने समिति को सूचित किया है कि प्रोफेसर बजाज की अध्यक्षता में नैम्स में आयोजित छह एम्स के निदेशकों के साथ बैठक और नैम्स-एम्स अधिशासी मंडल के गठन के बाद "द्विमेरुता के लिए एक बहु-अनुशासनिक दृष्टिकोण" विषय पर सीएमई कार्यक्रम के रूप में नैम्स-एम्स अधिशासी मंडल की पहली शैक्षणिक गतिविधि 27.04.2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में आयोजित की गई।

दूसरी नैम्स-एम्स अधिशासी मंडल गतिविधि 20 जुलाई, 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा में आयोजित 'नैदानिक अनुसंधान में आचार' पर सीएमई कार्यक्रम के रूप में आयोजित की गई थी। डॉ. वी. एम. कटोच, सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, भारत सरकार और महानिदेशक, आईसीएमआर ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। यह भी आंशिक रूप से भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित किया गया। सीएमई कार्यक्रम की एक प्रारंभिक रिपोर्ट प्राप्त हो गई है। आयोजकों को पूर्व और पश्च सीएमई आकलन और मूल्यांकन सहित विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा गया है।

नैम्स-एम्स अधिशासी मंडल कार्यक्रम के तहत तीसरी प्रमुख गतिविधि **निद्रा चिकित्सा पर क्षेत्रीय संगोष्ठी** 25 अक्टूबर 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में आयोजित की जा रही है।

समिति के सदस्यों को सूचित किया गया कि डॉ. जय रूप सिंह, कुलपति, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा से प्राप्त एक मसौदा समझौता ज्ञापन 17 जुलाई 2013 को आयोजित

परिषद की बैठक के सम्मुख रखा गया था और उसे अनुमोदित किया गया। समझौता ज्ञापन पर डॉ जय रूप सिंह, कुलपति, डॉ सी. एस. भास्करन, राष्ट्रपति, नैम्स और प्रो. जे. एस. बजाज, अध्यक्ष, शैक्षणिक परिषद द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे।

समिति के सदस्यों ने अक्टूबर, 2013 में वार्षिक सम्मेलन के दौरान अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में आयोजित होने वाले "निद्रा चिकित्सा" पर संगोष्ठी और "पुनर्योजी चिकित्सा" पर क्षेत्रीय संगोष्ठी की योजना बनाने के संबंध में अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति द्वारा किए गए कार्य की सराहना की। प्रो. बजाज ने समिति को "निद्रा चिकित्सा" पर उनके और डॉ. वी. मोहन कुमार द्वारा तैयार किए गए विस्तृत वैज्ञानिक कार्यक्रम के बारे में सूचित किया। निद्रा चिकित्सा पर क्षेत्रीय संगोष्ठी के रूप में वैज्ञानिक कार्यक्रम और अंतः सांस्थानिक सीएमई कार्यक्रम का समर्थन किया गया था। समिति ने सर्वसम्मति से वैज्ञानिक और सीएमई कार्यक्रमों को मंजूरी दे दी और कार्यक्रमों को अंतिम रूप देने और उनके कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाने के लिए प्रोफेसर बजाज को अधिकृत किया।

अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति ने सूचित किया है कि राष्ट्रीय विकास परिषद ने दिसंबर, 2012 में आयोजित बैठक में 12वीं पंचवर्षीय योजना के दस्तावेज को मंजूरी दी थी। यह दर्ज किया गया है कि नैम्स जैसे अभिकरण देश में सतत चिकित्सा शिक्षा के लिए कार्यक्रमों को विकसित करने में उपयोगी भूमिका निभा सकते हैं।

समिति ने सिफारिश की कि समिति द्वारा अनुमोदित नैम्स वार्षिक सम्मेलन का विस्तृत कार्यक्रम अकादमी की वेबसाइट पर अपलोड किया जाना चाहिए ।

प्रोफेसर बजाज ने डॉ संजीव मिश्रा को सुझाव दिया है कि वह जिला चिकित्सा अधिकारियों को सम्मिलित करने का प्रयास करें और यदि उनमें से कुछ रुचि दिखाते हैं तो अकादमी की ओर से सहायता के साथ जिले में भी इसी तर्ज पर शैक्षणिक कार्यक्रमों के आयोजन में मदद की जानी चाहिए। जोधपुर में नैम्स सम्मेलन में भाग लेने वाले जिला चिकित्सा अधिकारियों को पंजीकरण शुल्क के भुगतान से छूट दी जा सकती है।

अध्यक्ष द्वारा यह भी सुझाव दिया गया था कि राज्य में मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्यों/ संकायाध्यक्ष से सम्मेलन में भाग लेने के लिए एक या दो प्रतिभाशाली इंटर्न्स या अंतिम वर्ष के छात्रों को नियुक्त करने का अनुरोध किया जाना चाहिए। नैम्स रेल भाड़े के रूप में सहायता प्रदान करेगा और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर को होस्टल आवास और नि: शुल्क पंजीकरण प्रदान करना चाहिए। इस पर निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर ने सहमति व्यक्त की और समिति द्वारा अनुमोदित किया गया।

यह सिफारिश की गई थी कि एम्स, जोधपुर में नैम्स सम्मेलन के दौरान वैज्ञानिक कार्यक्रम की एक वीडियो रिकॉर्डिंग तैयार की जानी चाहिए और शैक्षणिक समिति द्वारा अनुमोदन के बाद उसे देश के सभी मान्यता प्राप्त सरकारी मेडिकल कालेजों को भेजा जाना चाहिए जिससे वे छात्र जो रुचि रखते हैं परंतु कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सकते वे भी इस से वैज्ञानिक जानकारी और लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यह भी सिफारिश की गई थी कि एम्स, जोधपुर में दीक्षांत समारोह का एक अलग वीडियो तैयार करवाना चाहिए और उसे पुस्तकालय में रखा जाना चाहिए।

अध्यक्ष की सक्रिय सलाह और प्रोत्साहन द्वारा सीएमई कार्यक्रमों के रूप में शैक्षणिक गतिविधियों को आयोजित करने के व्यवस्थित आशय के कुछ प्रस्तावों / पत्र के बारे में समिति को सूचित किया गया था। ये समिति के समक्ष प्रस्तुत किए गए:

- पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ में 'बच्चों में मिरगी' पर नैम्स-पीजीआई संगोष्ठी के संबंध में एक प्रस्ताव पर विचार-विमर्श किया गया। पहले ही उपरिलिखित विवरण के अनुसार इसे समिति द्वारा सिद्धांत रूप में मंजूरी दे दी गई थी।
- अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में 'एक्यूट इस्केमिक स्ट्रोक' पर एक सीएमई कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए एक प्रस्ताव प्राप्त हुआ। इसे 'सिद्धांत रूप में' समिति द्वारा अनुमोदित किया गया था। समिति ने प्रस्तावित बजट सहित प्रारूप के अनुसार एक उचित प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाने की सिफारिश की।
- डॉ. एच. एस. संधू, एफएएमएस, द्वारा 'मादक द्रव्यों के सेवन और मानव स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव' पर बाबा फरीद स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, फरीदकोट में नवंबर,

2013 में एक संगोष्ठी सह सीएमई के आयोजन के आशय का एक पत्र लाया गया। इसे सिद्धांत में समिति द्वारा अनुमोदित किया गया था। समिति ने प्रारूप के अनुसार एक उचित प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाने की सिफारिश की।

- डॉ एम. कामेस्वरन, एफएएमएस से 'बच्चों में बधिरता' पर चेंगलपट्टू मेडिकल कॉलेज, चेंगलपट्टू, तमिलनाडु में सीएमई कार्यक्रम / राष्ट्रीय अद्यतन के लिए एक प्रस्ताव प्राप्त किया गया। इसे 'सिद्धांत रूप में' समिति द्वारा अनुमोदित किया गया था।
- 'पर्यावरण और स्वास्थ्य: चुनौतियां और समाधान' विषय पर एक सीएमई कार्यक्रम/ कार्यशाला के आयोजन के लिए प्रोफेसर जय रूप सिंह, एफएएमएस, कुलपति, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा की से एक प्रस्ताव प्राप्त किया गया था। इसे 'सिद्धांत रूप में' समिति द्वारा अनुमोदित किया गया था। प्रोफेसर बजाज ने सुझाव दिया है कि दो महत्वपूर्ण विषयों, अर्थात् (i) पर्यावरण और स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों और (ii) जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य को कार्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।
- 'बच्चों में क्षय रोग: नए नैदानिक उपकरण और उपचार अद्यतन' पर सीएमई कार्यक्रम के लिए डॉ. राजेश्वर दयाल, एफएएमएस, एस.एन. पर मेडिकल कॉलेज, आगरा से एक प्रस्ताव प्राप्त किया गया था। इसे 'सिद्धांत रूप में' समिति द्वारा अनुमोदित किया गया था।

यह सूचित किया गया था कि सभी विषय भारत सरकार द्वारा अनुमोदित 12वीं पंचवर्षीय योजना के तहत प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में से चुने गए हैं। समिति ने 'सिद्धांत रूप में' प्रस्तावों को स्वीकार करते हुए, सीएमई गतिविधियों के वित्त पोषण के लिए प्रारूप के अनुसार प्रस्तावों में संशोधन / आशोधन करने के बारे में कुछ सुझाव दिए। अध्यक्ष को आवश्यक कार्रवाई और अंतिम स्वीकृति प्रदान करने के लिए अधिकृत किया गया।

यह भी सिफारिश की गई कि सीएमई गतिविधियों के संबंध में प्राप्त सभी शिक्षण सामग्री को टिप्पणियों के लिए समीक्षकों को भेजा जाना चाहिए। यदि रिपोर्ट अच्छी है तो सीएमई कार्यक्रम के चयनित विषयों पर मोनोग्राफ प्रकाशित करने के लिए अकादमी द्वारा अतिरिक्त धन उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

समिति ने प्रोफेसर योगेश चावला, एफएएमएस और निदेशक, पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ को चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश के लिए संयोजक मनोनीत करने की और डॉ संजीव मिश्रा, एफएएमएस और निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर, राजस्थान को राजस्थान चैप्टर के लिए संयोजक मनोनीत किए जाने की सिफारिश की।

दिनांक 11 दिसंबर, 2013 को आयोजित शैक्षिक समिति की बैठक की विशिष्टताएं

अध्यक्ष ने समिति को सूचित किया कि नैम्स-एम्स अधिशासी मंडल के अधीन तीन सीएमई / संगोष्ठियाँ पहले से ही सफलतापूर्वक आयोजित की जा चुकी हैं और इस शैक्षणिक गतिविधि को नियमित रूप से आयोजित किया जाएगा और "नैम्स-एम्स अधिशासी मंडल के तहत शैक्षणिक गतिविधियों" के लिए एक अलग कार्यसूची मद बनाने का सुझाव दिया।

प्रो. बजाज ने समिति के सदस्यों को सूचित किया कि तकनीकी समीक्षक की रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए एक अच्छी तरह से संरचित प्रपत्र अब पत्र में शामिल किया गया है जो कि प्रस्ताव की समीक्षा और सीएमई / संगोष्ठी / कार्यशाला को 1-5 के पैमाने पर ग्रेड करने के लिए शैक्षिक कार्यक्रम के तकनीकी समीक्षक को भेजा जा रहा है । यदि समीक्षक सीएमई प्रस्ताव >90% ग्रेड देते हैं तो यह उत्कृष्ट माना जाता है; इसी प्रकार >80 और <90 बहुत अच्छा है; >70 <80 अच्छा है; >60 और<70 संतोषजनक है लेकिन वित्त पोषण का औचित्य नहीं ठहराया जा सकता; और अगर >50 और <60 तो पर्याप्त संशोधनों की जरूरत है; <50 अंकों को औसत से नीचे माना जाता है और इसकी वित्त पोषण के लिए सिफारिश नहीं की जाती।

पर्यवेक्षक की रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए प्रारूप संशोधित किया गया था और पर्यवेक्षकों को सीएमई/ संगोष्ठी/ कार्यशाला को टिप्पणियों के साथ 1-5 के पैमाने पर ग्रेड करना होगा।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में नैम्सकॉन-2013 के शैक्षणिक कार्यक्रम

क) व्याख्यान और पुरस्कार व्याख्यान

अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति ने समिति के सदस्यों को सूचित किया कि नैम्सकॉन-2013 में स्वर्ण जयंती स्मरणोत्सव पुरस्कार व्याख्यान सहित 10 व्याख्यान और 8 पुरस्कार व्याख्यान में से

सत्रह प्रस्तुतियाँ बनाई गईं। कुछ को उत्कृष्ट माना गया। डॉ एम. वी. नटराजन द्वारा केवल कर्नल संघम लाल स्मारक व्याख्यान नहीं दिया जा सका। व्याख्याताओं और विजेताओं की अनुसंधान कार्य की प्रस्तुतियाँ उत्कृष्ट थीं। प्रो. बजाज ने सदस्यों को सूचित किया है कि डॉ. एम. वी. नटराजन ने जोधपुर में सम्मेलन में भाग लेने और व्याख्यान देने के लिए अपनी असमर्थता के बारे में एक पत्र लिखा था और प्रो. बजाज ने सिफारिश की है कि उन्हें अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में नैम्सकॉन-2014 में अपना व्याख्यान देने के लिए अनुमति दी जा सकती है। इस पर समिति द्वारा सहमति व्यक्त की गई थी।

ख) 26 अक्टूबर 2013 को पुनर्योजी चिकित्सा पर नैम्स संगोष्ठी

प्रो. जे.एस. बजाज ने सूचित किया कि 26 अक्टूबर 2013 को पुनर्योजी चिकित्सा पर संगोष्ठी चार वक्ताओं अर्थात डॉ. सुजाता मोहंती, डॉ. बलराम एरन, डॉ. एम. वी. पद्मा श्रीवास्तव और डॉ. गीता के. वेमुगंटी के साथ आयोजित की गई थी। डॉ मोहंती बैठक में उपस्थित थीं और अपनी रिपोर्ट (अनुबंध छ) प्रस्तुत करने के लिए उन्हें अध्यक्ष द्वारा आमंत्रित किया गया था।

प्रो बजाज ने समिति को सूचित किया कि डॉ. मोहंती के 95 प्रकाशन हैं और उनकी रिपोर्ट एक उत्कृष्ट सारांश था और अनुसंधान कार्य को आयकर छूट प्रयोजनों के लिए दिखाने के लिए इसे वार्षिक रिपोर्ट में शामिल किए जाने के लिए विचार किया जाना चाहिए। इस पर समिति के सदस्यों द्वारा सहमति व्यक्त की गई थी। अध्यक्ष ने उनकी प्रस्तुति के लिए डॉ. मोहंती का आभार व्यक्त किया और डॉ. मोहंती ने उनके मार्गदर्शन और पांडुलिपि तैयार करने में सहायता के लिए प्रो. बजाज को धन्यवाद दिया।

ग) 25 अक्टूबर 2013, शुक्रवार को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में 'निद्रा चिकित्सा' पर सीएमई कार्यक्रम - नैम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी

प्रो. बजाज ने निद्रा चिकित्सा पर क्षेत्रीय संगोष्ठी के बारे में सदस्यों को सूचित किया। उन्होंने बल देकर कहा कि इंटरैक्टिव सत्र उत्कृष्ट था। छात्रों ने बड़े उत्साह के साथ इंटरैक्टिव सत्र में भाग लिया। छात्रों की उत्साहजनक प्रतिक्रिया को देखते हुए प्रो. बजाज ने इंटरैक्टिव सत्र में भाग लेने वाले सर्वश्रेष्ठ छात्र के लिए रुपए 5000/- के पुरस्कार की घोषणा की। अकादमी के तीन वरिष्ठ अध्येता की एक जूरी अर्थात डॉ. वी. मोहन कुमार, डा. के. राधाकृष्णन और डॉ.

एम. वी. पद्मा श्रीवास्तव को इंटरैक्टिव सत्र का निर्णायक बनने के लिए अनुरोध किया गया था। डॉ. अभिजीत सिंह बराथ, द्वितीय वर्ष एमबीबीएस छात्र, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर को सर्वश्रेष्ठ छात्र भागीदार के रूप में आंका गया था और 26-10-2013 को आयोजित दीक्षांत समारोह के दौरान मुख्य अतिथि डॉ. आर. चिदंबरम, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार द्वारा उन्हें रुपये 5000/- के प्रो. बजाज पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

विशेष आमंत्रित, डॉ. कुलदीप सिंह ने समिति को सूचित किया कि उन्होंने राजस्थान के मेडिकल कालेजों के प्रधानाध्यापकों / निदेशकों को अपने कॉलेजों से संगोष्ठी में भाग लेने के लिए छात्रों को मनोनीत करने के लिए एक पत्र भेजा था। उन्होंने कहा कि नौ छात्रों ने पंजीकरण करवाया परंतु केवल 6 ही आए। प्रो. बजाज ने छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए अकादमी रेल भाड़े और पंजीकरण शुल्क में छूट देकर छात्रों पर होने वाले खर्च का बोझ कम करने का सुझाव दिया। इस पर सहमति दी गई थी और यह नैम्सकॉन - 2014 में लागू होगा।

डॉ. कुलदीप सिंह, आयोजन सचिव, नैम्सकॉन - 2013, अपर आचार्य, बाल रोग विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर ने "सीएमई कार्यक्रम के मूल्यांकन में एक उपकरण के रूप में संतुष्टि सूचकांक का निर्धारण" और "सीएमई कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अनुकूलन: नैम्स अनुभव" प्रस्तुतियाँ दीं। दोनों प्रस्तुतियों की समिति के सदस्यों द्वारा सराहना की गई और बाद में अध्यक्ष द्वारा समीक्षा के बाद प्रकाशन के लिए सिफारिश की गई।

निद्रा चिकित्सा पर संगोष्ठी के रूप में एक शैक्षिक हस्तक्षेप के बाद प्रतिभागियों के ज्ञान में सुधार का आकलन करने के उद्देश्य से एक अध्ययन किया गया था। 30 प्रश्नों की एक प्रश्नावली 103 प्रतिभागियों को दी गई। प्रतिभागियों को सीएमई कार्यक्रम के पूरा होने के बाद इसी तरह के कठिनाई स्तर के आधार पर फिर से प्रश्न दिए गए। परिणाम से 89% प्रतिक्रिया का पता चला है। हस्तक्षेप से पूर्व औसत अंक 11.76 थे जिसमें केवल 26 प्रतिभागियों ने 50% से अधिक अंक प्राप्त किए थे। पूर्व और बाद की दोनों परीक्षाएं देने वाले प्रतिभागियों ने 12.1 औसत अंक की की तुलना में 18.3 औसत अंक प्राप्त कर सुधार दिखाया। सभी 59 प्रतिभागियों ने 11 क्रेडिट से अधिक स्कोर प्राप्त किया व उनमें से 84.7% के 50% (पास कट-ऑफ) से अधिक अंक प्राप्त किए। अध्ययन से निष्कर्ष निकला है कि सावधानी से बनाए गए शैक्षिक हस्तक्षेप प्रतिभागियों के ज्ञान में सकारात्मक लाभ लाते हैं।

रिपोर्ट डॉ कुलदीप सिंह द्वारा प्रस्तुत की गई थी। उन्होंने नैम्सकॉन 2013, एम्स के अनुभव के आधार पर बताया कि यह महसूस किया गया कि इसके समान गतिविधि डॉ. एस. एन. मेडिकल कॉलेज, जोधपुर, एक सहायक संस्था में आयोजित की जाए। उन्होंने समिति को सूचित किया कि डीवीडी में शिक्षण सामग्री के रूप में दर्ज मान्य अधिगम संसाधन सामग्री का उपयोग कर लक्षित दर्शकों के रूप में चिकित्सा छात्रों के शैक्षिक तुलनीय समूह के साथ एक समान सीएमई कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डिजाइन, योजना और रणनीति शैक्षिक उद्देश्य को प्राप्त करने में गैर प्रिंट माध्यम के उपयोग के साक्ष्य की खोज थी। कुल 108 प्रतिभागियों को हस्तक्षेप-पूर्व प्रश्नावली दी गई (30 प्रश्न : कुल अंक 30)। 104 प्रतिभागियों ने प्रश्नावली लौटाई। कार्यक्रम का प्राथमिक परिणाम था कि हस्तक्षेप-पूर्व प्रश्नावली की तुलना में हस्तक्षेप-पश्च प्रश्नावली में प्राप्त अंकों में महत्वपूर्ण सांख्यिकीय वृद्धि हुई थी। लाइव सीएमई (अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर) और डीवीडी आधारित सीएमई (एस. एन. मेडिकल कॉलेज, जोधपुर) के बीच तुलनात्मक परिणामों में आधारभूत हस्तक्षेप-पूर्व पास% लाइव सीएमई में (एन = 59) 20, वीडियो सीएमई (एन = 89) 8; पश्च-हस्तक्षेप पास% लाइव सीएमई 50 और वीडियो सीएमई 39 थे।

अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति ने सूचित किया कि पहली बार वार्षिक सम्मेलन के एक भाग के रूप में नैम्सकॉन 2013 की एक अनूठी विशेषता 30 पोस्टर प्रस्तुतियों के साथ पोस्टर सत्र था जिसे सुनियोजित रूप में बनाया गया था। यह बहुत सफल रहा था। अध्यक्ष ने इसे नियमित गतिविधि बनाने का प्रस्ताव किया। अब के बाद सम्मेलन पूरे 3 दिनों के लिए होना चाहिए जिससे प्रतिभागियों के अधिकतम शैक्षणिक लाभ के लिए सभी गतिविधियों को समायोजित करने के लिए पर्याप्त समय मिल सके। सबसे अच्छी पोस्टर प्रस्तुति के लिए एक पुरस्कार दिया जाना प्रस्तावित किया गया था। अध्यक्ष ने यह भी विचार के लिए प्रस्तुत किया कि सबसे अच्छे पोस्टर प्रस्तोता की यात्रा व्यय की प्रतिपूर्ति की जा सकती है यदि वह कहे कि उसकी यात्रा किसी के द्वारा प्रायोजित / समर्थित नहीं की गई है। पंजीकरण शुल्क भी माफ किया जा सकता है। समिति अध्यक्ष के इन प्रस्तावों पर सहमत हुई।

1. **25 अक्टूबर, 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में डॉ. संजीव मिश्रा, एफएएमएस द्वारा आयोजित "निद्रा चिकित्सा"** पर नैम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी

25 अक्टूबर, 2013 को एम्स, जोधपुर में डॉ. संजीव मिश्रा, द्वारा आयोजित "निद्रा चिकित्सा" पर नैम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट आयोजन सचिव डॉ. कुलदीप सिंह द्वारा प्रस्तुत की गई थी। नैम्सकॉन 2013 में भाग नहीं लेने वाले समिति सदस्यों के लिए सार पुस्तिका प्रदान की गई। प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन करने के लिए सीएमई से पहले और बाद प्रतिभागियों का आकलन किया गया था। कार्यक्रम का संतुष्टि सूचकांक का उपयोग कर मूल्यांकन किया गया था जिसकी सीमा 71-80 से 87.87 तक थी जो बहुत अधिक थी। पहली बार क्रम संख्या के साथ एक प्रपत्र तैयार किया गया था। प्रतिभागियों की सूची भी तैयार की गई थी। प्रतिभागियों को अपने नाम के बिना भरने के लिए कहा गया था। प्रपत्र पर क्रम संख्या की सहायता से प्रतिभागियों को पहचाना जा सकता है।

अध्यक्ष ने सुझाव दिया कि नए अध्येताओं और सदस्यों के लिए पंजीकरण शुल्क एक रियायती आधार पर होना चाहिए। यह वैज्ञानिक कार्यक्रम में एक बड़ी भागीदारी सुनिश्चित करेगा और नए अध्येताओं और सदस्यों को सक्रिय रूप से नैम्स की शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

अध्यक्ष ने सूचित किया कि एसएन मेडिकल कॉलेज, जोधपुर में आयोजित सीएमई कार्यक्रम में प्रमाणित डीवीडी को अब मेडिकल कॉलेजों में वितरित किया जा सकता है। व्याख्यान के पुनर्मुद्रण युक्त डीवीडी और पुस्तिका की लागत केवल रुपये 140 थी। हालांकि, इसे रुपये 70/- की सब्सिडी दर पर दिया जा सकता है।

आयोजकों के प्रयासों के कारण नैम्सकॉन 2013 की सफलता व्यापक रूप से प्रचारित की गई है और इसे अच्छी तरह से पहचान मिली है क्योंकि यह यू-ट्यूब और गूगल प्लस पर उपलब्ध है। यह अकादमी को एक जीवंत, व्यवहार्य और जोशपूर्ण शैक्षिक संगठन के रूप में स्थापित करता है और उसकी साख न केवल देश के भीतर अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी स्थापित करता है।

अध्यक्ष ने निम्नानुसार शैक्षणिक गतिविधियों की योजना के बारे में समिति को जानकारी दी:

- एम्स-नैम्स अधिशासी मंडल अब एक अलग कार्यसूची मद होगा क्योंकि 4 सीएमई कार्यक्रम पहले ही आयोजित किए गए हैं और एक और ऋषिकेश में आयोजित होने जा रहा है। प्रो. जी. के. सिंह, निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, पटना ने शैक्षणिक समिति के अध्यक्ष के लिए एक पत्र भेजा है जिसमें सूचित किया गया है कि एम्स-नैम्स अधिशासी मंडल की फरवरी, 2012 की बैठक के एक अनुवर्ती के रूप में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, पटना "आपदाओं और चिकित्सा आपात स्थिति के लिए एक पूर्व अस्पताल प्रतिक्रिया का विकास" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन करने की योजना बना रहा है। उन्होंने सुझाव दिया कि कार्यक्रम को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, पटना में फरवरी/ मार्च 2014 में आयोजित किया जा सकता है।
- अध्यक्ष ने प्रस्ताव किया कि एम्स-नैम्स अधिशासी मंडल के तहत सीएमई कार्यक्रम/ संगोष्ठियों को अंतःसांस्थानिक माना जा सकता है क्योंकि शिक्षण उद्देश्यों सहित इनकी रूपरेखा, कार्यक्रम की योजना बनाने में अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति की प्रमुख भूमिका होती है। हालांकि इसे प्रस्तावित कार्यक्रम के लिए प्रदान की गई वित्तीय सहायता की राशि के साथ नहीं जोड़ा जाना चाहिए।
- इससे पहले अंतःसांस्थानिक और बाह्यसांस्थानिक कार्यक्रमों को वित्तीय सहायता के आधार पर वर्गीकृत किया जाता था: अंतःसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों के लिए रुपये 1,00,000/- और बाह्यसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रम के लिए रुपये 75,000/-। अध्यक्ष ने प्रस्ताव किया कि भविष्य में अंतःसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रम के रूप में उन कार्यक्रमों को परिभाषित किया जाना चाहिए जिनके विषय/ उद्देश्यों/ वैज्ञानिक सामग्री और संगठन शैक्षणिक समिति/ अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति द्वारा उल्लिखित किए गए हैं। चिह्नित संस्था को इस अनुरोध के साथ बुनियादी आवश्यक घटक प्रदान किए गए हैं कि इसे एक उचित समय और तिथि पर नैम्स की सहमति से आयोजित किया जाए। वित्तीय सहायता की ऊपरी सीमा निर्णय के अनुसार होगी, हालांकि, निचली सीमा में परिवर्तन किया जा सकता है और आवश्यकताओं के आधार पर स्वीकृत राशि का निर्णय लिया जाना चाहिए। यह भी सुझाव दिया गया था कि सीएमई कार्यक्रम के लिए वित्तीय व्यय

स्वीकृत राशि से 15% अधिक है, तो औचित्यपूर्ण होने पर अतिरिक्त राशि की प्रतिपूर्ति के लिए विचार किया जा सकता है । यदि व्यय 15% से अधिक है तो अध्यक्ष का अनुमोदन प्राप्त किया जाएगा।

- बाह्यसांस्थानिक कार्यक्रम पहले की तरह उपलब्ध वित्तीय अनुदान की ऊपरी सीमा रुपये 75,000/- के साथ अध्यक्ष, सीएमई समिति द्वारा देखे जाएंगे। पूरे कार्यक्रम की डीवीडी रिकार्ड होने की स्थिति में अंतःसांस्थानिक और बाह्यसांस्थानिक कार्यक्रमों के लिए रुपये 30,000/- का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है।
- शैक्षणिक गतिविधियों की भविष्य की योजनाओं के तहत विशेष मद निम्नलिखित हैं:

नैम्सकॉन 2014

क) व्याख्यान और पुरस्कार

- अध्यक्ष ने व्याख्यान और पुरस्कार समिति द्वारा चयनित वक्ताओं के नाम प्रस्तुत किए।

ख) नैम्सकॉन 2014 वैज्ञानिक संगोष्ठी

- निजीकृत चिकित्सा को 'प्रत्येक रोगी की अलग-अलग विशेषताओं, आवश्यकताओं और वरीयताओं के अनुसार चिकित्सा उपचार को ढालना' के रूप में मान्यता प्राप्त है। पर्याप्त चर्चा के बाद सदस्यों ने प्रस्ताव का समर्थन किया और वक्ताओं आदि की पहचान करने के लिए अध्यक्ष को अधिकृत किया।

ग) सीएमई कार्यक्रम

- अध्यक्ष ने प्रस्ताव रखा कि देश में मद्य के सेवन की बढ़ती व्यापकता और इस तरह के सेवन के साथ जुड़े स्वास्थ्य खतरों को देखते हुए इस विषय पर चर्चा करना उचित होगा। यह इसलिए भी प्रासंगिक है क्योंकि उत्तराखंड राज्य में मद्य के सेवन का उच्च प्रसार भी है जहां नैम्सकॉन 2014 का आयोजन किया जा रहा है। 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य आवश्यकताओं के लिए इसके प्रासंगिक होने के कारण सदस्यों ने प्रस्ताव की

सराहना की। अध्यक्ष को कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए अधिकृत किया गया था। यह भी निर्णय लिया गया कि कार्यक्रम को क्षेत्रीय संगोष्ठी बुलाया जा सकता है और पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश के मेडिकल कालेजों से मेडिकल छात्रों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा। यह भी निर्णय लिया गया कि भविष्य में यह अंतःसांस्थानिक कार्यक्रम होगा और इसे अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति द्वारा अंतिम रूप दिया जाएगा।

घ) पोस्टर सत्र

- नैम्सकॉन 2013 में पोस्टर सत्र की सफलता को देखते हुए इसी तरह का एक सत्र नैम्सकॉन 2014 में वैज्ञानिक कार्यक्रम में शामिल किया गया है और 6 (डी) के तहत स्वीकार की गई सिफारिशें लागू होगीं।

- अन्य योजनाबद्ध गतिविधियाँ: अध्यक्ष ने समिति को सूचित किया कि उन्होंने राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के बारे में डॉ. आर. चिदंबरम को तीन पृष्ठ का एक पत्र लिखा था। डॉ. आर. चिदंबरम ने इंजीनियर नीरज सिन्हा, वैज्ञानिक एफ को प्रतिनियुक्त किया। प्रो. जे. एस. बजाज और इंजीनियर नीरज सिन्हा के बीच 3 दिसंबर 2013 को एक औपचारिक बैठक आयोजित की गई और डॉ. एस. वी, राघवन के साथ एक अन्य बैठक 9 दिसंबर, 2013 को प्रो. जे. एस. के बजाज के कार्यालय में आयोजित की गई थी जिसमें मानद सचिव, डॉ. संजय वधवा ने भी भाग लिया। डॉ. राघवन ने आश्वासन दिया कि नैम्स का राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के साथ संपर्क स्थापित करने में सहायता प्रदान की जाएगी। उन्होंने प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के कार्यालय के साथ सहयोग की पेशकश की। यह नैम्स के लिए बहुत उपयोगी होगा और उसके बाद सभी केन्द्रों (लगभग। 108 केंद्रों) को राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के साथ जोड़ा जाएगा। शैक्षणिक कार्यक्रमों की वेब कास्टिंग के उद्देश्य के लिए आवश्यक अतिरिक्त उपकरणों की खरीद के संबंध में मानद सचिव परामर्श के अनुसार मामले को देखेंगे। प्रो. जे.एस. बजाज ने "भारत में आचरण पर बंध्याकरण के लिए वैज्ञानिक संचालन प्रक्रिया" नामक पुस्तक में निहित जानकारी साझा की है। वैज्ञानिक सलाहकार कार्यालय के कार्यालय को अकादमी कार्यालय में पांच

और प्रतियां भेजने का अनुरोध किया जाएगा जो शैक्षणिक समिति के दो से तीन सदस्यों को भेजी जाएंगी जो शल्यक्रिया और संबद्ध विषयों से जुड़े हैं जहां बंध्याकरण के लिए प्रक्रियाएँ अत्यंत प्रासंगिक हैं। डॉ वधवा राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के साथ संपर्क स्थापित करने और उसके भविष्य के उपयोग के लिए अकादमी द्वारा 2007 में खरीदे गए उपकरणों को अद्यतन करने को अंतिम रूप देने के उद्देश्य से डॉ राघवन/ डॉ नीरज/ उनके नामिती के साथ बातचीत करेंगे। उपकरणों का डॉ. राघवन द्वारा निरीक्षण किया गया था और सलाह दी गई थी कि उपकरणों को अद्यतन करने की आवश्यकता होगी।

- **भारतीय निद्रा चिकित्सा सोसायटी के साथ सहयोग** डॉ. वी. मोहन कुमार भारतीय निद्रा चिकित्सा सोसाइटी के साथ काम कर रहे हैं। वर्ष 2014 के दौरान हम चेन्नई में प्रस्तावित गतिविधि का समर्थन नहीं कर सकते, लेकिन सहमति होने पर हम 2015 में चेन्नई में भारतीय निद्रा चिकित्सा सोसायटी के सहयोग से एक सीएमई कार्यक्रम के आयोजन पर विचार कर सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि अकादमी वित्तीय सहायता प्रदान कर सकती है, लेकिन यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि कोई कॉर्पोरेट / औद्योगिक वित्तपोषण शामिल नहीं है। हालांकि, अनुमोदित विज्ञापनों के साथ एक स्मारिका प्रकाशित की जा सकती है। अध्यक्ष को डॉ. मोहन कुमार से आगे बातचीत करने के लिए अधिकृत किया गया।

  प्रो. बजाज ने सूचित किया कि 100 मेडिकल कालेजों से उनके मेडिकल कालेजों में 'निद्रा चिकित्सा शिक्षण और पाठ्यक्रम योजनाकरण की स्थिति क्या है?' आदि पूछताछ करने के लिए एक प्रश्नावली भेजी जा रही है।

(क) सीएमई कार्यक्रम के लिए वित्तीय सहायता के उद्देश्य के लिए अन्य संस्थानों के साथ बराबरी के व्यवहार के लिए निदेशक प्राचार्य, श्री गुरु राम दास आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, अमृतसर के पत्र के बारे में डॉ. एच. एस. संधू, एफएएमएस के ई-मेल पर सदस्यों ने विस्तार से विचार किया गया था।

डा संधू ने नैम्स द्वारा अनुरोधित सभी तीन स्पष्टीकरण प्रस्तुत किए: [(1) । इस बात की पुष्टि के लिए सरकार से पत्र कि संस्थान एक गैर लाभदायक अल्पसंख्यक धार्मिक संस्थान है

(2) निधि/ दान धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जा रहे हैं (3) कम से कम दो साल के खातों के लेखा परीक्षित विवरण पुष्टि करने के लिए कि प्राप्त धनराशि पर कोई लाभ अर्जित नहीं किया गया है]। सदस्यों द्वारा स्वीकार कर लिया गया कि यह इस एक धर्मार्थ संस्थान है और सेंट जॉन मेडिकल कॉलेज, बंगलौर के समान इसे भी सीएमई कार्यक्रम के लिए वित्तीय सहायता दी जा सकती है। समिति ने सुझाव दिया कि डॉ. संधू को अच्छी तरह से बनाया गया और सभी मामलों में पूरा सीएमई प्रस्ताव अग्रेषित करना चाहिए। अकादमी श्री गुरु राम दास आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, अमृतसर में सीएमई कार्यक्रम आयोजित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान कर सकती है। उसी प्रक्रिया का संबद्ध संस्थानों, अर्थात् श्री गुरु राम दास दंत चिकित्सा विज्ञान और अनुसंधान संस्थान और गुरु राम दास नर्सिंग शिक्षा और अनुसंधान संस्थान द्वारा अनुरोधित सीएमई कार्यक्रमों के वित्तपोषण के लिए अनुपालन किया जाएगा।

(ख) अध्यक्ष ने सूचित किया कि डॉ. ई. पी. भरुचा को जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार डॉ. स्नेहलता देशमुख और डॉ. मुकुंद जोशी द्वारा 28 दिसंबर, 2013 को उनके 97वें जन्मदिन पर प्रदान किया जायेगा। उन्होंने कहा कि डॉ. एस. कामेस्वरन, एफएएमएस को जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार भी निकट भविष्य में मद्रास मेडिकल कॉलेज, चेन्नई में दिया जा सकता है। डॉ. भास्करन से मद्रास मेडिकल कॉलेज का दौरा करने और मद्रास में अकादमी के अध्येताओं की सभा के दौरान पुरस्कार देने के लिए अनुरोध किया गया था। यह सदस्यों द्वारा अनुमोदित किया गया था।

(ग) डॉ ए.एस. थांबिया पुरस्कार की स्थापना के संबंध में पत्राचार पहले भी हुआ है। अध्यक्ष, सीएमई कार्यक्रम समिति को पुरस्कार के लिए नामांकन आमंत्रित करने के लिए पात्रता आवश्यकताओं का मसौदा तैयार करने के लिए अनुरोध किया गया था। पुरस्कार के नामांकन के लिए पात्रता आवश्यकताओं को व्याख्यान और पुरस्कार समिति की मंजूरी और अध्यक्ष द्वारा समर्थन के बाद डॉ. जी. सेंतामिलसेल्वी को, पात्रता और साथ ही नामांकन आमंत्रित करने के लिए नैम्स प्रक्रिया के लिए और व्याख्यान और पुरस्कार समिति की सिफारिशों के आधार पर पुरस्कार के निर्णय के लिए, उनकी सहमति प्राप्त करने के लिए उपयुक्त पत्र भेजा जा सकता है।

दिनांक 14 मार्च, 2014 को आयोजित शैक्षिक समिति की बैठक की विशिष्टताएं

1. **25 अक्टूबर 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में डॉ. संजीव मिश्रा, एफएएमएस, निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान द्वारा आयोजित "निद्रा चिकित्सा" पर नैम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी।**

   नैम्सकॉन 2013 के शैक्षणिक कार्यक्रम की रिपोर्ट का समिति के सदस्यों द्वारा अवलोकन किया गया था। प्रो. बजाज ने सूचित किया कि "निद्रा चिकित्सा" पर नैम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी का शैक्षिक कार्यक्रम उत्कृष्ट था कि और उन्होंने डॉ संजीव मिश्रा से नैम्स वेबसाइट पर नैम्सकॉन 2013 के वीडियो अपलोड करने का अनुरोध किया। यदि आवश्यक हो तो अतिरिक्त बजट मंजूर किया जाएगा। पहली बार, लाइव दीक्षांत समारोह अभिभाषण के साथ नैम्सकॉन 2013 कार्यक्रम का पूरा वीडियो नैम्स वेबसाइट पर अपलोड किया गया। समिति ने नैम्सकॉन 2013 का स्थायी रिकार्ड बनाने में डॉ संजीव मिश्रा के नेतृत्व और डॉ. कुलदीप सिंह के समर्पण की सराहना की।

2. 6 दिसंबर 2013 को डॉ. एस. एन. मेडिकल कॉलेज, जोधपुर में डॉ. कुलदीप सिंह द्वारा प्रस्तुत "चिकित्सा शिक्षा के लिए मान्य गैर प्रिंट माध्यम का उपयोग कर एक मॉडल सीएमई कार्यक्रम के तुलनात्मक प्रभाव का आकलन" पर सीएमई कार्यक्रम।

   प्रो जे.एस. बजाज ने समिति को सूचित किया कि निद्रा चिकित्सा पर संगोष्ठी में बहुत सी वैज्ञानिक घटनाओं पर प्रकाश डाला गया और संगोष्ठी के बाद अच्छी गुणवत्ता की सीडी और डीवीडी को विकसित किया गया है। उन्होंने एक और विशेषज्ञ, डॉ. वी. के. विजयन के साथ संसाधन सामग्री के रूप में डीवीडी की सहायता से प्रायोगिक आधार पर एम्स, जोधपुर की संबद्ध संस्था डॉ एस.एन. मेडिकल कॉलेज, जोधपुर, में इसी तरह की संगोष्ठी आयोजित करने का प्रस्ताव रखा। यह प्रयोग यह पता लगाने के लिए किया गया था कि क्या लाइव संगोष्ठी और डीवीडी के साथ संगोष्ठी से एक समान परिणाम प्राप्त हो सकता है । डॉ एस.एन. मेडिकल कॉलेज में संगोष्ठी की रिपोर्ट का समिति द्वारा अवलोकन किया गया था। छात्रों के तुलनीय समूह के साथ परिणाम दिलचस्प थे। लाइव संगोष्ठी और डीवीडी प्रयुक्त संगोष्ठी के बीच तुलना पर विस्तार से चर्चा की गई। छात्रों के ज्ञान का आकलन करने के लिए 50% निर्धारित किया गया था। केवल 8%

छात्रों के 50% से अधिक अंक आए। अंत में, पश्च आकलन स्कोर 43.8% था। 8% से 43.8% छात्रों के स्कोर 50% से अधिक थे जो सराहनीय है ।

लाइव सीएमई और वीडियो सीएमई के स्कोर की तुलना का समितियों द्वारा अवलोकन किया गया था। लाइव सीएमई में आधारभूत पूर्व हस्तक्षेप स्कोर 33.9% था और हस्तक्षेप के बाद के स्कोर 84.7% थे जबकि वीडियो सीएमई में पूर्व हस्तक्षेप स्कोर 8.9 थे और हस्तक्षेप के बाद के स्कोर 43.8 थे। इस तरह के परिणाम के स्पष्ट कारणों से हैं:

- अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान एक व्यापक तरीके से तुलनात्मक आधार पर छात्रों को स्वीकार करते हैं। इसलिए वहाँ दाखिल छात्रों की अच्छे आधारभूत ज्ञान उत्पाद के साथ अवशोषित क्षमता होती है। जबकि एस.एन. मेडिकल कॉलेज में प्रारंभिक कम यानी 8% है, लेकिन 8% से स्कोर 43.8% तक उठाए गए हैं।
- विवरणात्मक विश्लेषण में लाइव सीएमई से 84% छात्रों की "जब मैंने सवाल पूछे तो मेरे संदेहों को स्पष्ट करने के लिए मुझे पर्याप्त समय मिला" पर अच्छी प्रतिक्रिया थी दूसरी तरफ डॉ एस.एन. मेडिकल कॉलेज में 68% छात्रों के कहा कि यह कम संतोषजनक था क्योंकि अधिकतर छात्रों को अपने संदेहों को स्पष्ट करने के लिए संतोषजनक जवाब नहीं मिला। यदि 8 व्यक्ति बैठे थे और प्रत्येक विशेषज्ञ ज्यादा बेहतर तरीके से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दे सकता है तो 84% छात्र संतुष्ट थे। लेकिन एस.एन. मेडिकल कॉलेज में केवल एक विशेषज्ञ संदेहों को स्पष्ट नहीं कर सका क्योंकि वह शायद सभी विषयों में विशेषज्ञ नहीं हो सकता है। इसलिए, डीवीडी कुछ हद तक संभव विकल्प हो सकता है। लागत लाभ की दृष्टि से एस.एन. मेडिकल कॉलेज, जोधपुर से प्राप्त परिणाम उल्लेखनीय थे, लेकिन इसे लाइव सीएमई के समान अच्छा बनाने के क्रम में हमें इसे केंद्रीय स्थान के साथ दोतरफा संपर्क बनाना होगा जहां से वेबकास्ट की मदद से वही दूसरे छोर को प्रदान की जा सकती है, जैसा कि नैम्स-पीजीआईएमईआर संगोष्ठी में किया जा रहा है।

- यदि जानकारी को एक व्यापक प्रसार क्षेत्र में सीडी के माध्यम से प्रचारित किया जाना था, तो फिर सहायक प्रोफेसर के स्तर पर स्थानीय संकाय को सीडी के माध्यम से निर्देशित किया जाना चाहिए था जिससे प्रतिभागी अपने संदेहों को स्पष्ट कर सकें।

- लाइव सीएमई में, सामान्य रूप से 60% से ऊपर कुछ भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अच्छा संतोषजनक सूचकांक स्वीकार किया जाता है। हमने उच्च अंक, तीन काट अंक के रूप में 80% से नीचे, >80 से 85 और 85% से अधिक, के रूप में तय कर दी है। 85% से ऊपर हमारे पास 4 वक्तव्य हैं क) मैंने प्रदत्त दस्तावेजों को स्वीकार्य गुणवत्ता का पाया एसआई 85.9% ख) पृष्ठभूमि दस्तावेज में शामिल मुद्दों पर स्पष्टीकरण के लिए समय दिया गया था 87.2% ग) संगोष्ठी का सामान्य वातावरण गंभीर काम के लिए अनुकूल था 87.87% और घ) आयोजकों ने मेरे द्वारा संगोष्ठी के दौरान की गई किसी भी महत्वपूर्ण टिप्पणियों का उपयोग किया 85.57% ये चार बिल्कुल शीर्ष पर थे 80% से नीचे कम संतोषजनक अन्यथा अच्छे थे क) संगोष्ठी की विषय सामग्री मेरे दैनंदिन के शैक्षणिक कार्य में आने वाली समस्याओं से संबंधित थी 71% और मेरी अन्य पेशेवर प्रतिबद्धताओं को ध्यान में रखते हुए संगोष्ठी निर्धारण उपयुक्त था 75.4%। 71% स्कोर के लिए कारण था कि जब हम प्रश्नावली बना रहे थे तो हमें आशा थी कि हमारे लक्षित दर्शक स्नातकपूर्व, स्नातकोत्तर और रेजिडेंट और कनिष्ठ संकाय होंगे परंतु संगोष्ठी में भाग लेने वाले 53 प्रतिभागियों में से 86% स्नातकपूर्व थे।

- अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति ने सूचित किया कि निद्रा चिकित्सा पर टंकित दस्तावेज़ 110 पृष्ठों के साथ तैयार था और यह सीधे मुद्रण के लिए मुद्रक को दिया जा सकता है। समिति को सूचित किया गया था कि निद्रा संगोष्ठी पर तैयार दस्तावेज मुद्रण के लिए डॉ कुलदीप सिंह द्वारा जोधपुर ले जाया जाएगा जहां वर्ष वृतांत्त के पहले (पिछला अंक) मुद्रित किया गया है और हम 5000 प्रतियां मुद्रित करने जा रहे हैं जो हमारे सभी अध्येताओं, सदस्यों और डीएनबी

के सदस्यों और मेडिकल कालेजों को दी जाएंगी। अतिथि संपादकों प्रो. जे.एस. बजाज और डॉ. वी.के. विजयन के साथ वर्ष वृतांत्त को निद्रा चिकित्सा विशेष संख्या 49 अंक 3 और 4 जुलाई 2013 का नाम दिया जाएगा।

- अध्यक्ष द्वारा सूचित किया गया था कि यहाँ सभी डेटा गोपनीय था और सदस्यों को बैठक में दिए गए किसी भी सारणी, रेखांकन को नहीं ले जाने का अनुरोध किया गया। एक गोपनीयता समझौते पर भी समिति के सदस्यों ने हस्ताक्षर किए।

गर्भावस्था में यकृत रोग पर क्षेत्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट पर समिति के सदस्यों द्वारा विचार किया गया और सभी मामलों में अच्छा पाया गया था। यह निर्णय लिया गया कि आयोजक द्वारा प्रस्तुत सीडी की 10 प्रतियां तैयार करके अकादमी के वरिष्ठ अध्येताओं (डॉ योगेश चावला, एफएएमएस, डॉ आचार्य, डॉ गौरदास चौधरी, एफएएमएस और डॉ कमल बक्शी, एफएएमएस) को एक प्रपत्र के साथ भेजी जाएंगी और उनसे पूछा जाएगा कि यदि सीडी मामूली संशोधनों के साथ गर्भावस्था में यकृत रोग पर व्यापक प्रसार पाठ्यक्रम के लिए प्रयोग की जा सकती है।

डॉ मोहन कामेस्वरन ने 5 दिसंबर, 2013 को आयोजित "बाल बधिरता पर क्षेत्रीय अद्यतन" पर सीएमई कार्यक्रम पर रिपोर्ट पेश की। उन्होंने सूचित किया कि वहाँ 120 प्रतिभागी थे। प्रतिभागियों के विषय ज्ञान के मूल्यांकन के लिए पूर्व सीएमई परीक्षण और बाद के सीएमई परीक्षण के लिए एक ही प्रश्नावली का प्रयोग किया गया था। परीक्षा देकर पत्रक देने वाल प्रतिभागियों की संख्या 51 थी। पूर्व सीएमई का औसत 7.1 था और सीएमई के बाद का औसत 12.6 था। रिपोर्ट की सदस्यों के द्वारा सराहना की गई।

डॉ कुलदीप सिंह ने निद्रा चिकित्सा राष्ट्रीय सर्वेक्षण के बारे में समिति को सूचित किया है कि अध्यक्ष, शैक्षणिक परिषद के निदेशानुसार 25 अक्टूबर, 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जोधपुर में निद्रा चिकित्सा पर नैम्स-एम्स संगोष्ठी में निद्रा चिकित्सा के क्षेत्र में विशेषज्ञों द्वारा दिए गए व्याख्यान को पावर प्वाइंट प्रस्तुति के रूप में अधिगम संसाधन सामग्री युक्त एक सीडी समीक्षा करने और 2-3 सप्ताह के भीतर विधिवत फीडबैक मूल्यांकन प्रपत्र को भर कर वापस देने के अनुरोध के साथ 100

मेडिकल कॉलेजों को वितरित की गई थी। मेडिकल कॉलेज को यह भी सूचित किया गया था कि प्रस्तुतियों की वीडियो लिपियों के साथ एक डीवीडी विकसित की गई है और मूल्यांकन रिपोर्ट प्राप्त होने पर इस डीवीडी को अत्यधिक रियायती दर पर उनके पुस्तकालय के लिए प्रदान किया जा सकता है।

- प्रो. बजाज ने सूचित किया कि मेडिकल कॉलेजों के संयोजकों, प्रधानाचार्य से संपर्क किया गया और 100 मेडिकल कॉलेजों में से 23 मेडिकल कॉलेजों से प्रतिक्रियाएं प्राप्त की गई हैं। यह भी सूचित किया गया कि क्षेत्रीय संयोजकों को अपने क्षेत्र की जिम्मेदारी लेने और शीघ्रातिशीघ्र उत्तर वापस भेजने का अनुरोध किया गया है। 23 प्रतिक्रियाओं में से केवल एक मेडिकल कॉलेज ने कहा है कि निद्रा चिकित्सा उनके कॉलेज में पढ़ाई जा रही है। प्रो. बजाज द्वारा प्रस्तावित किया गया कि मेडिकल कॉलेजों से संपर्क कर पूछा जाना चाहिए कि निद्रा चिकित्सा के अंतर्गत उनके यहाँ कौन से विषय पढ़ाए जा रहे हैं और इस प्रयोजन के लिए कितना समय आवंटित किया गया है। जिन कॉलेजों ने 'नहीं' जवाब दिया है, उनसे पूछा गया यदि वे जो अपने कॉलेज में निद्रा चिकित्सा पढ़ाना और अपने संकाय को प्रशिक्षित करना चाहते हैं। अधिकतर प्रतिक्रियाएं हाँ थीं।
- यह सुझाव दिया गया था कि यदि 50 मेडिकल कॉलेजों से डेटा एकत्र किया जा सकता है तो इसे प्रकाशित करके अमेरिका के 10 वर्ष पहले एकत्रित आंकड़ों के साथ तुलना की जा सकती है।
- इस सर्वेक्षण के माध्यम से बहुत से परिणाम मिल रहे हैं और यदि निद्रा चिकित्सा के शिक्षण के संबंध में और अधिक डेटा प्राप्त होता है और प्रवृत्ति यही रहती है तो फिर हम शिक्षण के रुझान के बारे में मंत्रालय को लिख सकते हैं। आयकर विभाग को भी लिखा जा सकता है कि हम टीचिंग पैटर्न डिजाइन और प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने में लगातार अनुसंधान कार्य में प्रवृत्त हैं।
- इसके अलावा निर्णय लिया गया कि निद्रा चिकित्सा सीडी भारतीय चिकित्सा संघ (आईएमए) की स्थानीय शाखाओं को क्षेत्रीय संयोजकों के माध्यम से सामान्य

चिकित्सकों के लिए भेजी जाएगी । यदि हमे 1000 सीडी भी वितरित करनी पड़ें तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि चिकित्सक का कहना 'हां' है तो डेटा एकत्र करने के बाद निद्रा चिकित्सा पर सामान्य चिकित्सकों के लिए पुस्तिका की 10,000 प्रतियों प्रकाशित करने का फैसला किया गया था। यदि हमें ये निःशुल्क भी देनी पड़ें तो कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि इससे सामुदायिक स्वास्थ्य पर कुछ प्रभाव अवश्य पड़ेगा। इस में एक बाधा यह है कि हमने मानव संसाधनों को प्रशिक्षित नहीं किया है। सदस्यों द्वारा सहमति व्यक्त की गई कि यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां हमें आगे बढ़ना चाहिए और यदि हम 2 साल की अवधि में अपने तार्किक मुद्दों के साथ एक समस्या पर भी कार्य करें तो कुछ परिणाम मिल सकते हैं। यह भी निर्णय लिया गया कि क्षेत्रीय संयोजक के माध्यम से आईएमए को 100 सीडी भेज कर क्षेत्र में सामान्य चिकित्सकों में प्रसारित करने का अनुरोध किया जा सकता है ।

- सीडी और डाक की तैयारी पर किए गए व्यय के बिल प्रस्तुत करने के बाद अकादमी द्वारा प्रतिपूर्ति की जाएगी।

अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति ने समिति के सदस्यों को सूचित किया कि निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, पटना ने 24 मई 2014 को "आपदाओं और चिकित्सा आपात स्थिति के लिए एक पूर्व अस्पताल प्रतिक्रिया का विकास" विषय पर एक नैम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी का आयोजन करने का प्रस्ताव दिया है।

संगोष्ठी के अधिकतम प्रभाव के लिए अध्यक्ष ने प्राधिकरण के चिकित्सा सदस्यों में से एक डॉ. मुजफ्फर अहमद, एफएएमएस से संपर्क किया और वे भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करने के लिए संगोष्ठी में भाग लेने के लिए तैयार हो गए थे। वे पूरे दिन वहाँ रहेंगे और देखेंगे कि वहाँ क्या चर्चा की जा रही है। इसके बाद, औपचारिक मसौदा सिफारिश राष्ट्रीय आधार पर इसके कार्यान्वयन के लिए राष्ट्रीय प्राधिकरण को वापस भेजी जाएगी।

सीएमई / वैज्ञानिक कार्यक्रम और नैम्सकॉन **2014** सहित शैक्षणिक गतिविधियों के भविष्य की योजना पर विचार करने के लिए।

1. अकादमी संगोष्ठियों / सीएमई का आयोजन करने के लिए प्रो. जे. एस. बजाज को संबोधित निम्नलिखित प्रस्ताव प्राप्त हुए थे:

   - अगस्त/ सितंबर में शासकीय मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, चंडीगढ़ में डॉ. अतुल सचदेव द्वारा आयोजित "सूजन आंत्र रोग" पर क्षेत्रीय संगोष्ठी।
   - 17 अगस्त 2014 को मद्रास मेडिकल कॉलेज, चेन्नई में डॉ. जी. गणनाथन, निदेशक, मद्रास मेडिकल कॉलेज, चेन्नई द्वारा आयोजित "कर्णतंत्रिका विज्ञान" पर नैम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी
   - अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में डॉ. संजीव मिश्रा, एफएएमएस द्वारा आयोजित मोटापे पर संगोष्ठी
   - श्री गुरु राम दास आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, अमृतसर, पंजाब में "पंजाब में विटामिन की कमी और जनसंख्या के सामान्य स्वास्थ्य पर इसके बुरे प्रभाव" पर सीएमई कार्यक्रम
   - श्री गुरु राम दास आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, अमृतसर, पंजाब में "सिर और गर्दन के सौम्य और घातक रोग विज्ञान" पर दंत चिकित्सा डाक्टरों के लिए सीएमई कार्यक्रम
   - जून / जुलाई, 2014 में श्री गुरु राम दास आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, अमृतसर, पंजाब में "मधुमेह प्रकार - द्वितीय रोगियों के नर्सिंग देखभाल" पर सीएमई कार्यक्रम

   सीएमई / संगोष्ठियों / कार्यशालाओं को समिति के सदस्यों द्वारा सिद्धांत रूप में मंजूरी दी गई थी। शैक्षिक गतिविधि के संचालन के लिए दिशा निर्देशों के अनुसार पूरा प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए एक पत्र आयोजकों के पास भेजा जाएगा।

2. **नैम्सकॉन** 2014

अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति ने सूचित किया कि नैम्स का 54वां वार्षिक सम्मेलन अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में 17 अक्टूबर, 2014 को आयोजित किया जायेगा।

क) "मद्य के सेवन के हानिकारक प्रभाव: साक्ष्य के आधार पर राष्ट्रीय नीति की आवश्यकता" पर नैम्स संगोष्ठी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में 17 अक्टूबर 2014 को आयोजित की जाएगी।*(अनुबंध **II** पृष्ठ 19-21)*

ख) "निजीकृत चिकित्सा" पर क्षेत्रीय संगोष्ठी शनिवार, 18 अक्टूबर, 2014 को आयोजित की जाएगी। प्रस्तावित वैज्ञानिक कार्यक्रम की एक प्रति समिति के सदस्यों के लिए भी प्रदान की गई।*(अनुबंध **III** पृष्ठ 22-25)*

3. **नए व्याख्यान और पुरस्कार की स्थापना**

सदस्यों को सूचित किया गया था कि एक नया व्याख्यान डॉ. जे. जी. जॉली व्याख्यान और एक पुरस्कार डॉ. ए. एस. थांबिया पुरस्कार इस वर्ष से स्थापित किए गए हैं। डॉ. नीरज जॉली से रुपये 5 लाख का चेक प्राप्त किया गया है। इस व्याख्यान के लिए नामांकन इस वर्ष (2014) में आमंत्रित किए जाएंगे और पहला व्याख्यान वर्ष 2015 में दिया जाएगा; व्याख्यान वर्ष 2015-2035 तक केवल 20 वर्ष के लिए प्रभावी हो जाएगा। यह सदस्यों द्वारा अनुमोदित किया गया था। (अनुबंध **IV** *पृष्ठ* 26-28)

अध्यक्ष ने आगे बताया कि यदि डॉ. ए. एस. थांबिया पुरस्कार के लिए रुपये दो लाख का चेक प्राप्त होता है तो पुरस्कार के लिए नामांकन इस वर्ष आमंत्रित किए जाएंगे, अन्यथा चेक अकादमी कार्यालय में प्राप्त होने के बाद ही नामांकन आमंत्रित किए जाएंगे।

4. **अन्य गतिविधियां: नैम्स जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार के लिए नामांकन**, **2013**

12 जुलाई 2008 को आयोजित परिषद की 122वीं बैठक में यह सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि नैम्स जीवन काल उपलब्धि पुरस्कार के लिए नामांकन शैक्षणिक परिषद

के सदस्यों द्वारा किए जाएंगे जिन पर व्याख्यान और पुरस्कार समिति द्वारा विचार किया जाएगा फिर व्याख्यान और पुरस्कार समिति की सिफारिश को अनुमोदन के लिए परिषद के समक्ष रखा जाएगा।

अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति ने जीवन काल उपलब्धि पुरस्कार, 2013 के लिए डॉ हरिभाई एल. पटेल और जीवन काल उपलब्धि पुरस्कार, 2014 के लिए डॉ सी. एस. भास्करन को नामित किया है। जीवन काल उपलब्धि पुरस्कार, 2014 डॉ सी. एस. भास्करन के नैम्स के अध्यक्ष रहने तक प्रास्थगित रहेगा और उनका कार्यकाल समाप्त होते ही उन्हें पुरस्कार दे दिया जाएगा।

अध्यक्ष ने सदस्यों को सूचित किया कि डॉ जी. के. सिंह, निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, पटना द्वारा नैम्सकॉन 2015 को पटना में आमंत्रित करने के लिए उनका आभार व्यक्त किया गया। यह सदस्यों द्वारा नोट किया गया था लेकिन निमंत्रण का एक औपचारिक पत्र निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, पटना से प्राप्त होने के बाद ही इस मामले को अनुमोदन के लिए परिषद के समक्ष रखा जाएगा।

अंतःसांस्थानिक और बाह्यसांस्थानिक की पहचान करने के लिए अहर्ता केवल वित्तीय पहलू है। अंतःसांस्थानिक सीएमई के लिए रुपए एक लाख और बाह्यसांस्थानिक सीएमई के लिए रुपए पचहत्तर हजार ही स्वीकृत किए जाते हैं। यह अध्यक्ष द्वारा सिफारिश की गई है और संकल्प पर रखा गया था - "वित्त सारहीन है - शैक्षणिक समिति द्वारा एक उद्देश्य से आरंभ, योजनाबद्ध, विचारित, प्रारूपित और सक्षम सभी कार्यक्रमों को अंतःसांस्थानिक माना जाएगा। अकादमी में प्राप्त अन्य सभी कार्यक्रमों, जिनके लिए कोई भी अनुदान के लिए आवेदन कर सकता है, को बाह्यसांस्थानिक माना जाएगा। अंतःसांस्थानिक या बाह्यसांस्थानिक दोनों शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिए अनुदान सहायता की ऊपरी सीमा रुपए एक लाख होगी। वित्तीय पहलू केवल कार्यक्रम की सामग्री और गुणवत्ता द्वारा निर्धारित किया जाएगा न कि लेबल द्वारा।

यह पहले निर्णय लिया गया था कि यदि व्यय स्वीकृत सीमा से अधिक है तो कार्यक्रम अनुमोदित होने और रिपोर्ट के अच्छा के रूप में स्वीकार्य होने के बाद अध्यक्ष नैम्स के अध्यक्ष के अनुमोदन के लिए अतिरिक्त राशि की सिफारिश कर सकता। यह सिफारिश की

गई कि यदि व्यय 15% तक अधिक होगा तो अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति द्वारा निर्णय लिया जाएगा और कार्यक्रम न्यायोचित और अच्छा होने पर अध्यक्ष को परेशान नहीं किया जाएगा। परंतु व्यय 15% से अधिक होने पर इसे अध्यक्ष द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए।

प्रो. जे. एस. बजाज ने सुझाव दिया कि 1-2 अक्टूबर, 2013 को सशस्त्र बल मेडिकल कॉलेज, पुणे में आयोजित "गाइनीकॉन 2013: देखभाल के मानकों की स्थापना" की सीडी डीवीडी का उपभोक्ता के अंत पर मूल्यांकन किया जा सकता है। डॉ. कमल बक्शी ने सुझाव दिया है कि यदि डीवीडी "गाइनीकॉन 2013: देखभाल के मानकों की स्थापना" अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर के स्नातक छात्रों, प्रथम वर्ष के छात्रों, स्नातकोत्तर, इंटर्न को दिखाए जाने के लिए भेजी जा सकती है तो वे इससे लाभान्वित हो सकते हैं। इसे सदस्यों द्वारा स्वीकार कर लिया गया और डॉ संजीव मिश्रा, निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर से जोधपुर में प्रसूतिरोग और स्त्री रोग विज्ञान विभाग के आचार्य एवं विभागाध्यक्ष को छात्रों को श्रोणि विच्छेदन की सीडी दिखाने के लिए अनुरोध किया गया था जिससे हमें द्विस्तरीय शैक्षिक आकलन प्राप्त हो सके।

समिति के सदस्य ने सुझाव दिया कि शैक्षणिक कैलेंडर को नैम्स वेबसाइट पर डाला जा सकता है जिस पर समिति के सदस्यों द्वारा सहमति व्यक्त की गई।

नैम्स-एम्स अधिशासी मंडल की शैक्षणिक गतिविधियाँ

निम्नलिखित शैक्षणिक गतिविधियाँ आयोजित की गईः

1. 27 अप्रैल, 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में आयोजित "स्पाइना बाइफिडा" पर सीएमई कार्यक्रम
2. 20 जुलाई, 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर में आयोजित "नैदानिक अनुसंधान में आचारसंहिता" पर सीएमई कार्यक्रम
3. 25 अक्टूबर, 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में आयोजित "निद्रा चिकित्सा" पर नैम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी
4. 10 जनवरी, 2014 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में आयोजित "एक्यूट इस्केमिक स्ट्रोक: उन्नतिकरण की मूल बातें" पर नैम्स-एम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी

शैक्षिक परिषद्

इसका गठन एक प्रयोजनपूर्ण और अर्थपूर्ण तरीके से एनएएमएस की सभी शैक्षिक गतिविधियों का समन्वय करने के उद्देश्य से सीएमई समिति और शैक्षिक समिति के सदस्यों द्वारा संयुक्त रूप से किया जाता है।

शैक्षिक परिषद् के निम्नलिखित सदस्य हैं :

1.	प्रो. जे.एस. बजाज, एफएएमएस	-	अध्यक्ष
2.	डॉ. प्रेमा रामाचंद्रन, एफएएमएस	-	सदस्य
3.	डॉ. एस.एस. देशमुख, एफएएमएस	-	सदस्य
4.	डॉ. सी.एस. भास्करन, एफएएमएस	-	सदस्य
5.	डॉ. मनोरमा बेरी, एफएएमएस	-	सदस्य
6.	डॉ. एन.एन. सूद, एफएएमएस	-	सदस्य
7.	डॉ. ललिता एस. कोठारी, एफएएमएस	-	सदस्य
8.	डॉ. जयरूप सिंह, एफएएमएस	-	सदस्य
9.	डॉ. एच.एस. संधू, एफएएमएस	-	सदस्य
10.	डॉ. आर. मदान, एफएएमएस	-	सदस्य
11.	डॉ. के.के. शर्मा, एफएएमएस	-	सदस्य
12.	डॉ. कमल बक्शी, एफएएमएस	-	सदस्य
13.	डॉ. सरोज चूड़ामणि गोपाल, एफएएमएस	-	सदस्य
14.	डॉ. मोहन कामेश्वरन, एफएएमएस	-	सदस्य
15.	डॉ. राजू सिंह चीना, एफएएमएस	-	सदस्य
16.	डॉ. एम. वी. पदमा श्रीवास्तव, एफएएमएस	-	सदस्य
17.	डॉ. राजेश्वर दयाल, एफएएमएस	-	सदस्य
18.	डॉ. संजय वधवा, एफएएमएस	-	सचिव

शैक्षिक परिषद् की बैठकों की विशिष्टताएं

अध्यक्ष ने नैम्स सीएमई कार्यक्रमों को सीएमई क्रेडिट घंटे आवंटित करने के निर्णय की सूचना के लिए रजिस्ट्रार, पंजाब चिकित्सा परिषद से प्राप्त एक पत्र प्रस्तुत किया। यह 10 मार्च, 2013 को पीजीआई, चंडीगढ़ में आयोजित "बच्चों और किशोरों में गैर मादक वसीय यकृत रोग" पर नैम्स-पीजीआई संगोष्ठी और बाबा फरीद स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, फरीदकोट में 23 मार्च को, 2013 को आयोजित 'ऑस्टियोपोरोसिस सीएमईः एक अस्थिभंग मुक्त भविष्य की ओर' पर सीएमई कार्यक्रम के लिए पूरा किया गया है। डॉ मोहन कामेस्वरन ने कहा है कि तमिलनाडु में डॉ एमजीआर चिकित्सा विश्वविद्यालय और राज्य चिकित्सा परिषद सीएमई में भाग लेने के लिए क्रेडिट अंक आवंटित करते हैं। विश्वविद्यालय ने पहले से ही चेन्नई में आयोजित नैम्सकॉन 2012 में नैम्स सीएमई के लिए क्रेडिट घंटे देने का निर्णय किया है। डॉ कामेस्वरन ने कहा कि वे राज्य चिकित्सा परिषद द्वारा तमिलनाडु राज्य में आयोजित नैम्स सीएमई कार्यक्रम के लिए क्रेडिट घंटे देना सुनिश्चित करने के लिए राज्य चिकित्सा परिषद से संपर्क करेंगे।

शैक्षणिक परिषद ने इस पर सहमति व्यक्त की कि सीएमई कार्यक्रम के लिए वित्तीय सहायता के लिए दिशानिर्देश के अगले संस्करण में शैक्षणिक समिति के सदस्यों के नाम के साथ ही सीएमई समिति के सदस्यों के नाम भी सम्मिलित होंगे और दोनों अंतःसांस्थानिक और बाह्यसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों के लिए जानकारी प्रदान की जाएगी।

10 मार्च, 2013 को पीजीआई, चंडीगढ़ में आयोजित "बच्चों और किशोरों में गैर मादक वसीय यकृत रोग" पर नैम्स-पीजीआई संगोष्ठी इंदिरा गांधी मेडिकल कालेज, शिमला और डॉ राजेंद्र प्रसाद सरकारी मेडिकल कॉलेज, टांडा के एजुसैट केंद्र के साथ टेली संपर्क के माध्यम से जोड़ा गया था। पूर्व संगोष्ठी आकलन स्कोर के लिए, पीजीआईएमईआर में प्रत्यर्थी की कुल संख्या 63 थी; आईजीएमसी, शिमला में 43; और आरपीजीएमसी, टांडा में 31। इसके विपरीत, पश्च संगोष्ठी आकलन में पीजीआईएमईआर में 19 प्रत्यर्थी; आईजीएमसी, शिमला में 42 प्रत्यर्थी; और आरपीजीएमसी, टांडा में 30 प्रत्यर्थी थे। पीजीआईएमईआर में पूर्व और बाद संगोष्ठी के आकलन के बीच प्रत्यर्थियों की संख्या में उल्लेखनीय गिरावट थी। यह पीजीआईएमईआर में पूर्व

संगोष्ठी आकलन (औसत 19.4 अंक) और पश्च-संगोष्ठी मूल्यांकन (औसत 19.5 अंक) में परिलक्षित किया गया था। इसके विपरीत, आईजीएमसी, शिमला में 18.4 (पूर्व संगोष्ठी) से 20.07 (पश्च संगोष्ठी) औसत स्कोर में वृद्धि हुई थी। इसी तरह, आरपीजीएमसी, टांडा, कांगड़ा में 19.6 (पूर्व संगोष्ठी) से 20.5 (पश्च संगोष्ठी) औसत स्कोर में वृद्धि हुई थी। अध्यक्ष ने संक्षेप में कहा कि संभवतः शिमला और टांडा जैसे अपेक्षाकृत छोटे और सुदूर स्थान पर प्रतिभागी इस तरह के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम से अधिक लाभान्वित होते हैं।

शैक्षणिक परिषद को शैक्षणिक समिति के अध्यक्ष द्वारा वैज्ञानिक कार्यक्रम के एक भाग के रूप में नैम्सकॉन 2013 में आयोजित की जाने वाली पुनर्योजी चिकित्सा पर नैम्स संगोष्ठी की योजना के बारे में सूचित किया गया था। वक्ताओं और प्रस्तुति के विषय निम्नलिखित हैं:

पुनर्जनन के जैविक आधार और आणविक तंत्र

- डॉ सुजाता मोहंती, सह आचार्य एवं

संकाय प्रभारी, स्टेम सेल सुविधा

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली

मायोकार्डियल पुनर्जनन में हाल ही की अवधारणाएं

- डॉ बलराम एरन, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, सीटीवीएस विभाग

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली

स्ट्रोक और रीढ़ की हड्डी में चोट के पश्चात न्यूरो पुनर्जनन

- डॉ. पद्म श्रीवास्तव, आचार्य, तंत्रिकाविज्ञान

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली।

नेत्र विकार में पुनर्योजी चिकित्सा

- डॉ गीता के. वेमुगंटी, संकायाध्यक्ष, आयुर्विज्ञान विद्यालय

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

नैम्सकॉन 2013 वार्षिक सम्मेलन के वैज्ञानिक कार्यक्रम सहित व्याख्यान को अंतिम रूप दे दिया गया है। वैज्ञानिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया था। सभी व्याख्यानों, नैम्स वैज्ञानिक संगोष्ठी और विजेताओं द्वारा प्रस्तुतियों के सारांश और सार प्राप्त करना एक बड़ी उपलब्धि रहा है। ये अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर www.aiimsjodhpur.edu.in और नैम्स http://nams-india.in की वेबसाइट पर डाल दिए गए हैं। इसे पहली बार हासिल किया गया है।

विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग:

अध्यक्ष ने परिषद को सूचित किया कि आज आयोजित किए जा रहे एक औपचारिक समारोह में राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी और पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा के बीच समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान किया जाएगा। डॉ जयरूप सिंह, कुलपति एक बैनर लेकर आए थे जिसे सम्मेलन हॉल की दीवार पर पृष्ठभूमि के रूप में लगाया गया था।

जैव चिकित्सा अनुसंधान एवं शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने के लिए समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान शैक्षणिक परिषद के सदस्यों के समक्ष डॉ जय रूप सिंह, कुलपति, डॉ सी.एस. भास्करन, नैम्स अध्यक्ष और प्रो. जे. एस. बजाज, अध्यक्ष-शैक्षणिक परिषद के बीच आयोजित किया गया।

प्रो. जे.एस. बजाज ने आगे सदस्यों को सूचित किया है कि डॉ पी. एस. जॉन जिन्हें "मेरुरज्जु पुनर्जनन के लिए अस्थि मज्जा अधिमिश्रण" विषय के लिए डॉ. विमला विरमानी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है उन्हें सर्वश्रेष्ठ पेपर प्रस्तुति के लिए नैम्स 2007 अमृतसर पुरस्कार के लिए चुना गया था। उन्होंने सदस्यों यह भी को सूचित किया कि वहाँ पहली बार आयोजित पोस्टर सत्र की सराहना की गई है।

प्रो. बजाज ने सुझाव दिया कि अकादमी को प्राप्त सीएमई प्रस्तावों पर विचार करना चाहिए और संशोधनों के बारे में आयोजकों को सुझाव देना चाहिए। अकादमी के उद्देश्य और प्रयोजन अकादमिक सुझाव देने और ज्ञान की गुणवत्ता बढ़ाने में शामिल होना है। अकादमी को अधिगम

उद्देश्य, लक्ष्य के साथ सीएमई कार्यक्रम प्रस्तावों को विकसित करने के लिए मेडिकल कालेजों के व्यक्तियों की सहायता करनी चाहिए।

प्रो. जे.एस. बजाज द्वारा सुझाई गए **अन्य योजनाबद्ध गतिविधियों** में नैम्स को राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के साथ जोड़ना था। प्रो. बजाज ने सूचित किया है कि अकादमी को राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के साथ जोड़ा जाएगा और अकादमी को संपर्क मिलते ही राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क से जुड़े मेडिकल कालेजों में डीवीडी का सजीव प्रसारण किया जा सकता है। अध्यक्ष ने समिति को सूचित किया कि उन्होंने राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के बारे में डॉ. आर. चिदंबरम को तीन पृष्ठ का एक पत्र लिखा था। डॉ. आर. चिदंबरम ने इंजीनियर नीरज सिन्हा, वैज्ञानिक एफ को प्रतिनियुक्त किया। प्रो. जे. एस. बजाज और इंजीनियर नीरज सिन्हा के बीच एक औपचारिक बैठक आयोजित की गई और डॉ. एस. वी, राघवन के साथ एक अन्य बैठक प्रो. जे. एस. के बजाज के कार्यालय में आयोजित की गई थी जिसमें मानद सचिव, डॉ. संजय वधवा ने भी भाग लिया।

भारतीय निद्रा चिकित्सा सोसायटी के साथ सहयोगः प्रो. जे.एस. बजाज ने परिषद को सूचित किया कि डॉ. वी. मोहन कुमार भारतीय निद्रा चिकित्सा सोसाइटी के साथ चेन्नई में काम कर रहे हैं। उन्होंने सहमति दी है कि हम 2014 में चेन्नई में भारतीय निद्रा चिकित्सा सोसायटी के सहयोग से एक सीएमई कार्यक्रम के आयोजन पर विचार कर सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि अकादमी वित्तीय सहायता प्रदान कर सकती है, लेकिन यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि कोई कॉर्पोरेट / औद्योगिक वित्तपोषण शामिल नहीं है। हालांकि, अनुमोदित विज्ञापनों के साथ एक स्मारिका प्रकाशित की जा सकती है। अध्यक्ष, शैक्षणिक परिषद को डॉ. मोहन कुमार से आगे बातचीत करने के लिए अधिकृत किया गया।

निर्णय

- यह निर्णय लिया गया कि चूँकि नैम्स-एम्स अधिशासी मंडल के तहत सीएमई /संगोष्ठियाँ एक नियमित गतिविधि हो जाएंगी अतः नैम्स-एम्स अधिशासी मंडल शैक्षणिक गतिविधियों के तहत अलग कार्यसूची मद होना चाहिए।

- डॉ एम.वी. नटराजन अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में नैम्सकॉन 2013 में कर्नल संघम लाल स्मारक व्याख्यान देने में सक्षम नहीं थे। यह निर्णय लिया गया कि डॉ एम.वी. नटराजन को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में नैम्सकॉन 2014 में व्याख्यान देने के लिए अनुमति दी जा सकती है।

- संगोष्ठी में छात्रों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए अकादमी द्वारा रेल भाड़ा और पंजीकरण शुल्क के मामले में व्यय के बोझ पर आर्थिक सहायता दी जा सकती है

- आयोजकों द्वारा किया गया सांख्यिकीय विश्लेषण गोपनीय है और इसे विचार और समर्थन के लिए समिति के समक्ष प्रस्तुत किया जाना चाहिए। उस समय तक यह पर्यवेक्षक के लिए उपलब्ध नहीं होना चाहिए।

- यह निर्णय लिया गया है कि पोस्टर सत्र नैम्स वार्षिक सम्मेलन की एक नियमित विशेषता हो सकता है और सबसे अच्छी पोस्टर प्रस्तुति के लिए एक पुरस्कार से सम्मानित किया जा सकता है।

- सबसे अच्छा पोस्टर प्रस्तुति के प्रस्तोता को अन्यथा प्रायोजित / समर्थित नहीं होने पर उसके यात्रा व्यय की प्रतिपूर्ति की जा सकती है।

- समयाभाव का सामना करने के लिए वार्षिक सम्मेलन पूरे 3 दिनों का होना चाहिए।

- शैक्षिक गतिविधियों में बड़ी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए नव निर्वाचित अध्येता और सदस्यों के लिए पंजीकरण शुल्क एक रियायती आधार पर होना चाहिए।

- अंतःसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रम उन कार्यक्रमों के रूप में परिभाषित किया जाना चाहिए जिसका विषय/ उद्देश्य/ वैज्ञानिक सामग्री और संगठन अध्यक्ष, शैक्षणिक समिति द्वारा उल्लिखित किया गया है। वित्तीय सहायता की ऊपरी सीमा निर्णय के अनुसार रहेगी। वित्तीय सहायता की निचली सीमा में परिवर्तन हो सकता है और आवश्यकता के आधार पर निर्णय लिया जा सकता है।

- यह निर्णय लिया गया कि यदि वित्तीय व्यय स्वीकृत राशि की तुलना में 15% तक अधिक है तो औचित्यपूर्ण होने पर अतिरिक्त राशि समिति के अध्यक्ष के अनुमोदन के साथ प्रतिपूर्ति के लिए मानी जा सकती है। व्यय 15% से अधिक होने पर नैम्स अध्यक्ष का अनुमोदन प्राप्त किया जा सकता है।

- श्री गुरु राम दास चिकित्सा विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान से वित्तीय सहायता के उद्देश्य के लिए अन्य सरकारी संस्थाओं के समान व्यवहार किया जा सकता है। ।

- जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार 28 दिसंबर, 2013 को डॉ ई. पी. भरुचा को उनके 97वें जन्मदिन पर उनके आवास पर डॉ एस. एस. देशमुख द्वारा प्रदान किया जाएगा।

- डॉ एस. कामेस्वरन को जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार मद्रास मेडिकल कॉलेज, चेन्नई में प्रदान किया जा सकता है।

डॉ. देवकी नंदन, एफएएमएस के आकस्मिक और दुखद निधन के कारण उत्तर प्रदेश में राज्य संयोजक का पद रिक्त हो गया है। सीएमई कार्यक्रम समिति की सिफारिश है कि डॉ पी. के. मिश्रा, एफएएमएस, पूर्व प्रधानाचार्य एवं संकायाध्यक्ष, चिकित्सा संकाय और आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, बाल रोग विज्ञान विभाग, के. जी. मेडिकल कॉलेज, लखनऊ को उत्तर प्रदेश राज्य अध्याय के संयोजक के रूप में नामित किया जा सकता है। उत्तरदायित्व स्वीकार करने के लिए डॉ पी. के. मिश्रा की इच्छा सुनिश्चित की जाए और सहमत होने पर प्रस्ताव को स्वीकृति के लिए अध्यक्ष के पास भेजा जा सकता है और बाद में अनुसमर्थन के लिए परिषद के समक्ष रखा जा सकता है।

प्रो. जे. एस. बजाज ने सुझाव दिया कि यदि सीएमई की तकनीकी समीक्षक द्वारा वित्त पोषण के लिए सिफारिश की गई है और अध्यक्ष, सीएमई कार्यक्रम समिति ने मंजूरी दे दी है और अनुरोधित धनराशि वित्त समिति और परिषद द्वारा अनुमोदित नियमों के अनुसार है तो अध्यक्ष को सीएमई के वित्त पोषण के लिए स्वीकृति प्रदान करने के लिए परेशान करने की आवश्यकता नहीं है। इस स्थिति में अध्यक्ष, सीएमई समिति और शैक्षणिक समिति का

अनुमोदन अंतिम होगा। यदि, हालांकि, वित्त समिति और परिषद द्वारा अनुमोदित नियमों के ऊपर और अतिरिक्त किसी भी राशि की आवश्यकता है तो फिर अध्यक्ष द्वारा अनुमोदित प्रस्ताव नैम्स अध्यक्ष को भेजा जाना चाहिए और उनका अनुमोदन और संस्तुति प्राप्त की जानी चाहिए। स्पष्ट संचालन प्रक्रियाओं को सुनिश्चित करने के लिए इस मामले पर प्रबंधन पर स्थायी समिति की बैठक के दौरान विचार किया जाएगा।

अनुबंध – VI

दिनांक 26 अक्टूबर, 2013 को पुनर्योजी चिकित्सा पर नैम्स संगोष्ठी

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) वह संस्थान है जो शैक्षिक उत्कृष्टता लाता है और विभिन्न चिकित्सा और सामाजिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए एक संसाधन के रूप में इसका प्रयोग करता है। अकादमी पूरे देश में संगोष्ठियों, सीएमई कार्यक्रमों, कार्यशालाओं आदि के आयोजन और प्रायोजन में संलग्न है।
नैम्स हर साल वार्षिक सम्मेलनों का आयोजन करता है। नैम्स का 53वां वार्षिक सम्मेलन नैम्सकॉन 25 से 27 अक्टूबर 2013 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर, राजस्थान में आयोजित किया गया था। सम्मेलन ने निद्रा और निद्रा संबंधी विकार, स्ट्रोक, मिर्गी, कुष्ठ रोग, हृदयपेशीय पुनर्जनन, रीढ़ की हड्डी में चोट, दंत स्वास्थ्य, आदि के विभिन्न पहलुओं को समावेश किया।

26 अक्टूबर 2013 को आयोजित नैम्स वैज्ञानिक संगोष्ठी का शीर्षक 'पुनर्योजी चिकित्सा' था क्योंकि यह स्टेम कोशिकाओं और उनके अनुप्रयोग पर आधारित था। सत्र प्रातः 10:45 से अपराह्न 13.30 तक निर्धारित किया गया था। प्रत्येक वक्ता को प्रस्तुति के लिए 30 मिनट और बाद में चर्चा के लिए 5 मिनट आवंटित किए गए थे।

अपने उद्घाटन भाषण में प्रो. जे. एस. बजाज ने पुनर्योजी दवा पर सत्र आयोजित करने के लिए अपने निर्णय के आधार का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि शोधों में होती पहल और पुनर्योजी चिकित्सा और अनुसंधान के क्षेत्र में स्टेम कोशिकाओं के बढ़ते अनुप्रयोगों के कारण नैम्सकॉन में इस पर चर्चा करना आवश्यक हो गया था। उन्होंने पुनर्योजी चिकित्सा के उद्भव से संबंधित पृष्ठभूमि का वर्णन किया और "परिपक्व कोशिकाओं को बहुशक्त बनने के लिए फिर से प्रोग्राम किया जा सकता है" की खोज के लिए शरीर क्रिया विज्ञान या चिकित्सा के लिए 2012 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित सर जॉन बी. गर्डन और शिनया यामानाका के अग्रणी कार्य का उल्लेख किया। दोनों नोबेल पुरस्कार विजेताओं के बीच एक दिलचस्प संबंध यह है कि सर जॉन गर्डन को उनके वर्ष 1962 में प्रकाशित कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है और उसी वर्ष शिनया यामानाका का जन्म हुआ था। वे दोनों साथ में आयु और कार्य दोनों की दृष्टि से युवा और नए का एक बहुत अच्छा मिश्रण और संतुलन दिखाते हैं। उन्होंने कहा कि वर्ष 1962 पुनर्योजी चिकित्सा और आचार्य शिनया यामानाका दोनों के जन्म के वर्ष के रूप में स्मरण किया जाता है। प्रो. बजाज ने 2012 के नोबेल पुरस्कार प्रस्तुति भाषण के कुछ अंश उद्धृत किए

"हम समझते हैं कि स्टॉकहोम कॉन्सर्ट हॉल में हम में से एक से अधिक ने कभी यह सोचा होगा कि एक बार फिर से युवा, जंगली और थोड़ा सा पागल होना वांछनीय हो सकता है - और शायद किसी और समय बड़े होने का अवसर मिलना और जीवन में पहले चुने मार्ग से एक अलग मार्ग पर चलने का प्रयास करना भी। अब, यदि यह व्यक्ति एक वयस्क मानव न होकर एक परिपक्व कोशिका होता तो समय के माध्यम से एक ऐसी यात्रा वास्तव में संभव हो सकती है। इसे शरीर क्रिया विज्ञान या चिकित्सा में इस वर्ष के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित की जा रही खोजों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।"

जैविक संदर्भों पर बल देते हुए उन्होंने जॉन बी. गर्डन के योगदान पर प्रकाश डाला जिन्होंने एक मेंढक के अंडे के नाभिक को हटाकर उसके स्थान पर एक टैडपोल से लिए गए एक विशेष सेल के नाभिक को रख दिया था। संशोधित अंडा एक सामान्य टैडपोल में विकसित हुआ। इसके बाद परमाणु हस्तांतरण प्रयोगों ने क्लोन स्तनधारियों को उत्पन्न किया है।

स्टेम कोशिका जीव विज्ञान के बारे में 2007 में नोबेल पुरस्कार के लिए धन्यवाद, डॉ शिनया यामानाका ने स्टेम कोशिका के कार्य के लिए महत्वपूर्ण जीन का अध्ययन किया। जब उन्होंने त्वचा से ली गई कोशिकाओं में चार ऐसे जीन हस्तांतरित किए तो वे बहुशक्त स्टेम कोशिकाओं में फिर से क्रमादेशित हो गए जो कि एक वयस्क चूहे की सभी प्रकार की कोशिकाओं के रूप में विकसित हो सकते हैं। उन्होंने इन कोशिकाओं को प्रेरित बहुशक्त स्टेम कोशिकाएं (आईपीएस) नाम दिया है।

ये आईपीएस कोशिकाओं अब रोग ग्रस्त रोगियों सहित, मनुष्यों से उत्पन्न की जा सकती हैं। तंत्रिका, हृदय और यकृत कोशिकाओं सहित परिपक्व कोशिकाएं इन आईपीएस कोशिकाओं से प्राप्त की जा सकती हैं जिससे वैज्ञानिक नए तरीके से रोग तंत्र का अध्ययन कर सकते हैं। इससे आधुनिक जीव विज्ञान में एक निदर्शी परिवर्तन आया है।

अध्यक्ष, प्रो. बजाज के उद्घाटन भाषण छात्रों और इस क्षेत्र में गैर-संचालित विशेषज्ञों दोनों को निम्नलिखित प्रस्तुतियों के महत्व को स्पष्ट रूप से समझने में भली प्रकार सक्षम बनाया:

उन्होंने संक्षेप में सत्र के वक्ताओं से परिचय करवाया और इस सम्मेलन से पूर्व उनके और वक्ताओं के बीच कई माह तक चले गहन विचार-विमर्श और इंटरैक्टिव सत्र का उल्लेख किया।

डॉ सुजाता मोहंती सत्र की पहली वक्ता थीं। उनका विषय "पुनर्जनन के जैविक आधार और आणविक तंत्र" था। उन्होंने अपनी बात स्टेम कोशिकाओं के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, स्टेम

कोशिकाओं की क्षमता और इसके पीछे मूल अवधारणा के वर्णन के साथ आरंभ की। फिर उन्होंने स्टेम कोशिकाओं के प्रकार, उनके स्रोतों, गुण, कार्रवाई की विधा और पुनर्जनन की प्रक्रिया के पीछे आणविक तंत्र के बारे में बात की थी। उसके बाद उन्होंने एम्स में जारी बुनियादी, पूर्व नैदानिक और नैदानिक अनुसंधान के बारे में वर्णन किया। उन्होंने बताया कि एम्स अस्थि मज्जा, दंत लुगदी, वसा ऊतकों, त्वचा, बाल, स्ट्रोमा, आदि जैसे विभिन्न स्रोतों से वयस्क स्टेम कोशिकाओं के अलगाव, विस्तार और विभेदीकरण से संबंधित बुनियादी अनुसंधान में शामिल है। उन्होंने यह भी बताया कि भ्रूण स्टेम कोशिकाओं की तरह अन्य स्टेम कोशिकाओं पर भी उनके हृदपेशीजनक और तंत्रिकापेशीय विभेदीकरण के लिए पता लगाया जा रहा है। आईपीएससी भी डचेन्न पेशी दुष्पोषण के लिए रोग विशिष्ट कोशिकाओं की ओर निकले जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त हृदपेशीरोधगलन और पार्किंसंस विकार के उपचार के लिए स्टेम कोशिका के पूर्व नैदानिक परीक्षण भी किए जा रहे हैं। इसके पश्चात उन्होंने लंबी अस्थि दोष के उपचार में स्टेम कोशिका प्रत्यारोपण के लिए जैवसंगत स्कॉफ्फोल्ड के उपयोग पर चर्चा की। इसके अतिरिक्त कॉर्निया दोष में एमनियोटिक झिल्ली का उपयोग कर स्टेम कोशिका प्रत्यारोपण रोगी की देखभाल के लिए नियमित रूप से किए जा रहे हैं। नैदानिक परीक्षण में स्टेम कोशिकाओं की रोधगलन, स्ट्रोक, विटिलिगो, कॉर्निया दोष, अंग स्थानिक अरक्तता, आदि जैसे रोगों में भी जांच की गई है। समापन टिप्पणी के रूप में डॉ. सुजाता ने विभिन्न अपक्षयी रोगों के उपचार के लिए पुनर्योजी चिकित्सा में स्टेम कोशिकाओं के भविष्य के परिप्रेक्ष्य के बारे में वर्णन किया।

डॉ सुजाता मोहंती के बाद प्रो. बलराम एरन, प्रमुख, हृदय-वक्ष केन्द्र और विभागाध्यक्ष हृद- वक्ष - संवहनी शल्य चिकित्सा विभाग, एम्स ने रोधगलन की बढ़ती व्यापकता और हृदय कोशिकाओं को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता का वर्णन किया। उन्होंने स्टेम कोशिकाओं और उनकी कार्यविधि के बारे में भी बहुत संक्षेप में बताया। इस के पश्चात प्रो. एरन ने इस्कीमिक कार्डियोमायोपैथी, कार्डियक एर्रहिथमिआस और फैली हुई कार्डियोमायोपैथी में चल रहे स्टेम सेल परीक्षण के उद्देश्यों पर चर्चा की। उन्होंने इन नैदानिक परीक्षणों के परिणामों पर भी चर्चा की। प्रो. एरन ने एम्स में जारी विभिन्न प्रायोगिक अध्ययन, चरण - एक परीक्षणों और बहु केंद्रित परीक्षणों पर चर्चा की। उन्होंने नैदानिक परीक्षणों के परिणाम के रूप में प्राप्त आंकड़ों के आधार पर अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान से कई अनुसंधान प्रकाशनों को उद्धृत किया। उन्होंने हृदय पैच और जैव इंजीनियर रक्त वाहिकाओं के विकास में भावी परिप्रेक्ष्य और स्टेम कोशिकाओं की भूमिका पर बल देते हुए समापन किया।

तीसरी वक्ता प्रो. एम. वी. पद्मा, तंत्रिका विज्ञान विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ने "स्ट्रोक और रीढ़ की हड्डी में चोट के बाद तंत्रिका पुनर्जनन" पर चर्चा की। उन्होंने तंत्रिका अपक्षयी रोगों यानी, स्ट्रोक और रीढ़ की हड्डी में चोट में स्टेम कोशिकाओं के उपयोग का वर्णन किया। उन्होंने स्ट्रोक के बाद मरम्मत और कार्य को बढ़ाकर सुधार में तेजी लाने कि लिए तंत्रिका दृढ़ीकरण उपचारों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि स्ट्रोक में प्रयुक्त 'मिरर' उपचार ने चिरकालिक स्ट्रोक के रोगियों में सुधार का प्रदर्शन, 'कार्य अवलोकन' परिकल्पना का प्रदर्शन किया है। प्रो. पद्मा द्वारा उद्धृत एक अन्य अध्ययन नैदानिक स्कोर और कार्यात्मक इमेजिंग (एफएमआरआई और डीटीआई) के आधार पर स्ट्रोक रोगियों में ऑटोलॉगस मोनोन्यूक्लियर और मिसेनकाइमल कोशिका प्रत्यारोपण की सुरक्षा, व्यवहार्यता और प्रभावकारिता का मूल्यांकन करता है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि ऑटोलॉगस नसों में स्टेम कोशिका उपचार सुरक्षित है और संभव है और स्टेम कोशिका तंत्रिका प्रत्यारोपण के लिए स्काफ्फोल्ड के रूप में कार्य करते हैं और स्ट्रोक में मरम्मत तंत्र में सहायता कर सकते हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय अनुभव के संदर्भ में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में विभिन्न तंत्रिका अपक्षयी रोगों में स्टेम कोशिका प्रत्यारोपण के वर्तमान परिदृश्य का वर्णन करके अपनी प्रस्तुति संपन्न की। उन्होंने तंत्रिका अपक्षयी रोगों के क्षेत्र में बुनियादी, पूर्व नैदानिक और नैदानिक स्तरों के लिए लक्षित नए मार्गों की खोज को पेश करके, दर्शकों के युवा सदस्यों को प्रेरित किया।

डॉ गीता वेमुगंटी, संकायाध्यक्ष, आयुर्विज्ञान स्कूल, हैदराबाद विश्वविद्यालय इस सत्र की अंतिम वक्ता थीं। उनके व्याख्यान का विषय "नेत्र विकार में पुनर्योजी चिकित्सा" था। उन्होंने रेटिना अध: पतन, धब्बेदार डिस्ट्रोफी, मधुमेह रेटिनोपैथी, रेटिनाइटिस पिगमेंटोसा, मोतियाबिंद रोगियों में नाड़ीग्रन्थि कोशिका मृत्यु आदि के मामलों में स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त ऊतक के कार्य बहाल करने में कोशिका चिकित्सा के महत्व पर बल दिया। उन्होंने तंत्रिका नेटवर्क और रेटिना के कार्य के तंत्र समझने के महत्व का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। उन्होंने नेत्र पुनर्जनन के क्षेत्र में भावी परिप्रेक्ष्य और अभी प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्यों के साथ अपना भाषण समाप्त किया।

अपने समापन भाषण, प्रो. बजाज ने उन्नत जैव प्रौद्योगिकी के लाभ का फायदा उठाने के लिए आवश्यक एकीकृत रणनीतिक योजना को रेखांकित किया।

सत्र में संगोष्ठी से प्रेरित स्नातक छात्र से लेकर स्नातकोत्तर विद्वानों सहित बहु विशेषता जुड़ाव और अनुभव के विभिन्न स्तरों के साथ दर्शकों ने भाग लिया। माननीय प्रतिभागियों में से एक डॉ. सिवारामाकृष्ण अय्यर पद्मावती, भारत की पहली महिला हृदय रोग विशेषज्ञ और नैम्स, भारत की पूर्व अध्यक्षा थीं। उन्होंने विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में महिलाओं की उभरती हुई

रुचि की सराहना की। उन्होंने रेखांकित किया कि पुनर्योजी चिकित्सा के इस सत्र में प्रस्तुतियों में अधिकतर महिला वैज्ञानिक और डॉक्टर शामिल हैं। इस तरह के प्रख्यात व्यक्तित्व से प्रशंसा प्रतिभागियों को और संगोष्ठी में भाग लेने वाले व्यक्तियों को प्रोत्साहन देती है।

औपचारिक प्रस्तुतियों और स्पष्टीकरण के बाद एक गहन विचार-विमर्श सत्र हुआ था। कई प्रतिभागियों ने पुनर्योजी चिकित्सा पर आधारित नैदानिक परीक्षण के लिए नियामक तंत्र सहित महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाया, जबकि पुनर्योजी चिकित्सा के भविष्य के बारे में संदेह के कुछ भाव भी वहाँ थे।

अपने समापन भाषण में अध्यक्ष ने गहन आशा व्यक्त की कि जीनोमिक चिकित्सा के साथ पुनर्योजी चिकित्सा वैयक्तिकृत चिकित्सा के आधार का गठन करेगी जो शायद उनके अपने जीवन काल में नहीं होगा परंतु वे आशावान हैं कि दर्शकों में उपस्थित युवा छात्र भविष्य की चिकित्सा का उसी तरह अभ्यास करेंगे जैसी उन्होंने और कई अन्य लोगों ने कल्पना की है।

पुनर्योजी चिकित्सा के भविष्य की वृद्धि और विकास के लिए एक योजनाबद्ध रणनीति बनाई जानी आवश्यक है। इस संदर्भ में उन्होंने ब्रिटेन का उदाहरण दिया जहां समेकित रूप से अगले 5 वर्षों में बुनियादी नैदानिक परीक्षण करने के लिए अनुसंधान और इसे उद्योग से जोड़ने के लिए चिकित्सा अनुसंधान परिषद, जैविक अनुसंधान परिषद, इंजीनियरिंग और शारीरिक अनुसंधान परिषद, और आर्थिक और सामाजिक अनुसंधान परिषद के साथ प्रौद्योगिकी रणनीति बोर्ड के साथ £ 75,000,000 के समर्थन से पुनर्योजी दवा विकसित करने के लिए एक प्रमुख पहल शुरू की है। रॉबिन बुकी के नेतृत्व के तहत एक £25,000,000 ब्रिटेन पुनर्योजी चिकित्सा मंच आरंभ किया गया है, जिन्हें अध्यक्ष ने उद्धृत किया "विज्ञान अब उस बिंदु पर पहुंच गया है जहां हम चिकित्सीय लाभ के लिए मानव शरीर की स्वयं की मरम्मत की क्षमता का दोहन करने पर गंभीरता से विचार कर सकते हैं।"

पुनर्योजी चिकित्सा पर नैम्स संगोष्ठी वक्ताओं के साथ अध्यक्ष के लिए तालियों के एक दौर के साथ संपन्न हुई।

सम्मानपूर्वक प्रस्तुत

डॉ. सुजाता मोहंती
सह - आचार्य एवं प्रभारी
स्टेम सेल सुविधा, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान

एनएएमएस वेबसाइट

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) की अपनी वेबसाइट है, जिसका पता **http://nams-india.in** है, जो इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ विश्व के किसी भी हिस्से से पहुंची जा सकती है। एनएएमएस के बारे में लगभग सभी महत्वपूर्ण जानकारी आसानी से इस वेबसाइट पर जाकर प्राप्त की जा सकती है। मुख पृष्ठ पर निम्नलिखित के बारे में जानकारी आसानी से प्राप्त की जा सकती है :

एनएएमएस नियम और विनियम, पदाधिकारी, परिषद् के सदस्य, अध्येता और सदस्य (वर्ष-वार), सीएमई कार्यक्रम के वित्तपोषण के लिए आवेदन प्रस्तुत करने हेतु दिशानिर्देश, व्याख्यान और पुरस्कार, एनएएमएस के एनल्स (प्रकाशित लेखों के सार), एनएएमएस प्रकाशित मोनोग्राफ, डाऊनलोड (संगोष्ठियों, सेमिनार, कार्यशालाओं, सीएमई कार्यक्रम के आयोजन के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए और लेखकों के लिए एनएएमएस एनल्स के लिए लेख भेजने के लिए निर्देश) और एनएएमएस के आगामी वार्षिक सम्मेलन के बारे में जानकारी आदि।

वित्तीय रिपोर्ट

सरकारी अनुदान

योजना

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा अकादमी को सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए 'योजना' के तहत स्वीकृत/ दिए गए सहायता अनुदान की स्थिति और उसके विरुद्ध गत 3 वर्षों (2011-12 से 2013-14) के दौरान किया गया व्यय निम्नानुसार हैः

(लाख रुपए में)

वर्ष	स्वीकृत अनुदान	प्राप्त अनुदान	व्यय (खरीदी गई परिसंपत्तियों सहित)
2011-12	85.00	45.72	48.80
2012-13	100.00	63.28	50.40
2013-14	86.40	63.00	79.68

'योजना' के अंतर्गत वर्ष 2011-12 और 2012-13 के दौरान व्यय का आधिक्य पूर्व वर्षों में व्यय नहीं किए गए अनुदान से पूरा किया गया था।

गैर-योजना

मंत्रालय द्वारा स्वीकृत/ दिए गए सहायता अनुदान की स्थिति और 'गैर-योजना' के तहत गत 3 वर्षों (2011-12 से 2012-14) के दौरान किया गया व्यय निम्नानुसार हैः

(लाख रुपए में)

वर्ष	स्वीकृत अनुदान	प्राप्त अनुदान	व्यय	अभ्युक्तियां
2011-12	54.00	54.00	49.32	व्यय नहीं किए गए 4.68 लाख रुपए का शेष वर्ष 2012-13 में अग्रेनीत किया गया।
2012-13	55.00	50.07	50.29	व्यय का आधिक्य अकादमी

वर्ष	स्वीकृत अनुदान	प्राप्त अनुदान	व्यय	अभ्युक्तियां
				द्वारा सृजित राजस्व से पूरा किया गया है।
2013-14	60.00	55.54	71.06	व्यय का आधिक्य अकादमी द्वारा सृजित राजस्व से पूरा किया गया है।

वित्त

वर्ष 2013-14 के दौरान अध्येताओं और सदस्यों से आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में 26,95,000/- रुपए की राशि प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त 5.42,137/- रुपए की राशि सावधि जमा पर ब्याज के कारण प्राप्त हुई।

लेखा

वर्ष 2013-14 के लिए लेखे की लेखापरीक्षा चार्टर्ड लेखाकार द्वारा पूरी कर ली गई है। परिषद ने 4 अक्टूबर, 2014 को आयोजित अपनी बैठक में लेखा विवरण भी अनुमोदित किया है। अब इनको आम सभा द्वारा अपनाए जाने के लिए सिफारिश की जाती है।

लेखा

लेखापरीक्षकों की रिपोर्ट

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) के अध्येताओं,

वित्तीय विवरणों पर रिपोर्ट

हमने राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) ("अकादमी") के संलग्न वित्तीय विवरण की लेखा परीक्षा की है जिसमें 31 मार्च, 2014 की यथास्थिति तुलन-पत्र और समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय लेखा, तथा महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियों और अन्य स्पष्टीकारक जानकारी का सारांश शामिल है।

वित्तीय विवरणों के लिए प्रबंधन की जिम्मेदारी

प्रबंधन इन वित्तीय विवरणों की तैयारी के लिए उत्तरदायी है जो, अकादमी के धर्मार्थ संस्था होने के कारण उस पर लागू, भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान द्वारा जारी किए गए लेखांकन मानकों के अनुसार अकादमी की वित्तीय स्थिति, वित्तीय निष्पादन का सही और निष्पक्ष रूप प्रस्तुत करें। इस उत्तरदायित्व में वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुति के लिए प्रासंगिक आंतरिक नियंत्रण की रूपरेखा, कार्यान्वयन और अनुरक्षण निहित है जो एक सच्चा और निष्पक्ष विचार दे और धोखाधड़ी या त्रुटि के कारण सामग्री के ग़लत बयान से मुक्त हो।

लेखा परीक्षकों की जिम्मेदारी

हमारा उत्तरदायित्व अपनी लेखापरीक्षा के आधार पर इन वित्तीय विवरणों पर राय व्यक्त करना है। हमने भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान द्वारा जारी लेखापरीक्षा मानकों के अनुसार अपनी लेखापरीक्षा की है। वे मानक अपेक्षा करते हैं कि हम नैतिक आवश्यकताओं का अनुपालन करें और इस बारे में, कि क्या वित्तीय विवरण गलत विवरण से मुक्त हैं, उचित आश्वासन प्राप्त करने के लिए लेखापरीक्षा की योजना बनाएँ और निष्पादित करें।

लेखापरीक्षा में वित्तीय विवरणों में राशियों और प्रकटनों का समर्थन करने वाले लेखा परीक्षा साक्ष्य प्राप्त के लिए प्रक्रियाएँ शामिल होती है। चुनी गई प्रक्रियाएँ लेखा परीक्षकों के निर्णय, जिसमें धोखाधड़ी या त्रुटि के कारण वित्तीय विवरणों के गलत विवरण के जोखिम का आकलन निहित

है, पर निर्भर करती हैं । इस जोखिम का आकलन करते हुए लेखा परीक्षक अकादमी द्वारा वित्तीय विवरणों की तैयारी और सही प्रस्तुति के लिए प्रासंगिक आंतरिक नियंत्रण को ध्यान में रखते हुए परिस्थितयों के अनुसार उपयुक्त लेखा परीक्षा प्रक्रियाओं की रूपरेखा बनाता है। लेखापरीक्षा में प्रयुक्त लेखाकरण सिद्धांतों की उपयुक्तता का आकलन और प्रबंधन द्वारा बनाए गए महत्वपूर्ण लेखा अनुमानों का औचित्य तथा साथ ही समग्र वित्तीय विवरण के प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन भी शामिल होता है।

हमें विश्वास है कि हमारे द्वारा प्राप्त लेखा परीक्षा साक्ष्य पर्याप्त हैं और हमारी लेखापरीक्षा राय के लिए उचित आधार प्रदान करते हैं।

राय

हमारी राय में और हमारी सर्वोत्तम जानकारी तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरणों के अनुसार, वित्तीय विवरण भारत में साधारणतया स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों के अनुरूप सही और उचित दृश्य प्रस्तुत करते हैं:

i. तुलन-पत्र के मामले में अकादमी की 31 मार्च, 2014 की यथास्थिति कार्यकरण

ii. आय-व्यय लेखा के मामले में उस तिथि को समाप्त वर्ष के लिए व्यय की अपेक्षा आय का आधिक्य।

विषय का महत्व

अपनी राय को योग्य ठहराए बिना, हम निम्नलिखित की ओर ध्यान आकर्षित करते हैः

क. अनुबंध-17 की बिंदु सं. 10 में उल्लिखित नई इमारत "श्रीमती कमला रहेजा प्रेक्षागृह और बहु-व्यावसायिक शिक्षा के लिए जेएसबी केंद्र" पर श्रीमती कमला रहेजा फाउंडेशन द्वारा किए गए व्यय से संबंधित लेन-देनों को दर्ज करना और

(ख) अनुबंध-17 की बिंदु सं. 11 में उल्लिखित अचल परिसंपत्तियों का वास्तविक सत्यापन और बहियों से उसका समंजन।

कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स

चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन

हस्ताक्षर
(बी. एल. खन्ना)
साझेदार

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक: 29 सितम्बर, 2014

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 को यथास्थिति तुलन-पत्र

(राशि रुपए)

संचित निधि/पूंजी निधि और देयताएं	अनुसूची	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
संचित/पूंजी निधि	1	2,53,69,152.90	2,28,24,838.40
प्रारक्षित निधि और अधिशेष	2	6,26,519.58	6,21,164.58
पूंजी परिसंपत्ति निधि	3	2,00,99,751.25	1,92,67,084.25
निर्धारित/धर्मादा निधि (सरकारी)	4	11,22,655.00	25,09,366.00
निर्धारित/धर्मादा निधि (गैर-सरकारी)	5	95,82,022.72	96,07,513.72
चालू देयताएं और प्रावधान	6	23,017.00	23,017.00
जोड़		**5,68,23,118.45**	**5,48,52,983.95**
परिसंपत्तियां			
अचल परिसंपत्तियां	7	2,00,99,751.25	1,92,67,084.25
चालू परिसंपत्तियां, ऋण और अग्रिम	8	3,67,23,367.20	3,55,85,899.70
जोड़		**5,68,23,118.45**	**5,48,52,983.95**

ह./-	ह./-	ह./-
(डॉ सी.एस. भास्करन)	(डॉ संजय वधवा)	(डॉ मनोरमा बेरी)
अध्यक्ष	**मानद सचिव**	**कोषाध्यक्ष**

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त अवधि/वर्ष के लिए

आय और व्यय लेखा (समेकित)

(राशि रुपए)

आय	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
अनुसंधान कार्य		
अनुदान	63,00,000.00	63,27,987.00
अर्जित ब्याज	76,832.00	49,892.00
अकादमी		
अनुपस्थिति में स्क्रॉल से आय	15,000.00	9,1000.00
अनुदान	55,54,488.00	50,07,451.00
शुल्क/ अभिदान	4,44,000.00	3,56,000.00
अर्जित ब्याज	7,94,800.00	9,71,335.00
अन्य आय	700.00	2,800.00
जोड़ (क)	**1,31,85,820.00**	**1,27,24,565.00**
व्यय		
अनुसंधान कार्य		
स्थापना व्यय	24,09,769.00	15,85,653.00
अन्य प्रशासनिक व्यय आदि	26,03,490.00	23,62,554.00
अनुदानों, अनुसंधान, सीएमई पर व्यय	19,17,617.00	10,33,908.00
पूंजीगत व्यय	8,32,667.00	58,411.00
अकादमी		
स्थापना व्यय	41,36,951.50	33,99,402.00
गैर-योजना पर अन्य प्रशासनिक व्यय आदि	28,22,722.00	16,30,086.00
जोड़ (ख)	**1,47,23,216.50**	**1,00,70,014.00**
कुल जोड़ (क - ख)	**15,37,396.50**	**26,54,551.00**

ह./-	ह./-	ह./-
(डॉ सी.एस. भास्करन)	(डॉ संजय वधवा)	(डॉ मनोरमा बेरी)
अध्यक्ष	**मानद सचिव**	**कोषाध्यक्ष**

स्थानः नई दिल्ली
दिनांकः

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त अवधि/वर्ष के लिए

अनुसंधान कार्य के लिए आय और व्यय लेखा

(राशि रुपए)

आय	अनुसूची	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
बिक्री/सेवाओं से आय			
अनुदान	4	63,00,000.00	63,27,987.00
शुल्क/ अभिदान		-	-
अर्जित ब्याज	4	76,832.00	49,892.00
अन्य आय		-	-
जोड़ (क)		**63,76,832.00**	**63,77,879.00**
व्यय			
स्थापना व्यय	4	24,09,769.00	15,85,653.00
अनुसंधान प्रकोष्ठ के अन्य प्रशासनिक व्यय आदि	4	26,03,490.00	23,62,554.00
अनुदानों, अनुसंधान, सीएमई पर व्यय	4	19,17,617.00	10,33,908.00
पूंजीगत व्यय	4	8,32,667.00	58,411.00
जोड़ (ख)		**77,63,543.00**	**50,40,526.00**
व्यय की तुलना में आय के आधिक्य का शेष (क - ख)		13,86,711.00	13,37,353.00
विशेष प्रारक्षित निधि को अंतरण (प्रत्येक निर्दिष्ट करें)		-	-
सामान्य प्रारक्षित निधि को/ से अंतरण		-	-
अनुसंधान गतिविधियों के लिए अनुसूची 4 के अनुसार ब्यौरा		**13,86,711.00**	**13,37,353.00**

ह./-	ह./-	ह./-
(डॉ सी.एस. भास्करन)	(डॉ संजय वधवा)	(डॉ मनोरमा बेरी)
अध्यक्ष	**मानद सचिव**	**कोषाध्यक्ष**

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांकः

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त अवधि/वर्ष के लिए

अकादमी के लिए आय और व्यय लेखा

(राशि रुपए)

आय	अनुसूची	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
अनुपस्थिति में स्क्रॉल से आय	9	15,000.00	9,1000.00
अनुदान	10	55,54,488.00	50,07,451.00
शुल्क/ अभिदान	11	4,44,000.00	3,56,000.00
अर्जित ब्याज	12	7,94,800.00	9,71,335.00
अन्य आय	13	700.00	2,800.00
जोड़ (क)		**68,08,988.00**	**63,46,686.00**
व्यय			
स्थापना व्यय	14	41,36,951.50	33,99,402.00
गैर-योजना पर अन्य प्रशासनिक व्यय आदि	15	28,22,722.00	16,30,086.00
अनुदानों, आर्थिक सहायता पर व्यय	16	--	--
जोड़ (ख)		**69,59,673.50**	**50,29,488.00**
व्यय की तुलना में आय के आधिक्य का शेष (क - ख)		1,50,685.50	13,17,198.00
विशेष प्रारक्षित निधि को अंतरण (प्रत्येक निर्दिष्ट करें)		-	-
सामान्य प्रारक्षित निधि को/ से अंतरण		-	-
अधिशेष/(कमी)) का शेष संचित/पूंजी निधि को अग्रेनीत		**1,50,685.50**	**13,17,198.00**

ह./-	ह./-	ह./-
(डॉ सी.एस. भास्करन)	(डॉ संजय वधवा)	(डॉ मनोरमा बेरी)
अध्यक्ष	**मानद सचिव**	**कोषाध्यक्ष**

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांकः

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 की यथास्थिति तुलन-पत्र का भाग होने वाले अनुसूचियां

अनुसूची 1 - संचित/पूंजी निधि

(राशि रुपए)

	चालू वर्ष		पिछला वर्ष	
वर्ष के प्रारंभ में शेष	2,28,24,838.40		1,93,46,640.40	
जोड़े: प्रवेश शुल्क	26,95,000.00		21,61,000.00	
जोड़े संचित/पूंजी निधि को अंशदान	--		--	
घटाएंः पूंजी परिसंपत्ति निधि को अंतरण	--		--	
जोड़े/(घटाएं): आय और व्यय का लेखा से अंतरित निवल आय/(व्यय) का शेष	1,50,685.50	2,53,69,152.90	13,17,198.00	2,28,24,838.40
वर्ष के अंत में शेष		**2,53,69,152.90**		**2,28,24,838.40**

ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)
अध्यक्ष

ह0/-
(डॉ संजय वधवा)
मानद सचिव

ह0/-
(डॉ मनोरमा बेरी)
कोषाध्यक्ष

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 की यथास्थिति तुलन पत्र का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 2 - प्रारक्षित निधि और अधिशेष

(राशि रुपए)

		चालू वर्ष		पिछला वर्ष	
1.	**पूंजी प्रारक्षित निधिः**				
	पिछले लेखे के अनुसार				
	वर्ष के दौरान वृद्धि				
	घटाएं: वर्ष के दौरान कटौतियां				
2.	**पूनर्मूल्यांकन प्रारक्षित निधिः**				
	पिछले लेखे के अनुसार				
	वर्ष के दौरान वृद्धि				
	घटाएं: वर्ष के दौरान कटौतियां				
3.	**विशेष प्रारक्षित निधिः**				
	पिछले लेखे के अनुसार				
	वर्ष के दौरान वृद्धि				
	घटाएं: वर्ष के दौरान कटौतियां				
4.	**सामान्य प्रारक्षित निधिः**				
	पिछले लेखे के अनुसार				
	वर्ष के दौरान वृद्धि				
	घटाएं: वर्ष के दौरान कटौतियां				
5.	**उपस्कर निधि और इमारत निधिः**				
	पिछले लेखे के अनुसार				
	वर्ष के दौरान वृद्धि	--		--	
	घटाएं: पूंजी परिसंपत्ति निधि	--		--	

NATIONAL ACADEMY OF MEDICAL SCIENCES (INDIA)

(राशि रुपए)

	चालू वर्ष		पिछला वर्ष	
को अंतरण				
6. इमारत निधि (अनुरक्षण)				
पिछले लेखे के अनुसार	6,26,519.58		6,21,164.58	
वर्ष के दौरान वृद्धि				
घटाएं: वर्ष के दौरान कटौतियां		6,26,519.58		6,21,164.58
जोड़		**6,26,519.58**		**6,21,164.58**

ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)
अध्यक्ष

ह0/-
(डॉ संजय वधवा)
मानद सचिव

ह0/-
(डॉ मनोरमा बेरी)
कोषाध्यक्ष

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 की यथास्थिति तुलन पत्र का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 3 - पूंजी परिसंपत्ति निधि

(राशि रुपए)

	चालू वर्ष		पिछला वर्ष	
निधि का अथशेष	1,92,67,084.25		1,92,08,673.25	
		1,92,67,084.25		1,92,08,673.25
जोड़ें: सीएमई कार्यक्रम अनुदान के अधीन पूंजी परिसंपत्तियां	8,32,667.00		58,411.00	
जोड़े: पूंजी परिसंपत्तियां अन्य अनुदान		8,32,667.00		58,411.00
घटाएं: रद्दी की गई परिसंपत्तियां	--		--	
		2,00,99,751.25		**1,92,67,084.25**

ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)
अध्यक्ष

ह0/-
(डॉ संजय वधवा)
मानद सचिव

ह0/-
(डॉ मनोरमा बेरी)
कोषाध्यक्ष

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 की यथास्थिति तुलन पत्र का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 4 - निर्धारित/धर्मादा निधियां (सरकारी योजना निधि)

(सीएमई कार्यक्रम निधि)

(राशि रुपए)

	चालू वर्ष		पिछला वर्ष	
(क) निधियों का अथशेष		25,09,366.00		11,72,013.00
(ख) निधियों में वृद्धियां				
i. दान/अनुदान(अनुबंध-क)	63,00,000.00		63,27,987.00	
ii. निधि के कारण किए गए निवेश से आय	76,832.00		49,892.00	
iii. अन्य वृद्धियां (प्रकृति निर्दिष्ट करें)		63,76,832.00		63,77,879.00
घटाएं: पूंजी परिसंपत्ति निधि को अंतरण (अनुसूची 17 की टिप्पणी सं. 9 का संदर्भ लें)				
जोड़ (क + ख)		**88,86,198.00**		**75,49,892.00**
(ग) उपयोगिता/निधियों के उद्देश्य के लिए व्यय				
i. **पूंजी व्यय**				
- अचल परिसंपत्तियां	8,32,667.00		58,411.00	
- अन्य		**8,32,667.00**		**58,411.00**
ii. **राजस्व व्यय**				
- वेतन, मजदूरी और भत्ते आदि (अनुबंध-ख)	24,09,769.00		15,85,653.00	
- किराया	-		-	

(राशि रुपए)

	चालू वर्ष		पिछला वर्ष	
- सीएमई कार्यक्रम के लिए अनुदान निर्गमन(अनुबंध-ग)	19,17,617.00		10,33,908.00	
- अन्य प्रशासनिक व्यय (अनुबंध-घ)	26,03,490.00		23,62,554.00	
कुल		69,30,876.00		49,82,115.00
जोड़ (ग)		**77,63,543.00**		**50,40,526.00**
वर्ष के अंत में निवल शेष (क + ख + ग)		**11,22,655.00**		**25,09,366.00**

ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)
अध्यक्ष

ह0/-
(डॉ संजय वधवा)
मानद सचिव

ह0/-
(डॉ मनोरमा बेरी)
कोषाध्यक्ष

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 की यथास्थिति तुलन पत्र का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 4 का अनुबंध - क

(राशि रुपए)

	चालू वर्ष	**पिछला वर्ष**
दान/ अनुदान		
अनुदान - सामान्य	60,00,000.00	22,27,987.00
अनुदान - वेतन		40,00,000.00
अनुदान - पूंजी	3,00,000.00	1,00,000.00
जोड़	**63,00,000.00**	**63,27,987.00**

ह0/-	ह0/-	ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)	(डॉ संजय वधवा)	(डॉ मनोरमा बेरी)
अध्यक्ष	**मानद सचिव**	**कोषाध्यक्ष**

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

अनुसूची 4 का अनुबंध - ख

(राशि रुपए)

		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
स्थापना व्यय			
क)	वेतन और मजदूरी	20,94,744.00	14,65,971.00
ख)	भत्ते और बोनस		
ग)	भविष्य निधि में अंशदान	2,66,570.00	60,715.00
घ)	अन्य निधि में अंशदान (निर्दिष्ट करें) कें.स.स्वा.यो.	46,104.00	61,742.00
	घटाएंः कें.स.स्वा.यो. वसूली	(9,000.00)	(7,075.00)
ङ)	कर्मचारी कल्याण व्यय	11,351.00	4,570.00
च)	कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति पर व्यय और सीमांत लाभ		
छ)	अन्य (निर्दिष्ट करें)		
	जोड़	**24,09,769.00**	**15,85,653.00**

ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)
अध्यक्ष

ह0/-
(डॉ संजय वधवा)
मानद सचिव

ह0/-
(डॉ मनोरमा बेरी)
कोषाध्यक्ष

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

अनुसूची 4 का अनुबंध - ग

(राशि रुपए)

		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
अनुदानों, आर्थिक सहायताओं आदि पर व्यय			
क)	संस्थानों/संगठनों को सतत शिक्षा चिकित्सा कार्यक्रमों के लिए दिया गया अनुदान (अंतःस्थानिक)	10,12,302.00	10,33,908.00
ख)	संस्थानों/संगठनों को सतत शिक्षा चिकित्सा कार्यक्रमों के लिए दिया गया अनुदान (बाह्यस्थानिक)	9,05,315.00	
ख)	संस्थानों/संगठनों को दी गई आर्थिक सहायता		
	जोड़	**19,17,617.00**	**10,33,908.00**

टिप्पणी: अनुदान/आर्थिक सहायता की राशि के साथ संगठनों का नाम, उनकी गतिविधियों के लिए अनुसूची 17 की टिप्पणी संख्या 13 का संदर्भ लें।

ह0/-	ह0/-	ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)	(डॉ संजय वधवा)	(डॉ मनोरमा बेरी)
अध्यक्ष	**मानद सचिव**	**कोषाध्यक्ष**

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

अनुसूची 4 का अनुबंध - घ

(राशि रुपए)

		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
अन्य प्रशासनिक व्यय आदि			
क)	विद्युत और ऊर्जा, जल	62,642.00	34,770.00
ख)	बीमा	6,742.00	6,742.00
ग)	मरम्मत और अनुरक्षण	3,38,681.00	3,47,979.00
घ)	वाहन चालन और अनुरक्षण	39,845.00	62,894.00
ङ)	डाक शुल्क, टेलीफोन और संचार प्रभार	4,57,661.00	1,92,787.00
च)	मुद्रण और लेखन सामग्री	7,51,122.00	2,80,362.00
छ)	यात्रा और वाहन व्यय	5,97,561.00	7,56,067.00
ज)	सेमिनार/कार्यशालाओं पर व्यय	14,220.00	
झ)	अभिदान व्यय		
ञ)	शुल्क पर व्यय		
ट)	लेखापरीक्षकों का पारिश्रमिक		
ठ)	आतिथ्य व्यय	8,187.00	18,469.00
ड)	व्यावसायिक/ परामर्श प्रभार	2,22,784.00	5,74,927.00
ढ)	डुबंत और संदिग्ध ऋणों/अग्रिमों के लिए प्रावधान		
ण)	बट्टे खाते डाले गए अप्रत्यादेय शेष		
त)	विज्ञापन और प्रचार		
थ)	अन्य (निर्दिष्ट करें)		
	-बैठक शुल्क	95,000.00	86,000.00

NATIONAL ACADEMY OF MEDICAL SCIENCES (INDIA)

(राशि रुपए)

	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
-बैंक प्रभार	1,011.00	1,557.00
-अधिगम स्त्रोत सामग्री व्यय	7,246.00	
-चिकित्सा व्यय	788.00	
- पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाएं	--	--
जोड़	**26,03,490.00**	**23,62,554.00**

ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)
अध्यक्ष

ह0/-
(डॉ संजय वधवा)
मानद सचिव

ह0/-
(डॉ मनोरमा बेरी)
कोषाध्यक्ष

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 की यथास्थिति तुलन पत्र का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 5 - निर्धारित/धर्मादा निधियां (अन्य)

(राशि रुपए)

(गैर-योजना)		निधि-वार आंकड़े							
		1	2	3	4	5	6	7	8
		जन. अमीर चन्द व्याख्यान निधि	आरोग्य आश्रम समिति निधि	बम्बई व्याख्यान निधि	डॉ के.एल. विग स्मारक व्याख्यान निधि	डॉ आर.वी. राजम व्याख्यान निधि	डॉ आरएम कासलीवाल निधि	डॉ एस.एस. मिश्रा चिकित्सा पुरस्कार निधि	**श्री राम स्मारक पुरस्कार निधि**
क)	**निधियों का अथशेष**	1,12,062.50	74,581.03	83,654.00	3,11,603.00	88,265.69	33,465.88	14,653.70	22,723.54
ख)	**निधियों में वृद्धियां**								
i	दान/अनुदान								
ii	निधि के लिए किए गए निवेश से आय	629.00	320.00	618.00	16,068.00	6,967.00	299.00	240.00	-
iii	अन्य वृद्धियां (प्रकृति निर्दिष्ट करें) अंशदान								
जोड़ (क + ख)		**1,12,691.50**	**74,901.03**	**84,272.00**	**3,27,671.55**	**95,232.69**	**35,764.88**	**14,893.70**	**22,723.54**
ग)	**उपयोगिता/निधियों के उद्देश्य के लिए व्यय**								
i	**पूंजी व्यय**								
	-अचल परिसंपत्तियां								
	-अन्य								
	जोड़	-	-	-	-	-	-	-	
ii	**राजस्व व्यय**								
	-वेतन, मजदूरी और भत्ते आदि								
	-किराया								
	-अन्य प्रशासनिक व्यय								
	-अन्य (नकद पुरस्कार व ट्राफी)	12,392.00	2,368.00	-	45,037.00	2,368.00	29,148.00	20,803.00	-
जोड़		**12,392.00**	**2,368.00**	**-**	**45,037.00**	**2,368.00**	**29,148.00**	**20,803.00**	**-**
iii	**वर्ष के दौरान भुगतान/ अन्य निधि को अंतरण**								-
जोड़ (ग)		**12,392.00**	**2,368.00**	**-**	**45,037.00**	**2,368.00**	**29,148.00**	**20,803.00**	**-**
वर्ष के अंत में निवल शेष (क + ख - ग)		**1,00,299.50**	**72,533.03**	**84,272.00**	**2,82,634.00**	**92,864.69**	**6,616.88**	**5,909.30**	**22,723.54**

NATIONAL ACADEMY OF MEDICAL SCIENCES (INDIA)

अनुसूची 5 - निर्धारित/धर्मादा निधियां (अन्य)

(राशि रुपए)

(गैर-योजना)		निधि-वार आंकड़े							
		9	10	11	12	13	14	15	16
		श्याम लाल सक्सेना स्मारक पुरस्कार निधि	कर्नल संघम लाल धर्मादा निधि	डॉ वी.आर. खानोल्कर व्याख्यान निधि	डॉ विमला विरमानी पुरस्कार निधि	पश्चिम बंगाल आंचलिक निधि	डॉ पीएन छुट्टानी व्याख्यान निधि	डॉ बी.के. आनंद व्याख्यान निधि	नैम्स-2007 अमृतसर पुरस्कार निधि
क)	**निधियों का अथशेष**	**25,092.13**	**93,319.20**	**95,893.66**	**89,120.53**	**48,677.07**	**1,88,915.00**	**3,22,711.00**	**94,987.00**
ख)	**निधियों में वृद्धियां**								
i	दान/अनुदान								
ii	निधि के लिए किए गए निवेश से आय	206.00	2,120.00	7,049.00	689.00	342.00	-	39,973.00	21,023.00
iii	अन्य वृद्धियां (प्रकृति निर्दिष्ट करें) अंशदान								
जोड़ (क + ख)		**25,298.13**	**95,439.0**	**1,02,942.66**	**89,809.53**	**49,109.07**	**1,88,915.00**	**3,62,684.00**	**1,16,010.00**
ग)	**उपयोगिता/निधियों के उद्देश्य के लिए व्यय**								
i	**पूंजी व्यय**								
	-अचल परिसंपत्तियां								
	-अन्य								
	जोड़	-	-	-	-	-	-	-	-
ii	**राजस्व व्यय**								
	-वेतन, मजदूरी और भत्ते आदि								
	-किराया								
	-अन्य प्रशासनिक व्यय								
	-अन्य (नकद पुरस्कार व ट्राफी)	36,003.00	2,368.00	32,685.00	32,523.00	-	21,837.00	15,023.00	5,973.00
जोड़		**36,003.00**	**2,368.00**	**32,685.00**	**32,523.00**	**-**	**21,837.00**	**15,023.00**	**5,973.00**
iii	**वर्ष के दौरान भुगतान/ अन्य निधि को अंतरण**								
जोड़ (ग)		**36,003.00**	**2,368.00**	**32,685.00**	**32,523.00**	**-**	**21,837.00**	**15,023.00**	**5,973.00**
वर्ष के अंत में निवल शेष (क + ख - ग)		**10,704.87**	**93,071.20**	**70,257.66**	**57,286.53**	**49,019.07**	**1,67,078.00**	**3,47,661.00**	**1,10,037.00**

NATIONAL ACADEMY OF MEDICAL SCIENCES (India)

अनुसूची 5 - निर्धारित/धर्मादा निधियां (अन्य)

(राशि रुपए)

(गैर-योजना)		निधि-वार आंकड़े							
		17	18	19	20	21	22	23	24
		स्वर्ण जयंती निधि	नैम्स स्वर्ण जयंती यात्रा अध्येतावृत्ति	भारतीय लोक स्वास्थ्य संघ डेंटिस्टी	डॉ बलदेव सिंह व्याख्यान निधि	पंजाब सरकार	डॉ एस.एस. सिद्धू व्याख्यान निधि	डॉ ए. इंद्रायन पुरस्कार निधि	डॉ जानकी स्मारक पुरस्कार निधि
क)	**निधियों का अथशेष**	**3,79,917.00**	**3,69,375.00**	**1,32,105**	**3,58,675.00**	**79,928.00**	**2,00,166.00**		
ख)	**निधियों में वृद्धियां**								
i	दान/अनुदान								
ii	निधि के लिए किए गए निवेश से आय	5,000.00	23,109.00	-	23,109.00	-	-	-	-
iii	अन्य वृद्धियां (प्रकृति निर्दिष्ट करें) अंशदान							2,01,046.00	5,00,000.00
जोड़ (क + ख)		**3,84,917.00**	**3,92,484.00**	**1,32,105.00**	**3,81,784.00**	**79,928.00**	**2,00,166.00**	**2,01,046.00**	**5,00,000.00**
ग)	**उपयोगिता/निधियों के उद्देश्य के लिए व्यय**								
i	**पूंजी व्यय**								
	-अचल परिसंपत्तियां								
	-अन्य								
	जोड़	-	-	-	-	-	-		
ii	**राजस्व व्यय**								
	-वेतन, मजदूरी और भत्ते आदि								
	-किराया								
	-अन्य प्रशासनिक व्यय								
	-अन्य (नकद पुरस्कार व ट्राफी)	-	-	10,685.00	45,840.00	-	13,952.00	-	44,167.00
जोड़		-	-	**10,685.00**	**45,840.00**	-	**13,952.00**	-	**44,167.00**
iii	**वर्ष के दौरान भुगतान/ अन्य निधि को अंतरण**								
जोड़ (ग)		-	-	**10,685.00**	**45,840.00**	-	**13,952.00**	-	**44,167.00**
वर्ष के अंत में निवल शेष (क + ख - ग)		**3,84,917.00**	**3,92,484.00**	**1,21,420.00**	**3,35,944.00**	**79,928.00**	**1,86,214.00**	**2,01,046.00**	**4,55,833.00**

NATIONAL ACADEMY OF MEDICAL SCIENCES (INDIA)

अनुसूची 5 - निर्धारित/धर्मादा निधियां (अन्य)

(राशि रुपए)

(गैर-योजना)		**निधि-वार आंकड़े**			**कुल जोड़**			
		25	**26**	**27**				
		डॉ जे.जी. जॉली व्याख्यान निधि	**डॉ वी. के. भार्गव पुरस्कार निधि**	**सीपीएफ जमा निधि**	**चालू वर्ष**		**पिछला वर्ष**	
क)	**निधियों का अथशेष**			**63,85,622.24**		96,07,513.72		92,28,232.72
ख)	**निधियों में वृद्धियां**							
i	दान/अनुदान							
ii	निधि के लिए किए गए निवेश से आय			1,19,769.00	2,67,530.00		2,82,21200	
iii	अन्य वृद्धियां (प्रकृति निर्दिष्ट करें) अंशदान	5,00,214.00	2,01,567.00	9,44,338.00	23,47,165.00	26,14,695.00	10,42,515.00	13,24,727.00
जोड़ (क + ख)		**5,00,214.00**	**2,01,567.00**	**74,49,729.24**		**1,22,22,208.72**		**1,05,52,959.72**
ग)	**उपयोगिता/निधियों के उद्देश्य के लिए व्यय**							
i	**पूंजी व्यय**							
	-अचल परिसंपत्तियां							
	-अन्य						-	-
	जोड़			-				
ii	**राजस्व व्यय**							
	-वेतन, मजदूरी और भत्ते आदि							9,45,446.00
	-किराया							
	-अन्य प्रशासनिक व्यय							
	-अन्य (नकद पुरस्कार व ट्राफी)		20,292.00		3,93,464.00		38,446.00	
जोड़		-	**20,292.00**					
iii	**वर्ष के दौरान भुगतान/ अन्य निधि को अंतरण**			**22,46,722.00**	22,46,722.00	26,40,186.00	9,07,000.00	9,45,446.00
जोड़ (ग)		-	**20,292.00**	**22,46,722.00**		**26,40,186.00**		**9,45,446.00**
वर्ष के अंत में निवल शेष (क + ख - ग)		**5,00,214.00**	**1,81,275.00**	**52,03,007.24**		**95,82,022.72**		**96,07,513.72**

NATIONAL ACADEMY OF MEDICAL SCIENCES

ह०/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)
अध्यक्ष

ह०/-
(डॉ संजय वधवा)
मानद सचिव

ह०/-
(डॉ मनोरमा बेरी)
कोषाध्यक्ष

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 की यथास्थिति तुलन पत्र का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 6- चालू देयताएं

(राशि रुपए)

	चालू वर्ष		पिछला वर्ष	
चालू देयताएं				
1. जमानत जमा राशि	23,017.00	23,017.00	23,017.00	23,017.00
अग्रिम धन - एक्सप्रैस हाउसकीपर्स 5,000.00				
अग्रिम धन - हैदर कांट्रैक्टर 15,400.00				
अग्रिम धन - एल.आर. शर्मा व कंपनी 2,617.00				
जोड़		**23,017.00**		**23,017.00**

ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)
अध्यक्ष

ह0/-
(डॉ संजय वधवा)
मानद सचिव

ह0/-
(डॉ मनोरमा बेरी)
कोषाध्यक्ष

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 की यथास्थिति तुलन पत्र का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 7- अचल परिसंपत्तियों का विवरण

(राशि रुपए)

विवरण		सकल ब्लॉक				मूल्यह्रास				निवल ब्लॉक	
		वर्ष के प्रारंभ में लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान वृद्धियां	वर्ष के दौरान कटौतियां	वर्ष के अंत में लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान वृद्धियों पर	वर्ष के दौरान कटौतियों पर	वर्ष के अंत तक जोड़	चालू वर्ष के अंत में	पिछले वर्ष के अंत में
क	**अचल परिसंपत्तियां**										
1.	**भूमिः**										
क)	फ्री होल्ड	97,405.00	-	-	97,405.00				-	97,405.00	97,405.00
ख)	पट्टाधारित		-	-	-				-		
2.	**इमारतः**										
क)	फ्री होल्ड भूमि पर	1,01,70,878.87	-	-	1,01,70,878.87				-	1,01,70,878.87	1,01,70,878.87
ख)	पट्टाधारित भूमि पर	-	-	-	-				-	-	-

(राशि रुपए)

विवरण		सकल ब्लॉक				मूल्यह्रास				निवल ब्लॉक	
		वर्ष के प्रारंभ में लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान वृद्धियां	वर्ष के दौरान कटौतियां	वर्ष के अंत में लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान वृद्धियों पर	वर्ष के दौरान कटौतियों पर	वर्ष के अंत तक जोड़	चालू वर्ष के अंत में	पिछले वर्ष के अंत में
ग)	स्वामित्वाधीन फ्लैट/ परिसर	-	-	-	-				-	-	-
घ)	संगठन के अस्वामित्वाधीन भूमि पर बड़ी संरचना	-	-	-	-				-	-	-
3.	संयत्र, मशीनरी और उपस्कर	16,48,279.00	65,590.00	-	17,13,869.00				-	17,13,869.00	16,48,279.00
4	वाहन	4.04,445.00	6,10,686.00		10,15,131.00				--	10,15,131.00	4.04,445.00
5.	फर्नीचर, जुड़नार	17,94,051.98	39,477.00	-	18,33,528.98				-	18,33,528.98	17,94,051.98
6.	कार्यालय उपस्कर	24,56,550.29	-	-	24,56,550.29				-	24,56,550.29	24,56,550.29
7.	कंप्यूटर/पेरिफेरल्स	21,81,518.47	1,16,914.00	-	22,98,432.47				-	22,98,432.47	21,81,518.47
8.	विद्युत	52,651.48	-	-	52,651.48				-	52,651.48	52,651.48

(राशि रुपए)

विवरण	सकल ब्लॉक				मूल्यह्रास				निवल ब्लॉक	
	वर्ष के प्रारंभ में लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान वृद्धियां	वर्ष के दौरान कटौतियां	वर्ष के अंत में लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान वृद्धियों पर	वर्ष के दौरान कटौतियों पर	वर्ष के अंत तक जोड़	चालू वर्ष के अंत में	पिछले वर्ष के अंत में
संस्थापनाएं										
9. पुस्तकालय की पुस्तकें	-	-	-	-				-	-	-
10. नलकूप और जलापूर्ति	-	-	-	-				-	-	-
11. अन्य अचल परिसंपत्तियां	4,61,304.16	-	-	4,61,304.16				-	4,61,304.16	4,61,304.16
चालू वर्ष का योग	**1,92,67,084.25**	**8,32,667.00**	-	**2,00,99,751.25**	-	-	-	-	**2,00,99,751.25**	**1,92,67,084.25**
पिछला वर्ष	**1,92,08,673.25**	**58,411.00**	-	**1,92,67,084.25**	-	-	-	-		
ख चालू पूंजीगत कार्य										
जोड़	**1,92,67,084.25**	**8,32,667.00**	-	**2,00,99,751.25**	-	-	-	-	**2,00,99,751.25**	**1,92,67,084.25**

ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)
अध्यक्ष

ह0/-
(डॉ संजय वधवा)
मानद सचिव

ह0/-
(डॉ मनोरमा बेरी)
कोषाध्यक्ष

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 की यथास्थिति तुलन पत्र का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 8- चालू परिसंपत्तियां, ऋण, अग्रिम आदि

(राशि रुपए)

		चालू वर्ष		पिछला वर्ष	
क.	**चालू परिसंपत्तियां**				
1.	हस्तगत नकद शेष (चेक/ ड्राफ्ट और पेशगी सहित	1,099.00	1,099.00	131.00	131.00
2.	बैंक में शेष				
क)	अनुसूचित बैंक में				
	निर्धारित/धर्मादा निधियां				
	-चालू खाते पर				
	-जमा खाते पर (मार्जिन राशि सहित)	93,22,159.00		86,82,186.00	
	-बचत खाते पर	21,62,361.12	1,14,84,520.12	31,51,694.12	1,18,33,880.12
	अन्य				
	-चालू खाते पर	1,47,829.00		7,55,222.00	
	-जमा खाते पर (मार्जिन राशि सहित)	2,15,47,653.00		1,88,47,653.00	
	-बचत खाते पर	16,50,846.39	2,33,46,328.39	23,25,547.39	2,19,28,422.39
ख	**गैर अनुसूचित बैंक में**				
जोड़ (क)			**3,48,31,947.51**		**3,37,62,433.51**
ख	**ऋण, अग्रिम और अन्य परिसंपत्तियां**				
1.	अग्रिम				

NATIONAL ACADEMY OF MEDICAL SCIENCES (INDIA)

(राशि रुपए)

		चालू वर्ष		पिछला वर्ष	
क	कर्मचारी (त्योहार)	11,120.00		16,220.00	
ख	अन्य		11,120.00		16,220.00
2.	**नकद अथवा वस्तु में या प्राप्त किए जाने वाले मूल्य के लिए वसूली योग्य अग्रिम और अन्य राशियां**				
क	प्रतिभूति राशि	3,19,880.00		3,19,880.00	
	विद्युत				
	15,34,315.00				
	महा.टे.नि.लि.				
	17,371				
	कें.लो.नि.वि.				
	1,47,069				
	न.दि.न.पा.				
	125				
	स्टाफ कार पेट्रोल				
	1000				
ख	राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड से देय	9,57,091.19		8,38,552.19	
ग	अन्य	-	12,76,971.69	-	11,58,432.19
3.	**अन्य**				
क	वसूली योग्य राशि				
ख	आय कर	6,03,328.00	6,03,328.00	6,48,814.00	6,48,814.00
	2006-07				
	1,14,635.00				
	2008-09				

NATIONAL ACADEMY OF MEDICAL SCIENCES (INDIA)

(राशि रुपए)

	चालू वर्ष		पिछला वर्ष	
1,91,129.00 2012-12 1,30,807.00 2013-13 2,12,243.00				
जोड़		**18,91,419.69**		**18,23,466.19**
जोड़ (क + ख)		**3,67,23,367.20**		**3,58,85,899.70**

ह0/-	ह0/-	ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)	(डॉ संजय वधवा)	(डॉ मनोरमा बेरी)
अध्यक्ष	**मानद सचिव**	**कोषाध्यक्ष**

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 की यथास्थिति तुलन पत्र का भाग होने वाली अनुसूचियां

राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड से मिलने वाले 50% भाग का विवरण	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
वेतन (इमारत स्टाफ)	6,34,188.00	
जोड़ें - कें.क.स्वा.यो. योगदान	15,368.00	
जोड़ें - भविष्य निधि योगदान/ प्रशासनिक प्रभार	1,34,554.00	
	7,84,110.00	
घटाएं - कें.क.स्वा.यो. वसूली	1,250.00	
	7,82,860.00	
मजदूरी खाता	89,551.00	
सुरक्षा सेवा प्रभार	5,07,741.00	
हाउसकीपिंग प्रभार	1,62,921.00	
विद्युत व जल प्रभार	2,90,012.00	
मरम्मत व रखरखाव खाता	75,179.00	
इमारत मरम्मत व रखरखाव खाता	-	
उद्यान व्यय	5,919.00	
जोड़	19,14,183.00	
50% राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड भाग	9,57,091.50	
	0.19	
	9,57,091.69	8,38,552.19
जोड़	**9,57,091.69**	**8,38,552.19**

ह0/-	ह0/-	ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)	(डॉ संजय वधवा)	(डॉ मनोरमा बेरी)
अध्यक्ष	**मानद सचिव**	**कोषाध्यक्ष**

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त अवधि के लिए आय और व्यय का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 9- बिक्री/सेवाओं से आय

(राशि रुपए)

		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1.	बिक्री से आय		
क)	स्क्रैप, एनल्स, निविदा, टाई/ब्रोच आदि की बिक्री	15,000.00	9,100.00
2	सेवाओं से आय		
क)	श्रम और प्रसंस्करण प्रभार	-	-
जोड़		**15,000.00**	**9,100.00**

ह0/-	ह0/-	ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)	(डॉ संजय वधवा)	(डॉ मनोरमा बेरी)
अध्यक्ष	**मानद सचिव**	**कोषाध्यक्ष**

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त अवधि के लिए आय और व्यय का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 10- अनुदान/आर्थिक सहायता

(राशि रुपए)

	चालू वर्ष	**पिछला वर्ष**
(अप्रत्यादेय अनुदान/ प्राप्त आर्थिक सहायता)		
1) केंद्र सरकार	55,54,488.00	50,07,451.00
2) राज्य सरकार (सरकारें)		
3) सरकारी अभिकरण		
4) संस्थान/कल्याण निकाय		
5) अंतर्राष्ट्रीय संगठन		
6) अन्य (निर्दिष्ट करें)		
जोड़	**55,54,488.00**	**50,07,451.00**

ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)
अध्यक्ष

ह0/-
(डॉ संजय वधवा)
मानद सचिव

ह0/-
(डॉ मनोरमा बेरी)
कोषाध्यक्ष

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त अवधि के लिए आय और व्यय का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 11 - शुल्क/अभिदान

(राशि रुपए)

	चालू वर्ष	**पिछला वर्ष**
1) प्रवेश शुल्क		
क) पंजीकरण शुल्क	88,000.00	76,000.00
ख) दाखिला शुल्क		
2) वार्षिक शुल्क/अभिदान	3,56,000.00	2,80,000.00
जोड़	**4,44,000.00**	**3,56,000.00**

ह0/-	ह0/-	ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)	(डॉ संजय वधवा)	(डॉ मनोरमा बेरी)
अध्यक्ष	**मानद सचिव**	**कोषाध्यक्ष**

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त अवधि के लिए आय और व्यय का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 12- अर्जित ब्याज **(राशि रुपए)**

		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1)	सावधि जमा पर		
क)	अनुसूचित बैंकों में (2,12,243/- रुपए स्रोत पर कर की कटौती सहित) (पिछला वर्ष 65,851/-रुपए)	5,42,137.00	8,52,718.00
ख)	गैर-अनुसूचित बैंको में		
ग)	संस्थानों में		
घ)	अन्य		
2)	बचत खाते पर		
क)	अनुसूचित बैंकों में	2,52,663.00	1,18,617.00
ख)	गैर-अनुसूचित बैंको में		
ग)	संस्थानों में		
घ)	अन्य		
3)	अन्य प्राप्तव्यों पर ब्याज	-	-
जोड़		**7,94,800.00**	**9,71,335.00**

ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)
अध्यक्ष

ह0/-
(डॉ संजय वधवा)
मानद सचिव

ह0/-
(डॉ मनोरमा बेरी)
कोषाध्यक्ष

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त अवधि के लिए आय और व्यय का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 13- अन्य आय

(राशि रुपए)

		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
1)	परिसंपत्तियों की बिक्री/निपटान पर लाभ		
क)	स्वामित्वाधीन परिसंपत्तियां		
ख)	अनुदानों से अधिग्रहित अथवा निःशुल्क प्राप्त परिसंपत्तियां		
2)	विविध आय	700.00	2,800.00
जोड़		**700.00**	**2,800.00**

ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)
अध्यक्ष

ह0/-
(डॉ संजय वधवा)
मानद सचिव

ह0/-
(डॉ मनोरमा बेरी)
कोषाध्यक्ष

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त अवधि के लिए आय और व्यय का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 14- स्थापना व्यय **(राशि रुपए)**

			चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क)	वेतन और मजदूरी		35,26,614.50	30,80,875.00
ख)	भत्ते और वेतन			
ग)	भविष्य निधि में अंशदान		5,37,188.00	1,33,293.00
घ)	अन्य निधि में अंशदान			
	कें.स.स्वा.योजना	84,524.00	-	-
	घटाएं: कें.स.स्वा.योजना वसूली	11,375.00	73,149.00	1,85,234.00
ङ)	कर्मचारी कल्याण व्यय			
च)	कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति पर व्यय और सीमांत लाभ			
छ)	अन्य			
जोड़			**41,36,951.50**	**33,99,402.00**

ह0/-	ह0/-	ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)	(डॉ संजय वधवा)	(डॉ मनोरमा बेरी)
अध्यक्ष	**मानद सचिव**	**कोषाध्यक्ष**

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त अवधि के लिए आय और व्यय का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 15- अन्य प्रशासनिक व्यय आदि

(राशि रुपए)

		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क)	विद्युत और ऊर्जा, जल	1,45,006.00	1,19,758.50
ख)	बीमा	22,642.00	6,173.00
ग)	मरम्मत और अनुरक्षण	1,22,009.00	1,27,788.00
घ)	वाहन चालन और अनुरक्षण		
ङ)	डाक शुल्क, टेलीफोन और संचार प्रभार	2,84,103.00	2,55,307.00
च)	मुद्रण और लेखन सामग्री	4,81,728.00	1,38,708.00
छ)	यात्रा और वाहन व्यय	5,12,359.00	3,26,911.00
ज)	सेमिनार/कार्यशालाओं पर व्यय		
झ)	अभिदान व्यय		
ञ)	शुल्क पर व्यय		
ट)	लेखापरीक्षक का पारिश्रमिक	-	28,090.00
ठ)	आतिथ्य व्यय	17,005.00	8,835.00
ड)	व्यावसायिक प्रभार	7,27,900.00	1,53,600.00
ढ)	डुबंत और संदिग्ध ऋणों/अग्रिमों के लिए प्रावधान		
ण)	बट्टे खाते डाला गया अप्रत्यादेय शेष	-	-
त)	विज्ञापन और प्रचार	-	32,847.00
थ)	अन्य:		
	बैंक प्रभार 3,230.00		2,859.00

NATIONAL ACADEMY OF MEDICAL SCIENCES (INDIA)

(राशि रुपए)

		चालू वर्ष	पिछला वर्ष
सुरक्षा प्रभार	3,83,893.50		3,77,931.50
बैठक शुल्क	1,12,000.00		42,500.00
पुस्तकें और पत्रिकाएं	-		664.00
विविध व्यय	10,846.00		8,114.00
		5,09,969.50	
जोड़		**28,22,722.00**	**16,30.086.00**

ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)
अध्यक्ष

ह0/-
(डॉ संजय वधवा)
मानद सचिव

ह0/-
(डॉ मनोरमा बेरी)
कोषाध्यक्ष

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त अवधि के लिए आय और व्यय का भाग होने वाली अनुसूचियां

अनुसूची 16- अनुदानों, आर्थिक सहायता आदि पर व्यय

(राशि रुपए)

	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
क) संस्थानों/संगठनों को दिया गया अनुदान		
ख) संस्थानों/संगठनों को दी गई आर्थिक सहायता		
जोड़	-	-

अनुदानों/आर्थिक सहायता की राशि के साथ संगठनों का नाम, उनकी गतिविधियां संलग्न हैं।

ह0/-	ह0/-	ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)	(डॉ संजय वधवा)	(डॉ मनोरमा बेरी)
अध्यक्ष	**मानद सचिव**	**कोषाध्यक्ष**

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)

महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ और 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए लेखा का भाग होने वाली टिप्पणियाँ

क) महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ

1. लेखा परंपरा

वित्तीय वक्तव्य नकदी आधार पर ऐतिहासिक लागत परंपरा के अधीन तैयार किए गए हैं।

2. राजस्व मान्यता

राजस्व, दान, अनुदान प्राप्त होने पर दर्शाए गए हैं।

व्यय भुगतान होने पर दर्शाए गए हैं।

3. अचल परिसंपत्तियाँ

अचल परिसंपत्तियाँ मूल लागत पर दर्शायी गयी हैं।

4. अवमूल्यन

अचल परिसंपत्तियों का कोई अवमूल्यन नहीं किया गया है।

5. अनुदान

अनुदान लेखा में दानकर्ता के विशिष्ट निदेशों के अनुसार दर्शाए गए हैं।

सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रमों के लिए सरकार से प्राप्त अनुदान (योजना) और उद्दिष्ट निधि आवर्ती प्रकृति के हैं। बैंक में जमा इस निधि से प्राप्त होने वाली आय सीधे इस निधि में जमा करवा दी जाती है और व्ययों को इस निधि में से घटा दिया जाता है।

सरकार से प्राप्त गैर-योजना अनुदान आवर्ती प्रकृति का है। गैर-योजना अनुदान (निवल पूंजी व्यय) आय व व्यय लेखा में जमा किया जाता है और पूंजी व्यय राशि पूंजीगत परिसंपत्तियाँ अनुदान निधि में अंतरित किया जाता है।

ख) लेखा का भाग होने वाली टिप्पणियाँ

6. वर्ष के दौरान सदस्यों से प्राप्त 100% आजीवन सदस्यता शुल्क पूंजी निधि में जमा करवाया गया।

7. व्याख्यानों और पुरस्कार के लिए अकादमी को प्राप्त संचित निधि दानकर्ता के निदेशों के अनुसार उसी विशेष निधि को निर्धारित कर दी गई है और उस राशि को बैंक में अलग से

आवधिक जमा योजनाओं में रखा गया है। उस आवधिक जमा से प्राप्त ब्याज की राशि को उसी निधि में जोड़ा जाता है और व्यय उस निधि से घटाए जाते हैं।

8. अकादमी की पुरानी और नई, श्रीमती कमला रहेजा प्रेक्षागृह और बहु-व्यावसायिक शिक्षा के लिए जेएसबी केंद्र, दो इमारतें हैं। अकादमी और राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित नियमों व शर्तों के अधीन पुरानी इमारत का आवास आपस में बाँट रहे हैं। अकादमी सभी अनुरक्षण व्यय वहन कर रही है और इस व्यय का 50% राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड से ले लिया जाता है और अनुरक्षण व्यय में से घटा दिया जाता है।

9. नई इमारत श्रीमती कमला रहेजा प्रेक्षागृह और बहु-व्यावसायिक शिक्षा के लिए जेएसबी केंद्र का निर्माण कार्य पूरा हो गया है। अकादमी और श्रीमती कमला रहेजा न्यास ने इस इमारत का निर्माण व्यय वहन किया है। अकादमी द्वारा इस इमारत पर किया गया व्यय खाता-बही में संबंधित शीर्ष में डाले गए हैं और श्रीमती कमला रहेजा न्यास द्वारा किया गया व्यय वित्त समिति के अनुमोदन के लिए लंबित है और उस पर वित्त समिति के निदेशों और अनुमोदन के आधार पर विचार किया जाएगा।

10. अचल परिसंपत्तियों का प्रत्यक्ष सत्यापन और खाता-बहियों से इसका मिलान लंबित है।

11. पिछले वर्ष के आंकड़ों को आवश्यकतानुसार पुनर्वर्गीकृत किया गया है।

ह0/-	ह0/-	ह0/-
(डॉ सी.एस. भास्करन)	(डॉ संजय वधवा)	(डॉ मनोरमा बेरी)
अध्यक्ष	**मानद सचिव**	**कोषाध्यक्ष**

हमारी संलग्न समतारीख की रिपोर्ट के
अनुसार
कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक: 29.09.2014

ह0/-
(बी. एल. खन्ना)
साझेदार

उपयोगिता प्रमाण-पत्र

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत), नई दिल्ली की लेखा बहियों की जांच के आधार पर पर और हमें प्रदान की गई सूचना और स्पष्टीकरण के आधार पर, हम प्रमाणित करते हैं कि वर्ष 2013-14 के लिए भारत सरकार, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य विभाग द्वारा 55.54.488/- रुपए (केवल पचपन लाख चौवन हजार चार सौ अठासी रुपए) सहायता अनुदान (गैर-योजना) निम्न प्रकार से दिया गया हैः

क्र. सं.	पत्र संख्या एवं दिनांक	राशि (रुपए)
1.	जी.20018/6/2013 एमई–II/ एफटीएस 46537 दिनांक 12.06.2013	20,00,000
2.	जी.20018/6/2013 एमई–II दिनांक 11.10.2013	5,00,000
3.	जी.20018/6/2013 एमई–II दिनांक 01.01.2014	20,54,488
4.	जी.20018/6/2013 एमई–II दिनांक 24.03.2014	7,00,000
5.	जी.20018/6/2013 एमई–II दिनांक 31.03.2014	3,00,000
	कुल रुपए	**55,54,488**

और निम्न दिए गए ब्यौरे के अनुसार, उसी प्रयोजन जिसके लिए इसे स्वीकृत किया गया था, वित्तीय वर्ष 2013-14 के दौरान उपयोग किया गया है।

वित्तीय वर्ष 2013-14 के दौरान सहायता अनुदान (गैर-योजना) का सार निम्नानुसार हैः

क्र. सं.	पत्र संख्या एवं दिनांक	(राशि रुपए)
1.	दिनांक 01.04.2013 को यथास्थिति व्यय नहीं किया गया सहायता-अनुदान	4,45,512
2.	जारी सहायता-अनुदान राशि	55,54,488
3.	व्यय	69,59,674
4.	दिनांक 31.03.2014 की यथास्थिति व्यय नहीं किया गया शेष	(-) 9,59,674

कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन
ह0/-
(बी. एल. खन्ना)
साझेदार

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:29.09.2014

उपयोगिता प्रमाण-पत्र

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत), नई दिल्ली की लेखा बहियों की जांच के आधार पर पर और हमें प्रदान की गई सूचना और स्पष्टीकरण के आधार पर, हम प्रमाणित करते हैं कि वर्ष 2013-14 के लिए भारत सरकार, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य विभाग द्वारा 63,00,000/- रुपए (केवल तिरसठ लाख रुपए) सहायता अनुदान (गैर-योजना) निम्न प्रकार से दिया गया हैः

क्र. सं.	पत्र संख्या एवं दिनांक	राशि (रुपए)
1.	जी.20018/5/2013 एमई–II/एफटीएस-46535 दिनांक 04.06.2013	10,00,000
2.	जी.20018/5/2013 एमई–II दिनांक 11.10.2013	10,00,000
3.	जी.20018/5/2013 एमई–II दिनांक 06.12.2014	10,00,000
4.	जी.20018/5/2013 एमई–II दिनांक 20.03.2014	30,00,000
5.	जी.20018/5/2013 एमई–II दिनांक 29.03.2014	3,00,000
	कुल रुपए	**63,00,000**

और निम्न दिए गए ब्यौरे के अनुसार, उसी प्रयोजन जिसके लिए इसे स्वीकृत किया गया था, वित्तीय वर्ष 2013-14 के दौरान उपयोग किया गया है।

वित्तीय वर्ष 2013-14 के दौरान सहायता अनुदान (गैर-योजना) का सार निम्नानुसार हैः

क्र. सं.	पत्र संख्या एवं दिनांक	(राशि रुपए)
1.	दिनांक 01.04.2013 की यथास्थिति व्यय नहीं किया गया सहायता-अनुदान	25,09,366
2.	जारी सहायता-अनुदान	63,00,000
3.	बचत खाते में जमा राशि पर ब्याज	76,832
	सकल जोड़	**88,86,198**

स्टाफ कार की खरीद के लिए 6,10,686/- रुपये अकादमी के अपने स्त्रोतों से व्यय किए गए।

कृते एचडीएसजी एंड एसोसिएट्स
चार्टर्ड लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 2871एन

ह0/-
(बी. एल. खन्ना)
साझेदार
सदस्यता सं. 11856

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक:29.09.2014

1 अप्रैल से 4 अक्टूबर, 2014 तक गतिविधियों की विशिष्टताएं

1. नैम्स परिषद् की दो बैठकें आयोजित हुई थीं। बैठकें दिनांक 30 जुलाई, 2014 और 4 अक्टूबर 2014 को आयोजित हुई थीं।

2. नैम्स परिषद् के उन सदस्यों की सूची निम्नलिखित है, जो अपना कार्यकाल समाप्त होने पर वर्ष 2014 के दौरान सेवानिवृत्त हुए और जो परिषद् के सदस्यों के रूप में निर्वाचित हुए हैं।

सेवानिवृत्त सदस्य	निर्वाचित सदस्य
1. डॉ. मनोरमा बेरी	1. डॉ. सरोज चूड़ामणि गोपाल
2. डॉ. सरोज चूड़ामणि गोपाल	2. डॉ. एम. वी. पद्मा श्रीवास्तव
3. डॉ. के. के. शर्मा	3. डॉ. मोहन कामेस्वरन
4. डॉ. एस. कामेस्वरन	4. डॉ. आमोद गुप्ता
5. डॉ. हरदास सिंह संधु	5. डॉ. अजमेर सिंह

3. डॉ. मनोरमा बेरी, एफएएमएस को तीन वर्ष की अवधि के लिए निर्विरोध नैम्स का कोषाध्यक्ष चुना गया है। उन्होंने 2 अप्रैल, 2014 को पदभार ग्रहण किया।

4. 30 जुलाई, 2014 को आयोजित परिषद् की बैठक में डॉ. हरिभाई एल. पटेल, एफएएमएस को निर्विरोध नैम्स का उपाध्यक्ष चुना गया है।

5. निम्नलिखित वैज्ञानिकों को वर्ष 2014 के पुरस्कारों के लिए चुना गया हैः:

पुरस्कार - 2014

डॉ. एस. एस. मिश्रा स्मारक पुरस्कार	डॉ. देसिरी सैम्बी सी-17 सैक्टर के, अलीगंज लखनऊ, उत्तर प्रदेश - 226024
डॉ. आर. एम. कासलीवाल पुरस्कार	डॉ. उमा शर्मा

	सहायक आचार्य, एनएमआर एवं एमआरआई सुविधा विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029
डॉ. विमला विरमानी पुरस्कार	डॉ. शिवारामा वरामबल्ली सह आचार्य, मनोरोग विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिकाविज्ञान संस्थान, होसूर रोड, बेंगलूरू-560029
श्याम लाल सक्सेना स्मारक पुरस्कार	डॉ. कुलदीप सिंह अपर आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, बालरोग विज्ञान विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर-342005
दांतव्य लोक स्वास्थ्य पुरस्कार	डॉ. सौमेंद्र विक्रम सिंह सहायक आचार्य, प्रोस्थोडोन्टिक्स विभाग, सी.एस.एम. आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय, लखनऊ-226003
डॉ. एस.एस. सिद्धू पुरस्कार	डॉ. वीरेंद्र सिंह आचार्य मुख व मैक्सियलोफेशियल विभाग, स्नातकोत्तर दंत विज्ञान संस्थान, रोहतक, हरियाणा

डॉ. विनोद कुमार भार्गव पुरस्कार	डॉ. थिरूमूर्ति वेलपांडियान अपर आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, नेत्र भेषजगुण विज्ञान एवं फार्मेसी विभाग, आर. पी. केंद्र, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029
डॉ. ए. एस. थाम्बिया पुरस्कार	डॉ. सोमेश गुप्ता अपर आचार्य त्वचारोग विज्ञान एवं रतिजरोग विज्ञान विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029

6. **स्वर्ण जयंती स्मारक पुरस्कार व्याख्यान**

साख समिति की अनुशंसा के आधार पर और परिषद् की सहमति से, वर्ष के दौरान अध्येता चुने गए सबसे युवा जैवचिकित्सा वैज्ञानिक को अकादमी की वार्षिक सभा में स्वर्ण जयंती स्मारक पुरस्कार व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

डॉ. रविन्द्र गोस्वामी, एफएएमएस आचार्य, अंतःस्त्राविकी एवं चयापचय विभाग, जैव प्रौद्योगिकी खंड, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली, वर्ष 2013 के दौरान अध्येता चुने गए सबसे युवा जैवचिकित्सा वैज्ञानिक थे। वे 19 अक्तूबर 2014 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में स्वर्ण जयंती स्मारक पुरस्कार व्याख्यान देंगे। उनके व्याख्यान का विषय "अज्ञातहेतुक पराथाइराइडिस्म में बेसल गैन्ग्लिया कैल्सीकरण के रोगजनन और कार्यात्मक महत्व में हाल ही की अंतर्दृष्टि" है।

7. वर्ष 2014 के लिए अध्येताओं और सदस्यों के रूप में निम्नलिखित उम्मीदवार निर्वाचित हुए हैं :

अध्येता

1. डॉ. अमिता अग्रवाल (एमएएमएस-2003)

2. डॉ. सुरेंद्र कुमार अहलूवालिया (एमएएमएस)

3. डॉ. कल्पना बालकृष्णन

4. डॉ. प्रकाश बी. बेहरे (एमएएमएस)

5. डॉ. विश्वेश्वर भट्टाचार्य (एमएएमएस)

6. डॉ. विष्णु पद चटर्जी

7. डॉ. ताराप्रसाद दास

8. डॉ. प्रमोद कुमार गर्ग (एमएएमएस)

9. डॉ. कृष्ण गाबा

10 डॉ. अनिल कुमार गुप्ता (एमएएमएस)

11. डॉ. स्वतंत्र कुमार जैन

12. डॉ. वी. आर. जानकी (एमएएमएस)

13. डॉ. शांतनु कुमार कार

14. डॉ. आनंद कृष्णन

15. डॉ. अशोक कुमार (एमएएमएस)

16. डॉ. रश्मि कुमार (एमएएमएस)

17. डॉ. नरेंद्र कुमार मागू (एमएएमएस)

18. डॉ. रवि कुमार मेहरोत्रा (एमएएमएस)

19. डॉ. अनुपम मंडल (एमएनएएमएस)

20. डॉ. श्रीकांथैय्या प्रुथविश

21. डॉ. शालिनी राजाराम (एमएएमएस)

NATIONAL ACADEMY OF MEDICAL SCIENCES (INDIA)

22. डॉ. पूनम सलोत्रा

23. डॉ. गीता सत्पथी

24. डॉ. पोलानी बी. शेषगिरि

25. डॉ. कुलदीप सिंह

26. डॉ. आशीष सूरी (एमएनएएमएस)

27. डॉ. सौम्य स्वामीनाथन

28. डॉ. भूमा वेंगम्मा

29. डॉ. आशीष वाखलू (एमएएमएस)

सदस्य

1. डॉ. हैदर अब्बास

2. डॉ. मयंक अग्रवाल

3. डॉ. विनीता अग्रवाल

4. डॉ. रमेश अग्रवाल

5. डॉ. परमीत कौर बग्गा

6. डॉ. चित्तरंजन बेहरा

7. डॉ. पंकज भारद्वाज

8. डॉ. जागृति भाटिया

9. डॉ. सुवम्य चक्रवर्ती

10 डॉ. बेनु धवन

11. डॉ. सुरजीत घटक

12. डॉ. निर्मल राज गोपीनाथन

13. डॉ. लज्जा देवी गोयल

14. डॉ. अनमोल कुमार गुप्ता

15. डॉ. निखिल गुप्ता

16. डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता

17. डॉ. रविंदर के. गुप्ता

18. डॉ. रेहान-उल-हक

19. डॉ. काजल जैन

20. डॉ. चेल्लम जानकी

21. डॉ. शिवानी जसवाल

22. डॉ. गोपालबंधु जेना

23. डॉ. रवि प्रकाश कनौजिया

24. डॉ. सुनील कात्याल

25. डॉ. निखिल कोठारी

26. डॉ. अनुराग कुहाद

27. डॉ. अनिल कुमार

28. डॉ. पलाश कुमार

29. डॉ. सुबोध कुमार

30. डॉ. प्रदीप कुमार माहेश्वरी

31. डॉ. अनिला अन्ना मथान

32. डॉ. जयंत कुमार मित्रा

33. डॉ. देबाज्योति मोहंती

34. डॉ. मधुमिता मुखोपाध्याय

35. डॉ. गोविंदराजन नंजाप्पचैट्टी

36. डॉ. मनीष नारंग

37. डॉ. सुशांत कुमार पाधी

38. डॉ. रणबीर पाल

39. डाक्टर आनंद पांडेय

40. डॉ. अनुपम प्रकाश

41. डॉ. महेश प्रकाश

42. डॉ. अमित रावत

43. डॉ. संदीप साहू

44. डॉ. नीरू सैनी

45. डॉ. सुदीप सेन

46. डॉ. अमर अनिरुद्ध शाह

47. डॉ. शीतल शारदा

48. डॉ. उर्वशी शर्मा

49. डॉ. जया शुक्ला

50. डॉ. शैलेंद्र पाल सिंह

51. डॉ. मनीष सिंघल

52. डॉ.क्टर सीमा सिंघल

53. डॉ. राजीव सिन्हा

54. डॉ. जसप्रीत सुखीजा

55. डॉ. वैशाली सूरी

56. डॉ. अंजन त्रिखा

57. डॉ. रमनदीप सिंह विर्क

58. डॉ. रचना वधवा

59. डॉ. कपिल यादव

विनियमन-V के अधीन निम्नलिखित उम्मीदवारों को अकादमी के सदस्यों (एमएनएएमएस) के रूप में प्रवेश दिया गया है।

दिनांक 30 जुलाई, 2014 को आयोजित परिषद् की बैठक में अनुमोदित नाम

1. डॉ कुकरेजा अजय अशोक

2. डॉ राजीव कुमार गुप्ता

3. डॉ अब्दुलवाहिद अत्तर

4. डॉ वी. विद्याश्री नंदिनी

5. डॉ पुरंदरे मयूर अविनाश

6. डॉ लेखा के. एल.

7. डॉ संतोष मोहन राव के.

8. डॉ जे. दीप घोष

9. डॉ त्यागी हिमांशु रवींद्र

10 डॉ जतिंदर कौर

11. डॉक्टर प्रकाश प्रगीश प्रकाश

12. डॉ जयकृष्णन के. बी.

13. डॉ रवि श्रीनिवासन

14. डॉ रामासामी एल.

15. डॉ मोहम्मद फाहुद खुर्रम

16. डॉ संदीप वी नायर

17. डॉ वरूण गुप्ता

18. डॉ पवन शर्मा

19. डॉ गुप्ता विशाल सुबोध

20. डॉ आशीष चौहान

21. डॉ डोडवानी गुंजन गुलाबराय

22. डॉ बिबेक कुमार राय

23. डॉ रहीश रवींद्रन

24. डॉ बाबर श्रीकांत अरविंद

25. डॉ अनिलकुमार तारानाथ बेन्नूर

26. डॉ भानवाडिया विरल मनसुखभाई

27. डॉ हितेश वर्मा

28. डॉ सबनीस कीर्ति चंद्रशेखर

29. डॉ संगीत गंगाधरन

30. डॉ अविनाश टी. एस.

31. डॉ सोनिया अर्नोवाल्ट

32. डॉ उष्णीश चक्रवर्ती

33. डॉ उत्सव कटकवार

34. डॉ अभिषेक शर्मा

35. डॉ शाइनी एस.

36. डॉ प्रशांतकुमार एम. एस.

37. डॉ धर्मे माधव रामकृष्ण

38. डॉ गोपेंदु चंदन पत्री

39. डॉ शिल्पा सिंह

40. डॉ कनिल रंजीत कुमार

41. डॉ अब्बास अली एस.

42. डॉ अरुण बी.

43. डॉ अरविंद कुमार जैन

44. डॉ गोयल अनुजा राजकुमार

45. डॉ नीरज गुप्ता

46. डॉ रेवती वी.

47. डॉ मुकुल मोहिंद्रा

48. डॉ पुलकित गुप्ता

49. डॉ भूमिका शर्मा

50. डॉ सुरेश एम.

51. डॉ राजशेखर सी. एस.

52. डॉ अरुणा कुमारी

53. डॉ सुरेश बी. एम.

54. डॉ विनीत दिगंबर वानखेड़े

55. डॉ याकूब मैथ्यूज

56. डॉ प्रदीप नायर

57. डॉ श्रीजीत लालकृष्ण

58. डॉ पारुल भटनागर

59. डॉ फ्रांसिस जी.

60. डॉ मालिनी एबेनेजर

61. डॉ अभिनव गुप्ता

62. डॉ मंजूर अहमद

63. डॉ गोपीशंकर बालाजी जी

64. डॉ श्रीकांत के. पी.

65. डॉ सेंथिल वादिवु ए.

66. डॉ जिज्ञासा पांडे

67. डॉ रोनी थॉमस

68. डॉ प्रतीक बेहरा

69. डॉ शाह अमित कुमार आर. एन. प्रसाद

70. डॉ संजय मिश्रा

71. डॉ सपना एस.

72. डॉ आर. अमिता

73. डॉ प्रवीण ए.

74. डॉ श्रुति अरोड़ा

75. डॉक्टर प्रकाश खत्री

76. डॉ योगीश्वर ए. वी.

77. डॉ यनमन्द्रा उदय यव्स मूर्ति

78. डॉ ओतुरकर प्रसन्ना श्रीकांत

79. डॉ कुलकर्णी संदीप अनिलराव

80. डॉ सुधा माहेश्वरी एस.

81. डॉ अशोक आनंद डी. वी.

82. डॉ नैन्सी एस. पिल्लई

83. डॉ सुनील कुमार

84. डॉ संजय कुमार छावड़ा

85. डॉ संगीता धांगेर

86. डॉ योगेश मनोहरराव देशमुख

87. डॉ विक्रमन सेनीश कुमार

88. डॉ कपिल सोनी

89. डॉ अंजलि महेंद्रू

90. डॉ घनशाम

91. डॉ लीज़ा थॉमस

92. डॉ उपवन कुमार

93. डॉ बिंदु आर.

94. डॉ रथवा वनराजकुमार पहाड़सिंग

95. डॉ मिथुन सी. मोहन

96. डॉ हरिवेंकटेश एन.

97. डॉ एस. सहीर

98. डॉ टोपले स्वप्निल सुधाकरराव

99. डॉ शशिधर बी. के.

100. डा शैलेन्द्र सिंह

101. डा गीतिका श्रीवास्तव

102. डा थोरवे स्मिता मानाजी

103. डा नरखेड़े प्रवीण सखाराम

104. डा वालसा डायना जी.

105. डॉ त्रिवेणी जी. एस.

106. डा बोर्से विवेक

107. डा वत्सला एल.

108. डॉ देवी कृष्णा आर.

109. डॉ सीनू ए. नायर

110. डा दोषी भाविन जयंत

111. डॉ साहजी आकाश अरविंद

112. डा सराधिया साकेत प्रवीणकुमार

113. डा पोपट रोहन भूपेंद्र

114. डॉ कुमार राजेश विजय

115. डॉ नेहा सिंह

116. डॉ लिज़िया पुष्पन

117. डॉ दिलीप कुंचेरिया

118. डॉ धमनगाँवकर अनूप सी.

119. डॉ वाघ सिद्धेश

120. डॉ के. श्रीनिवास

121 डॉ चुग विशाल सुरेंद्रकुमार

122 डॉ कविन खत्री

123. डॉ सीता रमेश

124 डॉ अजीतकुमार एम. के.

125 डॉ प्रांजल सरकार

126 डॉ रमेसन के.

127. डॉ स्वप्नदीप सिंह अटवाल

128 डॉ सौरभी दास

129. डॉ नागेंद्रन एन.

130. डॉ असग़र अब्बास

131. डॉ देसाले दिनेश उत्तमराव

132. डॉ मनसुखानी समीर अजित

133. डॉ वंदना गोयल

134. डॉ टुटेजा तन्वी विजय

135. डॉ चेतन गिरोती

136. डॉ राजेश कुमार सिंह

137 डॉ मोरे विवेक मछींद्रा

138 डॉ संध्या एस.

139. डॉ बालाजी एस.

140. डॉ संदीप गुप्ता

141. डॉ पोफले आनंद अशोक

142. डॉ खान तबस्सुम शफीउद्दीन

143. डॉ कुमार अनुभव सुधीर

144. डॉ सूर्यवंशी सत्यजीत नारायण

145. डॉ सिद्धार्थ शर्मा

146. डॉ परीक्षा गुप्ता

147. डॉ चिलुकूरी वेंकट नरसिंह मूर्ति

148. डॉ फराह नाज़ फातिमा जलील

149. डॉ बशरत नदीम

150. डॉ मनोज कुमार शॉ

151. डॉ जयचंद्रन एम जी

152. डॉ हीरक पहाड़ी

153. डॉ तुंग्रे प्राजक्ता राजीव

154. डॉ अजीतकुमार सी.एस.

155. डॉ के. वरुण कृष्णा

156. डॉ अतुल श्रीवास्तव

157. डॉ मोनिका सिंह

158. डॉ पुराणिक रेशमा नितिन

159. डॉ नाइक योगेश भानुदास

160. डॉ देवी जनसिरानी डी.

161. डॉ अजय हलदर

162. डॉ श्रीगणेश रावतमल बारनेला

163. डॉ रंगा राम चौधरी

164. डॉ एलीनाम्बी एस.

165. डॉ अनुराग मिश्र

166. डा देवयानी गौतम

167. डॉ विनय कुमार

168. डॉ जयाव्रत घोष

169. डॉ रमाकांत दीक्षित

170. डॉ जैन शिवानी अशोक

171. डॉ अनिन्दासु बसु

172. डॉ डिसूजा सिरिल जॉन

173. डॉक्टर त्रिवेदी अमित दिनेशभाई

174. डॉ सुनील व्यास

175. डॉ शाजिया शफी

176. डॉ वेंकटेश सी

177. डा राधारानी दत्त चौधरी

178. डा उज़मा सादिया

179. डॉ मोहम्मद रफी पी

180. डॉ सैदुद्दीन कुतबे

181. डॉ जी. उमापति चौधरी

182. डॉ मार्गज विश्राब्ध चंद्रकांत

183. डॉ रामचंद्र एन. बादामी

184. डॉ सिंह विक्रम सत्येन्द्र

185. डॉ दीप्ति जॉय

186. डॉ यासिर पी. टी.

187. डॉ संदीप कटियार

188. डॉ उमर कादिर Bacha

189. डॉ अशोक कुमार सिंह

190. डॉ गांधी दर्शन हरीशकुमार

191. डॉ सुनीलकुमार अत्तर सिंह

192. डॉ के. रुक्मिणी मृदुला

193. डॉ अंशुल ढिल्लों

194. डॉ जैन दर्शन घेवरचंद

195. डॉ रविराजा ए.

196. डॉ पंकज पंवार

197. डॉ वैभव कुमार वार्ष्णेय

198. डॉ मृणाल पाहवा

199. डॉ वांगचुक जरिंग

200. डा गोदावरथी पुरुषोत्तम

201. डॉ देवेंद्र लखोटिया

202. डॉ कीर्थना कुनीकुल्लाया यू.

203. डॉ विनीश नारंग

204. डॉ जे. सतीश कृष्णा

205. डॉ शॉ सुभाष चंद्रा

206. डॉ अभिषेक के. फड़के

207. डॉ येलामाली अरुण

208. डॉ टीना सलीबा

209. डॉ मौर्य उदयभान हरिशंकर

210. डॉ बिलाल अहमद बाबा

211. डॉ छाबड़िया मनीष अमरलाल

212. डॉ सीमा माहेश्वरी

213. डॉ संध्या वी. के.

214. डॉ लोहार योगेश सुरेश

215. डॉ मोहनदास नायर के.

216. डॉ शंकर कुमार चटर्जी

217. डॉ दीप्ति कृष्णन

218. डॉ सैफ कैसर

219. डॉ दुर्गाप्रसाद हेगड़े एस.

220. डॉ हीरा बानो मोहम्मद

221. डॉ दारवड़े अभिनव भास्कर

222. डॉ रितु अग्रवाल

223. डॉ मोहित गर्ग

224. डॉ गौरी अग्रवाल

225. डॉ रजत गुप्ता

226. डॉ योगानंद महादेव दादगे

227. डॉ बॉबी कृष्णा

228. डॉ धर संजय कुमार

229 डॉ अजय कुमार

230 डॉ मेहराज दीन तंत्रे

231. डॉ अनीश कीपनासेरिल

232. डॉ कौशिक नंदी

233. डॉ अमित कुमार

234. डॉ प्रतीक गर्ग

235. डॉ गौरव रस्तोगी

236. डॉ अभिजीत पुंडिकराव पटके

237. डॉ सिंह गीतांजलि अमर सिंह

238. डॉ यादव राहुल नरेंद्र सिंह

239. डॉ ससरूकर वैभव अरविंद

240. डॉ कौशिक जे.

241. डॉ सुनील कुमार

242. डॉ निशांत दीक्षित

243. डॉ गोपी मनोहर

244. डॉ विपिन गुप्ता

245. डॉ सुहैब रहमान ए.

246. डॉ डागा सचिन वालचंदजी

247. डॉ निवेधिथा आड़ती जी

248. डॉ निरंजनन एम. राघवन

249. डॉ सिमी आर.

250. डॉ अंकुर सचदेवा

251. डॉ अमित कुमार गुप्ता

252. डॉ रितु गुप्ता

253. डॉ सेलमोकर अमरनाथ रमेश

254. डॉ एकता मलिक

255. डॉ घ्यार प्रफुल्ल प्रकाश

256. डॉ वीरेंद्र कुमार

257. डॉ ममता सिंघरोहा

258. डॉ पंकज कुमार

259. डॉ कोटेचा मुंधे भूमिका राजेश

260. डॉ श्वेता अग्रवाल

261. डॉ भाद रोशन मोहनपंत

262. डॉ संदीप शैना

263. डॉ पायल मित्तल

264. डॉ कुमार गोपाल वी.

265. डॉ मोहनदास सुनील

266. डॉ मदास्सेरी दीप्ति सुकुमार

267. डॉ अजयकुमार एस.

268. डॉ अंजनी कुमार कुंडल

269. डॉ एस. गोकुलकृष्ण

270. डॉ आरिफ टी. ए.

271. डॉ निषाद पी. के.

8. संगोष्ठी/ कार्यशाला/ सीएमई कार्यक्रम

देश में विभिन्न चिकित्सा संस्थानों से प्राप्त सीएमई के प्रस्तावों में से अकादमी ने नीचे दिए गए ब्यौरे के अनुसार दिनांक 1.04.2014 से 04.10.2014 तक 7 बाह्यसांस्थानिक और 5 अंतःसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रम स्वीकृत किए हैं।

दिनांक 1.04.2014 से 04.10.2014 तक बाह्यसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों के अधीन अनुदान दर्शाने वाली विवरणी

क्रम संख्या	विषय	जारी राशि (रुपए)
1	"चिकित्सा शिक्षा में ई-लर्निंग - एक विहंगम दृश्य" पर सीएमई कार्यक्रम सेंट जॉन मेडिकल कॉलेज, बंगलौर, 4 अप्रैल, 2014	50,000/-
2	"समुदाय में अभिनव प्रथाएँ - उन्मुख चिकित्सा शिक्षा" पर सीएमई कार्यशाला महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान, सेवाग्राम, 25 सितंबर, 2014	75,000/-
3	"सैप्कॉन-14 और डब्लयूएचओनेट" पर सीएमई कार्यक्रम शासकीय थेनी मेडिकल कॉलेज, थेनी, तमिलनाडु 13-14 जून 2014	75,000/-
4	"एफएनएसी और स्तन की कोर सुई बायोप्सी" पर सीएमई कार्यक्रम शासकीय मेडिकल कॉलेज, नागपुर 8 अगस्त, 2014	75,000/-
5	"चिकित्सीय सूक्ष्मजैवविज्ञान में निदान विधियों पर तेरहवीं राष्ट्रीय कार्यशाला" पर सीएमई कार्यक्रम जवाहरलाल स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, पांडिचेरी 08-11 अक्टूबर 2014	75,000/-

क्रम संख्या	विषय	जारी राशि (रुपए)
6	परामर्श सम्पर्क मनोरोग: सीमाओं को जोड़ना पर सीएमई कार्यक्रम सशस्त्र सेना मेडिकल कॉलेज, पुणे 06-07 सितम्बर 2014	75,000/-
7	"क्रिटिकल केयर-एक बदलाव प्रतिमान" पर सीएमई कार्यक्रम कमान अस्पताल (उत्तरी कमान), जम्मू और कश्मीर 12-13 सितम्बर 2014	75,000/-

दिनांक 1.04.2014 से 04.10.2014 तक अंतःसांस्थानिक सीएमई कार्यक्रमों के अधीन अनुदान दर्शाने वाली विवरणी

क्रम संख्या	विषय	जारी राशि (रुपए)
1	"तंत्रिकाविज्ञान" पर क्षेत्रीय संगोष्ठी मद्रास मेडिकल कॉलेज, चेन्नई 17 अगस्त, 2014	70,000/-
2	"सामान्य चिकित्सकों के लिए आंत्र सूजन रोग" पर क्षेत्रीय संगोष्ठी शासकीय मेडिकल कॉलेज, चंडीगढ़, 07 सितंबर, 2014	90,000/-
3	"मदिरापान के हानिकारक प्रभाव: साक्ष्य - आधारित राष्ट्रीय नीति की आवश्यकता" पर नैम्स राष्ट्रीय संगोष्ठी एम्स, ऋषिकेश, 17 अक्टूबर 2014	60,000/-
4	"टाइप 2 मधुमेह के निदान निवारण और प्रबंधन की उभरती अवधारणाएँ और इसकी सूक्ष्मसंवहनी जटिलताएँ" पर नैम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी श्री गुरु राम दास आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, अमृतसर, 1 नवंबर, 2014	70,000/-
5	"मोटापे की उभरती महामारी" पर नैम्स क्षेत्रीय संगोष्ठी जोधपुर 08 नवंबर 2014	70,000/-

9. एनएएमएस वैज्ञानिक संगोष्ठी:

प्रत्येक वर्ष, एनएएमएस के वार्षिक सम्मेलन के दौरान देश की स्वास्थ्य परिचर्या संबंधी आवश्यकताओं के अत्यधिक संगत विषय पर एक वैज्ञानिक संगोष्ठी आयोजित की जाती है। 18 अक्टूबर 2014 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश, उत्तराखंड में वार्षिक सम्मेलन के दौरान नैम्स वैज्ञानिक संगोष्ठी का विषय 'निजीकृत चिकित्सा' है।

10. जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार

परिषद ने 30 जुलाई, 2014 को आयोजित बैठक में नियम 34 (डी) के तहत डॉ. हरिभाई एल. पटेल, एफएएमएस, को पेशेवर अभ्यास में ईमानदारी और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में नैतिकता के प्रति जीवन भर समर्पण के लिए और भारत के व्यवसायिक संगठनों और राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी दोनों में उनके नेतृत्व की भूमिका की मान्यता में वर्ष 2013 के लिए जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार प्रदान किए जाने का अनुमोदन किया है। यह पुरस्कार उन्हें अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में नैम्सकॉन 2014 के दौरान प्रदान किया जाएगा।

परिषद ने 30 जुलाई, 2014 को आयोजित बैठक में नियम 34 (डी) के तहत डॉ. सी. एस. भास्करन, एफएएमएस, अध्यक्ष, नैम्स, एक उत्कृष्ट शिक्षक, उत्कृष्ट अनुसंधान कार्यकर्ता और एक योग्य प्रशासक को व्यावसायिक उत्कृष्टता और उच्च क्रम की विषय विशेषज्ञता, धैर्य, शैक्षणिक श्रेष्ठता, और व्यावसायिक उत्कृष्टता के उनके गुणों के प्रमाणित ट्रैक रिकॉर्ड की मान्यता में वर्ष 2014 के लिए जीवनकाल उपलब्धि पुरस्कार प्रदान किए जाने का अनुमोदन किया है।

11. राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के साथ नैम्स की संयोजकता

नैम्स और राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के मध्य संयोजकता को हाल ही में स्थापित किया गया है। राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क बहु -10 गीगाबिट्स प्रति सेकंड ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क की राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र द्वारा कार्यान्वित की जा रही परियोजना है और इसमें अंततः भारत में 1500 ज्ञान संस्थानों में संयोजकता की परिकल्पना की गई है जिनमें से 1100 पहले से ही संयोजक हैं।

12. **अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में चिकित्सा शिक्षा में अनुसंधान के लिए नैम्स केंद्र की स्थापना**

चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए नैम्स के शैक्षणिक परिषद अध्यक्ष और निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर के बीच 11 जुलाई 2014 को नई दिल्ली में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। चिकित्सा शिक्षा में अनुसंधान के लिए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में नैम्स केंद्र स्थापित है। चिकित्सा शिक्षा में अनुसंधान के लिए नैम्स केन्द्र के समन्वयक के रूप में डॉ. कुलदीप सिंह को नियुक्त किया गया है।

13. **नैम्स के वर्ष वृत्तांतों के प्रकाशन हेतु व्यवस्था**

दो साल की अवधि के लिए नैम्स के वर्ष वृत्तांतों का प्रकाशन कार्यालय अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर में चिकित्सा शिक्षा में अनुसंधान के लिए नैम्स केंद्र होगा। नैम्स के वर्ष वृत्तांतों के प्रकाशन की जिम्मेदारी डॉ. कुलदीप सिंह को सौंपी गयी है और उन्हें पुनर्गठित संपादकीय बोर्ड में वरिष्ठ प्रकाशन सलाहकार के रूप में नामित किया गया है।

14. स्वर्ण जयंती व्याख्यान के लिए समर्पित अंक, खंड 49 संख्या 1 व 2 (जनवरी - जून, 2013), मुद्रित और नैम्स के सभी अध्येताओं / सदस्यों को वितरित किया गया।

15. **नैम्स के वर्ष वृत्तांतों के नए संपादकीय बोर्ड का गठन**

नया संपादकीय बोर्ड का 01.01.2014 से गठन किया गया है और 2014 के वर्ष वृत्तांत के पहले अंक यानी खंड 50, नं. 1, जनवरी-मार्च, 2014 पर होगा।

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) का वर्ष वृत्तांत

(तिमाही पत्रिका)

संपादक

डॉ. संजीव मिश्रा

सहयोगी संपादक

डॉ. वी. मोहन कुमार

सहायक संपादक

डॉ. मोहन कामेस्वरन

संपादकीय मंडल

डॉ. स्नेहलता देशमुख
डॉ. डब्लयू. सेल्वामूर्ति
डॉ. जे.एन. पांडे
डॉ. प्रेमा रामाचंद्रन
डॉ. एच.एस. संधू
डॉ. ललिता एस. कोठारी
डॉ. विनोद पॉल
डॉ. संजय वधवा

संपादकीय सहयोगी

डॉ. एम.वी पद्मा श्रीवास्तव
डॉ. आर. के. चड्डा
डॉ. दीप श्रीवास्तव
डॉ. प्रोमिला बजाज
डॉ. एन. आर. जगन्नाथन
डॉ. सुब्रत सिन्हा
डॉ. रविंदर गोस्वामी
डॉ. (ब्रिगेडियर) वेलु नायर

सलाहकार मंडल के सदस्य

डॉ. एम. बेरी
डॉ. सी. एस. भास्करन
एयर मार्शल (सेवानिवृत्त) डॉ. एम.एस. बोपाराय
डॉ. वाई.के. चावला
डॉ. पी.के. दवे
डॉ. आमोद गुप्ता
डॉ. रवि कांत
डॉ. बलराम एरन
डॉ. सरोज चूड़ामणि गोपाल

डॉ. राजेश्वर दयाल
डॉ. सी. एस. सैम्बी
डॉ. आर. मदान
डॉ. राज कुमार
डॉ. मुकुंद एस. जोशी
डॉ. कमल बक्शी
डॉ. हरिभाई एल. पटेल
डॉ. आई. सी. वर्मा
डॉ. गीता के. वेमुगंटी

वरिष्ठ प्रकाशन सलाहकारः डॉ. कुलदीप सिंह

प्रतिष्ठित संपादकः प्रो. जे.एस. बजाज

वार्षिक सदस्यता दर

भारत	रूपये	500.00
विदेश	$	30.00
	£	15.00
एकल प्रति	रूपये	150.00

पत्रव्यवहार

पत्रिका से संबंधित सभी पत्रव्यवहार निम्न को संबोधित किया जाएः

मानद सचिव

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत)
नैम्स हाउस, अंसारी नगर,
महात्मा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110029

दूरभाषः 011-26589289 **ई-मेलः** nams_aca@yahoo.com
वेबसाइटः http://nams-india.in